महाराज श्री जुगलदास जी कृत

श्री परमधाम की बड़ी वृत्त

प्रकाशक

श्री १०८ धर्मदास जी महाराज
श्री ५ नवतनपुरी धाम
जामनगर ३६१००१

प्राप्ति स्थान :

श्री निजानंद पुस्तकालय
खीजडा मंदिर
जामनगर, गुजरात

श्री प्राणनाथ मिशन
श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर
हकीकत नगर, दिल्ली

विक्रमी संवत् २०४२
बुधजी शाके २०७
अक्टूबर १९८५

प्रथम संस्करण-१००० प्रतियां

सम्पादक

श्री अमृत राज शर्मा

श्री छबील दास जी

न्योछावर ३०/-

मुद्रण
एवरेस्ट प्रेस
४, चमेलियान रोड, दिल्ली-६.

विषय सूची

विषय	पृ० सं०
१. श्री निजधाम की वृत्त	१
२. निजधाम को बयान	१
३. भीतर मंदिर	४
४. अट्ठाईस थंभ को चौक	५
५. चौरस हवेली	६
६. मूल मिलावा	८
७. नव चौक	९
८. रसोई की हवेली	१२
९. दूसरी भोम	१३
१०. दसमी भोम	१५
११. गिनतो मंदिर, थंभ, गलियों की	१६
१२. दरवाजा तीनों घाट परिक्रमा	२१
१३. सोरा हांस को चेहेबच्चा	२२
१४. बट पीपल की चौकी	२५
१५. फूल बाग	२८
१६. नूर बाग	३१
१७. अन्न बन	३४
१८. दूब दुलीचा	३४
१९. पछिम की चौगान	३५
२०. लाल चबूतरा	३७
२१. ताड़ बन	३९
२२. खड़ोकली	४१
२३. श्री जमुनाजी की पाल	४७
२४. बड़ोबन, मधुबन, महाबन	५४
२५. मधुवन	५६
२६. पुखराज की रौंस	६०
२७. गिनती हिसाब तरहटी पुखराज को	६२

२८. तरहटी बंगलन की	६३
२९. तरहटी अधबीच के कुण्ड की	६४
३०. तरहटी ढपे चबूतरा की	६५
३१. तरहटी मूल कुण्ड की	६६
३२. पुखराजी चबूतरा	६८
३३. घाटी पछिम उत्तर की	६८
३४. बेवरा पछिम की घाटी की सीढ़ियन का	७०
३५. चबूतरा पुखराज को बेवरा	७१
३६. बंगलन की चाँदनी	७६
३७. चाँदनी पुखराज की	७८
३८. आकासी मोहोल	८१
३९. आकासी मोहोल की चाँदनी	८४
४०. बंगला	८५
४१. अधबीच को कुण्ड	८९
४२. खास मोहोल की चाँदनी	९३
४३. पुनः बंगलन को बरनन	९४
४४. पुखराजी ताल को बेवरा	९७
४५. ढपो चबूतरा	१०२
४६. मूल कुण्ड	१०३
४७. एक मोहोल एक चबूतरा	१०६
४८. बट को घाट	११०
४९. कुंज निकुंज	११३
५०. हौज कौसर ताल	११५
५१. झुण्ड को घाट	११९
५२. घाट नव देहुरी का	१२२
५३. सोला देहुरी को घाट	१२६
५४. चौथे घाट को देखिए	१३३
५५. झुण्ड को घाट	१३७
५६. पाल अन्दर की सोभा	१३७
५७. टापू मोहोल चौसठ पाँखडी	१४१
५८. एक सौ अट्ठाईस रंग	१४७
५९, झुंड के घाट आए	१४८
६०. चौबीस हाँस को मोहोल	१५०
६१. जवेरों की नेहेर	१५३
६२. मानिक पहाड़	१६०
६३. बीच को टापू मोहोल मानिक	१७१
६४. मानिक पहाड़ की चाँदनी	१७४
६५. रौंस बाहिर की जोगबाई	१७८

६६. बन की नेहेर और बन के मोहोल १८५
६७. पच्छिम की चौगान १८८
६८. चाँदनी चौक १९३
६९. नूर सागर २०३
७०. प्रथम चारहार हवेली २०४
७१. नूर सागर २१०
७२. नीर सागर २२३
७३. खीर सागर २२७
७४. दधि सागर २२८
७५. घृत सागर २२८
७६. मधु सागर २२९
७७. रस सागर २३०
७८. सर्व रस सागर २३१
७९. अष्ट सागर जाहेर बातुन २३४
८०. तीसरी बिध बरनन २३८
८१. अष्ट सागर अरस दिल भीतर २४५
८२. हवेलियन की गिनती २४७
८३. सागरन से रंगभवन को २५६
८४. चार हार हवेली २६३
८५. महा नेहेर २६५
८६. जवेरों के मोहोल २६९
८७. हिसाब जाहेर बातुन २७५
८८. रंग भवन २८३

प्रकाशकीय

सद्धर्मप्रेमी आत्मीय सुन्दर साथ जी !

आपकी शुभेच्छा एवं आग्रह के फलस्वरूप महाराज युगलदास जी कृत्त परमधाम की बड़ी वृत्त आपके हाथों में सौंपते हुए आज मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। कुछ वर्ष पूर्व मैंने यह संकल्प लिया था कि श्री नवतन पुरी, धाम, जामनगर में मेरे पास स्वामी श्री प्राणनाथ जी की वाणी सम्बन्धी जितना अप्रकाशित साहित्य है, उसे मैं अवश्य प्रकाशित करा दूँगा। बीच में स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहा। तो भी महामति प्राणनाथ ने यह दिन दिखाया। मेरे पास जितने हस्तलिखित ग्रंथ थे लगभग उन सब का प्रकाशन हो चुका है। प्रणामी समाज में यत्र तत्र अन्य जो भी ग्रंथ हैं, उन्हें भी मंगवाकर प्रकाशित करवाने की इच्छा को पूरी करके श्री जी अपनी सेवा करने का सौभाग्य प्रदान करेंगे, ऐसी प्रार्थना है।

सन्तजनों की महिमा अवर्णनीय अगम तथा अगोचर है। विश्व के प्राणियों का उद्धार करने और सद्धर्म की स्थापना के लिये उनका अवतार होता है—

"बिन कहे सतपुरुष जो, पर की पूरे आस।
कौन कहत है सूर्य को, घर घर करत प्रकाश ॥
तरुवर फले न आपको, नदी न अचवे नीर।
परमारथ के कारने, संतन धर्या सरीर ॥
संत सबन सों हेत करे, दे सांचो उपदेस।
मुक्त मिलावे ब्रह्म सों, स्वारथ नहीं लवलेस ॥
मन कर-तन कर बचन कर, काहु देखावत नाहिं।
तुलसी ऐसे सन्त जन, ब्रह्म रूप जग माहिं ॥
साधुजन को कर कमल, धर्यो जासु के माथ।
सोई जन या जगत में, मानहुं भयो सनाथ ॥

गीता में श्रीकृष्ण के वचन अनुसार ऐसे साधु संतों अवतारी पुरुषों का अवतरण प्रत्येक युग में होता रहा है। ऐसा भी कहा जाये कि उन्हीं के सत् पर विश्व में धर्म का नाम शेष है तो कोई अत्युक्ति न होगी।

प्रणामी समाज के संतों का यह स्वभाव रहा कि अपने ज्ञान को महामति की ज्ञान सलिला का एक अंश जानकर वे उसी में विलीन होते रहे।

अपने जन्म-जीवन काल के विषय में वे उदासीन और निर्मोही रहे। यही कारण है कि संत शिरोमणी महाराज जुगलदास जी के जीवन के विषय में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। तो भी प्रमाणिक सूत्र के आधार पर जितना विदित हुआ उसे लिखने का प्रयास किया है—

आपकी जन्मभूमि दतिया राज्य माना जाता है। आपके पिता दतिया के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित कायस्थ-कुल अवतन्स श्री बास्तव थे। बाल्यकाल से ही आपमें होनहार व्यक्तित्व के लक्षण प्रकट हो गये थे। जिज्ञासु होने के कारण सर्वत्र आप आत्मकल्याण का मार्ग खोज रहे थे। खोजी के लिये कुछ भी अगम्य नहीं। आपको भी सद्गुरु मिले। उच्च कोटि के सन्तों के श्रीमुख से आपको महामति प्राणनाथ वाणी की चर्चा सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परमधाम का वर्णन पढ़ कर आपकी आत्मा निजघर एवं स्वामी के दर्शनों के लिये छटपटाने लगी। संसार विष तुल्य प्रतीत हुआ। बिरह-वेदना में व्याकुल होकर आपने निर्णय लिया कि जब तक परमधाम का साक्षात् दर्शन न होगा तब तक मैं संसार को नहीं देखूंगा और अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली। घोर तप में कई मास व्यतीत हो गये। कई दिनों तक अन्न जल में कमी कर देने से शरीर निर्बल हुआ किन्तु आत्म बल बढ़ा। आपके प्रेमाग्रह एवं अनन्य भक्ति पर रीझकर परब्रह्म परमात्मा ने साक्षात् दर्शन देकर परमधाम दिखाया। आत्मा का आनन्द शब्दों में प्रवाहित होने लगा। सेवा करने वाले शिष्यों ने तुरन्त उसे लिपिबद्ध कर लिया। वर्णन समाप्त होते ही आपने स्वामी को अखंड दण्डवत् प्रणाम किया।

इनकी त्यागी मनोवृत्ति को देखकर माता पिता ने अल्पायु में ही इनका विवाह कर दिया था। पत्नि बड़ी साध्वी श्रद्धालु भक्त थीं। आपके एक पुत्र और पुत्री भी हुए। आपका गृहस्थाश्रम अल्प काल ही चला। बाद में दम्पत्ति पूजा-पाठ-सेवा अर्चना में समय व्यतीत करते रहे। आप सदैव आत्म चिन्तन में लगे रहे जिसके फलस्वरूप अनेक ग्रंथों का प्रणयन हुआ। उनमें मनमोहन रसानंद सागर, परमधाम विलास, वृन्दावन विलास, छोटी-बड़ी पत्री प्रकाशित हो चुके हैं। अब बड़ी वृत्त का प्रकाशन होने से एक बड़ी आवश्यकता की पूर्त्ति हुई। आपके द्वारा रचित अनेक फुटकर दोहा भजन भी संकलित हैं। उनमें से थोड़े ही प्रकाशित हुए हैं।

आपका जन्म सम्वत ठीक से कोई बता नहीं पाता। इतना कहा जा सकता है कि आपको सागर के महाराजा बखत बली ज्यू के दरबार में उच्च स्थान प्राप्त था। बखत बली ज्यू की रानी साहिबा आपकी शिष्या थीं। बखत बली ज्यू सतरहवीं अन्त और अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में हुए। बस उसी से आपके जीवन काल का अनुमान लगाया जा सकता है।

ऐसी मान्यता है कि झांसी की रानी लक्ष्मी बाई भी आप ही की शिष्या थीं। उनके यहाँ इनको राजगुरु का पद प्राप्त था। आपकी शिष्य परम्परा में परहंस चतुर दास जी, परमहंस चेतन दास जी परमहंस जीवन दास जी थे। इन्होंने क्रम से मटियारी, गंगापुर एवं गढ़पासेली गाँवों में गादी की स्थापना की। ये तीनों स्थान आज भी मान्यता प्राप्त हैं और वहाँ अनेकों प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध हैं। भांडेर के महंत गोपालदाल जी आज भी आपकी शिष्य परम्परा में विद्यमान हैं।

संत शिरोमणि, भक्त प्रवर जुगलदास जी ऊँच-नीच, छुआ-छूत में विश्वास नहीं करते थे। निम्न जाति के लोगों के बीच बैठकर प्रसाद पा लेते थे। इससे कई बार सवर्ण हिन्दू अप्रसन्न भी हो जाते थे। आपकी समाधि भांडेर में स्थित है।

ऐसे ही महान सेवाभावी सन्तों के त्याग एवं परिश्रम से प्रणामी मान्यताएं सुरक्षित रहीं एवं विशद् प्रणामी साहित्य का धीरे-धीरे प्रकाशन हो रहा है। आज के विज्ञान युग में भले ही इस अमूल्य निधि को परखने वाले अधिक संख्या में न हों तो भी विज्ञजन बड़े चाव एवं सम्मान से इन ग्रंथों का पठन मनन करके आत्मानुभव के धनी बनते हैं। परब्रह्म साक्षात्कार के आग्रही ऐसे भक्तजन परमधाम के इस वर्णन को पढ़कर अपनी चिर प्रतिक्षित अभिलाषा को पूर्ण करें--

इस भावना के साथ

आपका ही
महाराज श्री धर्मदास जी
श्री ५ नवतन पुरी धाम
जामनगर, गुजरात।

निवेदन

चिदात्मन् सुन्दर साथ जी,

बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि परमहंस महाराज विरचित यह 'बड़ी वृत्त' छपकर आज आपके हाथों में है। यह वृत्ति प्रणामी साहित्य गगन में एक चमकता हुआ सितारा है। ध्रुव तारे के समान यह सदैव साधक को दिशाबोध देता है। इस ग्रंथ में महाराज श्री जुगलदास जी ने गागर में सागर भर दिया है। उस दिव्य, शब्दातीत परमधाम का सरल वर्णन करके आपने पाठक वृन्द के हृदय को आनन्द रस से प्लावित कर दिया है।

वैसे तो अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के अखंड धाम का वर्णन कौन कर सकता है? कोई भी शब्द उस वर्णन को बांध लेने में सक्षम नहीं है। वह शब्दातीत है—वर्णनातीत है तभी तो महामति ने भी उसका वर्णन कर पाने में असमर्थता व्यक्त की—

अरस मता अपार है, दिल में न आवे बिना सुमार।
ताथे ल्याऊं बीच हिसाब के, ज्यों रूहें करें विचार ॥
अरस नहीं सुमार में, सो हक ल्याए माँहें दिल मोमन।
बेसुमार ल्याये सुमार में, माँहे आवने दिल रूहन ॥

परमधाम अनंत है—अखंड है—शब्दातीत है ऐसा कह कर यदि वे छोड़ देते तो आज हम लोग उस धाम को कैसे समझ सकते थे। हमारे मन को चिन्तन का, बुद्धि को विचार का और आत्मा को ध्यान का, सुरिता को परमधाम लौटाने का आधार न मिल पाता।

हमारे मन के अन्दर परमधाम की आनन्ददायी जोगबाई, वहाँ की वस्तुएं, वहाँ की बातें समझ में आ जायें इसलिये महामति श्री प्राणनाथ जी, स्वामी लालदास जी, श्री जुगलदास जी महाराज ने स्वयं उस अनिर्वचनीय स्थिति से उतर कर संसार के शब्दों में दिव्यातिदिव्य धाम का वर्णन किया।

परमधाम की प्रत्येक वस्तु चैतन्यमय है। संसार की चेतन कहाने वाली वस्तुएं भी नाशवान होने के कारण जड़ हैं—परमधाम की अचल वस्तुएं भी चेतन हैं। आपके मनोभावों को समझती है। आनन्ददायी है—

ए चेतन कहावे झूठी जिमी, सो सब जड़ तू जान।
जो थिर कहावे अरस में, सो चेतन सदा परवान ॥

परमधाम परमात्मा के नूर का विस्तार, उनके नूर से ज्योतित उनकी चिन्मय क्रीड़ास्थली है। प्रत्येक वस्तु का नूर अनन्त हो जाने से परस्पर संघर्षण सा होता दिखाई देता है—उस संघर्षण से अनेक रूप, रंग, रस प्रकट होते हैं।

'नूर सरूप रूप नूर के, नूर बस्तर भूखन ।
सोभा सुन्दरता नूर की, सब नूरै नूर रोसन ।।
गुण अंग इन्द्री नूर की, नूरै ज्ञान वचन ।
पिंड प्रकृत सब नूर की, नूरै कहन सुनन ।।
नाम ठाम सब नूर के, कहूं जरा न नूर बिन ।।
मोहोल मंदिर सब नूर के, मांहि बाहेर नूर पूरन ।।
रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा नूर भर ।
थंभ तकिये सब नूर है, कछू और न नूर बिगर ।।

नूर कहते हैं चैतन्य प्रकाश को। परमधाम के महल मन्दिर, थंभ, दिवाल, वृक्षएक-एक अणु परमाणु किसी तत्त्व से नहीं—नूर का ही विस्तार है। नूर से ही सम्पूर्ण परमधाम देदीप्यमान है। सब कुछ चिन्मय नूर स्वरूप है।

वह लीला धाम है जो अक्षय, अखंड और अनन्त है। लीला के लिये वहाँ सब कुछ होता है। मानो फूल-फल तोड़ा तो वह हाथ में भी, स्वाद में भी और वृक्ष में भी ज्यों का त्यों दिखाई देता है। नूर के चँदोवे के समान घनी छाया वाले वृक्ष हैं—हीरे की कणियों के समान रेत झलकती हैं। फूलों के हिंडोले, उन पर फूलों के समान झूलने वाली आत्माएं सब नूर का विस्तार हैं।

'मेवे चाहिये सो लीजिये, फल फूल मूल पात ।
तित रह्या तैसा ही बन्या, ए बका बागों की बात ।।

तेजोनिधि दिव्य परमधाम में अनेक गगन चुम्बी महल हैं। जिनकी गिनती ऊंचाई आदि का हिसाब करना मानव बुद्धि के बस में नहीं। महाराज जुगलदास जी ने जो हजारों मंजिलों में कोसों तक की ऊंचाई बताई—और वह कोस भी परमधाम के। जड़ कहे जाने वाले पेड़-पौधों, पत्थरों, चित्रों में चेतना है। परमधाम शाश्वत है। उसका वर्णन ध्रुव सत्य है। मन बुद्धि में नहीं समा पाता तो क्या, आत्मा को जागृत होने दीजिये—संसार के आकर्षणों से मुक्त कर दीजिये—परमधाम तक उड़ान भरने में वही सक्षम है।

हमने एक कहानी सुनी थी। एक तोता और एक उल्लू मित्र बन गये। घंटों बैठ कर बतियाते रहते। एक दूसरे को मीठे फल खिलाते। उल्लू रात में और तोता प्रातः एक दूसरे की सेवा करते। एक दिन प्रातः काल

उगते सूर्य को देख तोते ने कहा—मित्र देखो तो प्राची में कितना सुन्दर दृश्य है। निकलता सूर्य कैसी छटा दिखा रहा है। कितने रंग के बादल हैं—आह सुन्दर—अतिसुन्दर। उल्लू ने कहा कैसा सूर्य—कैसा दृश्य मैंने तो कभी प्रात:काल देखा ही नहीं। तोते ने सोचा' दिन के अन्धे से क्या कहना। इसने तो मेरा भी आनन्द भंग कर दिया। सब जानते हैं प्रकाश है, सूर्य है, उजाला है। जब सूर्य उदय होता है तो सम्पूर्ण आकाश अपनी भव्यता से उसका स्वागत करता है किन्तु उल्लुओं की सभा में उसका वर्णन करने वाला मूर्ख ही ठहराया जायेगा।

हम भी इस झूठी माया में इस प्रकार रच-पच गये हैं। हमारी बुद्धि कुण्ठित हो गयी है। इसीलिए तो शास्त्र-पुराणों एवं महापुरुषों की बाणियों पर हमें विश्वास नहीं। परमधाम के सत्य को समझने, उस पर विश्वास करने की क्षमता हममें नहीं रही।

परमधाम सत् चित् आनन्द से परिपूर्ण अद्वैत भूमिका है। हमारी बुद्धि असत, जंड, दुःख अन्तयुक्त और द्वैत में ही सत्य को खोजने का प्रयास कर रही है। जड़ माया से परिवेष्ठित बुद्धि सत्य पर विश्वास कैसे करेगी ! एक बूंद को सागर का अहसास कैसे हो !

यदि पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा से दिव्य परमधाम का चिन्तन मनन किया जाए तो धीरे धीरे आवरण हटने लगते हैं। अज्ञान की पर्तें उघड़ जाती हैं। एक दिन जब सभी बन्धन तोड़ कर आत्मा उन्मुक्त हो जाती है तो स्वयं को उस अनन्त, अखंड वैभव में पाती है। निरंतर चिन्तन और अभ्यास से यह सम्भव है।

धर्मानुरागी पाठकगण से मेरा निवेदन है कि तर्क बुद्धि एवं उल्टी चाल चलने वाले मन के पीछे लगना छोड़ कर अपनी आत्मा को जागृत करें। अहर्निश मनन चिन्तन से ही यह संभव होगा कि हम परमधाम को जान लें, अपने मूल स्वरूप एवं घर को पहचान लें। इसके लिए हमारे अन्तर में तीव्र अभीप्सा होनी चाहिये। वही एक दिन पल्लवित होकर फूलने फलने लगेगी। शरीर छोड़ने पर हमारी आत्मा और कहीं भटकेगी नहीं—सीधा अपना गन्तव्य पा लेगी। अपने निजघर में उसे प्रवेश मिलेगा।

निवेदक—
पुजारी खीमप्रसाद अधिकारी
श्री 5 नवतन पुरी धाम
जामनगर।

प्रस्तावना

वृत्त शब्द से ध्यान और चिन्तन के माध्यम से चित्तवृत्ति की एकाग्रता या सुरतारोहन का बोध होता है। महामति प्राणनाथ (१६१८-१६९४ ई०) की वाणी के परिक्रमा ग्रंथ में परमधाम का हृदयग्राही वर्णन है। बड़ी वृत्त साधु शिरोमणि महाराज जुगलदास जी द्वारा श्री मुखवाणी एवं आत्मसाक्ष्य के आधार पर किया गया परमधाम का वर्णन है।

महाराज युगलदास जी का जीवन काल श्री प्राणनाथ जी से कुछही वर्षोपरान्त सतरहवीं अन्त और अठारहवीं सदी के प्रारम्भ में बताया जाता है। निश्चित तिथि अभी तक किसी को ज्ञात नहीं। किन्तु इतना तो निश्चित मत है कि इस ग्रंथ की रचना अठारहवीं सदी के प्रारम्भ में हुई। परमहंस जुगलदास जी महाराज की गणना ऐसे संत शिरोमणियों में की जा सकती है जिनके द्वारा असंख्य भक्तजनों को अपूर्व लाभ प्राप्त हुआ। उनमें परमधाम की आत्मा कमलावती का अवतरण हुआ था, ऐसा स्वीकार किया जाता हैं।

बड़ी वृत्त दो सौ वर्ष पुरानी गद्यात्मक शैली में लिखा अपूर्व ग्रंथ है। इसकी भाषा में हिन्दी उर्दू, बुंदेली और कहीं कहीं गुजराती भाषा के शब्द हैं। भाषा बड़ी मधुर और हृदय को छू लेने वाली है। परब्रह्म और परमधाम का स्वरूप न मानने वाले भी इस शैली पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहते। प्रस्तुत ग्रंथ पढ़ने से परमधाम की संरचना का जो चित्र उभरता है उसे देख कर बड़े-बड़े भवन शिल्पी दंग रह जाते हैं। यह वर्णन आंखों देखे स्थानों के वर्णन की तरह जीवंत है।

आत्म साक्ष्य होने पर जगत् के पाप संताप को देख उन्होंने अविरल परमधाम दर्शन की इच्छा से अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली। मन की एकाग्रता से परमधाम में भ्रमण और रमण करते हुए उन्होंने जो वर्णन किया उसे उसी समय उनके शिष्यों ने लिपिबद्ध किया। बिरत कहना बंद करके 'महाराज' ने दण्डवत् प्रणाम किया तो उनका शरीर दण्डवत् पड़ा ही रह गया और सुरत परमधाम पहुंच गयी। इसीलिए इस ग्रंथ को वृत्तिनाम दिया गया।

अनेक प्रणामी संतों ने श्री प्राणनाथ के समय में ही रेखाओं और बिन्दुओं का सहारा लेकर परमधाम के नक्शे भी बनाए थे जिन्हें 'पट' कहा जाता है। प्राणामी धर्म में विद्वानों को शिक्षा (तालीम) देने के समय श्री

प्राणनाथ वाणी, श्री लालदास बीतक, बिरत और पट सिखाने का प्रचलन है। इतना सीख लेने पर उन्हें वाणी और चर्चनी विशारद कहा जाता है। चर्चनी के जिज्ञासु प्रायः जुगलदास जी की 'वृत्ति' के साथ चरचनी सीखना पसन्द करते हैं। इसमें वर्णन बड़ा स्पष्ट और सरल है। एक अच्छे भवन शिल्पी की तरह इसमें गिनती, नाम जोख का इतना सुन्दर ब्योरा है कि मन पर परमधाम का स्वरूप अंकित हो जाता है। ध्यान साधना के लिए बड़ी 'वृत्त' के जैसा सम्बल मिलना असम्भव है। तार्किक बुद्धि और उड़ने भटकने वाले मन को खूंटे से बांध कर ध्यान मग्न करा देने में यह 'वृत्त' सक्षम है।

आज के भाग-दौड़ से पूर्ण व्यस्त जीवन में किसी के पास ध्यान-साधना का समय ही नहीं। यदि कोई आग्रह करे तो प्रायः उत्तर मिलता है कि हम कोई बुरा काम नहीं करते। अच्छे व्यक्ति बन कर जिया जाये तो धर्म-ध्यान में समय गंवाने की क्या आवश्यकता है?

उनका यह तर्क माना जा सकता है यदि वे हमें विश्वास दिला दें कि इस शरीर और जगत को कभी छोड़ना ही नहीं पड़ेगा। जब हमारा अगला क्षण भी निश्चित नहीं तो इस बात पर विचार करना बुद्धिमत्ता ही कही जायेगी कि जब हम शरीर छोड़ेंगे तो कहां जायेंगे। यह एक तथ्य है कि हमारे कर्म हमें अधोलोकों के गर्त में दुख भोगने पर भी बाध्य कर सकते हैं और स्वर्ग लोकों के ऐश्वर्य भोग दिलाने में भी समर्थ हैं। किन्तु उस मृत्यु का भय तो वहां भी बना रहेगा जिससे हम यहां सदैव आतंकित रहते हैं। यह चिन्ता तो स्वर्गलोक में पहुंचने पर भी रह जायगी कि समय चुक जाने पर हमें वहां से भी निकाला जायेगा। अपने मन में झांक कर देखें तो हर व्यक्ति यह चाहता है कि उसका स्थायी निवास हो जो उसे अनन्त काल तक सुख दे सके। शास्त्र वचन कहते हैं कि चौदह लोक नारायण पर्यन्त महाप्रलय या प्राकृत प्रलय में विलीन हो जायेंगे। उनमें मिलने वाले आनन्द स्थायी नहीं हैं। उनसे आगे शून्य की भाव समाधि है जहां जीव गहन अन्धकार में भटक कर विलीन हो जाता है। परम समाधि में लीन होने से संतप्त और विक्षुब्ध जीव को परम शान्ति मिल जाती है, किन्तु परम मोक्ष या परमानन्द प्राप्त नहीं होता।

अब यह प्रश्न शेष रह जाता है कि क्या परब्रह्म परमात्मा का स्वरूप और धाम वर्णन हमें परमानन्द की प्राप्ति करा सकता है? यह युग जागनी का है। जाग कर पहचान कर, तर्क की कसौटी पर कसे बिना बुद्धि किसी बात को स्वीकार नहीं करती तो मन का उधर लग जाना तो असम्भव ही है। उस पर विडम्बना यह कि आध्यात्मिक जगत के अनुभवों को शब्द देने में इहलोक के शब्द समर्थ नहीं हैं। सांसारिक शब्दों में वर्णन जड़ प्रतीत

होता है। उन्हें पढ़कर जगत को ही सत्य मानने की भूल हो सकती है। तो भी महामति प्राणनाथ जी ने यह अनुभव किया कि नश्वर जगत को घर मानकर उसमें सम्मोहित आत्माओं का ध्यान परमधाम में लगाने के लिए यहाँ के शब्दों में कुछ कहना होगा। उन्होंने परमधाम का स्वरूप हम सबके मन में बिठाने के लिये उसका वर्णन किया। उसी वर्णन के आधार पर यह वृत्त लिखी गयी।

एक बार एक बालक वृत्त की चरचा सुन रहा था। वक्ता से उसने प्रश्न किया कि आपको कैसे पता कि परमधाम ऐसा है? उन्होंने कहा हमें तो नहीं पता, जिसने देखा है उसने ऐसा बताया है। फिर उन्होंने एक कहानी बताई—एक मगरमच्छ का बच्चा समुद्र के तूफान के साथ उसके निकट एक कुएँ में जा गिरा। सांस लेने में उसे कठिनाई होने लगी। कुएँ में रहने वाले मेंढकों ने उसकी घबराहट का कारण पूछा तो मगरमच्छ ने कहा—यहां मेरा दम घुटता है। जहां से मैं आया हूं वह स्थान बहुत बड़ा और विशाल है। कितना बड़ा? मेढ़कों ने पूछा तो उसने कुएँ के सौ चक्कर लगा कर कहा इससे भी बड़ा? स्वभावत: मेंढ़कों ने उसे पागल समझा और हँसने लगे।

महामति ने जब परमधाम को धरती पर उतार देना—उसे इस लोक में प्रकट करना चाहा तो उन्हें बड़ी कठिनाई हुई। उन्होंने ऊँचे से ऊँचे शब्दों का सहारा लिया। धातुओं में स्वर्ण हीरा ज्वाहिर मोती, ऊँचाई के लिये पर्वत आकाश आदि की उपमा दी। विशालता के लिये आकाश और गहराई के लिये सागर के अतिरिक्त उनके पास क्या विकल्प था! उस सब वर्णन को उन्होंने अनन्त, असीम, अखंड, कोमल, चिन्मय, तेजोमय, सुगन्धि-युक्त कह कर मौन साध लिया—

'जोई जोई वचन आणु घणु ऊँचा, पण न आवे वाणी मां तेह।'
'चुप किये भी न बने, और कह कह रह पछतात ॥' श्री रास

महामति ने श्री मुखवाणी में परमधाम को गोलाकृत बता कर उसको पच्चीस पक्षों या मुख्य स्थलों में वर्णन किया। पच्चीस पक्ष इस प्रकार हैं :

धाम तलाव कुंजबन सोहे, माणिक नेहरें बन की जोये।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिये, पुखराज सात घाट जमुना जी लहिये ॥
आठ सागर आठ जिमीके, ए पच्चीस पख धाम धनी के।

(१) रंगमहल और अक्षर धाम (२) सात घाटों या उपवनों सहित यमुना नदी, (३) परमधाम को घेर कर आए कुंजबन, फूलबाग नूर बाग, दूब-दुलीचा, पश्चिम की चौगान, (४) लाल चबूतरा के सामने बड़े बन, मधुबन, महाबन, (५) पांच खंडों सहित पुखराज पहाड़, (६) यमुना

नदी को अपने अन्तर में समा लेने वाला हौज कौसर ताल, (७) रत्नमय विशाल माणिक पहाड़, (८) ज्वाहिरों की नहरें और महल (९) चार हार हवेली या बड़ी रांग।

इसके अतिरिक्त आठ सागर और आठ विशाल भूमिखंड जो असीम परमधाम के बाह्य घेरे पर उसे सीमा बद्ध करते दिखाई देते हैं। विरत या वृत्त में इन्हीं पच्चीस पक्षों का ब्योरे से वर्णन है।

चौदह लोक में जन्म मरण दुख-संताप और आवागमन के चक्र को देख कर आत्माएं दुखी हुईं। संसार में उन्हें शून्य में भटक जाने की साधना पद्धति उपलब्ध थी। महामति ने जब उन्हें उनके परमधाम का हृदयग्राही स्वरूप दिखा दिया तो जगत निःसार है, नाशवान है यह समझ कर इससे ऊपर उठ जाना उनके लिए सहज हो गया, विरत के अनुसार ध्यान धारणा उन्हें परम भाव भूमि में खड़ा कर देती है।

यह जगत परमधाम से कैसे अलग माना जाये जब वहाँ भी यहीं के समान महल, बगीचे, नदी, पर्वत और सागर हैं ? प्रायः लोग परमधाम को एक कल्पना मान लेते हैं। जबकि स्थिति और वास्तविकता इसके विपरीत है। जगत और परमधाम की स्थिति और सम्बन्ध बताने के लिए महाप्रभु हमें जगत की मूल सर्जन भूमिका में ले जाते हैं। वे कहते हैं कि सच्चिदानंद परमात्मा ही परम सत्य, वास्तविकता या हकीकत हैं। परमधाम उनके नूर और तेज का प्रकाश है। सत अंग अक्षर ब्रह्म उनकी सत्ता और आनन्द अंग श्यामा उनकी आनन्द कलाओं (आत्माओं) से युक्त हैं और चिद्घन ब्रह्म की चिद्-शक्ति से स्फुरित लीला में निमग्न हैं। अक्षर ब्रह्म अपने तीन 'पाद' या अंगों से सदैव चिन्मय में अखंड वर्तमान है। चौथे अव्यक्त स्वरूप में उनकी कृतत्व शक्ति या मूल प्रकृति परमधाम में देखे उपादानों में विकल्पों की कल्पना करती रहती है। वहीं वे कल्पना या स्वप्न की तरह अथवा बालक के द्वारा रेत से बनाए घरोंदों की तरह, वायु में तिरने वाले असंख्य रजकणों के समान अनगिनत ब्रह्मांड बनाकर मिटाया करते हैं। अक्षर ब्रह्म अपने अंशांश से नारायण रूप धर कर स्वयं ही उन ब्रह्मांडों को बना कर देखते हैं। उनकी दृष्टि विलास पर उनका अस्तित्व निर्भर करता है। ध्यान से ओझल होते ही वे शून्य में विलीन हो जाते हैं।

नित्य नये कौतुक और लीलाएं दिखाकर अपनी आत्माओं को आनन्दित करने वाले पुरुषोत्तम 'श्री राज' ने अपनी अंगरूपा आत्माओं को अक्षर ब्रह्म की लीला दिखा कर आनन्दित करने का भाव मन में लिया। माया के आवरण से सम्मोहित आत्माओं की सुरत को उन्होंने इस जगत में उतार दिया। यहां उन्होंने स्वप्न के समान जगत को सत्य जाना। जब परमधाम का परिचय देकर उन्हें जागृत करने का समय आया तो उन्होंने

परमधाम को ही कल्पना जाना। भक्त शिरोमणि श्री दर्शन दयाल के शब्दों में—

इक राजा अपने सपन विच, बैठा राज खुसाय।
ओह लड़के मोंया न मरया, सो नट्ठा कंड वलाय ।।
जो लश्कर रखे अपने, सो सुपने न होय सहाय।
जो गुजरी उसदे नाल कुछ, जागे तां कथा सुनाय ।।

एक राजा अपने स्वप्न में अपना राज्य खो बैठा। युद्ध में वह मरा तो नहीं भाग निकला। जागृतावस्था की उसकी सेना उसके स्वप्न में किसी काम न आई। वह जागा तो सपने में उस पर जो बीती थी उसे सबको सुनाने लगा।

आत्माओं को प्रियतम जागृत करके उनकी सुरत को जगत से लौटा लेंगे तो यह खेल मोहक स्वप्न की तरह आनन्द देगा किन्तु सुपन संसार में परमधाम का अहसास या स्मृति दिलाकर वे उनके आनन्द में बढ़ोतरी करना चाहते हैं। मरुभूमि में तालाब, निर्धनता में महलों का ख्याल या उपवास के बाद स्वादिष्ट भोजन की तरह परमधाम की लीला में अब उन्हें अधिक आनन्द होगा।

'ख्वाब में प्यारी लगी, अर्श की ठकुराई.' इस दुनियां का अस्तित्व स्वप्न जगत से बढ़कर कुछ नहीं। इसमें जीव एक नाटक के पात्र की तरह सूत्रधार की बनाई परिधि के अन्दर अपनी भावना और कर्मों की डोर से बँधा खेलता है। नाटक के पात्रों से उसमें यह भिन्नता है कि वह इसे ही यथार्थ मान कर यहीं के दांव पेंच लड़ाकर अपने जीवन सम्पदा एवं उपादानों को अक्षुण्य बना लेना चाहता है। अपना मूल स्वरूप एवं परमधाम को याद रखने वाले 'जीवन्मुक्त' जगत नाटक में दक्षता से अपनी भूमिका निभाते हुए भी मन से अपने मूल स्वरूप को नहीं भूलते। ऐसे महामानव संसार में भी धन्यता प्राप्त होते हैं। और परमधाम में भी उज्जवल मुख लेकर जागृत होते हैं। उस स्थिति में रहने के लिये सद्गुरु बार-बार परमधाम का ध्यान करते रहने का आग्रह करते हैं।

यह जगत एक इन्द्रजाल है। इसे देखने वाला इसका ही प्रारूप बन जाता है। बाह्य आकर्षण आन्तरिक दुर्बलताएं मनुष्य को कुपथ-गामी बननें की प्रेरणा देती है तो धर्म उसे दिशाबोध प्रदान करता है। परमधाम का स्वरूप वर्णन उसमें संसार की असारता का निश्चय और उसके अपने 'मूल चिन्मय स्वरूप' का अहसास बनाये रखता है। ऐसा जागरूक व्यक्ति आदर्श जीवन व्यतीत करता है। मृत्यु के समय उसकी आत्मा जीर्ण वस्त्रों अथवा केंचुली की तरह शरीर त्याग कर अपने चिन्मय शरीर में स्थित होती है।

मैंने इसी विरत या वृत्ति के सहारे परमधाम का पट देखा था। इस लिये जब पूज्य महाराज श्री धर्मदास जी ने इसे छपवाने का आदेश दिया तो उसे पुनः पढ़ जाने के उद्देश्य से मैंने उनकी आज्ञा को शिरोधार्य किया। उन्होंने मुझे इस कार्य के योग्य समझा इसके लिए मैं सदैव उनकी आभारी रहूंगी। जब भी किसी को पुष्प अर्पित किये जाते हैं तो उनकी सुवास हाथों में बस जाती है।

श्री अमृत राज जी ने अथक परिश्रम से दो माह तक देहली में रह कर इस कार्य को सम्पन्न किया। साधक इस वृत्त का सहारा लेकर मन में परमधाम का स्वरूप बसा लें इस आशा के साथ यह ग्रंथ सुधि पाठकों को समर्पित है—

बिनीत : विमला मेहता

आभार

परम वंदनीय, प्रात: स्मरणीय अनन्त श्री विभूषितजगद्गुरु श्री धर्मदास जी महाराज के दिव्य चरणों की छत्रछाया में बैठकर मुझे इस दिव्य ग्रंथ को देखने का अवसर मिला। बाल योगेश्वर वाणी विशारद् चर्चनी सम्राट गुरुदेव 'बाबा जी' श्री लक्ष्मी दासजी के प्रशिक्षण एवं स्नेह से इस 'वृत्ति' के रहस्य को जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुजनों ने इस अकिंचन बालक को महामना जुगलदास जी की बड़ी वृत्ति का सम्पादन करने की आज्ञा देकर मुझपर बड़ा उपकार किया। इससे पूर्व अनेक हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में सहयोग देने का अवसर प्रदान कर उन्होंने मुझे कृतार्थ किया। आप द्वै गुरुजनों के आशीर्वाद से ही इस कार्य में सफलता प्राप्त हुई ऐसा मेरा विश्वास है। गुरुजनों के चरणों में मैं अपने अन्त: करण से श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं।

बाल ब्रह्मचारी वाणी एवं चर्चनी विशारद महात्मा श्री छबीलदास जी महाराज ने महीनों काम करके सतत् परिश्रम से शुद्ध और सुन्दर प्रेस कापी तैयार की। इसके लिये मैं आप श्री के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूं।

इसके संशोधन कार्य में महात्मा श्री मुकुन्ददास जी, श्री ज्ञानदास जी एवं संत श्री भजनदास जी ने सहायता देकर इस बड़ी वृत्त को अनेक हस्तलिखित प्रतियों से मिलाकर शुद्ध रूप दिया। पुजारी खीखा प्रसाद जी, हजूरी रामदास जी ने प्रकाशन की प्रेरणा देते हुए सदैव मार्ग दर्शन किया। शक्तिनगर प्रणामी मन्दिर के ट्रस्टीगण ने बड़े प्रेम से हमारी हर सुविधा का ध्यान रखा। इसके लिये इन सबको हमारा साधुवाद स्वीकार हो।

एवरेस्ट प्रेस के संचालक श्री बगाई जी एवं उनके अनेक कर्मचारियों के भी हम आभारी हैं जिन्होंने बड़े स्नेह और लग्न से इस कार्य को पूर्ण किया।

इस संसार में कोई भी पूर्ण नहीं। कितनी सतर्कता से कार्य किया जाय, भूलें हो जाना स्वाभाविक है। विज्ञ-पाठक वृन्द दृष्टि दोष से रही या प्रेस जन्य त्रुटियों को क्षमा करते हुए, सुधारकर पढ़ने का कष्ट करें।

यह वृत्त हम सबकी मनोवृत्ति को निजधाम की ओर लौटा सके। इस आशा के साथ—

आपका
अमृतराज

॥ श्री जी साहेब जी की जै जै जै ॥

श्री निजधाम की वृत्त लिखी है

जो वृत्त के केवल श्री राज जी की मेहेर से उत्पन्न भई है, कहने सुनने से, और पढ़ने गुनने से, और अकल के बल से, प्रगट नहीं भई है। एतो सिर्फ मासूक के कदमों की बख्सिस हुई है, और आगे कदमों की मेहेर, निज धाम के कस्फ की लेहेर ल्याती थी, और उस लेहेर में, मोती अनभव के आते थे। अपर वह लेहेर फेर जात रहती थी, और संग उस लेहेर के, हाथ आए हुए जो मोती हैं, सो हाथ अकल के से, वेह भी जात रहते थे। सो अब मेहेर कदमों की ने, उस लेहेर को, बीच कोठरी कागद के कैद किया है, और कलम बन्द किया है, तो यह वृत्त लिखी जात है। जो बयान के और ग्रन्थों में, प्रगट लिखा गया है, वह बयान इनमें सूक्ष्म लिखा है।

अब श्री निजधाम को बयान सूक्ष्म करत हैं।

तो प्रथम रंग महल को एक कुरसी को चबूतरा हुआ। परमधाम की जिमी से, एक भोम भर ऊंचा, और बड़े मन्दिरों छे हजार मन्दिर की गिरद। तिन चबूतरा की किनार से, एक मन्दिर भर जागा छोड़ के। छे हजार मन्दिरों की एक हार आई। इन

मन्दिर की हार में बाहिरी तरफ, दो सै हाँस आए। एक-एक हाँस तीस-तीस मन्दिर को। सो हिसाब के तो दो सै ही हाँस हैं। परन्तु पूरव की दिस, एक हाँस बढ़ गयो है, तातें दो सै एक हाँस लेखो जात है, सो पूर्व की दिस जो पचास हाँस हैं। तिनमें से चौबीस हाँस इस तरफ रहे। और चौबीस हाँस उस तरफ रहे। बीच में बचे जो हाँस है। उन तीस-तीस मन्दिर के दो हाँसों में से, पाँच-पाँच मन्दिर लए। सो लेके इन दस मन्दिर को, एक न्यारो हांस भयो। इन हाँस के दाएँ बाएँ, एक-एक गुरज भयो। और इन गुरज के दाएँ-बाएँ जो हाँस हैं, सो हाँस पचीस पचीस मन्दिर के हैं। और बाकी के जो सर्व हांस हैं, तीनों दिसन के, सो सर्व हाँस तीस-तीस मन्दिर के आए हैं। और सर्व हाँसों और मन्दिरों के आगे एक मन्दिर भरे की रौंस आई है। एक दस मन्दिर के हाँस के आगे, दो मन्दिर की रौंस आई है। सो इन दस मन्दिर के आगे, दो मन्दिर को चौड़ो, और दस मन्दिर को लंबो, एक चबूतरा आयो। तिन चबूतरा की किनार पे, दस थंभ आए। और दस थंभ अकसी, मन्दिरन की दिवाल में आए। तिनकी नौ मेहेराबें, किनार पें आई खुली। और नौं मेहेराबें अकसी दिवाल में आई। तिन नौ मेहेराब में से, बीच की जो मेहेराब है, सो दो मन्दिर की चौड़ी और दो मन्दिर की ऊँची सोभायमान है। और दाएँ-बाएँ की, जो चार-चार मेहेराबें हैं, सो मन्दिर-मन्दिर की चौड़ी, और मन्दिर-मन्दिर की ऊँची बिराजमान हैं।

और दस मन्दिर के लम्बे चबूतरा में तीन चौक सोभित हैं। एक चौक बीच को, दो मन्दिर को लम्बो चौड़ो बराबर, और इनतें दाएँ-बाएँ जो दो चौक हैं। सो चार-चार मन्दिर के लम्बे, और दो-दो मन्दिर के चौड़े सोभित हैं। और दोनों चौकों के तीनों तरफ, कठेड़ा सोभायमान है। और दोनों चौक एक-एक सीढ़ी भर ऊँचे हैं। और बीच को चौक एक सीढ़ी भर नीचा है। इन चौक के दाएँ-बाएँ, दोऊ चबूतरों के दो कठेड़े सोभित हैं। और पीछली तरफ, एक सीढ़ी भर ऊँची, देहरी सोभित है। और आगे पूर्व दिस को, दो मन्दिर की चौड़ी, और दो मन्दिर की लम्बी, भोम भर नीची, सीढ़ी उतर गई है, चाँदनी चौक में। सौ सीढ़ी और बीस चाँदे के दाएँ-बाएँ, एक-एक परकोटा की दिवाल है। तिन दिवाल के ऊपर काँगरी है सो उतरती-उतरती जिमीलों चली गई है। और पौर की जो दो मन्दिर की ऊँची जो मेहेराब है, उन मेहेराब के दाएँ-बाएँ, देहेलानन की जो चार-चार मेहेराबें हैं, तिन विषे दो भोमें सोभायमान हैं। इन एक बड़ी मेहेराब के दाएं-बाएं, आठ-आठ मेहेराबें देहेलानन की जो आई है, और तिन बीच सौ सीढ़ी बीस चाँदे चढ़के, जब बीच के चौक में आइए, तब इहां होके छात, दो भोम ऊंची दिखाई देत है। और जो दहलानन में होके देखिए, तो छात भोम भर ऊंचे दिखाई देत है। और आगे दो मन्दिर को लम्बो, और मन्दिर भर को चौड़ो जो मन्दिर है, इन मन्दिर की पूर्व दिस की जो दिवाल है, उन

दिवाल में, मन्दिर भर को लम्बो चौड़ो, एक दरवाजा बीच में हुआ। उन दरवाजे के दाएं-बाएं, आध-आध मन्दिर भर जागा बची। उन जागा में जैसी कछू, बादसाही दरवाजों की, जोगवाई रहती है, ऐसी सर्व जोगवाई रही। दरवाजे में पूर्ण श्रृंगार, और पूर्ण सलूक, और पूर्ण सोभा रही। और दरवाजे को, चौखूंटी चारों तरफ, चौकठ सिन्दूरिया रंग की आई। तिन के भीतर दरपन रंग कमाड़ सोभित हैं। एक-एक कमाड़, आध-आध मन्दिर को चौड़ो, और एक-एक मन्दिर को ऊंची ही और किमाड़ो की हरी बाजू और बेनी सड़ इंदु अनि करके, सुन्दर चौक परेहैं। और चौकन के गृदवाय और बीच में, नंगन की पंक्ति सोभायमान हैं। दोऊ कमाड़ अपार सोभा को धरे हैं। और साँकल कुन्दा सब नूर नंगन के सोभायमान हैं। और इन चौकठ के ऊपर आई जो अकसी मेहेराब है, उस मेहेराब में दूसरी भोम के मेहेराब झरोखा जाली द्वार आए हैं। सो सब दिखाई देत हैं। और तिन के ऊपर अकसी मेहेराब के सिराने, तीन फूल मणिन के दिखाई देत हैं। और तिन के ऊपर जो-जो जोगवाई चाहिए, सो सर्व दिखाई देत हैं। और इन हाँस को दस भोम लों, लाल रंग मानिक वर्ण दिखाई देत है।

अब आगे देहरी पर हो, भीतर मन्दिर के गए।

तहाँ दोनों बगलों दो दरवाजे सोभित हैं। मन्दिरन में हो परिक्रमा के कारन। और आगे अठाईस थंम के चौक में को, एक दरवाजो सोभित

है। एक मन्दिर को चौड़ो, और एक मन्दिर को ऊंचो, माफिक पेहेले कमाड़ी के। तिन के आगे अठाईस थंभ को चौक दिखाई देत है।

अब आगे अठाईस थंभ को चौक नजर कर देखिए

उन चौक में हो के जो देखिए, तो छे-छे हजार मन्दिरन की दो हारें हैं। और छे-छे तिनके बीच हजार थंभन की, दोहोरी हार दिखाई देत हैं। दरवाजे के आगे दूसरी हार में, बारा मन्दिर कट रहे हैं, तिनको अठाईस थंभ को चौक आयो है। दस थंभ दरवाजे के आगे आए, और दस थंभ रसोई की हवेली की पूर्व दिवाल की, देहेलान के आगे के, और चार-चार थंभ दोऊ तरफ कट रहे जो मन्दिर हैं तिनके। दो थंम मन्दिर के दो खूंट आगे के, और दो थंभ मन्दिर के दाएं-बाएं के ए चार-चार थंम दोनों तरफ के, यह अठाईस थंभ का चौक हुआ। दरवाजे के आगे के जो थंभ हैं, सो दरवाजे की दिवाल से, एक मन्दिर की फरक सों आए हैं। और दरवाजे के आगे जो दो थंभ हैं, सो दो मन्दिर के फरक सों आए। और इनके दाएं-बाएं के, जो चार-चार थंम हैं, सो सब मन्दिर-मन्दिर के फरक सों आए हैं। और दरवाजे की मेहेराब, एक मन्दिर की चौड़ी, और एक मन्दिर की ऊंची जो आई है, सो रसोई की पूर्व की देहेलान के दरवाजे से, दोरी बन्ध बराबर आई, और रंग महल के पेले पारलों, सर्व हवेलियों और मोहोलों के दरवाजे, इसी दरवाजे के मुकाबिल आउत गए हैं। और

बाहिरी हार मन्दिरों की पूर्व की दिवाल में दो-दो मेहेराब, और बीच में एक-एक झरोखा आयो, और एक-एक दरवाजो तीनों दिसकी दिवाल में आयो। सो देखत के दरवाजे पाँच-पाँच, और हिसाब के चार-चार। पाखे को मेहेराब दोनों दिस जवाब देत है, सो एक तरफ को लियो जात है। और भीतरी हार मन्दिरन में, देखत के दरवाजे चार-चार, और हिसाब के तीन-तीन। और भीतरी हार मन्दिरन के दोनों तरफ, थंभन की हार आई और इन हार तें लेके तो नव चौक की किनार लों, चार-चार हार हवेलियों का एक फिरावा, ऐसे आठ फिरावा आए हैं। चार फिरावा चौरस हवेलियों के, और चार फिरावा गोल हवेलियों के, इन विध के आठ फिरावा हुए। तिन चौरस चार फिरावे में से, एक हवेली को वरनन करियतु हैं, सो याही विधसों सर्व चौरस हवेली, फिरावों की जानवी। और एक गोल मोहोल को वरनन करियतु हैं, सो सर्व चार फिरावे गोल हवेलियों की वाही विध जानवी। तातें प्रथम एक हवेली चौरस की विध कहत हैं।

चौरस हवेली नजर कर देखिए

के एक चौरस हवेली, बीस मन्दिर की लम्बी चौड़ी बराबर। और मध्य में चार हूं दिसन विषे, मन्दिर-मन्दिर के चार दरवाजे, और मन्दिर-मन्दिर के चार मन्दिर चार खूँट के, ए आठ मन्दिर अस्सी मन्दिर से सिवाए हैं। हवेली चौखूँटी, इस खूँट के

मन्दिर से लेके तो, उस खूँट के मन्दिर तक, तेईस मन्दिर हुए। या विधसों एक हवेली, तेईस मन्दिर की लम्बी चौड़ी बराबर हुई। ताके चौफेर एक हार थंभन की, पचीस-पचीस थंभ एक-एक दिस के, इस खूँट से उस खूँट तक पचीस थंभ हैं चारों दिसके, सौ थंभ भए। और छेहत्तर थंभ हवेली के भीतर के, इस कोने से लेके तो उस कोने तक, उनैस थंभ हुए, चौफेर के छेहत्तर। और इन थंभन के भीतर एक चबूतरा, कमर भर ऊँचो। चारों तरफ तीन-तीन सीढ़ियाँ, और किनार पे कठेड़ा, चारों दरवाजे छोड़ के। और इन चबूतरा की किनार पे, अरसठ थंभ आए, इस खूँट के थंभ तें लेके तो, उस खूँट के थंभ तक, सत्रह थंभ भए एक दिस के और चौफेर के अरसठ थंभ भए। चबूतरा के ऊपर गिलम बिछी है, सवा हाथ ऊँची पसमी। और थंभों से लग के पसमी तकिया धरे हैं। ऊपर चन्द्रवा तनो है, चौफेर नूर की झालर झलकत है। और मध्य चबूतरा के सिंघासन नूर को झलकत है, माफक जुगल किसोर के। और बाहिर हवेली के, जहाँ दो हवेली के दरवाजे जुड़े, तहाँ चौबीस मेहेराब आए। और जहां हवेली के चार कोने जुड़े, तहाँ चौबीस मेहेराब आए। और दरवाजे के दाएँ-बाएँ दो चबूतरा आए, मन्दिर-मन्दिर के लम्बे चौड़े, और कमर भर ऊँचे, तीन तरफ दो-दो सीढ़ियाँ। और दो-दो हवेली के बीच में, तीन-तीन गली, चौफेर सोभाएमान हैं, चारहूँ हारन में यही विध आई है। इन चार हार के परे, चार हार मूल

मिलावों की सोभित हैं। तिन मूल मिलावों से, जिन मूल मिलावे में, श्रीराज श्री ठकुरानी जी बिराजे हैं, उनका बयान करियतु हैं। वही विध सर्व गोल मोहोलों की जानवी।

अब गोल मोहोल मूल मिलावा नजर कर देखिए

तो एक गोल मोहोल कैसा है, के साठ मन्दिर और चार दरवाजा सोभित हैं। एक-एक दरवाजो एक-एक मन्दिर को। ताके दरवाजों समेत, सब चौंसठ मन्दिर को चौक हुआ। इन मन्दिरों के बाहिरी तरफ, एक हार चौंसठ थंभों की, और एक हार चौंसठ थंभों की, भीतरी तरफ आई। और इन थंभन के भीतर, एक चबूतरा गोल, कमर भर ऊँचा, किनार पे कठेड़ा, चारों दरवाजे छोड़ के। और इन चबूतरा की किनार पे, एक हार चौंसठ थंभों की और आई। दरवाजों के आगे चार हूँ दिसन विषे, तीन-तीन सीढ़ियाँ। पूर्व के दरवाजे के थंभ से लेके तो, दछिन के दरवाजे के थंभलों, सोरा थंभ भए। तिन के माहें पन्द्रह मेहेराबें आईं। यही जुक्ति चारों दरवाजों के खाँचों की जानवी। चबूतरा के ऊपर पसमी गिलम बिछी है, चबूतरा की जिमी सें, सवा हाथ ऊँची। सो गिलम बैठिए तो बैठ जाय, और उठिए तो उठ खड़ी होय। ऊपर चन्द्रवा हरे नूर का झलकत है, और चौफेर नूर की झालर झलकत है। चौंसठ थंभों को चौंसठ तकिया लगे हैं। मध्य में सिंघासन बिराजमान है, तिनके छे पाए, और पाइयों पर छे डाँड़े सोभित हैं, तिन छे

डाँड़ों ऊपर, दो छत्री सोभित हैं। तिन दो छत्रियों के ऊपर, आठ कलस बिराजमान हैं। छे कलस छे डाँड़ों के ऊपर, दो कलस दो छत्रियों के ऊपर सोभित हैं। छत्री के चौफेर नूर की झालर झलकत है। छत्री के तले मध्य में नीलवी की पाँखड़िन को, कमल लटकत है। और तले उन पाँखड़िन के, बढ़ के एक मानिक लटकत है। ऐसे दोए फूल दोऊ स्वरूपों पर लटकत हैं। सिंघासन में, एक गादी पर दोए चाकले सोभित हैं। और सिंघासन में चार तकिए नंगन के, और पाँच तकिए पसमी सोभाएमान हैं। आगे दो चौकी नूर की झलकत हैं। सिंघासन में श्री जुगल स्वरूप बिराजमान हैं। और गृदवाए सिंघासन के, बारा हजार सखी सोभाएमान हैं। और गोल मोहोलों के दरवाजों से दरवाजे मिले हैं, और खूँटों पर चौक खाली आउत गए हैं, थंभ मेहेराब नहीं आए हैं। यह जुक्ति गोल मोहोलों की आई है, इन विध सों चार हारें इन गोल मोहोलों की आई हैं। सो याही विध के आठ फिरावे आए हैं और आठ फिरावों के परे, चार हारें पंच मोहोलों आई हैं। तिन पंच मोहोलों के परे, नव चौक के आगे कुछ चौक बचा है। उस चौक के आगे नव चौक सोभाएमान हैं।

अब नव चौक नजर कर देखिए

तिन नव चौकों में से मध्य के चौक में, परवाली रंग मन्दिर सोभाएमान है। परवाली रंग मन्दिर से चौफेर रौंसलों, हजार-हजार मन्दिर

सोभित हैं । तिन हजार मन्दिर को हिसाब कहत हैं । तो पेहेली हार मन्दिरन से लेके, तो हवेली की हद्द तक के मन्दिर साढ़े छे ६॥ । दो मन्दिर दो हार के, और तीन मन्दिर तीन गलियन के, आगे डेढ़ मन्दिर डेढ़ गली का । भीतरी हार मन्दिर से, रसोई की हवेली के बीच में, जो तीन गली परी हैं, तिन में से डेढ़ गली लई, इन विध से छे मन्दिर और आधो मन्दिर लयो । आगे पेहेला फिरावा चौरस हवेलियों का, एक हवेली के मन्दिर तेईस, और बारा मन्दिर गलियों के, ताके एक फिरावे के सब मन्दिर एक सौ चार १०४ । दूसरा फिरावा गोल मोहोलों का, एक गोल मोहोल के मन्दिर चौंसठ, और सवा इकईस मन्दिर की लम्बाई, चारों गोल मोहोलों के मन्दिर पचासी ८५ । और बारा मन्दिर गलियों के, सब सन्तानबे मन्दिर भए ९७ । तीसरा फिरावा चौरस हवेलियों का, हर एक के मन्दिर छप्पन ५६ । चार मन्दिर चार दरवाजों के, और चार मन्दिर चार चार खूंट के । एक हवेली की लम्बाई, सत्रा मन्दिर की, चारों हवेली के अड़सठ, और बारा गलियों के, सब मन्दिर अस्सी भए ८० । चौथा फिरावा गोल मोहोलों का, हर एक के मन्दिर छप्पन, अरु चार दरवाजे के, लम्बाई हवेली एक की बीस मन्दिर की, चारों हार के मन्दिर अस्सी, और बारा गलियों के, सब मन्दिर बाँनबे भए ९२ । पाँचवाँ फिरावा चौरस हवेलियों का, हर एक के मन्दिर अड़तालीस, और आठ मन्दिर खूंटों और दरवाजों के । एक हवेली की

लम्बाई पन्द्रा मन्दिर की, चार हूँ हवेलियों के मन्दिर साठ हुए, और बारा मन्दिर गलियों के, सब जमा मन्दिर, बहत्तर भए ७२। छटमा फिरावा गोल हवेलियों का, एक हवेली के मन्दिर चालीस, और चार मन्दिर चार दरवाजे के, लम्बाई में मन्दिर साढ़े चौदा, चारों हार के अन्ठाउन, और बारा गलियों के। सब जमा मन्दिरों की, सत्तर मन्दिर भए ७०। सातमा फिरावा चौरस हवेलियों का, एक हवेली के मन्दिर बत्तीस, और आठ मन्दिर चार खूंटों और चार दरवाजों के। और लम्बाई हवेली की ग्यारा मन्दिर की, चारों हार के मन्दिर चवालीस ४४। और बारा मन्दिर गलियन के, सब जमा मन्दिरन की छप्पन मन्दिर भए ५६। आठमा फिरावा गोल मोहोलों का, हर एक के मन्दिर अठाईस, और चार मन्दिर दरवाजे के, लम्बाई हवेली की साढ़े दस मन्दिर की; ताके चार हूँ हवेलियों के मन्दिर ब्यालीस, और बारा मन्दिर गलियों के, सब जमा मन्दिरों की, चौंअन मन्दिर गलियों के; सब जमा मन्दिरों की; चौंअन मन्दिर भए ५४। आगे नवमा फिरावा पञ्च मोहोलों का, पाँच मोहोल चौपड़ की भाँत के। पांच मन्दिर तीन मन्दिर की लम्बाई, और चारों हार के मन्दिर बारा, और बारा मन्दिर गलियों के, सब जमा पंच मोहोलों के मन्दिरों की चौबीस भए। २४। पेहेली हार मन्दिरों तें नव हार लों, याने पंच मोहोलों तक, छे सै सन्ताउन मन्दिर भए ६५७ इनके आगे अठाईस मन्दिर को चौड़ो चौक पड़ो

२८। इन चौक की आखर की किनार से लेके तो, परवाली रंग मन्दिर लों, तीन सौ पन्द्रह मन्दिर भए ३१५ । ताके पेहेली हार मन्दिर धाम किनार की सें लेके तो, परवाली रंग मन्दिर लों, एक हजार मन्दिर भए १००० । और परवाली रंग मन्दिर से लेके तो, चार हूँ दिसन की रौंस किनार तक, हजार मन्दिर भर जागा होत है १००० । इन विध सों सर्व रंग भवन की, पूर्व की रौंस सें लेके तो, पछिम की रौंस तक, और दछिन की रौंस तें लेके तौ, उत्तर की रौंस तक, दो हजार मन्दिर की, लम्बाई और चौड़ाई बैठत है । और जितेक फिरावे पंच मोहोलों समेत, और नव चौक सहित जोगवाई, तले की भोम में बरनन करी, सो सर्व जोगवाई नवों भोमन में जानवी । कछुक जुक्ति भोम भोम में न्यारी आई है, जैसे तले की भोम में जो रसोई की हवेली है ।

रसोई की हवेली नजर कर देखिए

उन हवेली में तीन देहेलानें परी हैं, एक देहेलान दस मन्दिर की, पूर्व की दिवाल में परी है, दूसरी देहेलान दस मन्दिर की, उत्तर की दिवाल में परी है । उत्तर के दरवाजे तें लेके वायव्य कोने लों । दिवाल के आगे थंभ आए हैं । अैसेई देहेलान दछिन के दरवाजे तें लेके तो, नैरित्य कोने लों आई है । ए तीन देहेलानें तले की भोम में, रसोई की हवेली में ही आई हैं, और भोमन की हवेली में नहीं आई हैं । और बाहिर चौकठी दरवाजे के आगे, जो तीन चौक

आए हैं, दो चौक दो चबूतरा पर, और एक चौक दोनों के बीच में, ए तीन चौक इतहीं परे हैं, और भोमन में तीन चौक को भाव नहीं है, दस मन्दिर की लम्बी एक ही देहेलान आई है ।

आगे दूसरी भोम नजर कर देखिए

और दूजी भोम में भूलवनी आई है, और भोमन में नहीं आई है । लाल चबूतरा की किनार से ले के, ताड़बन में एक सौ दस मन्दिर लों जो मन्दिर हैं । तिन मन्दिरों के सामी भीतरी तरफ, चार चौकी सोरा हवेली आई हैं । तिन सोरा हवेली के एक सौ मन्दिर भए । प्रथम हवेली की प्रथम दिवाल सें ले के, चौथी हवेली की अन्त की दिवाल लों, इन एक सौ एक मन्दिर के ठौर, एक सौ दस मन्दिर आए । एकांनबे-एकानबे हाथ को एक-एक मन्दिर, ऐसे एक सौ दस मन्दिर आए । इन एक सौ दस मन्दिर की, एक सौ दस हारें आईं, ताके सब मन्दिर बारा हजार और सौ भए । बारा हजार मन्दिरों के बीच में, सौ मन्दिर को चौक पड़ो । उस चौक में चौसठ मन्दिर को चबूतरा, एक सीढ़ी भर ऊँचा, और चौखूंटा, सात-सात थंभ मध्य किनार में चारहूँ दिसन में, और चार थंभ चार खूंट के, आठ-आठ मेहेराबें चारों तरफ । चबूतरा के आसपास छत्तीस मन्दिर की परिक्रमा आई, एक सीढ़ी नीची । भूलवनी के मन्दिरों में, तीस हाथ को दरवाजो, और तीस ही हाथ की दरवाजे के दाएँ-बाएँ दिवाल रही,

और कुछ सकुड़ के मन्दिरन की मेहेराबें, भूलवनी की मेहेराबन सों मुकाबिल भई हैं, तीन हूँ तरफ उत्तर पूर्व पछिम में। और भूलवनी के चारों तरफ तीन-तीन गली रही, जैसी कछू हर हवेली के आसपास रहत आई है। इहाँ इन दूजी भोम में यह जुक्ति न्यारी है। और तीजी भोम में चार मन्दिर की देहेलान की, और नीले-पीले आसमानी रंग मन्दिरों की, जुग्ति न्यारी है। और चौथी भोम में निरत की हवेली की जुग्ति न्यारी है। बीस-बीस मन्दिर तीन हूँ तरफ, दछिन पछिम उत्तर, सो तीन रंग के हैं। दछिन के मन्दिर लाखी रंग, पछिम के मन्दिर सेत रंग, उत्तर के मन्दिर पीले लिबोई रंग, और पूर्व दिस मन्दिरों की दिवाल के ऊपर, बीस-बीस थंमन की दो हारें आई। सो थंभ मेहेराब सब अत्यन्त नीले रंग हैं। और मन्दिरों के बाहर भीतर एक-एक हार थंभन की आई, सो थंभों का रंग पुनः दिवालों के रंग माफक। यह हवेली अनेक सोभा और श्रृंगार रखती है, सो कहाँ लों कहिए। पछिम को पीठ दे के श्रीराज श्रीठकुरानी जी निरत देखत हैं, नवरंग बाई को, सकल सुन्दर साथ सहित। मध्य में जुगल स्वरूप सिंघासन पर बिराजत हैं, यह जुग्ति इन भोम में न्यारी है। और पाँचमी भोम में सैन की जुग्ति न्यारी है। और छठमी में गृदवाय पड़सालों की, और सुखपालों की जुग्ति न्यारी है। और सातमी और आठमी भोम में, हिंड़ोलों और तालियों की जुग्ति न्यारी है। और नवमी भोम में छ हजार देहेलानों की जुग्ति न्यारी

है, जो दिवाल के आगे दोहोरी दर देहेलान आई है, और भीतर को चाँदे और सीढ़ियाँ। और दसमी भोम में सर्व जोगवाई न्यारी है।

दसमी भोम नजर कर देखिए

चबूतरा तें ले के गुमटियन के मन्दिर लों, चाँदनी को गोलाकृत चबूतरा, दो हजार मन्दिर के तीसरे हिस्सा में आया है। छे सै छयासठ मन्दिर में चाँदनी को चबूतरा आयो, और चबूतरा के दाएँ-बाएँ और आगे पाछे, छे सै और सरसठ मन्दिर भर चाँदनी रही। और चारहूँ दिसन में चबूतरा को सीढ़ियाँ तीन-तीन, और चबूतरा के चारों कोने में चार चेहेबच्चा, चबूतरा के बराबर। चेहेबच्चा की चाँदनी तें, तीन तरफ तें सीढ़ियाँ उतरी, चाँदनी की जिमी को तीन-तीन। और चेहेबच्चा की पाल तें, सीढ़ियाँ जल में को उतरी तीन-तीन, चारहूँ दिसन तें। और इन चेहे-बच्चे के आसपास फूल बाग, चारहूँ कोनो पर। और चबूतरा के बीच में सुन्दर नूर के बिछौने बिछे हैं, तिन पर सिंघासन और कै कुरसियाँ धरी हैं। और किनार पर, एक-दो मन्दिर को चोड़ो चबूतरा, चाँदनी की जिमी सें कमर भर ऊँचो। तिन में से एक मन्दिर की चौड़ाई में, गुमटियन के मन्दिर आए। और मन्दिरन के भीतरी तरफ, मन्दिर भर चौड़ी रौंस रही। तिन रौंस के किनारे कठेड़ा। और दो सै एक हाँस में दो सै एक चाँदो, चाँदन सें दोनों तरफ तीन-तीन सीढ़ियाँ, चाँदनीपे उतरने की। और मन्दिरन

में चारों तरफ दो-दो मेहेराबें खुली, और दो मेहेराब को बीच में ले के, एक अकस, ऐसे चारों तरफ। और ऊपर हर एक मन्दिर के दो-दो गुमटियाँ। दरवाजे के हाँस में दस-दस थंभन की चार हारें, तिन चालीस थंभ के ऊपर चाँदनी, चाँदनी के चारों खूँटों चार गुमटियाँ, लाल मानिक की। और इन मन्दिरन के आगे, मन्दिर भर को चौड़ो छाजा आयो, तिन छाजा की किनार पे कठेड़ा। आगे इन छाजा के ढड़कतो छाजा आयो, और दो सै एक गुरजन पे, दो सै एक बड़े गुमट आए, और दो गुमट बड़ों के बीच में, साठ-साठ गुमटियाँ छोटी-छोटी आईं। मानिन्द काँगरिन के। या विध सों इन दसमी चाँदनी का बहुत कुछ विस्तार है, परन्तु या में बहुत सूक्ष्म लिखो है। सो इन चाँदनी पर होके, सर्व निजधाम की सोभा देख के, तले नवमी भोम में आए। नौमी भोम में दो सै एक हाँस के छज्जा पै दो सै एक सिंघासन, और कुरसियों की सोभा देख के, आठमी भोम आए। आठमी तें सातमी, सातमी तें छटमी, छटमी तें पाँचमी, पाँचमी तें चौथी भोम आए। और चौथी तें तीसरी, और तीसरी तें दूसरी, दूसरी तें प्रथम भोम में आए। और जो कछू देख आए, ताकी गिन्ती करत हैं, बहुत सूक्ष्म, किस वास्ते के, ए बयान और वृत्तियों में विस्तार पूर्वक कहो है। ता कारन इहाँ संक्षेपकर जनावत हैं।

गिनती मन्दिर थंभ गलियों की

के एक भोम प्रथम में किनार पै जो, दोहोरी हार

मन्दिरन की फिरी है, उन दोहोरी हार के मन्दिर, बारा कम बारा हजार। एक भोम के मन्दिर बारा, अठाईस थंभ के चौक के, हर भोम में घटत गए हैं। ताके एक भोम के मन्दिर ग्यारा हजार नौ से अठासी ११६८८। और नवों भोम के मन्दिर, एक लाख सात हजार आठ सै बांनबे १०७८९२। और इन दोहोरी हार मन्दिरन के माहें, जो थंभन की तीन हारें हैं, दो हारें बीच की, और एक हार रसोई की हवेली दिस की। इन प्रथम भोम में तीन हार विषे, थंभ सत्रा हजार नौ सै चौरासी १७९८४। और नवों भोमन के थंभ, एक लाख इकसठ हजार आठ सै छप्पन १६१८५६। आठ दूनी सोरा थंम इन अठाईस थंभ के घटे, हर भोम में। आगे चार हारें चौरस हवेलियों की सोभित हैं, तिन में से एक हवेली के मन्दिर अठासी ८८। अस्सी मन्दिर हवेली के, और चार मन्दिर चार दरवाजे के, और चार मन्दिर चार खूंट के ए अठासी मन्दिर एक हवेली के। और नौ सौ चोबीस हवेली के, इक्यासी हजार तीन सै बारा ८१३१२। और नवों भोम की हवेलियों के मन्दिर, सात लाख इकतीस हजार आठ सै आठ भए ७३१८०८। इन सब हवेलियों में से एक हवेली के थंभ, दो सै चवालीस २४४। और सर्व फिरावे के थंभ, दो लाख पचीस हजार चार सै छप्पन भए २२५४५६। और नवों भोमन के थंम, बीस लाख उन्तीस हजार एक सौ चार भए २०२९१०४। अब चार हार गोल हवेलियों के मन्दिर, हरेक फिरावे में

नव सै चौबीस हवेली। एक मोहोल के मन्दिर चौंसठ ६४। और नव सै चौबीस हवेली के मन्दिर, उन्सठ हजार एक सौ छत्तीस ५९१३६। और नवों भोमन के मन्दिर, पाँच लाख बत्तीस हजार दो सै चौबीस ५३२२२४। अब एक गोल मोहोल के थंभ एक सौ बाँनबे १९२। और नव सै चौबीस हवेली के थंभ, एक लाख सतत्तर हजार चार सै आठ थंभ भए १७७४०८। और नवों भोमन के थंभ सब गोल मोहोलों के, पंद्रा लाख छ्याँनबे हजार छे सै बहत्तर हुए १५९६६७२। तीसरा फिरावा चौरस हवेलियों का, एक हवेली के मन्दिर चौंसठ ६४। और नौ सै चौबीस हवेली के मन्दिर, उन्सठ हजार एक सौ छत्तीस ५९१३६। और नवों भोमन के मन्दिर, पाँच लाख बत्तीस हजार दो सै चौबीस ५३२२२४। और इस ही फिरावे की एक हवेली के थंभ, एक सौ बहत्तर १७२। और नौ सै चौबीस हवेली के थंभ, एक लाख अण्ठाउन हजार नव सौ अठाईस १५८९२८। और नवों भोमन के थंभ, चौदा लाख तीस हजार तीन सै बाउन १४३०३५२। आगे फिरावा चौथा गोल मोहोलों का, एक मोहोल के मन्दिर छप्पन, ५६। और नव सै चौबीस हवेली के मन्दिर, इंक्यावन हजार सात सै चवालीस ५१७४४। और नवों भोमन के मन्दिर, चार लाख पैंसठ हजार छे सै छ्यानवे ४६५६९६। और इसी फिरावे की एक हवेली के थंभ, एक सौ अरसठ १६८। और नव सै चौबीस हवेली के थंभ, एक लाख पचपन हजार दो सै बत्तीस १५५२३२। और नवों भोमन

के थंभ, तेरा लाख संत्तानवे हजार और अठासी १३९७०८८। अब पांच में फिरावे चौरस के, एक मोहोल के मन्दिर छप्पन ५६। और नव सै चौबीस हवेली के मन्दिर, इक्याउन हजार सात सै चवालीस ५१७४४। और नवों भोमन के मन्दिर, चार लाख पैंसठ हजार छे सै छ्यांनबे ४६५६९६। और इस ही फिरावे के एक मोहोल के थंभ, एक सौ अड़तालीस १४८। और नौ सौ चौबीस मोहोल के थंभ, एक लाख छत्तीस हजार सात सै बावन १३६७५२। और नवों भोमन के थंभ, बारा लाख तीस हजार सात सै अरसठ १२३०७६८। आगे छठमा फिरावा गोल मोहोलों का, एक हवेली के मन्दिर चालीस ४०। और नव सै चौबीस हवेली के, छत्तीस हजार नौ सै साठ ३६९६०। और नवों भोमन के मन्दिर, तीन लाख बत्तीस हजार छे सै चालीस ३३२६४०। अब इनहीं फिरावे के एक हवेली के थंभ, एक सौ बीस १२०। और नौ सै चौबीस हवेली के थंभ, एक लाख दस हजार आठ सै अस्सी ११०८८०। और नवों भोमन के थंभ, नौ लाख सन्तानबे हजार नौ सै बीस ९९७९२०। अब सातमा फिरावा चौरस हवेलियों का, एक हवेली के मन्दिर चालीस ४०। और नौ सै चौबीस हवेली के मन्दिर, छत्तीस हजार नौ सै साठ, ३६९६०। और नवों भोमन के मन्दिर, तीन लाख बत्तीस हजार छे सै चालीस ३३२६४०। इस ही फिरावे के एक हवेली के थंभ छ्यांनबे ९६। और नौ सै चौबीस हवेली के थंभ, अठासी हजार

सात सै चार ८८७०४। और नवों भोमन के थंभ, सात लाख अण्ठानवे हजार तीन सै छत्तीस ७९८३३६ । आगे आठमा फिरावा गोल मोहोलों का, एक हवेली के मन्दिर अठाईस, २८, और नौ सै चौबीस हवेली के मन्दिर, पचीस हजार आठ सै बहत्तर हुए २५८७२। और नवों भोमन के मन्दिर, दो लाख बत्तीस हजार आठ सै अड़तालीस २३२८४८। इस ही फिरावे के एक हवेली के थंभ चौरासी ८४, और नौ सै चौबीस हवेली के थंभ, सतत्तर हजार छे सै सोरा ७७६१६। और नवों भोमन के थंभ, छे लाख अण्ठानवे हजार पाँच सै चवालीस ६९८५४४। आगे पंच मोहोलों सें, एक पंच मोहोला के मन्दिर पांच ५। और नौ सै चौबीस पंच मोहोलों के मन्दिर चार हजार छे सै बीस ४६२०। और नवों भोमन के मन्दिर, इकतालीस हजार पाँच सै अस्सी ४१५८०। एक पंच मोहोला के थंभ बीस २०। और नौ सै चौबीस पंच मोहोला के थंभ, अठारा हजार चार सै अस्सी १८४८०। और इनही के नौ भोमन के थंभ, एक लाख छयासठ हजार तीन सै बीस १६६३२०। एक फिरावे की हवेली नौ सै चौबीस ९२४। और नव फिरावे की हवेली, आठ हजार तीन सै सोरा भए ८३१६। और नवों भोमन की हवेली, चौहत्तर हजार आठ सै चवालीस ७४८४४। एक भोम की खड़ी गली नवों फिरावे की, छे सौ तेरानबे ६९३। और नवों भोमन की गली, छे हजार दो सै सैंतीस ६२३७। और एक भोम की आड़ी गली, परिक्रमा

की भाँत की एक सौ बारा ११२ नौ फिरावे लों। और नवों भोमन की गली आड़ियाँ, दस सौ आठ १००८, और नव चौक में से एक चौक के, सर्व दो पुड़ा त्रिपुड़ा, चौपुड़ा, और हवेलियों के मन्दिर, बारा हजार १२०००। और नवों चौकन के मन्दिर, एक लाख आठ हजार १०८०००। और नवों भोमन के मन्दिर, नव लाख बहत्तर हजार भए ९७२०००। और एक चौक के थंभ, तेरा हजार एक सौ छेहत्तर १३१७६। और नव चौक के थंभ, एक लाख अठारा हजार पाँच सै चौरासी हुए ११८५८४। और नवों भोमन के थंभ, दस लाख सरसठ हजार दो सै छप्पन १०६७२५६। सर्व दोहोरी हार के नवों भोमन के मन्दिर, और नवों फिरावे के नवों भोमन के मन्दिर, और नव चौक के नवों भोमन के मन्दिरों की जमा, पचास लाख सैंतालीस हजार दो सै अड़तालीस मन्दिर भए ५०४७२४८, और एक कोट के तले ऊपर सर्व थंम होत हैं। या विध सें सर्व लीला अन्दर की देख के अब बाहिर आए।

अब दरवाजा तीनों घाट परिक्रमा

अब दरवाजे में खड़े होके, तीन हूँ घाटन को देखिए, तो पूर्व की दिस पाँच-पाँच सौ मन्दिर की चौड़ाई में, तीन घाट सोभायमान हैं, अनार अमृत और जाम्बू को। और मध्य में जो पाँच सौ में अमृत बन है, तिन के तीन हिस्सा भए। तेरासी वृक्ष और एक सौ सरसठ मन्दिर भर जागा, चाँदनी चौक के

दाएँ-बाएँ रही, और एक सौ छयासठ मन्दिर भर की चौड़ाई में, द्वार के आगे चाँदनी चौक रहो। और तेतीस-तेतीस मन्दिर के, लम्बे चौड़े चौखूंटे दो चबूतरा रहे। उत्तर के चबूतरा पें लाल दरखत, दछिन के चबूतरा पे हरो दरखत, इनको दो भोम तीसरी चाँदनी और चौक के तीनों तरफ तेरासी तेरासी वृक्ष हैं। और कोने के दो वृक्षन करके, चौरासी से दिखाई देत हैं। और चाँदनी चौक को चबूतरा, कमर भर ऊँचो, और पूर्व की दिस वृक्षन की बीच की मेहेराब के माहें, चाँदनी चौक के चबूतरा सें, एक चबूतरा चलो। सो चबूतरा घाट की सन्ध को जो चबूतरा है, तिनहीं के माफिक, एक इत आयो है। सो जमुना जी लों चल के, जमुना जी की रौंस को लगो है, जिमी में तीन सीढ़ी ऊँचा है। इन चबूतरा के ऊपर हो चले जाइए, और सीधे चल के श्री जमुना जी की रौंस पर जाइए। ऐसे चबूतरा दो मन्दिर के चौड़े, और जिमी सें तीन सीढ़ी ऊँचे, दो घाट की सन्ध में सर्व घाटन में आए हैं। एक यही रस्ता घाट के बीच में आयो है, और पाट घाट की मध्य मेहेराब को लगो है। और इन तीन घाट में अपार जोगवाई है, सो बरनन करेतें, पार नहीं पाइयतु हैं। तातें इन दो घाट अमृत जाम्बू की सोभा देखते-देखते, अग्नि कोने के चेहेबच्चा पर आए।

अब सोरा हाँस को चेहेबच्चा नजर कर देखिए

सो यह चेहेबच्चा कैसो है, के गोलाकृत सोरा

पहल बिराजमान है। एक-एक पहल तीस-तीस मन्दिर को। इन चेहेबच्चा की चार सै अस्सी मन्दिर की गृद परवान है, और एक सौ साठ मन्दिर को लम्बो चौड़ो है। चेहेबच्चा को एक हांस धाम की रौंस के हांस में मिलो है। चेहेबच्चा धाम की रौंस के हांस को, पेट में लेके तीन तरफ कुसादे हुआ। और चेहे-बच्चा को धाम रौंस से लगो जो हांस है, उन हांस के मध्य में, धाम के अग्नि कोने पर आई जो इक्या-वनी गुरज है, सो गुरज चेहेबच्चा के बीच में आई है। और चेहेबच्चा को मन्दिर भर की चौड़ी, चारों तरफ पाल सोभित है। हांस भर धाम रौंस से मिली है, और इन चेहेबच्चा की पाल की दो किनारे हैं, सो एक किनार बन दिस रही, और दूजी किनार जल दिस रही। सो जल की दिस विषे, चार दिसन में चार चाँदे रहे, और चाँदन के दोऊ तरफ, तीन-तीन सीढ़ियाँ उतरी। तीन सीढ़ी उतर के चबूतरा पर जैए। सो चबूतरा चौफेर फिरो है, इहाँ होके जल क्रीड़ा कीजे। और बन दिस की जो किनार है, तहाँ तीन तरफ चाँदे आए। और हर एक चाँदे से दोनों तरफ भोम भरे की सीढ़ियाँ उतरी। और चारहूं दिस जो सीढ़ियाँ चाँदे परे हैं, सो एक चाँदे से दूजे चाँदे तक, एक सौ बीस मन्दिर का तफावत है। और चाँदे को छोड़ के, चेहेबच्चा के दोनों तरफ कठेड़ा, जल की दिस और बन की दिस। और चेहेबच्चा की दिवाल, जहाँ तें धाम रौंस को छोड़ के कुसादे भई है, उहाँई से जाम्बू बन के वृक्ष किनारें लग

चले। सो जाम्बू के वृक्ष पूर्व दिस के चाँदे तक आए। और पूर्व दिस के चाँदे से लेके तो, दछिन के चाँदे लों, नारंगी को बन आयो है। और दक्षिण के चाँदे से लेके तो, चेहेबच्चा के नैरित्य कोने तक, इहाँ बट पीपल के वृछों की छत्री लगी है। और चेहेबच्चा के दो कोने, एक नैरित्य को, दूजो बायब को, सो बायब्य कोने से जाम्बू के वृक्ष चले, सो उत्तर के चाँदें लों त्रेपन बृक्ष आए हैं, तिन में दो-दो मन्दिर की बाउन मेहेराबें आईं। और उत्तर के चाँदे से पूर्व के चाँदे तक, साठ वृक्ष आए जाम्बू के। और पूर्व के चाँदे से दछिन के चाँदे तक, साठ वृक्ष और उन्सठ मेहेराबें आईं नारंगी के वृक्षों की। और दछिन के चांदे सें लेके तो, नैरित्य के कोने तक, बट पीपल के वृक्षों ने छत्री बाँधी है। और चेहेबच्चा के तीस मन्दिर, धाम रौंस की दिस आए, तातें उनके गृद कोई वृक्ष न कहे। चेहेबच्चा के जल की किनार दिस, पछिम दिस विषे जो चाँदो है, और धाम के अग्नि कोने विषे आई जो इक्यावनी गुरज है, सो गुरज और यह चाँदो, दोरी बन्ध बराबर आए हैं। उन गुरजतें तीस मन्दिर इस तरफ, और तीस मन्दिर उस तरफ, तिन में से पन्द्रा मन्दिर इस तरफ के, और पन्द्रा मन्दिर उस तरफ के, इन तीस मन्दिर कों चेहेबच्चा लगो है। आधो हाँस इतको लेके, और आधो हाँस उत को लेके, चेहेबच्चा के चाँदे पे चले आइए। रौंस तें चेहेबच्चा की पाल, एक तिल भर ऊँची नीची नहीं है, इततें उत और उततें इत बेसक

चले आइए। और चेहेबच्चा के दोनों कोने सें, भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी, चारों चेहेबच्चन ते याही विध। और चेहेबच्चा ने, चालीस वृक्ष जांबू के, और चालीस वृक्ष नारंगी के रोंधें हैं, असी वृक्ष की जागा चेहेबच्चा ने दाबी है। और बट पीपल के दो वृक्ष चेहेबच्चा के बराबर आए हैं। और नैरित्य कोने में, जो चेहेबच्चा की सीढ़ियाँ उतरी हैं, उन सीढ़ियों तक बट पीपल के वृक्षों ने छत्री मंडल बाँधों है, और उततें नारंगी ने छत्री बाँधी है, सो दोनों छत्री मिल गई हैं। और चेहेबच्चा के जल के ऊपर, बट पीपल के दो वृक्षों ने पाँच छत्री बाँधी हैं। और इन बुलन्द चेहेबच्चों से, गुप्ता गुप्त रौंस में होके नेहेरें चली हैं, सो नेहरें नव चौकके चारों कोने विषे, जो चार बड़े गुरज हैं, उन गुरजन में जात हैं। और उन गुरजन तें, भोम भोम के गुरजन में होके, भीतरा भीतर दसमी भोम विषे, जो चेहे बच्चा हैं, उन चेहेबच्चन में पहुँचत हैं। गुप्ता गुप्ति चारहू चेहेबच्चन तें, चारहू नेहेरें दसमी के चेहेबच्चन को जात हैं। आगे बट पीपल की चौकी है।

बट पीपल की चौकी नजर कर देखिए

बट पीपल की चौकी लम्बी पन्द्रासै मन्दिर की, और चौड़ी पाँचसै मन्दिर की। तिन लम्बाई में से पन्द्रा पन्द्रा मन्दिर, दोनों चेहेबच्चन में आए, और बट पीपल के वृक्षों की लम्बाई में, पन्द्रा पन्द्रा वृक्षों

की पाँच हारें, और चौड़ाई में, पाँच पाँच की पन्द्रा हारें, ताके सब पचहत्तर वृक्ष भए। और चौद चौको छप्पन चौक, वृक्षन के दरम्यान में आए। और इन वृक्षनतें चारहूँ तरफ, पचास पचास मन्दिर भर जागा रही, पचास मन्दिर भर धाम रौंसकी तरफ, और पचास पचास मन्दिर भर दोनों चेहेबच्चों की तरफ, और पचास मन्दिर भर कुंजबन की तरफ जागा रही, तिन जागा में चहेबच्चा और नेहेरें आईं। और बट पीपल के एक वृक्षतें दूसरे वृक्ष तक, सौ मन्दिर का छेह सोभित है, और चेहबच्चा लों, सौ मन्दिर का फरक है, और चेहेबच्चातें वृक्षलों, पचास मन्दिर का फरक है। एक चौक वृक्षों का, तिनकी चार सै मन्दिर की गिरद, और इहां सौ चेहेबच्चा आए हैं। छप्पन चेहेबच्चा वृक्षों के चौकों के, और सोरा चेहेबच्चा, धामकी रौंस आगे के, और सोरा चेहेबच्चा कुँजबन की तरफ, और चार चेहे-बच्चा नारंगी की दिस, और चार फूलबाग की दिस, और चार चेहेबच्चा पाँचमी चाँदनी के चारों खूंटों, इन विध सों ए सौ चेहेबच्चा भए। सोरा सोरा चेहेबच्चा की छे हारें तले, और चार ऊपर चाँदनी के। और एक भोम में एक सौ तीस हिंड़ोला, और चार भोम के पाँच सौ बीस, हिंडोले में चकरी की भाँत की जंजीरें, जब हिंडोला तालियों के कारन, तरफ दूसरे हिंड़ोला के चलो, तब जंजीर उकिल चली, और बढ़ चली, और जब हिंडोला तालियाँ देके पीछा फिरने लगा, तब जंजीर लिपिड़ चली, और

सकुड़ चली, और जब हिंड़ोला अपने ठौर पहुँचा, तब न घट और न बढ़ रहा, मध्य भाग में रहि गया। और पूर्व से पछिम को नहेरेन के चबूतरा छे, और उत्तर से दक्षिन लों सोरा। चबूतरा कमर भर ऊँचे जिमी से, इन चबूतरों पर चेहेबच्चा, और नेहेरें आई हैं। हर एक बृक्ष के चारों दिस विषे चार नेहेरें, और कोनों पर चेहेबच्चा दिखाई देत हैं। और चार बृक्ष की मेहेराब के बीच में एक चेहेबच्चा, और चार चेहेबच्चों के बीच में एक बृक्ष, और चार नेहेरें चार दिसन में, और चेहेबच्चा कोनों पर है, हर एक बृक्ष के, और बृक्ष भी बीच में ऊपर माफिक चबूतरा के विराजमान है। और धाम की दिस पचास ठौर रौंस से सीढ़ियाँ उतरी हैं, हर एक हाँस के मध्य भाग में, सो अड़तालीस चाँदे तो बीच में आए, और दो चाँदे चेहेबच्चा सों लगके, रौंस से सीढ़ियाँ उतरी हैं। इन बट पीपल की चौकी की, चार भोम पाँचमी चाँदनी, श्री निजधाम की भोमन सों भोमें मिली हैं। बन की दूसरी भोम सें, धाम की पेहेली भोम में आइए, और तीसरी तें दूसरी में, चौथी तें तीसरी में और पाँचमी बन की भोम तें, चौथी निजधाम की भोम में आइए। इनही विध से सर्व भोमें रंग महल की, और बन की जानवी। बन की पाँचमी भोम की चांदनी की छात, निजधाम के चौथी भोम के छाजा सों, एक होरही है। बट पीपल की चाँदनी से, दौड़ते-दौड़ते रंग भवन की चौथी भोम में चले जाइए। और बट पीपल की चाँदनी पर, चारों खूंटों चार चेहेबच्चा, तिन में फुहारे छूटत

हैं। और बट पीपल की चौकी की, चाँदनी की पूर्व की किनार से, छ्यासी मन्दिर भर पछिम दिस चल के खड़े रहिए, और तरफ उत्तर की नजर कीजे, तो हवेली नृत्य की दिखाई देत है। और पूर्व दिस चेहेबच्चा, और नारंगी जाम्बू को घाट दिखाई देत हैं, और दछिन दिस बड़े बन के पाँच बृक्ष, और कुँज बन दिखाई देत हैं। और पछिम दिस विषै पुन चेहेबच्चा, और बडो बन, और फूल बाग दिखाई देत हैं। या विध सों बट पीपल की चाँदनी पर हो, चारों दिस की सोभा दिखाई देत है।

अब आगे फूल बाग नजर कर देखिए

तो फूल बाग कैसो है, के तले जो नूर बाग आयो है, ताके बगीचों के किनारे छ्यासठ हजार फील पाए आए हैं। उन फील पायों के ऊपर पट के, एक चबूतरा आयो, धाम रौंस तें तीन सीढ़ी नीचा, तिन चबूतरे के ऊपर, तीन-तीन मन्दिर के चौड़े, ग्यारा चबूतरा खड़े, और ग्यारा चबूतरा आड़े आए। खड़े चबूतरा पूर्व से पछिम कों, और आड़े चबूतरा दक्षिन से उत्तर कों। तिन चबूतरों के माहें, दस-दस बगीचन की दस हारें आई हैं। चबूतरा बगीचों की जिमी सें कमर भर ऊँचे, ताके सब बगीचा सौ भए। तिन एक-एक बगीचा में नौ-नौ चेहेबच्चा, और सोरा सोरा चौक आए। नेहेरन तें, और चेहेबच्चन तें, बगीचों में सीढ़ियाँ उतरीं, तीन-तीन हर दिस के विषे। और एक-एक बगीचा में, जो सोरा-सोरा

बगीचा छोटे आए हैं, तिन सोरा में से जो एक बगीचा है, तिन बगीचा की छत्तीस मन्दिर की लम्बाई चौड़ाई बराबर। तिन विषे तेरा-तेरा बृक्षन की तेरा हारें, तिन में बारा-बारा चौकन की बारा हारें आईं। ताके सब चारहूँ चौकन के, लम्बाई में मन्दिर एक सौ चवालीस भए। और मन्दिर-मन्दिर की चौड़ी तीन छोटी नेहेरें, और तीन-तीन मन्दिर के चौड़े बड़े चबूतरा, जो हरेक बगीचा के दाएँ-बाएँ दो दो आए हैं। तिन में से एक दिस का एक लिया, इन विध सों एक बगीचा, डेढ़ सै मन्दिर को लम्बो-चौड़ो बराबर हुआ। और हर एक बगीचा में पाँच चेहेबच्चा फुहारन के बीच सें, और चार चेहेबच्चा कोनन के चक्रावके, ए नौ चेहेबच्चा भए। और सोरा बगीचा बड़े, चार-चार की चार हारें, तिन एक-एक बगीचा में, तेरा-तेरा बृक्षन में, बारा-बारा चौक आए, ताके चारों बगीचा के अड़तालीस चौक भए। और दो चौक दो तरफ बड़ी रौसन के, इन विध सों हर एक बड़े बगीचा में, पचास चौक देखत के, और हिसाब के उनंचास भए। और बड़े चेहेबच्चा बड़ी रौसन के, एक सौ आठ, इक्यासी मध्य चौपड़ों के, और नौ ती सत्ताईस तीनों तरफों की किनार के और चार चेहेबच्चा चारों खूँट के, ए खूँटों समेत एक सौ बारा होत हैं। और एक-एक बगीचा में नौ-नौ चेहेबच्चा, ताके सौ बगीचा के, नौ सै चेहेबच्चा भए, सब छोटे बड़े चेहेबच्चा एक हजार बारा भए। और तीन हजार चेहेबच्चा धाम रौसन के न्यारे, सब चार

हजार बारा भए। और बड़े चबूतरों पर, एक मन्दिर में नेहेर, और दाएँ-बाएँ के मन्दिरन में, एक हिस्सा में कोट रंगन के फूलन की हारें, और फूलन के दाएँ बाएँ, एक-एक हिस्सा में रस्ता पड़े हैं। और यही जुक्ति चेहेबच्चा के ऊपर, मन्दिर भर में बीच में चेहेबच्चा, और आसपास बचो एक मन्दिर, ताके तीन हिस्सा भए, एक हिस्सा में अनंत रंगन की फूल-बारियन और फूलबारियन के दाएँ बाएँ, एक-एक हिस्सा में रस्ता आउने जाने को चौफेर। और बगीचों में अनन्त प्रकार के बृक्ष, तिन की दो भोम तीसरी चाँदनी। और यह फूल बाग नैरित्य कोने के, आधे चेहेबच्चा सें लेके तो, बायब्य कोने के आधे चेहेबच्चा लों होत है हद याकी। और पन्द्रा मन्दिर धाम के, इन चेहेबच्चा के मुकाबिल आउत हैं, फूल बाग के सनमुख नाहीं आउत हैं। सो फूल बाग के बगीचा ज्यों के त्यों रहत हैं, और तीस मन्दिर की रौंस वृद्धि को प्राप्त होत है। सो यहाँ तीस मन्दिर वृद्धि के, चेहेबच्चन में दाखिल होत हैं। और यह फूल बाग, पन्द्रा-पन्द्रा मन्दिर भर जागा छोड़ के, दो चेहेबच्चों के बीच में, चेहेबच्चों से लगके आयो है। एक बगीचा डेढ़ सौ मन्दिर को लम्बो चौड़ो, ताके ऊपर धाम के मन्दिर एक सौ पचास १५० । मुका-बिल होत हैं। अल किस्सा ए दोनों मन्दिर, अरु बाग मुकाबिल आए हैं। और वेहे जो दस खिड़की धाम मन्दिरों सें, नूर बाग को उतरी हैं, सो भी बाग के मध्यस्थल में उतरी हैं। और धाम मन्दिर के तीस

कम पन्द्रा से झरोखा, फूल बाग के ऊपर आए हैं। पन्द्रा-पन्द्रा झरोखा दोऊ तरफ के, चेहेबच्चन के ऊपर आए। इन झरोखन में कबूं-कबूं श्रीराज ठकुरानी जी, सहित सुन्दर साथ के आन बिराजत हैं। और तले तीन हजार मेहेराब के आगे, तीन हजार चेहेबच्चा हैं। उन चेहेबच्चन में पाँच-पाँच फुहारे उठत हैं। सो झरोखा के ऊपर दोनों तरफ सें, ऊपर श्रीराज ठकुरानी जी सुन्दर साथ के, मोतियों की वर्षा होत है। और इहाँ और भी अनन्त कोट सुख है। और पाँच हारें बड़े बन की, लाल चबूतरा के आगे सें चलीं, सो फूल बाग के तीनहूं तरफ तवाफ देके, लगती हुई फूल बाग, और अन्न बन की सन्ध में होके, चेहेबच्चा के ऊपर होके, हौज कौसर तालको गई हैं। और दूसरी पाँच हारें बड़े बन की जो बट के घाट में होके, बट पीपल के आगे होके, ताल को गई हैं। सो इन पाँच हारन में मिल के, एक रूप होए गई हैं। और एक रूप होके पाँच हार करके, तालकी पाल को गृद मारी है। अब आगे फूल बाग के तले जो नूर बाग है।

सो नूर बाग नजर कर देखिए

सो नूर बाग और फूल बाग में कुछ तफावत नहीं है। ऊपर एक फील पाइए, छ्यासठ हजार सिवाय हैं। और धाम रौस पें जो तीन हजार चेहे-बच्चा हैं, सो इहाँ नूर बाग में नहीं हैं। और फूल बाग के चारों खूँटों सोरा-सोरा हाँस के चेहेबच्चा हैं,

सो चारों चेहेबच्चा तले ही से चले हैं। और दोऊ बागन के चेहेबच्चों को मददगार हैं, और सर्व जोगवाई बराबर है। बृक्ष चौक चबूतरे चेहेबच्चे, रौंसें फूलन की हारें, सब एक से आए हैं। ग्यारा चबूतरा तीन-तीन मन्दिर के चौड़े, और पन्द्रा सौ के लम्बे आए हैं। ग्यारा चबूतरा खड़े, और ग्यारा चबूतरा आड़े, ए बाईस चबूतरा आए हैं। खड़े पूर्व से पछिम को, और आड़े दछिन से उत्तर को। ए चबूतरा जिमी से कमर भर ऊँचे, इनमें दस-दस बगीचन की दस हारें, ताके सौ बाग बगीचा भए। और आड़े ग्यारा चबूतरों में सें, जो पेहेला चबूतरा है, उन चबूतरे के किनारे, भोम भर ऊँची धाम रौंस की दिवाल फिरी है। जिन रौंस पे तीन हजार चेहेबच्चा आए हैं, उन दिवाल में डेढ़ हजार फील पाइए अकसी आए हैं। उन डेढ़ हजार फील पाइयों के सूत्र से, डेढ़-डेढ़ हजार फील पाइयों की, बाईस हारें आई खड़े चबूतरों में और डेढ़-डेढ़ हजार फील पांइयों की, बाईस हारें आड़े चबूतरों में आई। ताके बाईस हार के तेतीस हजार, और दूजी बाईस हार के तेतीस हजार, आड़ी और खड़ी दोनों हारों के, फील पाए छयासठ हजार भए। तिन में से डेढ़ हजार फील पाए अकसी हैं, जो धाम रौंस की पिटोर में लगे हैं। और छह हजार फील पाए सर्व बगीचों को घेर के फिरे हैं। सब छयासठ हजार फील पाए भए। एक-एक बगीचा की किनार गृद में छे-छे सौ फील पाए आए हैं। हर एक बड़े चबूतरे के दोनों तरफ से फील पाए उठे हैं, ए

छासठ हजार फील पाए पटे, और इनकी चाँदनी चबूतरा के ऊपर, फूल बाग आयो है। और इनके तीनों तरफ मेहेराब के ऊपर छाजा आयो है। और धाम की रौंस दिवाल में, दस खिड़कियाँ दिखाई देती हैं। सो खिड़कियाँ हरेक बगीचा में आए जो चार-चार चौक हैं, तिन में से दो चौक दाएँ रहे, और दो चौक बाएँ रहे, इन चार चौक की सन्ध में, आई जो मन्दिर भर चौड़ी रौंस है, इन रौंस के सामी दिवाल में, खिड़कियाँ सोभित हैं। और नैरित्य कोने की इक्यावनी जो गुरज है, उन गुरज से पचहत्तर मों मन्दिर, प्रथम बगीचा की खिड़की को बैठत है। और इतेक ही मन्दिर, बगीचा के मन्दिरों सों बैठत हैं। सो हर एक बगीचा में चौहत्तर मन्दिर दाएँ रहे, और चौहत्तर मन्दिर बाएँ रहे, और दो मन्दिर बीच में रहे, तिन दो मन्दिर की सन्ध में आयो जो एक पाखो है, उन पाखे की मेहेराब में होके, सौ सीढ़ी और बीस चाँदे उतरे हैं। सो रौंस के उदर में होके, मध्य बगीचा की रौंस के सामी, आई जो दिवाल में खिड़की है, उन खिड़की में आइए, इन खिड़की से रौंस मझि-याए के, बगीचा में आइए। और इक्यावनी गुरज सें, प्रथम बगीचा की खिड़की, पचहत्तर मन्दिर पर बैठत है। फेर एक खिड़की से दूसरी खिड़कियाँ, डेढ़-डेढ़ सै मन्दिर पर बैठत हैं। और दसमी खिड़की से, चेहेबच्चा की हद्द लों। पचहत्तर मन्दिर बैठत हैं, याही बिध सों पन्द्रा सै मन्दिर की दिवाल में, दस खिड़कियाँ जुदी दिखाई देती हैं। और इन नूर बाग

के सर्व चेहेबच्चा, एक हजार और सत्रा होत हैं। नौ सै चेहेबच्चा सौ बगीचा के, और इक्यासी चेहेबच्चा बड़े, मध्य की रौंसन के, और नौ चौको छत्तीस चेहे-बच्चा, चारहूँ किनार की रौंसन के, इन विध सों एक हजार सत्रा चेहेबच्चा भए।

अब आगे अन्न बन नजर कर देखिए

तो जौन जुक्ति नूर बाग में, रौंस और चेहेबच्चों और बगीचों, और नेहेरों और फूल हारों की आई है, वही सर्व जुक्ति इहाँ अन्न बन में सोभित है। और मध्य चौक में चेहेबच्चन के ऊपर, देहुरी सोभाएमान हैं, सर्व जोगवाई फूल बाग की इहाँ जरे-जरे बिराजमान हैं। वल्क इहाँ फूल बाग सें देहुरी अधिक आई हैं। और उहाँ फूल बाग में, सोरा चौक में खुस रंग अति मीठे बगीचा आए हैं। तिन में छोटे छोटे खुस रंग वृक्ष आए हैं। और इहाँ अन्न बन के सोरा चौक में एक-एक चौक में कै हजारन विध के अन्न के खेत हैं। एक-एक अन्न के कोटान कोट खेत हैं, औरहू पुन अनन्त मेवा हैं। और जौन अन्न कच्चो पको गादर है, तौन अनादिकाल का जैसा का तैसा ही है, नजरे प्रमान घटे ना कछू बढ़े। चाहो सो लेहु, और वह जैसे का तैसा ही भरा रहता है। यह अन्न बन की सर्व जोगवाई, और लम्बाई चौड़ाई फूल बाग ही के माफिक सोभित है।

आगे दूब दुलीचा नजर कर देखिए

तो दूब दुलीचों की भी जोगबाई, फूल बाग और

अन्न बन के माफिक है, चौक चबूतरे चेहेबच्चे, फुहारे नेहेरें फूलन की हारें, सब बराबर हैं। एक सोरा चौकन में बृक्षों की ठौर इहाँ, रौंसन तें कमर भर नीचे, कै कोट रंगन की दूब के दुलीचा बिछे हैं। एक-एक चौक में कै दुलीचा, और एक-एक दुलीचा में कै दुलीचा बने हैं, तिन एक-एक दुलीचा की अकह सब्दातीत सोभा हो रही है। अमृत तें मीठी नूर की दूब कोट रंगन की सोभित है, तिनके कोट रंगन के कोटन दुलीचा, चौकन में बिछे हैं। और चौकन के गृदवाए नूर हीरे की रौंसें सोभित हैं, तिनमें नूर का जल चलता हैं, और चारों कोने चेहेबच्चे, तिन में से नूर के फुहारे उड़त हैं। और नेहेरें और चेहेबच्चों के चारों तरफ, कै कोट रंगन के फूलन की फुलबारी फूली हैं। और चबूतरा के बीच में जो चेहेबच्चा आयो है, उन चेहेबच्चों पर एक-एक देहुरी आई हैं। और खूँटों पर सीढ़ियाँ छोड़ के कठेड़ा आयो है, और बैठकें और बिछौने बिछे हैं। और मध्य रौंस तें तले बगीचन में को, चारहूँ दिसन तें, तीन-तीन सीढ़ियाँ उतरी हैं। और नूर बाग तें लेके तो, दूब दुलीचों तक, पन्द्रा ती पैंतालीस सै मन्दिर लों, वही नूर बाग ही की जुक्ति चली आई है। कमर भर ऊँचे चबूतरा ग्यारा, और सौ बाग नौ सौ चेहेबच्चों समेत, जथार्थ चले आए हैं, इन दूब दुलीचों के आगे पछिम की चौगान है।

पछिम की चौगान नजर कर देखिए

साढ़े चार लक्ष कोस चौड़ी, और नौ लक्ष कोस

की लम्बी सोभाएमान है। तहाँ अनन्त रंगन के नंगन की, अनन्त रंग की बारीक रेनुका रोसन हैं। और रेनुका में कै कोट विध के चौक पड़े हैं। तिन चौकन में से तले के भाव जुक्ति माफक, ऊपर अंत्रीक्ष आकास में, नूर रंग के अनन्त कोट ख्याल और तमासे हो रहे हैं। सो अनगिन अकह सब्दातीत हैं। और इन चौगान में श्रीराज श्री ठकुरानी जी, और समस्त सुन्दर साथ, कै कोट पसू और पंखियों की, सवारी करके, दौड़ाउत कुदाउत लड़ाउत हैं। और इहाँ और भी कोटन खेल करत है, और दूब दुलीचा की पछिम की किनार सें लेके तो, जवेरों के मोहोलों तक, इनकी चौड़ाई है। और फूल बाग के बायब कोने के चेहेबच्चा से लेके तो, कुन्ज बन की आखर की किनार तक, इनकी लम्बाई है। और आगे इनको बयान फेर हूहे, जब दूजी परिक्रमा सें फिरहें, तातें अब उतहीं को फिरे। पछिम की चौगान से दूब दुलीचा आए, और दूब दुलीचों से अन्न बन विषे आए। और अन्न बन और फूल बाग की सन्ध में, फूल बाग के नैरित्य और बायब कोने विषे, सोरा सोरा हाँस के लगे जो दो चेहेबच्चा हैं, उन चेहे-बच्चों की सीढ़ियाँ चढ़ के, फूल बाग पर पहुँचे, और फूल बाग की सोभा देखन लगे। सब तीन-तीन मन्दिर की चौड़ी, जोगवाई दिखाई देत है। बाईस रौंस और पाँच सै बगीचों के चेहेबच्चा, सब बृक्ष बगीचों के, तीन-तीन मन्दिर के अन्तर सों सोभित हैं। सब धाम के मन्दिरों की जोगवाई, और फूल

बाग के बगीचन की जोगवाई, दोरी बन्ध बराबर आई है अब इन फूल बाग से रौंस ही रौंस होके, चेहेबच्चे पर आइए, जो बायब कोने में सोरा हाँस को रोसन है। इन चेहेबच्चे के आगे लाल चबूतरा, और बड़ो बन सोभित है।

अब इहाँ तें लाल चबूतरा बड़ो बन नजर कर देखिए

तो लाल चबूतरा कैसो है, के बायब कोने के चेहेबच्चा सों लगके, उत्तर विषे बारा सै मन्दिर लों, धाम दिवाल सों लग के चलो गयो है। और तीस मन्दिर को चौड़ो, किनार पे कठेड़ा तीनों तरफ, मध्य हाँस में चाँदो, तहाँ कठेड़ा नहीं। चाँदे से दोनों तरफ सीढ़ियाँ उतरी भोम भरे की, चालीस हूँ चाँदों से, सामी उत्तर में, और दो चाँदे दो बगलों में, पछिम और पूर्व विषे, तिन तें सीढ़ियाँ उतरी। और चबूतरा सों लग के, तले भोम भर नीचे, इकतालीस इकतालीस बृक्षन की इकतालीस हारें, तिन में चालीस-चालीस अखाड़न की, चालीस हारें आई। सब सोरा सै इक्यासी बृक्ष भए, और सोरा सै अखाड़े भए। तिन बृक्षन की धाम की दस भोम लों, एक ही भोम भई। धाम की चाँदनी को छाजा, और इनको छाजा एकमेक भयो। ऐसे ही बृक्ष ताड़बन के हैं। और इनके सत्रा बृक्ष ताड़बन के सत्रा हाँस से, दोरी बन्ध बराबर आए हैं। और इनके विषे अनेक विध के हिंडोले हैं। और तीस-तीस मन्दिर के लम्बे चौड़े अखाड़े हैं, पन्द्रा-पन्द्रा मन्दिर की लम्बी बृक्षन की छत्रीयाँ चली हैं, बृक्षन तें चारों तरफ, एक इकता-

तीस बृक्ष जो चबूतरा के किनारे सें लगे हैं, इनकी छत्री धाम मन्दिरों की तरफ, तीस मन्दिरों की भई है, और वृक्षों की छत्रियों से दूनी है। तब इनकी छत्री इततें चलके, तीस मन्दिर के चौड़े लाल चबूतरा के ऊपर, गेहेरी छाया छत्री करके, सर्व चबूतरा को ढांप के, चाँदनी के छाजा सों एकमेक भई है। और चबूतरा के चालीस हूँ हाँस में, एक बिछौना बिछो है। उन एक बिछोना में हाँस-हाँस के चालीस भाव, जुदे-जुदे रहे हैं। और किनार पे एक चाँदे तक, कठेड़ा रोसन है, और पीछे धाम दिवाल में, एक हार छत्तीस सै मेहेराब की, दिखाई देत है। तिन मेहेरा-बन के ऊपर झरोखन के ठौर, बारा सै झरोखा दिखाई देत हैं। और हरेक हाँस में सिंघासन और कुरसियाँ धरी हैं। सिंघासन पर श्री जुगल स्वरूप बिराजमान भए, और सखियाँ कुरसिन पर बैठीं। आगे सोरा सै अखाड़न में, सोरा सै जिनस के बड़े-बड़े जानवर खेल करत हैं। और श्रीराज श्रीठकुरानी जी को, और सब साथ को हँसावत हैं। और यह बड़ो वन बारा सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो है। पुख-राज दिस बारा सै मन्दिर चल के, मधुबन को लगो है। और मधुबन महाबन को लगो है, और महा-बन पुखराज को घेरे है। और चार लक्ष कोसलौं, भोमन सों भोमें मिली हैं। और पुखराज सें श्रीधाम की चाँदनी लों, बनके भोमन की सीढ़ियाँ सी लगी हैं। तले हजारहा मेहेराबें दिखाई देती हैं, और उनकी चाँदनी, मानिंद सीढ़ियों के दिखाई देत है।

सत्रा वृक्ष उपरान्त बड़ो बन बढ़ चलो है, और मधुबन से एकम एक भयो है। और चाँदनी सें पुखराज में, और पुखराज सें चाँदनी पे, बन की चाँदनी पर हो चले आइए। और यह बड़ो बन सत्रा हाँस भर तो, ताड़ बन के मुकाबिल आयो है। और पाँच सै मन्दिर भर, केल के मुकाबिल आयो है, और बाकी बचो जो बड़ो बन है, उन बन के पूर्व को, और उत्तर को मधुबन आयो है। और श्री धाम की जो चारहूँ दिसा हैं, सो पन्द्रा-पन्द्रा सै मन्दिर की लेखी जात हैं। सो पन्द्रा सै मन्दिर बायव कोने के आधे चेहेबच्चा सें लेके तो, ईसान के आधे चेहेबच्चा तक होत हैं। इसी विध सों चारहूँ दिसन की गिन्ती जानवी, सो जब उत्तर दिस विषे, बारा सै मन्दिर में लाल चबूतरा आयो, तब इन दिस पूरी होवें कों, तीन सै मन्दिर भर जागा और बची। उन तीन सै मन्दिर भर जागा में, लाल चबूतरा के दाहिनी तरफ को, ताड़बन बिराजमान है।

सो ताड़बन नजर कर देखिए

तो ताड़बन कैसो है, के दस हाँस और तीन सौ मन्दिर को चौड़ो, और सत्रा हाँस और पाँच सौ मन्दिर को लम्बो, और दस मन्दिर ऊपर। धाम की रौंस के तले, अग्यारा गुरज के सामें, अग्यारा रस्ता खड़े लम्बे चले। तरफ पुखराज की। और रौंस रस्ता की मन्दिर भर चौड़ी, और अठारा रस्ता आड़े आए, पछिम से पूर्व को, चौड़ाई में, इनमें एक सौ

सत्तर बगीचा आए । तिन में से एक बगीचा के ठौर खड़ोकली है, एक सौ उनहत्तर बगीचा में बृक्ष, तिन में से एक बगीचा के किनारे चौफेर, एक सौ बीस ताड़ के बृक्ष आए । उन्तीस चौको एक सौ सोरा दिसन के, और चार बृक्ष चार खूँट के । और इन एक सौ बीस ताड़ के बृक्षों के भीतर, आठ सै इकतालीस बृक्ष, और जिनस के हैं, तिन बृक्षन की दस भोमें आई । और जो एक सौ बीस ताड़ के बृक्ष हैं, इनकी दस भोम लों एक ही भोम है, मानिंद भोम बड़े बन के । और हरेक बगीचा में, ताड़ के बृक्षों समेत, नौ सै इकसठ बृक्ष होत हैं । इकतीस-इकतीस बृक्षों की, इकतीस हारें भए हैं । एक बगीचा की एक भोम के चौक नौ सै, और दसौं भोम के चौक नौ हजार । और एक बगीचा के हिड़ोला, एक एक भोम के अठारा सै । और दसों भोम के हिड़ोला, अठारा हजार, जैसो बेवरा एक बगीचा को, ऐसो ही बेवरा एक सौ उनहत्तर बगीचा को । और रौंसन के चेहेबच्चा, एक सौ अण्ठानबे, एक सौ चवालीस मध्य की रौंसन के, और चौअन चौफेर के किनार की रौंसन के । तिन में बड़े हिड़ोला खटछप्पर की जिनस के, और चक्राव की जुक्ति के, तीन सै सरसठ हिड़ोले ३६७ । तिन में से एक खड़ोकली को घटो, हिड़ोला मध्य हाँस में आयो, हरेक रौंस पर एक-एक । और सब ताड़बन की किनार-किनार के, बगीचों के किनार के बृक्ष, सोरा सै अठत्तर भए, और एक हाँस में खड़ोकली ।

धाम रौंस तें एक चबूतरा चलो, एक मन्दिर को चौड़ो, सो तीस मन्दिर के अन्तर सों, तीन तरफ ह्ोके, फेर रौंस में आए मिलो। जिमी सें भोम भर को ऊँचो, इनकी रौंस और धाम की रौंस बराबर, इन तीन हूँ रौंस पे, तीस-तीस मन्दिर आए, और तीस मन्दिर धाम दिवाल के, ए एक सौ बीस मन्दिर खड़ोकली के भए। रौंस पर ह्ो गैल रही, और खड़ोकली के पछीत ह्ो गैल रही, जल की दिस दिवाल रही, किनार के ऊपर। धाम की दूजी भोम में ह्ोके, खड़ोकली के जल के दरसन होत हैं। और ऊपर मन्दिर भरे की चाँदनी, जल की दिस चारहूँ तरफ चार चाँदे, चाँदो को छोड़ के चारों तरफ, किनार पे कठेड़ा। और बाहिर बन दिस, तीन तरफ कठेड़ा, चाँदों से तीन-तीन सीढ़ी उतर के, चौफेर जल क्रीड़ा को चबूतरा, तहाँ जल क्रीड़ा कीजे। और यह खड़ोकली, लाल चबूतरा से चालीस मन्दिर के अन्तर सों है। और चालीस मन्दिर खड़ोकली के परे हैं, और तीस मन्दिर की खड़ोकली है। इनहीं एक सौ दस मन्दिर के सामें, भीतरी तरफ भूलवनी है। और खड़ोकली के दोनों तरफ दो गुरजें, और दो गुरजें दाएँ-बाएँ और हैं। बाँई लाल चबूतरा के दिस की, दस मन्दिर पर है, और दाँई चेहेबच्चा दिस की, बीस मन्दिर पर है। और सब गुरजें प्रथम हिसाब माफक हैं। धाम की ग्यारा गुरज सामी तें सीढ़ियाँ उतरी,

सो भोम भर नीचे जो ताड़बन की ग्यारा रौंसें हैं, सो तिन रौंसों पर आई हैं। अब आगे बड़ो चेहेबच्चा आयो, सो चेहेबच्चा धाम रौंस के, बढ़े जो एक सौ बीस मन्दिर हैं, यह चेहेबच्चा उन वृद्धि के मन्दिरों में आया है। चौफेर पन्द्रा-पन्द्रा सै मन्दिर को हिसाब, जथार्थ बनो रहो, और बृद्धि के मन्दिरों में, चार चेहेबच्चा बुलन्द आ गए। हर मन्दिर में भीतरी दिवाल से, बाहिरी दिवाल तक, दो हाथ की बृद्धि होत है, सौ हाथ में दो हाथ की, और सौ मन्दिर में दो मन्दिर की, या विध सों छे हजार मन्दिर के आगे, रौंस के किनारे, एक सौ बीस मन्दिर की वृद्धि हुई, ताके तीस-तीस मन्दिर वृद्धि के चारहूँ कोने परे, तिन में चेहेबच्चा लगे। और पचास-पचास हाँस, चारों दिस के धाम के, पचास-पचास हाँस के बन में, मुकाबिल रहे। और श्री धाम के नैरित्य और बायब कोने के, जो दो चेहेबच्चा हैं, तिनके गृदवाय बड़ो बन आयो है। और ईसान कोने को जो चेहेबच्चा है, सो अनार और लिबोई की सन्ध में है, और इनहीं के बृक्षन ने ऊपर मण्डल बाँधो है, और पाल पे तीन हूँ तरफ, आनन्द रूपी गेहेरी छाया हो रही है। और याही विध अग्नि कोने को चेहे-बच्चा है, जाम्बू और नारंगी की सन्ध में। और जैसो तीन बन की सन्ध में, ईसान को है, ऐसो ही तीन बन की सन्ध में, अग्नि कोने को है। और यह ईसान कोने के चेहेबच्चा के बीच सें, सीढ़ियाँ चली, सो रस्ता ही रस्ता होके, श्री जमुनाजी की रौंस को

जाय लगी है, ऐसे हर घाट की सन्ध में रस्ता चलके, जमुना जी की रौंस कों लगे हैं। और इन रस्तन के सामी रौंस से, सीढ़ी सो भी उतरी है, और यह अनार को घाट, पाँच सौ मन्दिर भर चौड़ो, और अढ़ाई सै दरखत चौड़ाई में आए। श्री धाम के पाँच सै झरोखा, और एक हजार मेहेराब पड़े, एक घाट के बीच-बीच में, कहूँ-कहूँ मोहोल सोभी हैं, और दो भोम तीसरी चाँदनी, और इन बन की शब्दातीत सोभा है। रौंस के किनारे कठेड़ा, रौंस एक हीरे की, कोटन नंगन करि के जड़ित है, और कोटन चित्रामन करिके जुक्ति है, और अनन्त कोट गुन ख्यालातों से भरी है, इन रौंस पे हो चलते-चलते चाँदनी चौक के ऊपर होई, धाम दरवाजें आए। और प्रथम बड़ी मेहेराब को पीठ देके, चौकड़ी मेहेराब के सनमुख होके, तरफ मूल मिलाए के देखा, तो मूल मिलाए के चबूतरा पर, बीच सिंघासन के, जुगल स्वरूप बिराजमान हैं। और गृद सिंघासन के दाड़िम की सी कली, समस्त सुन्दर साथ बैठो है, तहाँ सिजदा बजाय के, और यह छबि हृदय में लेके, फेर तरफ दरवाजे के देखा, तो दोनों बगल दो चौक चबूतरे के रोसन हैं। दो-दो मन्दिर के चौड़े, और चार-चार मन्दिर के लम्बे, पाँच थंभ किनार पर, और पाँच दिवाल में अकसी आए। ऐसे ही दूसरे चबूतरा पर, सब बीस थंभ बाईस मेहेराब भए, और दो मेहेराब दोऊ गुरजन की तरफ के न्यारे। और एक चबूतरा के पाँच थंभ किनार पर, वैसे ही दिवाल में। प्रथम

दरवाजे दो थंभ हीरा के, एक किनार पर और एक दिवाल में। फेर तिनसों लग के दो मानिक के, और तिनसों लग के दो पुखराज के, तिनसों लग के दो पाचके, और तिनसों लग के छोर पे दो थंभ नीलवी के ऐसे ही दूजे चबूतरा पर। इन चौक के चारों खूंटों चार थंभ जो हीरा के आए हैं, सो ए चार थंभ दूजी भोम तक चले गए हैं। और दोऊ चबूतरा के थंभ भोम-भोम पे पटत गए हैं। यह चौक दो मन्दिर को लम्बो चौड़ो, धाम दरवाजे की देहरी से, और दोनों चबूतरा से, एक सीढ़ी भर नीचा है। इनके आगे एक सीढ़ी नीचो चाँदो परो, तिन तें नीचे उनैस चाँदे और परे। और दो-दो चाँदे के बीच में पाँच-पाँच सीढ़ियाँ, दोनों तरफ सीढ़ियों के परकोटे, और परकोटन पर काँगरी, उतरत-उतरत चाँदनी चौक में आए। (चाँदनी चौक) अनन्त नंगन की बारीक रेनुका करके भरो है, मध्य में दो चबूतरा पर, दो हरे लाल बृक्ष रोसन हैं। और एक दो मन्दिर भरे की रौंस, श्री धाम की रौंस के तले फिरी है, सो रौंस सर्व धाम को गेर के फिर आई है, ऊँची रौंस में मिल के। सोई रौंस कमर भर ऊँची, तीनों तरफ चाँदनी चौक को फिरी है। और दरवाजे तें उत्तर की तरफ के जो दरखत हैं, ताको लग के उत्तर में होके, पछिम में होके, बट पीपल की चौकी के माहें होके, अग्नि कोने के चेहेबच्चा को गेर के, जाम्बू के घाट के भीतर होके, एक सौ सरसठ मन्दिर भर अमृत बन के माहें होके, श्रीधाम के आगे चाँदनी

चौक को जो चबूतरा है, उन चबूतरा कों आय लगी है। और दछिन दिस तें चल के, दछिन पछिम उत्तर में होके, चाँदनी चौक के उत्तर दिस के बृक्षों के, चबूतरा में आए मिली। और कहूँ रौंस में मिल गई है, कहूँ न्यारी रही है। और जहाँ कहूँ भोम भर ऊँची रौंस से सीढ़ियाँ उतरी हैं, सो सीढ़ियाँ इन पर आई हैं। और एक चाँदनी चौक छोड़ के, सबरें इन कमर भर ऊँची रौंस पर, दोए हारें बृक्षों की आई हैं। एक हार भोम भर ऊँची रौंस के पिटौर से लग के उठी है, और दूजी हार जिमी दिस की किनार पर आई है। और इन रौंस से रस्ता को चबूतरा चलो है, सो जमुनाजी की रौंस कों लगो है, पाँच रस्ता धाम की पूर्व की दिवाल सें चले हैं। और दाएँ-बाएँ के बनों से न्यारे। और इन सात घाटों के बनों में, और भी कै बन सामिल हैं। और मध्य बगीचों के कहूँ कहूँ मोहोल सोभी है, और ऊपर रस्तों के रौंस से सीढ़ियाँ सोभी उतरी हैं। और पाँच बन घाटों के की दो भोम तीसरी चाँदनी, और केल और बट जो दो घाट हैं, सो इन पर बड़ों बन आयो है, तातें इनकी पाँच भोम छटी चाँदनी आई है। और चाहिए तो जिमी पे हो श्री जमुना जी को चले जाइए, और चाहिए तो बन की चाँदनी पर हो चले जाइए, बीच के बनतें बीच के बनकों जाइए। और केलबन और बट बनतें, केल के पुल और बट के पुल पर जाइए, बन की चाँदनी-चाँदनी होके। और बड़े बनतें पाँच-पाँच हारें, बड़े बन के बृक्षों की, दोनों तरफ होके,

हौज कौसर को चली हैं। सो पाँच बृक्ष तो पूर्व की दिस को चले हैं, सो बृक्ष केल घाट के माहें होके, और सात घाट के माहें होके, बट के घाट में हो उतर के, बट पीपल की चौकी के आगे होके, हौज कौसर की पाल पर गई हैं। और पाँच बृक्ष पछिम दिस को चले हैं; सो फूल बाग और अन्न बन की सन्ध में होके; चेहेबच्चे के ऊपर होके, पूर्व की पाँच हारों में एक में एक होके, हौजकौसर को गृद मारी हैं। और ए पाँच हारें रंग भवन तें पूर्व विषे तो; साढ़े चार लाख कोस के अन्तर सों हैं। और पछिम विषे, पन्द्रा सौ मन्दिर के अन्तर सों हैं। और उत्तर-दछिन विषे, पाँच-पाँच सौ मन्दिर के अन्तर सों हैं। और रंग महल के चारों दिस विषे, अत्यन्त सुहाँमनो एक रस छत्री मण्डल बाँधो है। मानो तो पाँच खण्ड की नंगन की मोहोलाइत बनाई है, और आगे श्रीधाम के अपार सोभा को धरे हैं। पाँच घाट दो-दो भोम के आगे सोभा लेत हैं, और इनके तीनों तरफ, बड़े बन की पाँच हारें सोभा लेत हैं, तिन विषे पाँच खण्ड सोभा लेत हैं। और चौथी तरफ श्रीरंग महल, अकह सब्दातीत सोभा को धरे है, और नव भोम दसमी आकासी सोभाएमान हैं। और बारा हजार कंगूरा गृदवाय सोभाएमान हैं, तिन कंगूरन पे कलस ध्वजा बैरखें फहराती हैं, और घुंघरी मीठे स्वर बोलती हैं। और इन कंगूरन के आगे, दो सौ एक गुरजन के बड़े गुमट दो सौ एक, अपार सोभा को धरे हैं। तिन पर दो सौ एक कलस अत्यन्त मिठाई लिए हैं, तिन कलसन पर

ध्वजा बैरखें फहराती हैं, और घुंघरी मीठे स्वर बोलती हैं। और दो बुलन्द गुमटों के माहें, साठ गुमटियाँ छोटी-छोटी अपार सोभा को लेत हैं। और तिनके ऊपर जो कलस बैरखें हैं, सो नैनन कों अत्यन्त अमृत तें मीठी लगत हैं। यह चांदनी चौक के माहें होके, चारों दिस की सोभा बिलोकी, दिल के नैनन सों देखी, तले की और ऊपर की। तले अपार पेड़ दिखाई देत हैं, एक पेड़ के सामी कोटन पेड़ दिखाई देत हैं, अक्षर के पार लों। और हजारहा पेड़ श्री जमुना जी की पाल लों, एक पाँत दिखाई देत हैं, जुदे-जुदे नगों के और जुदे-जुदे रंगों के।

श्री जमुना जी की पाल सातों घाट मिल

और सामें श्री जमुना जी की, एक हीरे की पाल दिखाई देत है, अनेक रंग के नगों से जड़ित, साफ मानिंद दरपन हीरा के जगमगात है, और ऊपर बृक्षों की छत्रियों के चन्द्रवा तने हैं। और पाँच घाट के तीनों तरफ, बड़े बन की पाँच हारें दिखाई देती हैं। और पेड़न के चौकन में, अपार नगों की, और अपार रंगों की बारीक रेनुका, झिलमिलात है। और पीछे श्री रंग भवन के मन्दिर झिलमिलात हैं। यह तो तल की सोभा हुई, और ऊपर पाँचहूँ घाट बनों की जो चाँदनी हैं, ताकी इत अत्यन्त बड़ी सोभा है। रंग भवन की अष्ट भोमें, इन ऊपर जगमगात हैं। और इन रंग महल के आगे, पाँच घाट बन की चाँदनी को, अनेक रंगन को, एक गलीचा सो बिछो है। दो लक्ष कोस को लम्बो, और पचीस सै मन्दिर को चौड़ो,

और इन गलीचे कें तीनों तरफ, तीन-तीन भोमें बड़े बन की सोभाएमान हैं। सो ऐसा दिखाई देत है, जैसे तीन तरफ तो तीन खंड की मोहोलाइत, और चौथी तरफ नौ खण्ड की मोहोलाइत बना के, बीच के चौक में चित्र विचित्र रंगीन, नूर का गलीचा बिछाया होवे। या विध सों तले ऊपर की सोभा, अपार सुख की दाता है। और नारंगी के घाट के बृक्ष, श्री जमुना जी की रौंस के तले के, अढ़ाई लाख होत हैं, और तेईस हजार चालीस बृक्ष नारंगी के, श्री जमुना जी के पाल के न्यारे, सर्व एक घाट के बृक्ष, दो लाख और तेहत्तर हजार और चालीस हुए २७३०४०। कछुक चेहेबच्चा के हिस्सा के इहाँ घटत हैं, और इतेक ही बृक्ष जाम्बू के घाट के हुए। और सरसठ सै चौबीस बृक्ष ६७२४। चाँदनी चौक के घटे तें दो लाख छयासठ हजार तीन सै सोरा बृक्ष अमृत बनके हुए २६६३१६। और दो लाख तेहत्तर हजार, और चालीस बृक्ष अनार के हुए २७३०४०। और इतके ही लिबोई के हुए २७३०४०। और साढ़े सैंतीस हजार बृक्ष ३७५००। केल घाट के ज्यादे हुए, ताके सब बृक्ष केलों के, तीन लाख दस हजार पाँच सै चालीस हुए ३१०५४०। ताके सब बृक्ष छेऊ घाटों की जमा, सोरा लाख उनहत्तर हजार और सोरा हुए १६६६०१६। इन विध सों छेऊ घाटन के बृक्षन की गिन्ती हुई। या विध सों यह सप्त घाट आगे की सोभा देख के, रूह तरफ पुखराज के सनमुख हुई। और पुखराज को चली और जितेक बीच में बन परे

हैं, तिन सर्व बनो को रूह देख चली, और कछू-कछू वरनन कर चली। तो अब प्रथम चाँदनी चौक तें तरफ पुखराज के कहाँ हो चले ? तो प्रथम चाँदनी चौक में जो सीढ़ियाँ हैं, और सीढ़ियों के उत्तर दिस के चबूतरा से लगके चली, जो कमर भर ऊँची रौंस है, जो रौंस श्रीधाम के गृद फिर आई है, और इन रौंस को आगे जिकर हो गयो है। सो चाँदनी चौक से चल के, इन रौंस पर आए, और इन रौंस पर हो कुल्ल सोभा देखते-देखते, तरफ पुखराज के चले। तो इन धाम दरवाजे सें लेके, अनार बन की हद्द तक, याने चाँदनी चौक के उत्तर किनारे तक, तीन गुरज और तेईस मन्दिर होत हैं, और इन तेरासी मन्दिर में बन नहीं है, इन चौक में नूर की बारीक रेनुका झिलमिलात है। और इन तेरासी मन्दिर के आगे, चौरासी बृक्ष अमृत के और हैं। तिनके आगे दो मन्दिर की चौड़ी रौंस रोसन है। सो रौंस इहाँ से दो बनों की सन्ध से चल के, श्री जमुना जी की रौंस को लगी है। इन रौंस मरजाद से आगे, अनार को घाट रोसन है, पाँच सै मन्दिर भर चौड़ो, और श्री जमुना जी की पाल लों लम्बो है। और ऊपर धाम दिवाल में पन्द्रा सै झरोखा, और तीन हजार मेहेराबें रोसन हैं। और धाम की रौंस दिवाल की पिटोर में, अकसी मेहेराबें सोभाएमान हैं। और उन मेहेराबन में अपार चित्रामन बिराजमान हैं, अनन्त प्रकार के पसु और पंखी सोभित हैं, और अनन्त विध की बन-स्पति लिखी हैं, अरु अनन्त विध की पुतलियाँ लिखी

हैं। और तले रौंस में अपार नूर के चौक रोसन हैं, और ऊपर बन की छवी को, गेहेरो रंगीन नूर को चन्द्रवा तनो है। इन रौंस पर हो पाँच सै मन्दिर भर चल के, चेहेबच्चा पर पहुँचे। और अनार और लिबोई की सन्ध में, आई जो दो मन्दिर की चौड़ी रौंस रस्ता है, उन रौंस को देख के चेहेबच्चा के पछीत होके, ताड़बन में प्राप्त भए। ताड़बन के दाँहिनी तरफ लिबोई को घाट, पाँच सै मन्दिर भर एक दिस में आए लगो है। और बांई तरफ बड़ोबन बिराजमान है, सवा बृक्ष लों बराबर, और आगे केल को घाट रोसन है, और केल के बन के दस मन्दिर और छे बृक्ष, ताड़बन के किनार के मुकाबिल आए हैं। बाकी और सब केल बन, बड़े बन के मुकाबिल आयो है। और ताड़बन के सब आड़े, और ठाड़े चबूतरा तीन सै सरसठ होत है, तिन चबूतरों की सन्धन में, एक सौ अण्ठानबे बड़े चेहेबच्चा होत हैं। और तीन सै सरसठ जो रौंस चबूतरा चाहिए, तिन में से एक खड़ोकली को घटो सही तीन सै छयासठ चबूतरा रहे। तिन तीन सै छयासठ चबूतरापे, तीन सै छयासठ हिड़ोला आए। एक-एक चबूतरा पर एक एक हिड़ोला, एक रौंस चबूतरा के दोनों तरफ, इकतीस-इकतीस बृक्ष ताड़ के आए। तिन इकतीस में से पन्द्रा बृक्ष दाएँ रहे, और पन्द्रा बृक्ष बाएँ रहे, इन दो पन्द्रा के बीच में, बचे जो दोनों दिस के इकतीस इकतीसवें दो बृक्ष हैं, उन दो बृक्षों के बीच में, एक हिड़ोला आयो। सो ए हिड़ोले चक्रावके आए हैं,

जैसे बट पीपल की चौकी में आए हैं। सो पन्द्रा मन्दिर भर हिड़ोला उततें आयो, और पन्द्रा मन्दिर भर इततें आयो। इन दोऊ पन्द्रा के बीच में आयो जो चेहेबच्चा है, उन चेहेबच्चा के ऊपर चार हिड़ोला की ताली परत है। और जब हिड़ोला तालियाँ को, तरफ चेहेबच्चा के चलत है, तब जंजीर हिड़ोले की उकिल चलत है, और जब हिड़ोला तालियाँ देके, अपने ठौर को पीछा फिरता है, उसी दम जंजीर हिड़ोले की, लिपिड़ चलती है। सो हिड़ोला अपने ठौर आए के, माफक मरजाद के रहि जात है, मानिन्द चक्री के जुक्ति गुजरत है। और एक बगीचा के ताड़ के बृक्ष गृद के एक सौ बीस १२०। और एक सौ उनहत्तर बगीचा के, बीस हजार दो सै अस्सी २०२८०। और सोरा सै अठहत्तर ताड़ के बृक्ष बाहिरी गृद के न्यारे। ताके सब बृक्ष इकईस हजार नौ सै अण्ठाउन भए, ताड़ ताड़ के सर्व बगीचों के, भीतर और बाहिर के २१९५८। और ताड़ के बृक्षों के माहें, एक बगीचा में आठ सै इकतालीस बृक्ष और जिनस के हैं ८४१। और इनहीं बृक्षन में दस भोमें आई हैं। और एक सौ उनहत्तर बगीचा के बृक्ष, एक लाख ब्यालीस हजार एक सौ उन्तीस भए एक भोम के १४२१२९। और दसहूँ भोम के चौदा लाख इकैस हजार दो सै नब्बे बृक्ष भए १४२१२९०। और एक बगीचा के एक भोम के चौक नौ सै ९००। और एक सौ उनहत्तर बगीचा के एक भोम के चौक, एक लाख बाउन हजार और सौ भए १५२१०० और

दस भोम के चौक पन्द्रा लाख इकैस हजार भए १५२१००० । एक बगीचा के एक भोम के हिड़ोला अठारा सै १८०० । और एक सौ उनहत्तर बगीचा के एक भोम के हिड़ोला तीन लाख ब्यालीस सौ भए भए ३०४२०० । और दसहूँ भोम के हिड़ोला तीस लाख ब्यालीस हजार भए ३०४२००० । यह ताड़बन का हिसाब हुआ, और कछुक हिसाब याको आगे होए आयो है । अब आगे इन ताड़बन के, केलबन आयो है । दस मन्दिर कम तीन सै मन्दिर भर के, और केलबन को माहें लेके, बड़े बन की पाँच हारें श्री जमुना जी को गई हैं । और ताड़बन के सिराने से लेके तो, मधुबन की किनार लों, केल के बृक्ष साढ़े सैंतीस हजार चाहिए, तिन में सें पाँच हार केल की, ताड़बन के किनार दिवाल के मुकाबिल की इत घटी, तब सही बृक्ष केल के छत्तीस हजार साढ़े सात सै रहे । और ताड़बन को पुखराज दिस को जो अठारमों चबूतरा है, उन चबूतरा की बाहिरी किनार सें लग के आई, जो तीन सै दस ताड़ बृक्ष की हार है, उन हार के मुकाबिल केल की पाँचमी हार आई, और इत बड़े बन की तरफ बड़े बन को, सत्रहमों बृक्ष मुकाबिल आयो । सो यह सत्रहमों बृक्ष बड़े बन को, और तीन सै दसमों बृक्ष ताड़बन को, और पाँचमों बृक्ष केल को; ए तीनहूँ बृक्ष दोरी बन्ध बराबर आए हैं । और सत्रहमें बृक्ष से दो मन्दिर भर जागा छोड़ के, दो-दो मन्दिर के अन्तर सों केल के बृक्ष आए हैं । और इन सत्रह में बृक्ष को लेके; आगे सत्रहमें बृक्ष

तक, पाँच बृक्ष बड़े बन से निकसे हैं। सत्रहमें बृक्ष सें तीन बृक्ष बीच में छोड़ के, पाँचमों बृक्ष, और उन पाँचमें बृक्ष से, फेर तीन बृक्ष बीच में छोड़ के, पाँचमों बृक्ष, याही विध सों सत्रह बृक्ष में से, पाँच बृक्ष निकसे, सो श्री जमुना जी लों चले गए। और पुखराज की दिसमें, एक बृक्ष तें दूजे बृक्ष तक बीच में साठ बृक्ष केल के आए, और एक सौ बाईस मन्दिर भर जागा रही। और चाहियत थी सवा सै मन्दिर भर जागा, तहाँ दस मन्दिर भर केल के जो ताड़बन के मुकाबिले आए हैं, वह मन्दिर यहाँ छूटे। और श्री जमुना जी की दिस एक बृक्ष सें दूजे बृक्ष तक, सवा सै मन्दिर को अन्तर है। अब लाल चबूतरा की किनार सें लेंके तो, चौंतीस बृक्ष तक, केलबन की हद्द मरजाद है। और चौंतीस बृक्ष में तेतीस सन्धें आई, एक-एक सन्ध तीस-तीस मन्दिर की, ताके सब मन्दिर नौ सै नब्बे भए। और तीस मन्दिर लाल चबूतरा की चौड़ाई के लिए, सब मन्दिर धाम दिवाल से लेके, चौंतीसमें बृक्ष लों, दस सै बीस मन्दिर भए। अब चौंतीसमें बृक्ष के आगे सात बृक्ष और हैं, उन सात बृक्ष की गिनती में, इन चौंतीसमें बृक्ष को भी लिया, तब सात बृक्ष में सात चौक भए। किस वास्ते के एक बृक्ष दोऊ तरफ जवाब देता है, और दोए तरफ चौक पाड़ता है। तिस वास्ते इसको सो भी ले लिया, तातें इन सात बृक्ष में छे सन्धें आईं। और एक सन्ध चौंतीस में बृक्ष, और सातमें के सन्ध म की भई, तिन सात सन्ध में दो सै दस मन्दिर भर जागा बची

२१० । और इन चौंतीस में बृक्ष तें आगे एक सौ बीस मन्दिर पै, एक हार मधुबन की आई । और एक हार मधुबन बृक्ष की, इकतालीस में बृक्ष तें, तीस मन्दिर पर आई, इसी वजे सें दोई हारें मधुबन की और आई । और मधुबन केल के पुल के बराबर से चलो है, और पुल से दोरी बन्ध बराबर आयो है । और केल के माहें हो आई जो बड़े बन की पाँच हारें हैं, वह हारें और मधुबन की हारें दोरी बन्ध बराबर । और मधुबन के आगे आई, जो महाबन की चार हारें हैं, सो हारें मधुबन सें दोरी बन्ध बराबर, और रौंसन से रौंसें मिली हैं । और ए मधुबन और महाबन, अपार विस्तार करके जुक्ति है, और ऊपर अत्यन्त महा विस्तार है । और ताड़बन से बड़े बन में होके, पुखराज को चलना है ।

अब बड़ोबन मधुबन महाबन सर्व नजर कर देखिए

सो ताड़बन सें किनार ही किनार होके, बड़े बन में आए, और बड़े बन में पन्द्रा बृक्ष और चौदा चौक मझिआए के, पन्द्रहमें चौक में प्राप्त भए । इन पन्द्रहमें चौक में होके पुखराज कों चले । यह बड़ो बन कैसो है, के एक चौक इनके की, एक सौ बीस मन्दिर की गिर्द आई है । तीस-तीस मन्दिर की मेहेराब चारों तरफ सोभित हैं । और ऊपर दस भोम पर छात दिखाई देत है, सो छात धाम की चाँदनी के छाजा सों मिली है । और बृक्षन के पेड़ नंगन के, अत्यन्त महा सुन्दर हैं, और मोटे हैं । और तले पेड़

मूल विषे चारों तरफ मेहेराबें छोटी-छोटी सोभित हैं, तिनतें सीढ़ी ऊपर को चली हैं, और चारों तरफ सीढ़ी गुप्ता गुप्त भोम-भोम प्रति चली जात हैं, और जहाँ भोम पूरी भई, तहाँ माफक छाजा को भाव है, चारों तरफ मेहेराब को भाव है। इत तें सीढ़ी चढ़ के, मेहेराबन में होके छाजा पर आइए, तहाँ होके चारों तरफ जे पेड़ हैं, तिनकी अपार खूबी देखिए, और अनन्त विध के हिंडोलों की खूबी देखिए। सब पेड़ जुदे-जुदे सोभित हैं, और ऊपर दस भोम पे छत्री सब पेड़ों की एक हुई है। निजधाम की नवों भोमन के आगे, बारा सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो, मानो एक चन्द्रवा तानो है। और पेड़ ऐसे भासत हैं, मानो चन्द्रवा के तले अनेक रंगन के नंगन के सितून खड़ा लगाए हैं। और इन बड़े बन को जो रंगभवन की चाँदनी पर चढ़ के देखिए, तो सत्रा हाँस लों बड़े बन की चाँदनी को एक गलीचा बिछो है। रंगीन चित्र विचित्र नूर का, तिनके चारों खूँटों चार चेहेबच्चा नूर के हिलुरत हैं, और नूर जल के फुहारे उछलत हैं। और यह गलीचा ताड़बन की चाँदनी समेत, पन्द्रा सै मन्दिर को लम्बो, और पाँच सै मन्दिर को चौड़ो बिछो है। और बड़े बन सें चली जो पाँच हारें बृक्षों की, पूर्व दिस जमुना पालकों, तिन बृक्षों की ताड़बन की किनार लों, दस भोम अग्यारमी चाँदनी है। और ताड़बन की किनार सें लेके तो, श्री जमुना जी की पाल लों, इन पाँच हार की पाँच भोम छटी चाँदनी है। तातें रंग भवन की चाँदनी, और बड़े बन

की चाँदनी, और ताड़बन की चाँदनी, और केलबन की चाँदनी, ताड़बन की पूर्व किनार लों, ए चारहूँ चाँदनी एक हुई हैं, इन विध की, के उततें इत और इततें उत, दौड़ते-दौड़ते चले जैए। और बड़ो बन लाख कोस ऊँचो है, और मधुबन दो लाख कोस ऊँचो है, और महा बन चार लाख कोस ऊँचो है। सो पुखराज से श्री निजधाम की दिस, या रंग भवन को मानो तीन सीढ़ी सी लगी हैं। और रंग भवन की चाँदनी तें पुखराज को चढ़ती-चढ़ती मानो तीन सीढ़ी लगी हैं। और एक-एक सीढ़ी में दस-दस भोमें, और भोमन के ऊपर जो चाँदनी है, सो मानिन्द सीढ़ी के दिखाई देत है। सो निजधाम की चाँदनी चढ़ के, बड़े बन की जो सोभा देखिए, तो इन विध दिखाई देत है, सत्रमी हार पर से दस-दस भोम की एक भोम, ऐसी पचीस भोमें चढ़ती-चढ़ती चली, अढ़ाई सै भोम लों। अब सर्व सोभा चाँदनी की देख के, फेर तले की भोम में आए। और पछिम तें पूर्व को छब्बीसमा अखाड़ा, और पूर्व तें पछिम को पन्द्रमा अखाड़ा बैठत है, उन अखाड़े में होके चले। सो उसी अखाड़े ही अखाड़े होके, मधुबन के किनारे जाए निकसे।

अब मधुबन नजर कर देखिए

सो मधुबन कैसा है, के सर्व सुख सोभा को समुद्र है। और पेड़ जिनके अति उत्तंग हैं, और एक पेड़ से दूजे पेड़ तक, सवा सै मन्दिर को फरक है। और आई जो चार दरखत की चौकड़ी है, उन चौकड़ी की

गिर्द पाँच सै मन्दिर की आई है। और छात इनकी चार सै कोस ऊँची आई है, और भोम पर भोम पाँच सौ भोमलों चलो गयो है। और तले नेहेरें और चेहे-बच्चा रोसन हैं, मानिन्द बट पीपल की चौकी के, और इनमें लाखन हिंडोलों हींचत है। और यह मधु-बन श्री जमुना जी के केलके पुल से चलो है, और पुखराज और बंगलन के चबूतरा की सन्ध में, आयो जो हाँस भरे को चेहेबच्चा है, उन चेहेबच्चा लों आए के, फेर पुखराज को गिर्द मारी है। सो जहाँ सें पुख-राज की तवाफ का मरोर खाई है, उहाँतें इनके बृक्षन को कछुक सुमार लिखा है। के पुखराज के पूर्व दिस में तो हाँस भरे को चेहेबच्चा है, और पछिम दिस को हाँस भरे की चौड़ी घाटी सोभाएमान है, और उत्तर दिस विषे पुनः हाँस भरे की चौड़ी घाटी सोभाएमान है। और दछिन दिस विषे उजागर, एक नेहेरचली आउत है, जिन नेहेरका जल सब धाम दिस में फैलो है। सो नेहेर पुखराज की रौंस तें चल के, महा बन के जो रौंस चेहेबच्चा हैं, उन रौंस चेहेबच्चों में मिली है, और उन सब रौंस चेहेबच्चों में जल पोहोंचाए के, नेहेर मधुबन के रौंस चेहेबच्चों में आई है और मधुबन के रौंस चेहेबच्चों से, बड़े बन और ताड़बन में नेहेर आउत है। अब इन पुखराज के आस पास, प्रथम एक महाबन के बृक्षन की हार फिरी है, तिनके पीछे तीन हार बृक्षों की और आई हैं। और इन चार हार महाबन की के पीछे सूत्र से, चार हारें मधुबन की फिरी हैं। तो प्रथम हार जो

महाबन की है, सो चार हजार बृक्षों की फिरी है, और दूजी हार चार हजार की है, याही विध सों चारहूँ हारें आई हैं। और याही विध सों चार हारें, मधुबन की आई हैं, ताके चार हार के बृक्ष सोरा हजार भए १६००० । और अष्ट हार के वृक्ष बत्तीस हजार भए ३२००० । और एक हार के बृक्ष जो चार हजार हुए, तिन में से तीन-तीन बृक्ष चारहूँ दिसन के घटे, दो घाटियों के चबूतरा के घटे, बृक्ष पछिम और उत्तर के घटे, और तीन बृक्ष पूर्व के चेहेबच्चा के घटे, और तीन बृक्ष दछिन दिस विषे नेहेर के घटे, या विध सों चारहूँ दिसन विषे बारा बृक्ष घटे, सो एक हार में बारा घटे, और चार हार के अड़तालीस, और आठ हार के छयानब्वे बृक्ष हुए ९६ । एते बृक्ष घटे। अब जिन मेहेराब में होके बड़ेबन सें चले आए हैं, उसी मेहेराब के सामें, एक रौंस चबूतरा आयो है। उस रौंस चबूतरा के सामें, पुखराज के दछिन दिस के दरवाजे के आगे, एक चेहेबच्चा और नेहेर आई है, सो इसी रौंस चबूतरा पर होके, दछिन के दरवाजें आए। और इन रौंस चबूतरा से दोनों तरफ, दो खाँचे रहे, तिन दोनों खांचों में, मधुबन की हद्द भर के, चार-चार हजार बृक्ष दोऊ तरफ मधुबन के रहे। और आगे इन मधुबन के, चार-चार हजार बृक्ष दोनों तरफ महाबन के रहें, और मध्य में रौंस चबूतरा चलो, सो दछिन के दरवाजे के आगे, जो रौंस चेहेबच्चा है, उन रौंस चेहेबच्चा कों लगो है। तातें इन मध्य मार्ग होके, मधुबन को मझिआए के,

और महाबन को मझियाए के, रौंस चेहेबच्चा मज-कूर पै पहुँचे, और इहाँ खड़े होके चारों तरफ की सोभा देखने लगे। तो तले दछिन दिस विषे जिमी पर, महाबन की रौंसें और चेहेबच्चा रोसन हैं। और एक पेड़ के चारों तरफ चार नेहेरें चलती हैं, और खूँटों के ऊपर चार चेहेबच्चा हिलुरत हैं। इन विध सों कै हजारहा नेहेरें, और चेहेबच्चा हिलुरत हैं, और हजारहा फुहारे उड़त हैं। और पेड़न के सामी हजारहा पेड़ दिखाई देत हैं, और पेड़ पर पेड़ लाखन लाख दिखाई देत हैं, और भोम पर भोम आसमान लों दिखाई देत हैं। और इत एक-एक बृक्ष को अत्यन्त कुसादे विस्तार है, एक-एक बृक्ष पर कोटान कोट सहरों समान बस्ती है। और कोटन लस्करों समान, आबादगी और सोर और चोहोचहाट होए रहो है। और तले लाखन लाख पेड़, जुदे-जुदे दिखाई देत हैं। और ऊपर छत्री सबकी एक हो गई है, और पेड़न के मूलन विषे, मेहेराबन को और सीढ़ियन को भाव है। तिन मेहेराब सीढ़ियन पर होके, ऊपर की भोमन में जैए। और पछिम दिस विषे, घाटियों के छाजा, तरफ पुखराज के जिन विध सों बढ़ चले हैं, याही विध सों महाबन के छाजा, पुखराज के छाजों के मुकाबिल बढ़ चले हैं, और ऊपर जाए के छाजों से छाजे मिल गए हैं। और इन महाबन के बृक्षों की भोमें अत्यन्त उत्तंग परी हैं, एक-एक भोम चार-चार सौ कोस ऊँची उठी हैं, याही तें हजूर ने याको बानी में लम्बा बन कर कहो है। और नेहेर चेहेबच्चा के तीनों तरफ,

एही महाबन के बृक्ष सोभाएमान हैं, और ऊपर भी इनकी छत्री मण्डल बँधो है। और ऊपर छत्री मण्डल इनके कै कोटन बाग बगीचा बिराजमान है, और कोटन चेहेबच्चे नेहेरें बिराजमान हैं। और कोटन चौक चबूतरे बिराजमान हैं। और जेती जोगवाई धात और नंगन की, मोहोलाइत में होत हैं, तेती सर्व जोगवाई इहाँ डाल पात फल फूलन की बनी हैं। और इनकी भोमन में अनन्त कोट विध के अनन्त कोट पंखी बसत हैं। अब नेहेर की रौंस पर होके, चेहे-बच्चा को प्रदछिना देके, पुखराज की रौंस पर प्राप्त भए, जिन रौंस पर दोए हारें बृक्षों की फिरी हैं।

अब पुखराज की रौंस पर आए

अब रौंस के किनार पर कठेड़ा फिरो है, इन रौंस पर दछिन दिस मुख कर ठाड़े भए। तो दाँहिनी तरफ महाबन के पेड़, और रौंसें और चेहेबच्चा दिखाई देत हैं। और तिन के परे मधुबन और बड़ो-बन, ताकी सर्व जोगवाई दिखाई देत है। और तिन के परे जवेरों की नेहेरों कें मोहोल और सर्व जोग-वाई दिखाई देंत है। और सामें नजर करें तों, महा-बन और मधुबन और बड़ेबन कें बृक्षों कें माहें होकें, श्री धाम कें मन्दिर दिखाई देत हैं। और तीन-तीन मेंहेंरावन में होकें, भीतर की जोगवाई झिलमिलात है। और बाँईं तरफ नजर करें तें, पुनः महाबन और मधुबन, और श्री जमुना जी की रौंस और पाल दिखाई देंत हैं। और एक मोहोल एक चबूतरा सहित

पुल के, दिखाई देत हैं। और आगे चेहेबच्चा चौखूंटा रोसन है, चारों तरफ रौंस, तामें एक तरफ पुखराज की, भीतर चारों तरफ सीढ़ी उतरी हैं, जल क्रीड़ा के चबूतरा को। और रौंस के चबूतरा के तले होके नेहेर चली है, सो आगे जो महाबन को रौंस चेहे-बच्चा है, उन रौंस चेहेबच्चा में मिली है। और महाबन के रौंस चेहेबच्चों से, मधुबन और बड़ोबन और ताड़बन के रौंस चेहेबच्चों में जल चला जात है। और ऊपर चेहेबच्चे के, पुखराज की रौंस के बृक्षों ने, छत्री मण्डल बाँधो है, और पिछली दिस पुखराज को, भोम भर को ऊँचो एक चबूतरा रोसन है, उन चबूतरा की किनार पर कठेड़ा रोसन है।

अब पुखराज की तरहटी, तथा बंगला की तर-हटी, तथा अध बीच के कुण्ड की, तथा ढपो चबूतरा की, तथा मूल कुण्ड की, सर्व तरहटी नजर कर देखिए। और ऊपर चबूतरा के सर्व हाँसों में, रौंस से सीढ़ियाँ भोम भरे की चढ़ी हैं। और चबूतरा की दिवाल में, हजार हाँसें रोसन हैं, और दो-दो हाँस की सन्ध में, एक-एक थंभ आयो है, गुरज के भाव को। और हजार हाँस में हजार दरवाजे आए हैं, तिन में चार दरवाजे चार दिसन के विसेष हैं। और चबूतरा भीतर पोला है, ताकी उदर तरहटी में अपार मोहो-लाइत हैं। तिन मोहोलाइत में जेवे को, इन दरवाजे में हो मार्ग है, हर दरवाजे के आगे से, तले को भोम भरे की सीढ़ियाँ उतरी हैं।

गिनती हिसाब तरहटी पुखराज को लिखो है

तरहटी पुखराज की गिर्द चार लक्ष कोस की, और लम्बाई चौड़ाई एक लाख तेतीस हजार और तीन सै तेतीस कोस की १३३३३३। ताको बेवरा बाहिर ऊपर जिमीन के, जो हजार हाँस को चबूतरा है, जिमी सें भोम भर ऊँचा, तिन में हजार दरवाजे, तिन हजार दरवाजे से तले को सीढ़ियाँ उतरी, सीधी भोम भरे की, सो दरवाजे के तले जो दिवाल है, तिन दिवाल के आगे चार सै कोस की रौंस भई, तरहटी की जिमी से कमर भर ऊँची, तहाँ सीढ़ियाँ उतरी। और इनके आगे चार सै कोस की बगीचन की रौंस, और एक रौंस ताल की मोहोलाइत की रौंस के तले रही, चार सै कोस की। और इन दोनों रौंसों के बीच में, तले बाउन बगीचों की बाउन हारें आईं। एक हार हजार की, ऐसी बाउन हारें आईं। और बाउनै हारें बीच-बीच बगीचन के, फीलपाइयों की आईं और चेहेबच्चे आए। सो ए सब इन रौंस तें लेके, तरहटी की मोहोलाइत की रौंस के तले की रौंस तक, बाईस हजार कोस जागा हुई। और इस मोहोलाइत की रौंस के तले, जो बगीचों की रौंस है, इन रौंस तें कमर भर ऊँची, दोनों तरफ ताल की मोहोलाइत की रौंस है, चार-चार सै कोस की। और त्रेपन हाँस में त्रेपन मोहोलाइतें आईं, चारों तरफ ताल के आई। ताल की मोहोलाइतों की बाहिरी रौंस तें लेके तो, भीतरी रौंस तक, बाईस हजार कोस जागा हुई। ऐसी अै चवालीस हजार कोस जागा

ताल के उस तरफ, और चवालीस हजार कोस में ताल भयो। और ताल की मोहोलाइत की रौंस के तले, जल की तरफ रौंस चार सै कोस की, बगीचन की रौंस के बराबर, ताल के दोनों तरफ। और इन रौंस के तले कमर भर नीचे, बगीचन की जिमी के बराबर, जल की रौंस हुई, अढ़ाई सै कोस की चौड़ी दोनों तरफ, सो तेरा सौ कोस जागा हुई। इन विध सों पछिम के दरवाजे के आगे की रौंस तें लेके तो, पूर्व के दरवाजे के आगे की रौंस तक, एक लाख तेंतीस हजार तीन सै तेतीस कोस जागा हुई १३३३३३। आगे तले ही तले होके, पुखराज बंगलन की सन्ध को कुंड, भोम भर नीचो हाँस भर चौड़ो मझियाइ के, बंगलन की तरहटी में प्राप्त भए।

तरहटी बंगलन की नजर कर देखिए

तो बंगलन की तरहटी कैसी है, के लक्ष कोस की लम्बी चौड़ी बराबर है, और चार लक्ष की गिर्द है। तिन में सें साढ़े सोरा हजार में बन बगीचे हैं, तिन साढ़े सोरा हजार के सौ कोस, और इकतालीस हाँस भए। तिन में से एक हाँस में सीढ़ी आई, दो हाँसन में दो बड़ी रौंसें, बगीचन के आगे पाछे की, और अड़तालीस बगीचन की अड़तीस हारें, एक-एक हार हजार-हजार बगीचा की, ताके सब अड़तीस हजार बगीचा हुए। और आगे पाछे की चार-चार सौ कोस की रौंसें छोड के, मध्य में उन्तालीस हाँस में, उन्तालीस हजार मोहोलाइतें परी। अब सौ कोस

बगीचन के, और सौ कोस मोहोलाइत के बचे, और तीन सै कोस तेतीस हजार के हिस्सा के बचे, ताके पाँच सै कोस भए। तिन पाँच सै कोस में, चार सै में बगीचन के बराबर की रौंस हुई, मोहोलाइत की रौंस जल तरफ की, तिन के तले की रौंस हुई। और इन के तले कमर भर नीचे, सौ कोस को चौड़ो जल का चबूतरा भयो। इन विध सों बगीचन की प्रथम रौंस से लेके तो जल की रौंस लों, तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस जागा हुई। और इतेक ही बीच में ताल भयो, और इतेक ही ताल के पेली तरफ जागा हुई। इन विध सों बंगलन की तरहटी की, पछिम की दिवाल सें लेके, तो पूर्व की दिवाल तक, एक लक्ष कोस जागा हुई १००००० । और बंगलन की तरहटा सें, तले-तले मेहेराबन में होके, अध बीच के कुण्ड का तरहटी में प्राप्त भए।

तरहटी अधबीच के कुण्ड की नजर कर देखिए

सो अधबीच के कुण्ड की तरहटी, तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस जागा हुई ३३३३३ । लम्बी-चौड़ी बराबर, तहाँ ग्यारा हजार और सौ कोस में ताल आयो, और इतेक ही जागा ताल के आगे पाछे दाएँ-बाएँ रही। ताकी तफसीर, चार सै कोस में सीढ़ियाँ आईं, और चार हजार कोस में मोहोलाइत आईं, और चार-चार सै कोस में, मोहोलाइत के आगे-पाछे रौंस आई, और इन रौंस के आगे चार सै में, बगीचन की रौंस आई पाछे की, और चार सै में

बगीचन के आगे की रौंस आई। और चार हजार चार सै में, यानी चवालीस सौ में बगीचा आए। बगीचा की रौंस तें कमर भर ऊँची पाल, चार सै कोस की चौड़ी, तिन पाल से कमर भर नीची रौंस, अढ़ाई सै कोस की चौड़ी। तिनके आगे जल को चबूतरा पचास कोस को चौड़ो, सो सीढ़ियों से लेके मोहोलाइत दोनों रौंसों समेत, बाउन सौ कोस जागा भई। और बावन ही सौ कोस रौंसन सहित बगीचा हुए। आगे चार सौ की पाल हुई, और पाल के नीचे अढ़ाई सै कोस की रौंस, और रौंस के नीचे, पचास कोस को जल को चबूतरा, सो सीढ़ियन सें लेके, जल के चबूतरा लों, ग्यारा हजार और सौ कोस जागा हुई। और इतेक ही ताल भयो, और इतेक ही ताल के पेली तरफ की जागा जोगवाई हुई। इन विध सों अधबीच को कुण्ड, इस दिवाल सें लेके तो उस दिवाल तक, तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस जागा हुई ३३३३३। अब इन अधबीच के कुण्ड के आगे ढपो चबूतरा, सो तले ही तले होके ढपे चबूतरा में प्राप्त भए।

तरहटी ढपे चबूतरा की नजर कर देखिए

ढपो चबूतरा ग्यारा हजार और सौ कोस को, लम्बो चौड़ो बराबर ११९००। तामें सें सैंतीस सौ कोस को ताल, और सैंतीस सौ कोस जागा, ताल के आगे पाछे दाएँ-बाएँ रही, ताकी तफसीर। चार सौ कोस में सीढ़ियाँ, सौ-सौ कोस में मोहोलाइत के आगे

पाछे रौंस, और बारा सै कोस में मोहोलाइत, और आगे बारा सौ कोस में बगीचा, और सौ-सौ कोस की बगीचन के आगे पाछे रौंस, और चार सौ की पाल, पाल के आगे तले कमर भर नीची रौंस, रौंस से कमर भर नीचे जल को चबूतरा, रौंस अढ़ाई सौ कोस की चौड़ी, जल को चबूतरा पचास कोस को चौड़ो, आगे सैंतीस सौ में जल, और सैंतीस सौ ताल के पेली तरफ। इन विध सों ढपो चबूतरा, इस दिवाल से लेके तो उस दिवाल तक, ग्यारा हजार और सौ कोस भर जागा हुई ११९००।

तरहटी मूल कुण्ड की नजर कर देखिए

आगे सैंतीस सौ में लम्बा चौड़ा बराबर मूल कुण्ड है। तिनके तीन हिस्सा भए, बारा सौ कोस में जल को कोठ कुण्ड, और साढ़े बारा सै कोस इस तरफ, और साढ़े बारा सै उस तरफ, ताकी तफसीर, चार सै कोस में सीढ़ियाँ, और चार सौ में मोहोलाइत, और मोहोलाइत के आगे पाछे, साढ़े बारा-बारा कोस की रौंस, और आगे चार सौ कोस में बगीचा। तिनके आगे पाछे, साढ़े बारा-बारा कोस की रौंस, रौंस से आगे कोठ कुण्ड। कोठ कुण्ड के पेली तरफ जागा, साढ़े बारा सै कोस की, इन विध सों मूल कुण्ड की पछिम की दिवाल से तो पूर्व की दिवाल तक, और दछिन सें लेके, तो उत्तर की दिवाल तक, सैंतीस सौ कोस जागा हुई ३७००। कुण्ड की तीन भोमें; एक भोम तो तरहटी की जिमी सें भोम भर नीची, केवल जल ही को कुण्ड। और दूसरी भोम

तरहटी की जिमी सें, बाहिर की ऊपर की जिमी बराबर, और तीसरी भोम, मूल कुण्ड की जो चाँदनी है, और चाँदनी के तले जो छात, तिन छात के बराबर। और तरहटी की जिमी सें, कुण्ड की छात लों दो भोमें, सो दो भोम लों पानी को भरो कोठ चलो गयो, सो मूल कुण्ड की चाँदनी पै खुलो। मूल कुण्ड की चाँदनी सैंतीस सै कोस की, लम्बी चौड़ी बराबर। तामें बारा सै कोस को कुण्ड, और साढ़े बारा सै बारा सै कोस की, आगे पाछे दाएँ-बाएँ चाँदनी रही। किनार पै तीन तरफ, और कुण्ड की किनार पै चारों तरफ कठेड़ा लगो है। और कुण्ड की बीच की भोम से, तरहटी की जिमी सें, दोनों तरफ सें, चार-चार सै कोस की पालें उठी, सो बाहिर की जिमी सें, कमर भर ऊँची पाल और रौंसें रही। कोठ तें बारा सै कोसलों, श्री जमुना जी तरहटी के भीतर-भीतर चली आई। बारा सै कोस तें आगे बाहिर प्रगटी। सो मूल कुण्ड के रौंस के चबूतरा के तले होके, चार मेहेराबन में हो, पूर्व दिस को चली, मूल कुण्ड के पिटोर में, एक-एक दिस में, नौ-नौ मेहेराबें, सो मेहेराब चार-चार सौ कोस की, पूर्व की दिस नौ मेहेराबें, एक मेहेराब के सामी, जमुना जी बहती चली जाती हैं। एक-एक मेहेराब के सामी दोनों दिस की पाल रौंसें, और तीन-तीन मेहेराब जमुना जी के, दाएँ-बाएँ रहे। इहाँतें जमुना जी खुली चली। और खजाने के ताल के मध्य पेड़ सें लेके, तो मूल कुण्ड की किनार लों, दो लाख पन्द्रा हजार एक सौ

निन्यानबे कोस जागा हुई २१५१९९। और इहांतें मरोड़ लों, दो लाख चौंतीस हजार आठ सैं एक कोस जागा हुई २३४८०१। दोऊ मिल के साढ़े चार लाख कोस हुए ४५००००। पुखराज को चबूतरा भोम भर ऊँचो, ताके ऊपर को हिसाब।

पुखराजी चबूतरा नजर कर देखिए

चबूतरा चार लक्ष कोस की गिर्द ४०००००। और एक लाख तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस को लम्बो चौड़ो बराबर १३३३३३। ताके हिस्सा तीन, चवालीस हजार चार सै चवालीस कोस को एक हिस्सा ४४४४४। ऐसे तीन हिस्सा एक हिस्सा में बीच में भोम भर को ऊँचो चौखूंटो चबूतरा। और चबूतरा के आगे पाछे दाएँ-बाएँ, एक-एक हिस्सा जागा रही। और चबूतरा को चारहूँ दिसन विषे, किनार पे चार पेड हुए, सो पेड तले ताल की किनार से, दो भोम उठ के चौखूंटे चबूतरा की किनार पै उलछरे। और किनार से पाँच भोमलों सूधे चले गए, और छठी भोम सें छाजा बढ़ चले। पेड चार सै कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, और छाजा चवालीस कोस को चौड़ो, और भोम एक भोम सें दूजी भोम लों, चार सौ कोस की ऊँची। पछिम दिस घाटी की मोहोलाइत।.

घाटी पछिम उत्तर की

तिन मोहोलाइत से, चार सै कोस को चौड़ो

चबूतरा चलो, सो पुखराज के चबूतरासें आए लगो। चबूतरा जिमी सें भोम भर ऊँचो, और दाएँ-बाएँ रौंस, और घाटी की मोहोलाइत सें लेके, पुखराज के चबूतरा की किनार लों, चवालीस हजार कोस जागा हुई। और इतेक ही पुखराज के चबूतरा की किनार सें लेके, पेडन के चबूतरा की किनार लों जागा हुई। और घाटियन की मोहोलाइत के पीछली तरफ, तीन लाख छप्पन हजार कोस पैं, निपट छोर पै दो गुरज, और बीच में दरवाजा हुआ। तिन में ऊपर चढ़ने को सीढ़ियाँ, सौ-सौ कोस की दोनों गुरजें, तिन से मोहो-लाइत की दोनों तरफ दिवाल चली, और बीच में सौ कोस की चौडी सीढ़ियाँ। पचास-पचास कोस की दाएँ-बाएँ रौंस, और छाजा भयो। इन गुरज दरवाजे सें लेके, तीन लाख छप्पन हजार कोस लों, घाटी की मोहोलाइत लों, चढ़ती चढ़ती चली गई हैं, और यह घाटी की मोहोलाइत, जिमी सें तीन लाख छप्पन हजार कोस ऊँची हुई। और छठी भोम सें छाजा बढ़ चले, सो अढ़ाई सै भोम लों, और लाख कोस लों छाजा जुदे-जुदे रहे, फेर छाजा लाख कोस तें मिल के चले। घाटी तें लेके पुखराज बंगला अधबीच को कुण्ड ए सब एक भए, और रस्ता एक भयो। चाहो घाटी तें छाजे-छाजे होके, अध बीच के कुण्ड में चले जाऊ। और तीन लाख छप्पन हजार तें आगे, चवालीस हजार कोस लों, भोमन-भोमन और बढ़े। भोम भर ऊँची दिवाल, दिवाल के आगे माफक छाजा, सो पुखराज के पेड़ के छाजा सों मिलत गयो, मिलत-

मिलत पुखराज के छाजा सों घाटी को छाजा मिल गयो । ऊपर सीढ़ी तले मोहोलाइत होत गई, सो दोनों दिवालें घाटी की, पुखराज के पछिम दरवाजे के दाएँ-बाएँ जो चौखूँटे दो गुरज हैं, तिनके मुकाबिल आई। पुखराज के गुरज सौ कोस के, और घाटियों की दिवाल के सौ कोस के गुमट, दोरी बन्ध बराबर हुए। और पुखराज की दो गुरजों के बीच की कमान सौ कोस की चौड़ी, और घाटियों की दो दिवाल के बीच की सीढ़ियाँ सौ कोस की चौड़ी, दोरी बन्ध बराबर। या विध से इन दरवाजे के आगे सें, चार लाख कोस की सीढ़ियाँ उतरी हैं, और छे लाख कोस को उतार और चढ़ाव है। अब सीढ़ियों का बेवरा।

बेवरा पछिम की घाटी की सीढ़ियन का

एक कोस के मन्दिर सौ १००। तिन में सें एक मन्दिर की सीढ़ियाँ सौ १००। तिन सौ सीढ़ी के ऊपर, एक मन्दिर भरे को चौड़ो चाँदो एक, इन विध सों एक कोस में, पाँच हजार सीढ़ियाँ हुई ५०००। और मन्दिर-मन्दिर के चौड़े पचास चाँदे परे, ५०। ता ऊपर एक चाँदो एक कोस को परो। अब एक हाँस में दो सै कोस में दो सै कोसी चाँदे परे २००। कोस-कोस की चौड़ाई में एक-एक चाँदो। अब एक हाँस के दो सै कोस में, दस लाख सीढ़ियाँ परी १०००००० । और मन्दिर-मन्दिर भर के चौड़े दस हजार एक मन्दिरी चाँदे परे १००००। एक हाँसन में, और एक चाँदो दो सै कोस को न्यारो परो, हर एक हाँस

में, अब हजार हाँस में और चार लाख कोस में, एक अरब सीढ़ियाँ हुई १०००००००००। और एक करोड़ मन्दिरी चाँदे परे १००००००० । और दो लाख कोसी चाँदे परे २००००० । और एक हजार दो सै कोसी चाँदे परे १००० सो दो सैं कोस को लम्बो, सौ कोस को चौड़ो, और सौ-सौ कोस की गुमट, एक-एक दिस की दिवाल पैं छे-छे हजार गुमट उतरते ६००० । दोनों तरफ की बारा हजार गुमट १२००० । घाटी को चबूतरा भोम भर ऊँचो, कुछ सीमा छोड़ के तले तीन तरफ रौंस, इसी विध की दूसरी उत्तर दिस की घाटी सब विध बराबर। और हाँस-हाँस की हद्द में, दोनों तरफ छे सै कोस की लम्बी और सौ कोस की चौड़ी दिवाल, तिन दिवाल के अन्दर, सौ-सौ कोस के लम्बे चौड़े छे-छे चौक परे हैं। तिन एक-एक चौक में साढ़े बारा-बारा कोस में, गिर्दवाए मोहोलात, और मोहोलों के अन्दर भीतरी तरफ, साढ़े बारा-बारा कोस में गृदवाय बन, अरु बन के भीतरी तरफ, पचास कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, ऐसो एक चौखूँटो चबूतरा; ताकी किनार पैं एक हार थंभन की और थंभन की मेहेराबन में हिड़ोले लगे हैं। और कै चौक चबूतरे चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे उछलत हैं, और कै विध की जोगवाई परिपूरन है। चाँदे सीढ़ियन से दोनों तरफ की दिवाल में जाने को दरवाजे; हर हाँस में बने हैं।

चबूतरा पुखराज को बेवरा

चबूतरा पूखराज को, चार लाख कोस की गिर्द,

और एक लाख तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस की लम्बाई चौड़ाई, और चबूतरा के ऊपर तीसरे हिस्सा में, भोम भरे को ऊँचो चबूतरा एक, तिन चबूतरा की गिर्द, एक लाख छेहत्तर हजार कोस की भई, और सर्व मोहोलाइत आकासी मोहोलाइत की भाँत रही, तेरा-तेरा मोहोल एक दिस में रहे। और चारहूँ दिसन में चार दरवाजे बड़े रहे, सो चार दरवाजे चार दिसन में; और ऊपर किनार के आए जो चार पेड़ हैं, तिन में आए। सो किनारै किनार होके जो प्रदक्षिणा दीजिए, तो एक लाख छेहत्तर हजार कोस की परत है, और जो पेडै पेड़ प्रदक्षिणा दीजे चारों खूँटों को छोड़ के, तो एक लाख तेतीस हजार कोस की परत है, ग्यारा-ग्यारा हजार कोस के चारों खूँट छूटे। पेड़ पाँच हाँस-हाँस भरे के लम्बे चौड़े बराबर। चार चारों दिसन में, और एक चारों के बीच में। दिसन के जो पेड़ हैं तिनको आपुस में, तेतीस हजार कोस को अन्तर है, और दिसन के पेड़ सें बीच के पेड़ लों, बाईस-बाईस हजार कोस को अन्तर है। और इतेक ही कोसन की, छज्जन की मेहेराब पड़ी। और पेड़ चारहुन के, चारों दिसन के छाजा जुदे जुदे हिसाब के परे हैं। पछिम को जो पेड़ है, ताको पछिम तरफ को छाजा, चवालीस कोस का हुआ; और पछिम के पेड़ को उत्तर तरफ को जो छाजा है; सो तेतीस कोस को है, और पछिम के पेड़ को पूर्व की तरफ को जो छाजा है, सो बाईस कोस को है। इन विध सों तो गिर्द के पेड़न के छाजा भए, और बीच

के पेड़ के जो छाजा हैं, सो बाईस बाईस कोस के चारों तरफ बराबर। अब इनकी पाँच पेड़ दो घाटी और ताल, इन आठ निसानन की, लाख कोस ऊँचे चौदा मेहेराबें पड़ी। छाजा अपने अपने माफक, और ऊँचाई भोम की चार सौ कोस की। अब पछिम को जो पेड़ है, ताको उत्तर की तरफ को छाजा तेतीस कोस को, उत्तर के पेड़ की तरफ को बढ़ चलो, और इतेक ही उत्तर के पेड़ को छाजा, पछिम के पेड़ की तरफ को बढ़ चलो, सो एक लाख कोस पै दोऊ एक में एक भए। लाख कोसलों अढ़ाई सै छाजा भए ऊँचाई में, और पेड़ तें दूसरे पेड़ की तरफ जागा सवा आठ हजार कोस भर दोऊ तरफ के छाजों ने दाबी, और इतेक ही दूसरे पेड़ के छज्जा ने जागा दाबी। दोऊ तरफ से इकतालीस सौ इकतालीस सौ और पच्चीस पच्चीस कोस भर एक एक पेड़ के छाजा ने दाबी। इन विध सों दोऊ तरफ से सवा आठ हजार कोस जागा हुई। और पौने पच्चीस हजार कोस जागा बीच में रही, सो दो सै इक्यावने छाजा से एक छाजा चलो, सो पौने पच्चीस हजार कोस जागा ढाँप के, दूसरे पेड़ को दो सै इक्यावनो जो छाजा है, तिन छाजा कों जाए मिलो, अब इहाँ सें तीन लाख कोस लों मिले मिले चले, एक पेड़ से चारों पेड़ कों प्रदक्षिना दे आइए। और पौने पच्चीस हजार कोस को जो छाजा भयो, तिन छाजा के ऊपर मोहोलाइत आई, यह जुक्ति तो चारों दिसन के जो चार पेड़ हैं, तिन की हुई। और जो बीच को पेड़ है,

तिनकी मेहेराबें चारों दिसन के पेड़न सों मिली, बाईस बाईस कोस के छाजा दोऊ तरफ से बढ़ चले, सो अढ़ाई सै छाजा लों बढ़े, ऊँचाई लाख कोस पर पहुँची, और चौड़ाई में साढ़े सत्ताईस सौ कोस, इस तरफ के छाजा नें दाबी, और साढ़े सत्ताईस सै कोस उस तरफ के छाजा ने जागा दाबी, सब दोऊ तरफ की पचपन सौ कोस जागा दाबी। और साढ़े सोरा हजार कोस की दोऊ पेड़ और छाजों के बीच में छेटी रही। सो दो सैं इक्यावने छाजा से छाजा चजो, सो साढ़े सोरा हजार कोस चल के, दूसरे पेड़ को दो सैं इक्यावनों जो छाजा है, तिन छाजा में मिल गयो। याही विध से पच्छिम के पेड़ से पर्व के पेड़ लों, और उत्तर के पेड़ से लेके दच्छिम के पेड़ लों एक मार्ग हो गयो, और तले सुन्दर मेहेराबें रहीं। इहाँ ऊँचाई लाख कोस की भई, और दोऊ तरफ से छाजों ने, साढ़े पाँच हजार कोस जागा दाबी, पेड़ से साढ़े सत्ताईस साढ़े सत्ताईस सौ कोस लों, छाजों ने तले अपनी छाया डाली, और बीच में साढ़े सोरा हजार कोस को जो छाजा है, जो दूसरे छाजा को जाए मिलो है, तिन छाजा के ऊपर मोहोलाइत आई। अब इहाँ से तीन लाख कोस लों, छाजा और मोहोलाइतें मिली हुई चली। इन विध सों चार मेहेराब दिसन के, और चार मेहेराब बीच के पेड़ के भए। और पच्छिम के पेड़ तें पच्छिम को जो छाजा है, सो पच्छिम की घाटी की तरफ को चलो, सो छाजा चवालीस कोस को चौड़ो है, सो भोम भोम भर के

बढ़ते बढ़ते अढ़ाई सै छाजा परे। और याही विध सों चवालीस कोस के चौड़े भोम भरे के बढ़ते बढ़ते, घाटियन के छाजा पच्छिम की घाटी से चले, सो अढ़ाई सै मों छाजा लाख कोस ऊँचे लों पोहोंचो। और चबूतरा की जो जिमी है, सो ग्यारा हजार कोस लों घाटी की तरफ की दाबी। याने पेड़ को दो सै पचासमों जो छाजा है, तिन ने ग्यारा हजार कोस पर अपनी छाया डाली। और याही विध सों ग्यारा हजार कोस पर, घाटी के छाजा ने अपनी छाया डाली सो जितेक पेड़न तें पुखराज के चबूतरा की, पच्छिम दिस की किनार है, उतेक ही घाटी की मोहोलाइत सें, पुखराज के चबूतरा की किनार है। और इहाँ ऊँचाई लाख कोस पर पोहोंची, और चौड़ाई ग्यारा हजार कोस पर, पेड़ से पुखराज के चबूतरा की किनार के चौथे हिस्सा लों। आगे इहाँतें किनार पुखराज की, तेतीस हजार कोस के अन्तरसों है, और यही विध घाटी की है। अब इहाँतें तीन लाख कोस लों एक होके चले। पहेलो छाजा चवालीस कोस को चौड़ो, तापर कोस कोस के अन्तर सों थंभन की हारें चली, चवालीस चवालीस थंभन की चवालीस हारें, एक छाजा पर आईं, ऐसे चार दिसन के चार छाजा आए हैं। सो प्रथम छाजा घाटी दिस को, तापर चवालीस कोस में कुल्ल थंभन की हारें आईं, फेर दूसरो छाजा तले के छाजा से भोम भर ऊँचो, घाटी की दिस को दो भोम भर को लम्बो, एक भोम की चौड़ाई। तिनके तले पहेली भोम के जो

थंभ हैं, ते आए लगे। और दो भोम को लम्बो छाजा जो दूसरी भोम को है, तिन में भोम भरे में मोहोलात आई, और दूसरी भोम में थंभ आए। या विध सों सर्व भोमन में, एक एक भोम में थंभ आए, और सर्व भोम में मोहोलात आई। जैसे पाँच भोम का छाजा हुआ, तहाँ चार भोम में मोहोलात, और पाँचमी भोम में किनारे थंभन की हारें आई, यही विध सर्व भोमन की जानवी। सर्व भोमन में छाजा के ऊपर, आगे थंभन की हारें आई हैं भोम भरे में, और पाछे मोहोलाइत होत गई हैं, और ऐसी अै जुक्ति ताल के छाजन की आई है।

अब बंगलन की चाँदनी पर नजर करिए

बंगलन की चाँदनी चार लाख कोस की गिर्द, ताके मध्य में भोम भरे को चेहेबच्चा एक, बारा हजार कोस को लम्बो चौड़ो बराबर। दस हजार में जल, हाँस हाँस भरे की चारों तरफ मोहोलाइत, मोहोलाइत से चवालीस हजार कोस जागा किनार लों, चारों तरफ पड़ी है। अब चवालीस कोस को छाजा भोम भोम प्रति बढ़ चलो, सो ऊपर तो सीढ़ी होइ चली, और तले देहेलानों की मोहोलाइत होइ चली। जिन विध सों दोऊ घाटियन की मोहोलाइत हुई हैं। सो जहाँ अढ़ाई सै छाजा भयो, तहाँ लाख कोस की तो ऊँचाई हुई, और छाजों ने बंगलन की चाँदनी की जिमी चारों तरफ की, ग्यारा हजार कोस दाबी, याने ग्यारा हजार कोस तक छाया डाली।

इहाँ से एक छाजा चलो, सो छयासठ हजार पै, जो पुखराज के पेड़ को छाजा है, तिन छाजा को जाए मिलो। इहाँ से ताल की मोहोलाइत, और पेड़न की मोहोलाइत, तीन लाख कोसलों एक होके चली। और इहाँई लों जल की तरफ ताल ने वृद्धि पाई। मध्य से सत्रा सत्रा हजार कोस की वृद्धि चारों तरफ हुई, चौंतीस हजार कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, इहाँ से गृद बढ़ना बन्द हुआ। अब इहाँ से ताल पाल की किनार पर से, चारों तरफ एक दिवाल उठी, आठ हजार कोस कम तीन लाख कोस ऊँची। इहाँ से इन दिवाल से छाजा बढ़ चले, छाजा वे ही चवालीस कोस के चौड़े, और भोम चार सै कोस ऊँची। सो बढ़त बढ़त ताल बीस भोम कम हजार भोम भयो, और जिमी से तीन लाख बानब्बे हजार कोस ऊँचो। और इहाँ बंगलन की चाँदनी पै गृदवाय चेहेबच्चा के, चेहेबच्चा हिड़ोले बगीचे मोहोलाइत, एक भोम लों चाँदनी की किनार लों परी हैं। और कै चेहेबच्चे फीलपाइयों के ऊपर आए हैं। इहाँ होके जल बंगलन के चेहेबच्चन को जात है। इन विध सों दो मेहेराबें ताल की हुई, और तरफ दच्छिन के, जैसे दोनों घाटियन के छाजा, पच्छिम उत्तर से बढ़ चल हैं, ऐसे ही दच्छिन से माफिक हिसाब के, महाबन ने अपनी छवी बढ़ाई है। और जहाँ से सर्व मोहोलाइतें मिल चली हैं, तहाँ से ए भी मिल चला है, हर भोमन में छाजा और महाबन की छवी एक भई। छाजा तें बन को, और बन तें छाजा को हर भोम में रस्ता

है। और पुखराज की चाँदनी सें धाम की चाँदनी कों, बन की छत्रियन की सीढ़ी लगी है। जो बनन की छत्रियन की सीढ़ियन पर होके, पुखराज की चाँदनी सें धाम की चाँदनी पर आइए। और पुखराज से चारों तरफ, महाबन मधुबन बड़ोबन सोभाएमान हैं, और इनकी छत्रियन की गिर्दवाए सीढ़ियाँ सी लगी हैं। और दच्छिन की तरफ जहाँ अढ़ाई सै छाजा हो चुके, ताके ऊपर को छाजा दो सै एकावनमों जब बढ़ो, सो छाजा भोम भर तो उत बढ़ो, जित उनको मुख है। और भोम भर की चौड़ाई लेके छाजा, चारों मेहेराब जो पेड़ की हैं, तिन मेहेराबन की पेसानी पर हो फिर आयो। सो अब इसी विध सों भोम भोम प्रति चढ़तो चढ़तो चलो गयो, ता करके पुखराज गोलाकृत हो गयो। और चार सन्धें भीतर की, जो पाँच पेड़ के भीतर, सिगारे की भाँत चारों कोने में परत हैं, सो पूरित भई। और चार सन्धें बाहिर परती हैं, चारों कोनन में, सो इन गृद पेसानी के छाजा करके, सर्व सन्धें बाहिर भीतर की पूरित भई। और इहाँ से पुखराज गोलाकृत होके बढ़ चलो, सो बढ़त बढ़त हजार भोम, और चार लाख कोस पर पोहोंचो। हर एक छाजा पर थंभन की हारें गृदवाए फिरी हैं, तिनहीं की कचेहेरी देहेलान झरोखा परे हैं।

चाँदनी पुखराज की नजर कर देखिए

चाँदनी पुखराज की चार लाख कोस की गिर्द, और किनारा पै कमर भर ऊँचो चबूतरा, हाँस भरे

को चौड़ो, ताके ऊपर हजार हाँस की मोहोलाइत किनार पै गृदवाए आई हैं। और हजार हाँस में हजार हवेली, और हरेक दो हाँस की सन्ध में, एक गोल गुरज, हर एक हवेली के दाएँ बाएँ। और हर एक हाँस में हवेली के बीच में, एक एक बड़ो दरवाजो, तिन दरवाजे के दाएँ बाएँ दो दो चौखूंटे गुरज। और चारहूँ दिसन में चार दरवाजे निपट बड़े, तिन निपट बड़े दरवाजों के दाएँ बाएँ, दो चौखूंटे गुरज निपट बड़े, और हर एक हाँस में सोरा हवेली हैं, चार चार हवेली की चार हारें चौड़ाई में, और हर एक हवेली के दाएँ बाएँ दो दो हार थंभन की, और तीन तीन गली। सो सोरा सोरा की एक हवेली बिचारे सें, हजार हवेली होती हैं, और हर एक हाँस में चार चार हवेली की, एक एक हवेली बिचारे से चार हजार हवेली होती हैं, और हर एक हाँस में सोरा सोरा हवेली लए सें, सोरा हजार हवेली होती हैं, और हर एक हाँस में ए तीनहूँ भाव पूरन पाए जात हैं। ताके हजार तो बाहिरी तरफ गोल गुरज हैं, सो ए भीतर की तरफ नहीं हैं, और सर्व जोगवाई जैसी बाहिर तैसी भीतर, गुरज चौखूंटे दो हजार बाहिर, तैसे ही भीतर, चार हजार त्रिपोलिया जैसे बाहिर तैसे भीतर। बड़े दरवाजे चार छोड़ के, बाहिरी तरफ आगे तीन तीन सीढ़ी उतर के, बड़े छाजा पर जैए, जो चार सै कोस को चौड़ो है। और गिर्दवाय फिरो है, हवेली पचास कोस की लम्बी चौड़ी बराबर, और पचास कोस में तीनहूं गली, एक

एक गली साढ़ें सोरा कोस की और हर एक हाँस में सात सन्धें, तिन में से दो हवेली और एक त्रिपोलिया की सन्ध इस तरफ, ऐसी अै उस तरफ, और एक सन्ध बीच में आई, तिनके सूत्र में दरवाजो आयो, और दोऊ तरफ दो हवेली, तिनके आगे चौखूंटे दो गुरज आए। अब एक हवेली और एक त्रिपोलिया दाएं बाएं बचो, हर एक हांस में, पचास कोस में बीच को दरवाजो, और पचास कोस के दाएं बाएं के दो चौखूंटे गुरज, एह विध सर्व हाँसन की भई। और चार जो निपट बड़े दरवाजे हैं, सो दरवाजे सौ-सौ कोस के, और सौ सौ कोस के दाएं बाएं दो चौखूंटे चबूतरा, और पचास कोस इस हाँस के, और पचास कोस उस हाँस के, इन दो पचास कोस को गोल गुरज, सो दोनों तरफ से पचास पचास कोस लए तें, गोल गुरज सो भी सौ सौ कोस के होत हैं, एह विध सर्व हाँसन की भई। हवेलियन की पाँच भोम छठी चाँदनी, और निपट बड़े जो चार दरवाजे हैं, तिनकी तीन सौ कोस तक की मेहेराब, और सौ सौ कोस की उसकी दोनों ओर की दो गुरजें हैं, और दरवाजे के भीतर सोरा हवेली नहीं हैं, परंत दाएं बाएं त्रिपोलिया बने रहे। और दाएं बाएं चार चार हवेली सहित त्रिपोलियन के, और सहित चबूतरा थंभन के बने रहे हैं। और हवेलियन के भीतर पचास पचास मोहोल एक एक दिस विषे, सौ सौ मन्दिर को एक एक मोहोल, और आगे मोहोलन के एक हार थंभन की आई, तिनके आगे चार दरवाजे छोड़ के, चारहूं

दिसन विषे चार बन हैं, तिनमें चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे छूटत हैं। और तीसरे हिस्सा में एक चौखूंटो चबूतरा, तिनके किनारे थंभन की हार, तिन हार में हिंडोले सोभाएमान हैं, और भी अनन्त कोटि जोगवाई परिपूर्ण हैं। और निपट बड़े दरवाजों के ऊपर, पाँच भोम के ऊपर मोहोलाइत आई, तिनकी पाँच भोम छठी चांदनी। हवेलियन की चाँदनी सें, दोऊ किनार पै भोम भरे की ऊंची एक दिवाल उठी, हवेलियन की दोऊ किनार पर, एक दिवाल तरफ बाहिरी, महाबन की तरफ, और दूसरी दिवाल तरफ आकासी मोहोल के दिवाल की किनार पर नूर की काँगरी। और दिवाल चौड़ी परिक्रमा के कारन, और इनहीं दिवाल पर होके, गोल गुरजों की चाँदनी पर जाइए। दिवाल दरवाजे की मोहोलाइत के पेहेली भोम लों, सीढ़ी चढ़ के चाहे छाजा पर हो मोहोलाइत में जाइए, और चाहे छाजा पर हो दिवाल की प्रदक्षिणा दीजे। और तले दिवाल के दरवाजे होके, चाहे दो हजार गुमटन में, अथवा त्रिपोलियन में जैए, जहाँ आठ आठ मेहेराबें आई हैं, तीन बाहिर को और तीन भीतर को, और एक दाएं और एक बाएं, इन विध सों यह हजार हाँस की मोहोलाइत हुई। अब इनके भीतर चेहेबच्चे बगीचे चाँदनी के मझियाय के, आकासी मोहोल में पोहोंचे।

अब आकासी मोहोल नजर कर देखिए

सो आकासी मोहोल खजाने को ताल, और पुख-

राज के गोल चबूतरा पै जो चौखूंटो चबूतरा है, तिन चबूतरा के ऊपर आयो है। चवालीस हजार कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, और कमर भर ऊँचो एक चबूतरा हुआ। तिन चबूतरा की किनार पै, तेरा तेरा हवेलियन की तेरा हारें, ताकी एक सौ उनहत्तर हवेली हुईं। एक दिस में तेरा हवेली, और बारा त्रिपोलियाँ, और छबीस चौखूंटे गुरज, ऐसे चारों तरफ, और चार गुरज चारों खूंटों के गोलाकृत, हर दरवाजे आगे तीन तीन सीढ़ियाँ चढ़ने उतरने की, एक एक हवेली अट्ठाईस अट्ठाईस सौ कोस की २८०० । लम्बी चौड़ी बराबर। और चार सै कोस में त्रिपोलियाँ, और एक एक हजार कोस में चारों कोने के चार गोलाकृत गुरज, पञ्च पहल को अढ़ाई हाँस को लम्बो चौड़ो। और सर्व हवेलियों से चार हवेली निपट बड़ी, छत्तीस छत्तीस सौ कोस की ३६०० । और सब हवेली अट्ठाईस अट्ठाईस सौ कोस की, और दो दो हवेली के बीच में दोहोरी हार थंभन की, सर्व हवेलियों के गिर्दवाए। और हवेली अट्ठाईस मोहोल की, सात सात मोहोल हवेली के चारों तरफ, एक एक मोहोल चार चार सौ कोस को, लम्बो चौड़ो बराबर, भीतर चबूतरा, तिनके आस पास बन बगीचे, तिन में कै चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे छूटत हैं, और बन के भीतर तीसरे हिस्सा में चबूतरा चौखूंटो, ताके किनार पै थंभन की हार, और हिड़ोले लगे हैं, और भीतर अनन्त कोट जोग-वाई परिपूर्ण है। और चारों तरफ किनार पै, जो

एक हार तेरा तेरा हवेली की फिरी है, तिन एक दिस में छे हवेली इस तरफ, और छे हवेली उस तरफ, और बीच में जो दरवाजे की हवेली है, तिन हवेली के चारों तरफ, चार चार सै कोस के लम्बे चौड़े नौ नौ मोहोल, एक एक दिस में परे हैं। तिन नौ मोहोल में से चार मोहोल इस तरफ, और चार मोहोल उस तरफ, और बीच को जो मोहोल है, तामें दरवाजो परो है, चार सौ कोस में, गुरजन सहित। और चारहूँ दरवाजे आकासी मोहोल के, और चारहूँ दरवाजे हजार हाँस की मोहोलाइत के, दोरी बन्ध बराबर। और चारहूँ दरवाजन को सुवर्ण के किमाड़ हैं, और इन चारहूँ मोहोल दरवाजों के तले, चारहूँ फीलपाए बुलन्द पेड़ आए लगे हैं। सो चारहूँ दरवाजे आकासी के, इन पेड़न के ऊपर आए हैं, और पाँचमा पेड़ बीच की हवेली के तले आए लगो है। चारहूँ पेड़ इन चाँदनी ही से रहि गए, और पाँचमा पेड़ आकासी की चाँदनी लों चलो गयो है। पचीसमी हवेली मध्य की नौ मोहोल की लम्बी चौड़ी, मध्य के चबूतरा के तले, पाँचमा पेड़ उलछरो, इन आकासी मोहोल की भोमें, चार चार सै कोस की एक भोम, इन विध सों मोहोल आकासी भोमन भोमन बढ़ो। सो बढ़त-बढ़त जितेक जिमी से पुखराज की चाँदनी ऊँची है, इतेक ही पुखराज की चाँदनी से, आकासी मोहोल ऊँचो है। हजार खण्ड और चार लाख कोस ऊँची चाँदनी भई।

चाँदनी की किनार पै एक दिवाल भोम भर ऊँची, चौगृद फिरी है, तापर काँगरी प्रदक्षिना को जागा और इतहीं कोने पै गोल गुरज पोहोंचे, तिन पर खुली चाँदनी। और एक सौ चार चौखूंटे गुमट, इन दिवाल के दरवाजों के आगे आए। और अड़तालीस गुरज त्रिपोलियन के, तिन में बैठकें रही, और दिवाल के दरवाजों में होके, इन गुमट गुरजों में आइए। और दिवाल के भीतर मध्य में एक चबूतरा, तिन चबूतरा के आसपास बन बगीचे, तिन में चेहेबच्चा नेहेरें फुहारे छूटत हैं। और चाँदनी के तीसरे हिस्सा में, मध्य में एक चबूतरा कमर भर ऊँचो, किनार पै कठेड़ा, और नूर को बिछौना, मध्य में नूर को सिघासन। और चबूतरे के गृदवाए बन बगीचे नेहेरें फुहारे छूटत हैं। चबूतरा के भीतर सें, बीच के पेंड़ में से, जल उतरत है, सो सर्व बगीचन में विचर के, जल भोम भोम होके तले की भोम में आयो। और एक सौ उनहत्तर हवेली में परिक्रमा देके, रौंस के तले होके, बाहिर आकासी के दरवाजे चारहूँ छोड़ के, हर हवेली के आगे चारों तरफ, बन बगीचे फूलबाग चेहेबच्चे नेहेरें फुहारें छूटत हैं। तिन में जल विचरो। और इहाँ चाँदनी को प्रदक्षिना देके, जल हजार हाँस की मोहोलाइत में पोहोंचो, तहाँ सर्व हवेलियों के सर्व बगीचों में विचर के, तरफ पूर्व की चलो। सो तले ही तले छज्जों में होकें, पुखराजी ताल में चादरों होके बीस भोम ऊँचे से गिरत है। अब भोमन भोमन

उतर के फेर पुखराजी चबूतरा पर आए। पुखराजी चबूतरा पर होए, बंगला को बरनन करत हैं, तले से ऊपर लों कुण्ड मिलाय, तहाँ तले चार नेहेरें देख के, और ऊपर चौदा मेहेराबें लख के, चबूतरा मझियाए के, एक भोम को नीचो हाँस भरे को लम्बो चौड़ो, ऐसो जो चेहेबच्चा है, ताको मझियाए के, बंगलन के चबूतरा पर प्राप्त भए अब इन बंगलन को बेवरा।

बंगला नजर कर देखिए

बंगलन को चबूतरा लाख कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, और चौखूँटो, और तले पोला दो भोम लों। और इनके पिटोर में एक एक दिस में अढ़ाई अढ़ाई सै मेहेराब, चारों दिस की हजार। आगे सीढ़ी सोभाएमान हैं, तले तरहटी में जैवेको, ऊपर किनार पै गृदवाए कठेड़ा। और चबूतरा के तीन हिस्सा, तेतीस तेतीस हजार कोस के, तिन एक हिस्सा बीच में, अड़तालीस अड़तालीस बंगलन की अड़तालीस हारें, और अड़तालीस ही चेहेबच्चन के चबूतरन की अड़तालीस हारें। और तेतीस तेतीस हजार कोस जागा आगे पाछे दाएँ बाएँ बची, तिन में ग्यारा ग्यारा हजार कोस में गिर्दवाए फीलपाए परे। और ग्यारा ग्यारा हजार कोस में, फीलपाइयों के आगे पाछे बड़ेबन की पाँच हारें आईं, इन विध सों लाख कोस पूरे भए। तिनकी तफसीर, प्रथम मध्य को तेतीस हजार कोस को जो हिस्सा है, और तीन सै तेतीस कोस तिनके ऊपर ३३३३३। इन तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस में जो मन्दिर हैं, सो एक लाख

छयासठ हजार साढ़े छे सै मन्दिर भए । एक एक कोस में पाँच पाँच मन्दिर, तहाँ प्रथम बंगला भयो, तिन बंगला को गेर के बारा बारा बगीचा । सो बंगला के एक सतर के मन्दिर छे सै, बड़े दरवाजे से दाएँ बाएँ, तीन तीन सै मन्दिर, और दरवाजों और खूंटों के मन्दिरों सुद्धाँ (सहित) । दरवाजों के आगे सौ सौ मन्दिर को चौड़ो, बंगला के चारों तरफ बड़ो दरबार परो, ता करके चबूतरा बंगलों के, आठ सै मन्दिर के लम्बे चौड़े हुए । और चार सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो, एक एक बगीचा हुआ, ऐसे बारा बारा बगीचा हर एक बंगला के गिर्दवाए, इन बगीचन के समेत बंगला इस किनार से लेके, उस किनार तक, सोरा सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो भयो । और याही विध सों दो बंगलों के बीच में, अड़तालीस चबूतरा चेहेबच्चन के हुए । सो भी सोरा सोरा सै मन्दिर के लम्बे चौड़े बराबर । छे सै मन्दिर में जल भरो है, और सौ सौ मन्दिर की चौड़ी चारों तरफ पाल आई । और चार चार सै कोस के चौड़े, भोम भोम भर के लम्बे, सर्व चेहेबच्चन के चारों तरफ बारा बारा बगीचा आए । जैसे बंगलन के गिर्द आए हैं, इन विध सों जितेक बगीचन सहित बंगला भए तें, उतेक ही चौड़े लम्बे चेहेबच्चा भए । और हर एक बंगला और चेहेबच्चा के आस पास जो बड़ी नेहेर है, सो नेहेर सवा सौ मन्दिर की चौड़ी, पचास पचास मन्दिर की दोऊ पालें, और पचीस मन्दिर की चौड़ी नेहेर, और पाल पर गिर्दवाय छोटे देहुरी मोहोल, और मोहोल के दोनों तरफ, कै रंग के कै हारें

फूलन की, और कै मोहोल बगीचों में, ताके सोरा सोरा सै मन्दिरों के हिसाब से, बंगला और चेहेबच्चा के मन्दिर एक लाख त्रेपन हजार और छे सौ भए। और सवा सौ के हिसाब से, छयानब्बे नेहेर के, बारा हजार मन्दिर भए, ताके त्रेपन हजार अरु बारा हजार मिल के पैंसठ हजार और छे सौ मन्दिर भए। आगे एक हजार मन्दिर बचे, सो हजार मन्दिर में पाँच-पाँच सै मन्दिर की, सर्व बंगलों और चेहेबच्चों के आस पास पड़साल पड़ी। इन विध सों सर्व बंगलों और चेहेबच्चों अरु बगीचों नेहेरों के मन्दिर, एक लाख और छयासठ हजार और छे सौ मन्दिर भए, और इहाँईलों तेतीस हजार और तीन सै तेतीस कोस को, हिसाब पूरन भयो। अब इन बंगलों और चेहेबच्चों के आस पास, सर्व को गेर के, चार हारें बुलन्द फीलपाइयों की पड़ी, तिनके बड़े बुलन्द विस्तार हैं। और पाँच हारें बड़े बन के वृक्षों की, फीलपाइयों के अैली तरफ, और पाँच हारें बड़ेबन के वृक्षों की, फीलपाइयों के पेली तरफ, और वृक्ष और फीलपाए, अढ़ाई अढ़ाई हजार कोस के अन्तर सों पड़े, पाँच हारें अैली तरफ के वृक्षों की, और पाँच हारे पेली तरफ के वृक्षों की, और चार हारें फीलपाइयों की, इन चौदा हार के माहें तेरा सन्धें परी, १३। सो एक एक सन्ध अढ़ाई अढ़ाई हजार कोस की, और एक एक भोम की आगे पाछे पड़साल पड़ी, चार चार सै कोस की, इन विध सों अैली तरफ की हार सें लेके, तो पेली तरफ की हार किनार लों, तेतीस हजार और तीन सौ कोस जागा हुई, और

तेतीस हजार और तीन सौ दूसरी तरफ के, और तेतीस हजार कोस जागा बीच में हुई, बंगलन और चेहेबच्चन की भई । इन विध सों बंगलन को चबूतरा, इस किनार से तो उस किनार तक, ऊपर के कोसों सहित, एक लक्ष कोस को लम्बो चौड़ो बराबर भयो । और फीलपाए बंगलन की चाँदनी सों लगे हैं, मन्दिरन की पाँच भोमें, सो बंगलन की एक भोम, याही विध सों बंगलन की पाँच भोमें, फीलपाइयों की एक भोम, सो सर्व फीलपाए बंगलन के, छात पाँचमी सों लगे हैं, और महा बुलन्द कुसादे मेहेराब पड़े हैं, और तैसेही बुलन्द कुसादे आगे पाछे बड़ोबन के बृक्ष परे हैं, जिनकी हजारन कोस की दूरी सें मेहेराबें परी हैं, और बन भी पाँचमी छात को लगो है, फीलपाइयों के बराबर। और बगीचों की भोमें, बंगलन के मन्दिरों की भोम के बराबर, और बंगलन के मन्दिरन की और थंभन की पाँच भोमें, और बंगला की पेहेली भोम, ऐसे ही बंगलन की पाँच भोमें; और दिवालों के मन्दिरों की पचीस भोमें, बंगलन की एक भोम में मन्दिरों की पाँच भोमें भई। और पाँच भोमें थंभन की, सो मन्दिरन के मेहेराब; और दो हारें थंभन की, बाहेर भीतर की, और एक हार चबूतरा के किनार की, ए तीनों हारों की मेहेराब, और मन्दिरन की मेहेराब, और बन बगीचों के बृक्षों के मेहेराब, ए सम्पूर्ण मेहेराब दोरी बन्ध बराबर आए हैं। बगीचों के बृक्षों की भोमों से, दौड़ते दौड़ते बंगलन के मन्दिरन की भोमों में आइए,

और थंभन के मेहेराबन पर होके, चबूतरा पर बिराजे जो श्रीराज ठकुरानी जी हैं, तिनकी झाँकी लीजे। और चाहिए तो बंगलन की हर भोम से, बगीचों की हर भोम में जाइए, इनकी पाँच और पचीस भोमें, बन की पाँच और पचीस भोम से, दोरीबन्ध बराबर। और सर्व बंगलों और चेहेबच्चों को गेर के, जो चार हार फीलपाइयों की फिरी हैं, सो प्रथम हार जो फिरी, सो एक सौ बानब्बे १९२। फीलपाइयों की फिरी है। और तिन को गेर के जो दूसरी हार फिरी है, सा एक सौ छयानब्बे १९६। फीलपाइयों की फिरी है। और तिनको गेर के तीसरी हार जो फिरी है, सो दो सौ २००। फीलपाइयों की फिरी है। और तिनको गेर के चौथी हार जो फिरी है, सो दो सौ चार २०४। फीलपाइयों की फिरी है। इन विध सों चारों हार के फीलपाइए, सात सौ बानब्बे भए ७९२। और फील-पाइयों की एक हार से दूसरी हार तक, अढ़ाई हजार कोस को फरक है २५००। और आपुस में हार कतार में, साढ़े बारा सौ कोस को फरक है १२५०। और फीलपाइए जहाँ जितेक अन्तर सों चाहिए, तहाँ तितेक ही अन्तर सों परे हैं। फीलपाइयों को परि-क्रमा देत देत, तरफ पूर्व के ऊपर कुण्ड के गए।

अधबीच को कुण्ड नजर कर देखिए

तहाँ जो देखिए, तो तेतीस हजार कोस को लम्बो चौड़ो, अधबीच को कुण्ड सोभायमान है। ग्यारा ग्यारा हजार कोस में चारों तरफ, चार हार

फीलपाइयों की फिरी है, और ग्यारा हजार कोस को लम्बो चौड़ो बीच में कुण्ड आयो है। तिन तीन तरफ के फीलपाइयों का बेवरा, साढ़े बारा बारा सौ कोस में १२५०। एक एक मेहेराब, तीन सन्ध के साढ़े सैंतीस सै कोस भए ३७५०। और इतेक ही कोस में दोनों तरफ फीलपाइयों के आगे बन बगीचे आए, और बगीचों के दोनों तरफ चबूतरा रहो, बगीचन के आगे। तहाँ से तरफ कुण्ड के सीढ़ियाँ उतरी, और कुण्ड की जो चार दिसा हैं, तिन में से पच्छिम की दिस जो चबूतरा है, तिन चबूतरा के ऊपर चार हारें फीलपाइयों की फिरी हैं, सो चार हारें फीलपाइयों की कुण्ड के हिस्सा की न्यारी हैं, और चार हारें बंगलन के फीलपाइयों की न्यारी। सो कुण्ड के हिस्सा की चार हारें, चारों तरफ कुण्ड के फिरी हैं, और कुण्ड के फीलपाइयों की मेहेराब छज्जा कठेड़ा, बंगलन के फीलपाइयों से मिल रहे हैं, और एक में एक हो गए हैं। और इत पच्छिम दिस के चबूतरा पै, जो फीलपाइयों की हार आई है, सो कुण्ड के किनारे नौ मेहेराबें आई हैं, तिन में से एक एक मेहेराब भर जागा दाएँ बाएँ रही, और आठ थंभ और सात मेहेराबें बीच कुण्ड के आई। और सात मेहेराब के दाएँ बाएँ, एक एक चौखूँटो गुरज दोनों तरफ आयो। और चौखूँटे गुरज के दाएँ बाएँ, दो गोल गुरज उठे, सो ए कुण्ड के किनार की सात मेहेराबें, और दो चौखूँटे गुरज और दो गोलाकृत गुरजें, ए तीनहूँ तले से लेके, पुखराजी ताल की चाँदनी लों, उपरा ऊपर चले गए

हैं। सो चौखूंटे गुरज तो चौखूंटे गुरज के सामें आई, और भोम भर के छाजा के तले लगी, और गोल गुरजें गोल गुरजन के सामें आई। और कुण्ड के पच्छिम के चबूतरा की देहेलान के ऊपर, जबेरों की मोहोलाइत के आगे, जो देहेलान आई है सो आई। और बीच कुण्ड के जब कमर भर ऊँचे चबूतरा से उतर के आइए, तब प्रथम ही, सौ कोस की चौड़ी किनारे गिर्दवाए पड़साल आई। तिन पड़साल के आगे, अट्ठाईस अट्ठाईस थंभन की अट्ठाईस हारें आई, ताके सब सात सै चौरासी फीलपाए भए, और सत्ताईस सत्ताईस मेहेराबें चारों तरफ रही। और बारा बारा मेहेराबें चौकों के पार रही, मध्य स्थल में एक चबूतरा, ताकी किनार पै चार चार थंभ तीन तीन मेहेराबें चौफेर रही, और मध्य में हाँस भरे को एक जल को कोठा स्थंभ सितून चलो, तामें होके ऊपर को जल चलो। और अनेकन जो ऊपर कुण्ड परे हैं, सो इतहीं से जल जात है। और इन जल के कोठ को जाके ऊपर सितून है; सो चबूतरा कमर भर ऊँचो, चारों तरफ सितून के भोम भरे की परिक्रमा। और सर्व जो फीलपाए हैं, सो कमर भर ऊँचे चबूतरा पर सोभित हैं, और उन चबूतरों के माहें से चार चार नेहेरें, चारों दिसन को चली हैं। और चारहूँ दिसन में एक एक बगीचा, तिन बगीचन में नेहेरें विचरती हैं, और अनन्त जोगवाई परिपूरन है। और चारों तरफ चार हारें फीलपाइयों की, तिनका चबूतरा सो भी कमर भर ऊँचो। चारों दिसन तें कुण्ड

में को सीढ़ियाँ उतरी, और पाँच खण्डलों कुण्ड में यही जुक्ति चली गई कुण्ड प्रगट न भयो, गुप्ता गुप्त जल चलो गयो। और एक इनमें हो ऊपर को चढ़ता है, और जे फीलपाइए हैं, तिनमें हो उतरता है, अब पाँच भोमलों यही जुक्ति चली गई, बंगलन की चाँदनी लों। फेर जब छठमें खण्ड में पोहोंचो, तहाँ मध्य के सितून सें, चबूतरा के माहें होके, बेसुमार जल को पूर निकसो, ता करके कुण्ड परिपूरन भयो। और मध्य जल में चबूतरा, और जल को सितून ऊपर सोभाएमान रहो, जल सें कमर भर ऊँचो। और सितून इस पाँचमी भोम सें चल के, छठमी भोम की छात को लगो और भोम भोम प्रति यही जुक्ति से कुण्ड होत गए, सो पाँच सै भोमलों यही विध चली गई। और बंगलन की चाँदनी के बराबर, कुण्ड की चाँदनी पर जल भरो है, बंगलन की चाँदनी सें इत आए के झीलना कीजे। कमर भर ऊँचो तीनों तरफ मोहोलाइत को चबूतरा, और बन बगीचे दोनों तरफ, और चौथी तरफ फीलपाइयों के सात मेहेराब, और चारों तरफ को चबूतरा बराबर, और तीन तरफ के चबूतरा के ऊपर, माफक अगले मजकूर के, चार हारें फीलपाइयों की, और उतेक ही कोस में दोनों तरफ बन बगीचा, और बन बगीचों के दोनों तरफ चबूतरा, तिन चबूतरा से एक एक तरफ सीढ़ियाँ उतरीं तीन तीन, कुण्ड में जेवेकों, बाहिरी तरफ सीढ़ियाँ नहीं। फीलपाइयों की मोहोलाइत से, बगीचे चबूतरा मझियाए के, सीढ़ियाँ उतर के, कमर

भर नीचे, जो रौंस को चबूतरा है, सौ कोस को चौड़ो तहाँ आइए; इहाँ होके चौफेर परिक्रमा दीजिए। और इहाँ से तीन सीढ़ी नीचे उतर के, जल के चबूतरा पर आइए, इहाँ कमर तें ऊपर नाभि प्रमान जल भरो है, इतेक ही जल सर्व कुण्ड में भरो है, जल के चबूतरों की जिमी, और कुण्डके जलकी जिमी बराबर। बगलनकी चाँदनी से आइए, तीन सीढ़ी उतरके रौंस पर आइए, और रौंससे तीन सीढ़ी उतरके, जलके चबूतरा पर जायके जल क्रीड़ा कीजे, इहाँ से कुण्ड प्रगट भयो। इन विधको कुण्ड पाँच भोम में नहीं भयो, इहाँई से जाहिर भयो, और इहाँसे पाँच कम पाँचसौ भोमलों यही जुक्ति चली गई। भोम भोम प्रति कुण्ड मोहोलात बन बगीचे, और अनन्त जोगबाई परिपूरन है, और यही जुक्ति जहाँ दो लाख कोस ऊपर कुण्डकी चाँदनी परी है, तहाँ आई है।

खास मोहोल की चाँदनी देखिए

तीन तरफ फीलपाइयों की मोहोलात का चबूतरा, तिन पर फीलपाइयों की मोहोलात, ताकी चार भोम पाँचमी चाँदनी, तिनपर खास मोहोल सोभाएमान हैं। और तले फीलपाइयों की दहलान के आगे पाछे वेही चार चार हाँसके बगीचे हैं, चबूतरा तें कुण्डकी तरफ सीढ़ियाँ चारों दिसतें उतरी। उतरके रौंसपर जाइए, रौंससें तीन सीढ़ी उतरके, जलके चबूतरा पै जाइए, जल के चबूतरा की जिमी, और कुण्डके जलकी जिमी बराबर। फीलपाइयों की मोहोलात के आगे, खड़े होके

तमासा देखिए, तो तीन तरफ की मोहोलात की, चार भोम पाँचमी चाँदनी दिखाई देत है, और दोनों तरफ बन बगीचों की अपार सोभा है। तीन तरफ से सीढ़ियाँ उतरी हैं। और चौथी तरफ तालकी मोहोलात पाँचसौ भोमलों, उपरा ऊपर चली गई है, पाँच सौ भोमके छज्जा कठेड़ा जुदे जुदे दिखाई देत हैं, और सोरौं चादरें जुदी जुदी दिखाई देत हैं। और गुरज चौखूंटे और गोल जो चले गए हैं, और छज्जा के तले जाए लगे हैं, सो सब इहाँ हो दिखाई देत हैं। दो गुरजें चौखूंटे और दो गोल और सात मेहेराबें, और छाजा थंभ, इहाँ हो सब जरे जरे दिखाई देत हैं। सो यह सम्पूर्ण सोभाको देखके, उतरत उतरत फेर तले की भोम कुण्ड में आए। कुण्डकी मोहोलात चारों तरफ की, बन बगीचे रौंस सीढ़ियाँ जलकी रौंस, और बाग बगीचे चेहेबच्चे नेहेरें फीलपाइए कुल्ल देखके, फेर बगंलन में आए।

पुनः बंगलनको बरनन

एक एक बगंलाको सोरा सोरा सै मन्दिर को विस्तार है, आठ सौ में बगंला, और आठसौ में गिर्द के बारा बगीचा, और कोसोंसे एकसौ साठ कोस में एक बगंला, और एक सौ साठ कोसमें बगीचा, इन विधसों तीन सौ बीस कोसमें बगंला और बगीचा आए। एक एक कोसमें पाँच पाँच मन्दिर, और सवासै मन्दिरको एक नेहेर को विस्तार है। और पाँचमी भोमके ऊपर जहाँ छटमी छात आई, तहाँ छेसौ मन्दिरको लम्बो चौड़ो चाँदनीको विस्तार

भयो। छे सै मन्दिरके चबूतराके ऊपर, ऊपर चाँदनी के बंगलाको भाव रहो। और बंगलाको जो भाव है चाँदनीके ऊपर, तिन भावकर कलस रहो। और बंगलनके चाँदनीके जो कलस हैं, ते कलस तालकी प्रथम भोमकी जो तलेकी छात है, तिन छातको लगे हैं। और चाँदनी पै कलसन के गिर्दवाए, माफक चाँदनी सोभाएमान है, तिन चाँदनीसों चारों दिसनतें बनकी चाँदनी आए लगी है, सो एक रस दोरी बन्ध बराबर हो रही है। और बंगलनकी चाँदनी से बनकी चाँदनीपर जैए, और बनकी चाँदनीसे बंगलन की चाँदनीपर जैए। और जैसो भाव फीलपाइयों का, तरफ पूर्वके ऊपर कुण्डके रहो, अैसौई भाव फील-पाइयों का, तरफ पच्छिम के रहो। ऊपर हाँसभर नीचे कुण्डके, जो दो चबूतराके मध्यमें आयो है, इन-विधसों कुल्ल बंगलों चबूतरों बगीचों चेहेबच्चों नेहेरों फीलपाइयों बड़ोवनो महाबनों को जरे जरे देख के, बंगलन की चाँदनी पर आए, जहाँ पुखराजी तालको मूल है। इहाँ चाँदनीके मध्य स्थल में, एक भोम भरेको चेहेबच्चा भयो, बारा हजार कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, और भोम भरे को ऊँचो। एक सौ बीस हाँस की गिर्द, तीस हाँस की एक दिस, आगे गिर्दवाए एक भोम चौड़ी देहेलान तिन आगे एकसौ बीस हाँस में, बगीचनकी और चेहेबच्चन की हारें आई। गृदवाए बड़े बड़े चेहेबच्चे, और चार चेहेबच्चा के बीच एक बगीचा, और चार बगीचाके बीच एक चेहेबच्चा, और हर एक चेहेबच्चाके ऊपर चार थंभको मोहोल,

तिनमें चार हिड़ोले। और हर एक चेहेबच्चे से चारों तरफ चार नेहेरें, बड़े कुण्ड से जल चारों तरफ विचरत है, नेहेरके दाएँ बाएँ फूलन की हारें, याही विधसों चेहेबच्चे नेहेरें, बढ़ते बढ़ते किनारलों चले गए। और चेहेबच्चनकी हारें, तले जो फीलपाइयों की हारें हैं, तिन फीलपाइयोंके सिर पर आई हैं। तहाँ से नल द्वारा होएके, फीलपाइयों में होके, जल बंगलन की प्रथम भोममें होके, कै जानवरों के मुखनमें से फुहारे उड़त हैं। ते फुहारे चेहेबच्चोंमें परत हैं, या विधसों तमासा चाँदनी पर चेहेबच्चे बगीचे, भोमभर की मोहोलात हिड़ोले, नेहेरें फूल बाग किनारलों परिपूर्ण हैं, और ऊपर चेहेबच्चे के छज्जे बढ़ते-बढ़ते, और चढ़ते-चढ़ते चले गए हैं, सो अपरमपार सोभा सुख दिखाई देत हैं। और छाजा कैसे परे हैं, के ताल की तरफ तो सीढ़ियाँ होती जाती हैं, भोम-भोम भरे की, और तले मोहोलाइत होत जात हैं। हर एक छाजा की किनार पै, दिवाल देहेलान तले होत जात हैं, तिन छाजा में आए के जो खड़े हूजे, तो सामें पुखराज के छाजा दिखाई देत हैं। और दाएँ बाएँ आपुस में, छाजन की परिक्रमा को मेहेराबें सोभाए-मान हैं, और ऊपर छाजा की छात है, और तले गिर्दवाय किनार लों, बगीचे चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे फूलबाग दिखाई देत हैं। इन विध सों छज्जे बढ़ते बढ़ते, और चढ़ते चढ़ते लाख कोस ऊँचे लों बढ़े, और इहांईलों कुण्ड कुसादे भयो, सो तेतीस हजार कोस को लम्बो चौड़ो भयो। फेर इहाँतें तीन लाख कोसलों

सूधी दिवाल चली गई, दो सै इक्यावने छाजे के ऊपर से, बीस भोम कम हजार भोमलों, पुखराज की चाँदनी से बीस भोम नीचे लों। फेर जहाँ से दिवाल चली, तहाँ से भोम भोम से छाजा बढ़ चले, जैसे पुखराज के चार पेड़न के छाजा बढ़े हैं, सो तीन लाख कोस लों बढ़े। सो हजारमों जो छाजा है, सो बंगलन के चबूतरा की किनार लों प्राप्त भयो। और भोम भोम प्रति मोहोलात, मानिन्द पेड़ों की मोहोलात के चली गई, सो तीन लाख कोस लों मिली हुई चली गई है, तिन ऊपर बंगलन पर जो ताल है, ताकी चाँदनी हुई।

अब पुखराजी ताल को बेवरा

पुखराजी ताल बीस भोम कम हजार भोम जिमी से ऊँचो, और कोसन आठ हजार कम चार लाख कोस ऊँचो, और गिर्द पुन चार लाख कोस की, तेतीस हजार और तीन सै तेतीस कोस को ताल है, इस किनार से उस किनार तक। और तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस की, आसपास चारों तरफ पाल बिराजमान है। तिन पाल के ऊपर दोनों किनार भर के, कमर भर ऊँचो एक चबूतरा हुआ, सर्व ताल को चारों तरफ से घेर के, और जहाँ बीस भोम कम हजार भोमें पूर्ण भई, तहाँ चारों तरफ चार सै कोस को चौड़ो चाँदनी पाल के आगे छाजा आयो, ताकी किनार पै कठेड़ा, अब तेतीस हजार तीन सै तेतीस कोस को चौड़ो, कमर भर ऊँचो, जो पाल पर चबूतरा आयो, तिन चबूतरा के तीन हिस्सा भए, ग्यारा

ग्यारा हजार कोस को एक एक हिस्सा, ऐसे तीन हिस्सा भए। तिन तीन हिस्सा में से जो बीच को हिस्सा है, तिन हिस्सा में जवेरों की मोहोलाइत आई। जो तले की भोम में फीलपाए हैं, यह जवेरों की मोहोलाइत उन फीलपाइयों पर आई है। और जवेरों की मोहोलाइत के आगे पाछे, दोनों तरफ ग्यारा ग्यारा हजार कोस को हिस्सा बचो, ता हिस्सा में दोनों तरफ, पाँच पाँच हारें वृक्षन की आई। यह जवेरों की मोहोलात और दोऊ बाजू पाँच पाँच हारें वृक्षन की इनकी भोम भोम और छज्जा कठेड़ा, और मेहेराबें और चाँदनी और जरे जरे जोगवाई, सर्व साम सामे दोरीबन्ध बराबर आई हैं। और बीच में पूर्व और पच्छिम की तरफ, एक एक देहेलान आई है, ताकी जुक्ति न्यारी है। तो पुखराज के दरवाजे के सामें, ताल की पच्छिम दिस विषे एक देहेलान हुई, आठ आठ थंभ की चौदा हारें, और चौदा चौदा की आठ हारें, तिन में से पूर्व पच्छिम की तरफ, सात सात मेहेराबें आईं, और दक्षिन और उत्तर की तरफ, तेरा तेरा मेहेराबें आईं। सो ए सब पूर्व से पच्छिम को, और पच्छिम से पूर्व को, अढ़ाई अढ़ाई हजार कोस की मेहेराब परी, और दक्षिन से उत्तर को, और उत्तर से दक्षिन को, साढ़े बारा सै कोस की मेहेराब परी, और चार चार फीलपाइयों की हार तो जवेरों की मोहोलाइत की हद्द के हैं, और जवेरों की मोहो-लाइत के दाएँ बाएँ, एक एक मेहेराब बराबर जागा पड़ी है, कछुक जवेरों की मोहोलाइत के हिस्सा की,

और कछुक बन के हिस्सा की, तापर एक हार थंभन की और आई, और एक एक मेहेराब जवेरों की मोहोलात और ठेहेरी। और चार चार फीलपाए वृक्षों के मुकाबिल आए, और इहाँ सात मेहेराब और आठ थंभ के सूत्र में, वृक्षन के ठौर फीलपाए आए। अब दोए दिस विषे कमर भर ऊँचे दोए चबूतरा पर देहेलानें जो कहि आए हैं, तिन एक एक चबूतरा की दो दिसा भई, पच्छिम के चबूतरा की दो दिसा, एक पच्छिम की एक पूर्व की, और पूर्व के चबूतरा की दो दिसा, एक पच्छिम की एक पूर्व की, सो प्रथम देहेलान तो पच्छिम के चबूतरा की कहियतु है, सो पच्छिम के चबूतरा की पच्छिम की किनार से लेके, पूर्व की किनार लों, इन तेतीस हजार कोस में एक देहेलान परी, तिन देहेलान को दोऊ तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ उतरी, पुखराज की तरफ और ताल की तरफ। और ऐसो चबूतरा पूर्व की तरफ, तहाँ पुनः ऐसी अै देहेलान आई है, तेतीस हजार कोस की, तिन देहेलान में पच्छिम की दिस ताल की तरफ, पुनः तीन तीन सीढ़ियाँ उतरी हैं। और कुण्ड की दिस दोनों तरफ दो गुरजें आई, बढ़ के छज्जा के ऊपर। तिन के आगे सोरा सै कोस चार भोम को छाजा आयो। छाजा के तीन तरफ किनार पै कमर भर ऊँची एक दिवाल आई, और ताल की किनार से चार नेहेरन के बीच बीच, तीन चबूतरा चले, सो चार भोम के छाजा की किनार लों चले गए। तिन चबूतरा पर बैठकें, और दोऊ तरफ थंभन की हारें तिन में कठेड़ा,

और दोनों तरफ जल की नेहेर लगी भई चली जात है। और इहाँ छाजा पै जो नल लगे हैं, तिन की सूत्र धारा तीनहूँ छाजन को लगी है। पेहेली नल की हार को सूत्र, पेहेले भोम भरे के छाजा को लगो है, ऐसे तीनहूँ नलन को सूत्र तीनहूँ छाजन को लगो है, और चौथे छाजा से चार चादरन को सूत्र ए लगो है, सो इन विध सों सोरा चादरें गिरती हैं। और बिरत में अधिक विधिकर बिसेष लिखो है, और तले से चौखूंटी गुरजें चलीं, सो इन चौखूंटी गुरज के तले आए रही, और गोल गुरजें चली तले से, सो इत जो चौखूंटीयों सें लगती गोल हैं, तिन गोल के मुकाबिल गोल गुरज आए रहे। और चौखूंटी गुरजें, और गोल गुरजें और छाजन के थंभ, और देहेलान के फीलपाए, इन सबकी बीस भोम इकैसमी चाँदनी, और देहेलान के दोऊ तरफ जो वृक्षन की हारें हैं, तिनकी बीस भोम इकैसमी चाँदनी। और पूर्व की देहेलान के दोनों तरफ बन, और पच्छिम की देहेलान के दोनों तरफ बन, और पूर्व की देहेलान के पूर्व की तरफ सीढ़ियाँ नहीं हैं, उहाँ कमर भर नीचे नेहेर चली जात है, और भराए रही है। और पूर्व की देहेलान के पच्छिम दिस को, कमर भर ऊँचे चबूतरा के आगे, परिक्रमा को चबूतरा रहो, दाएँ बाएँ रंग भवन के चबूतरा की भाँत चबूतरा रहो। बन मोहोलात के चबूतरा के बराबर, तिन चबूतरा के आगे जल को चबूतरा रहो, तिन चबूतरा पर कमर भर ऊँचा जल। और तिन चबूतरा से आगे सीढ़ियाँ उतरी, जिन पै कठेड़ा और

बैठक है, तिन से उतरके जल के चबूतरा पै जल क्रीड़ा कीजे। और पच्छिम दिस की जो देहेलान है, ताके पच्छिम दिस को पुखराज की तरफ, इन चबूतरा के आगे सीढ़ियाँ उतरी, आगे चार सै कोस को जो छाजा है, तिन पर सीढ़ियाँ उतरी, और ऐसी अै सीढ़ियाँ पूर्व की तरफ, ताल में को उतरी। और दोऊ तरफ की देहेलान की हद्द में बन नहीं, ग्यारा ग्यारा हजार कोस की हद्‌लों, और सर्वत्र बन गिर्दवाए, जवेरों की मोहोलात के फिरो है, और ऊपर बीस भोम की चाँदनी पड़ी है। तिन चाँदनी पर हो चारों तरफ की परिक्रमा देके, सोभा देखिए, तो पुखराज की तरफ, पुखराज को बड़ो दरवाजो सोभाएमान है। पुखराज के छाजा से छाजा चलो, सो इन चाँदनीसों आए लगो है, सो इत चाँदनी से पुखराज के दरवाजे को चले जाइए, और पुखराज के दरवाजे से, इन चाँदनी पर चले आइए। और पुखराज से नेहेर गुप्तागुप्त आए के, इन चाँदनी के छाजा पर होए के, पुखराजी ताल में चादरन जल गिरत है। और चाँदनी की चौड़ाई बन सहित, तेतीस हजार कोस की सोभाए-मान है। और दोनों तरफ की देहेलान छोड़ के, पुखराजी ताल की चाँदनी को, महाबन की चाँदनी आए लगी है। इततें बन की चाँदनी पे, और बन की चाँदनी से, पुखराजी ताल की चाँदनी पर चले जाइए। पुखराज के और ताल के छाजा लाख कोस पै मिल के, फेर इहाँलों मिलेई मिले चले आए। पुखराज की चाँदनी लों सर्व भोमें, पुखराज की और

ताल की एक में एक हुई, दोरीबन्ध बराबर। हर भोम इतकी से उते, और उतकी भोम से इतकी भोम में आइए, इन विध से सर्व भोमन को देखते देखते, तले की भोम में आए। और एक नेहेर पुखराजी ताल की चाँदनी को प्रदक्षिना देके मोहोल मोहोल बगीचों बगीचों पानी देके, एक की दो भई। सो सर्व भोम को प्रदक्षिना देकें, पूर्व और पच्छिम के थंभ होके, भोम भोम भर नीची उतरत जात है। और सर्व भोमन में जल देत देत, प्रदक्षिना देत देत, नेहेर बंगलन की चाँदनी पर आई। और चाँदनी बंगलन की से नेहेर, गिर्द के फीलपाइयों में होके, कै जानवरों के मुखन में सें, फुहारे छूटत हैं, सो एक नेहेर तो बंगलन के चेहेबच्चन को, और बगीचन को मिली। और दूजी नेहेर तले उतरी, सो भोम भर नीचे कुण्ड में होके, बंगलन की तरहटी में होके, अधबीच को कुण्ड, ढपो चबूतरा मझियाय के, नेहेर मूल कुण्ड विषे प्राप्त भई। और इत बंगलन की भोम में, ताल की प्रथम भोम की तले की छात को, लाख कोस को लम्बो चौड़ो, एक चन्द्रवा सो तनो है, तिन चन्द्रवा को तेईस सै चार बंगलन के, कलसन की नोकें लगी हैं। और सर्व बगीचों की छातें, उसी चन्द्रवा के तले आई, और फीलपाइयों के आगे पाछे, जो बड़े (महा) बन के बृक्षों की हारें आई हैं, सो भी फीलपाइयों सहित, इनहीं पहाड़ की छाया मिनें आई हैं, इनहीं चन्द्रवा के तले सोभाएमान हैं। अब आगे अधबीच को कुण्ड नजर करके। ताके आगे ढपो चबूतरा।

ढपो चबूतरा नजर कर देखिए

ढपो चबूतरा, ग्यारा हजार कोस को लम्बो चौड़ो बराबर दोऊ तरफ से बड़े बनने छत्री बाँधी है, और तीन तरफ किनार पै कठेड़ा, और तले तीन तरफ मेहेराब, तरहटी में जेवेको। आगे मूल कुण्ड सोभाएमान है।

आगे मूल कुण्ड नजर कर देखिए

मूल कुण्ड छत्तीस सौ कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, किनार पै तीन तरफ कठेड़ा सोभाएमान है, चौथी तरफ ढपे चबूतरा को कठेड़ा है, और बीच में बारा सै कोस को कुण्ड है, लम्बो चौड़ो बराबर। कुण्ड के किनार पै चारों तरफ कठेड़ा, और कठेड़ा से चारों तरफ, बारा बारा सै कोस को चौड़ो चौक चबूतरा बिराजमान है, और ऊपर दोनों तरफ से बड़ेबन ने छाया करी है। और बड़ेबनतें परे महा-बन सोभित है, और तीन तरफ तले तरहटी में जेवेको मेहेराब रोसन हैं। और भीतर मध्य जल के कोठ से लग के, बारा सै कोस की चौड़ाई लेके, श्री जमुना जी निकसी, सो चार सै कोस में श्री जमुना जी को जल प्रवाह है। और दो सै कोस में श्री जमुना जी की बीच की पाल है, और दो-दो सौ कोस को पाल के दोनों तरफ, बन को और जल दिस को चबू-तरा है, और सौ सौ कोस के श्री जमुना जी के जल के चबूतरा न्यारे। इन विध सों मूल कुण्ड के तीसरे हिस्सा में, श्री जमुना जी सोभाएमान हैं। और श्री

जमुना जी की बाहिरी तरफ जो बन की रौंस है, ताकी सनन्ध न्यारी है। वह आगे तें चली आई है, पुखराज घाटियों को गेर के, और बंगला अधबिच को कुण्ड मूलकुण्ड को गेर के, और दोनों मरोड़ों को गेर के, हौज कौसर को गेरा है, तातें याकी सनन्ध न्यारी है। और यह साढ़े सात सै मन्दिर की चौड़ाई रखती है, तिन में से किनार से लेके, श्री जमुना जी की पाल की दिस, पाँच सौ मन्दिर में, दो हारें बड़े-बन के वृक्षों की आई, और अढ़ाई सै मन्दिर भर जागा तरफ पाल के बची। यह भाँत हौज कोसर लों चली गई, और पुखराज के मध्य के पेड़ से लेके तो मूलकुण्ड की किनार लों, दो लक्ष और पन्द्रा हजार और दो सै कोस जागा हुई २१५२००। और मूलकुण्ड की किनार से लेके तो, श्री जमुना जी की ईसान की मरोड़ तक, दो लाख चौंतीस हजार आठ सै कोस जागा हुई २३४८००। तिन में से एक लाख सत्रा हजार और चार सै कोस तक, तीन देहुरिन की हारें चली, दो दोऊ पाल पर, और एक श्री जमुना जी के जल के ऊपर, और फेर उतेक ही कोस तक, दोऊ तरफ ढपी, और बीच में जल खुला। अढ़ाई अढ़ाई सौ मन्दिर भर की दोऊ पाल की मेहेराबें देहुरिन की, और दस सौ मन्दिर की बीच की मेहेराब, श्री जमुना जी के ऊपर की, इन विध सों ईसान कोने की मरोर तक पहुँचे। इहाँ चार मोहोल की चौकड़ी परी है, तिन में चार हिंड़ोले सोभाएमान हैं, दो जल के ऊपर दो पाल के ऊपर, और चारहूँ की ताली

जल पर परत है, आगे एक मोहोल एक चबूतरा पुल लों चले गए हैं। और श्री जमुना जी के मध्य जल सें लेके, तो केल के पुल की बायब कोने की किनार तक, सवा दो लाख कोस जागा हुई। और सम्पूर्ण पुल लेके तो पाट घाट की आधी मेहेराब तक, सवा दो लाख कोस जागा हुई। और पाट घाट की आधी मेहेराब सें लेके तो, बट के पुल की नैरित्य के कोने तक, सवा दो लाख कोस जागा हुई। और बट के पुल की नैरित्य के कोने से लेके तो, अग्नि कोने की मरोर के मध्य जल तक, सवा दो लाख कोस जागा हुई। और ईसान कोने से लेके, तो अग्नि कोने तक श्री जमुना जी नौ लाख कोस जागा हुई। और अग्नि कोने से लेके तो, हौज कौसर के टापू के मध्य तक, साढ़े चार लक्ष कोस जागा हुई। इन विध सों खजाने के ताल के मध्य पेड़ से लेके तो, हौज कौसर के मध्य टापू तक, श्री जमुना जी अठारा लाख कोस जागा हुई। और मूल कुण्ड से लेके तो, जहाँ लों ढँपी चली आई श्री जमुना जी, तहाँ लों दोनों तरफ पाल के और बीच के गुमटों की तीनहूँ हार की जमा पन्द्रा देहुर गुमट हुए १५। पन्द्रा तीनहूँ हार के देहुर गुमट आए लग लग के, और एक हार गुमट बड़ों की, श्री जमुना जी के जल के ऊपर आई, और तीनहूँ गुमटन की हारों सहित मजकूर गुमट हुए। और जहाँ से दोनों तरफ पटी, और बीच में खुली, उहाँ से मरोड़ तक के देहुर दोनों हार के दस देहुर गुमट, दोनों तरफ के हुए। मूलकुण्ड की चाँदनी से, पाल

के थंभन की चाँदनी बराबर है, तिल भर ऊँची नीची नहीं है। मूलकुण्ड की चाँदनी से गुमटन में होके, मरोड़ तक चले आइए, और इस गुमट की जिमी से, चाहे बीच की मेहेराब गुमटों में चले जाइए, और उस दूसरी पाल पर जैए। और बीच की मेहेराब में, हजारहा कै विध के मेहेराब झरोखे जाली द्वार, और कै विध के हुनर बने हैं। और दोनों तरफ से श्री जमुना जी के किनारे, बड़े बनने छवी बाँधी है। आगे खुली जमुना से दोनों तरफ बड़ेबन की डालियाँ झलूबी हैं, इन विध से देखत देखत मरोड़ तक आए। और दोनों तरफ की पाल से, दो हाँस की सन्ध में सीढ़ियाँ उतरत आई, जहाँ चाहिए तहाँ पाल से उतर के, जल क्रीड़ा कीजे। आगे मरोड़ में चार हिड़ोला की ताली परत है, ताको देख के एक मोहोल एक चबूतरा देखिए।

एक मोहोल एक चबूतरा नजर कर देखिए

तो एक मोहोल एक चबूतरा पुल लों चले गए हैं, और तले महाबन और मधुबन सोभाएमान हैं। और एक मोहोल और एक चबूतरा, पाल के तीसरे हिस्सा में आए हैं। तेरासी तेरासी मन्दिर के लम्बे चौड़े, और तेरासी मन्दिर को चौक मोहोल और चबूतरा के चारों तरफ सोभाएमान है, दो मोहोल इस पाल के, और दो मोहोल उस पाल के, इन चारों मोहोल के बीच, चार मेहेराब आए हैं, और इन चारों मेहेराबों के बीच, चार हिडोले आए हैं, तिनमें

चार हिड़ोले की ताली परत है। केल के पुल लों चार चबूतरा, और पाँच मोहोल उस पाल पर, और पाँच मोहोल और चार चबूतरा, इस पाल पर आए पुललों। और महाबन और मधुबन सात घाट और कुँज बन अक्षरातीत की तरफ के, और अक्षर की तरफ के, साम सामी दोरीबन्ध बराबर आए हैं, और आगे पाँच सौ मन्दिर को पुल परो है। इस रौंस की किनार से तो, उस रौंस की किनार तक, केल को पुल सातों घाट तले जल में ग्यारा ग्यारा थंभन की ग्यारा हारें आई, पचास पचास मन्दिर को छाजा चारों तरफ, पचास मन्दिर भर रौंस लों छाया डाली, और दो सै मन्दिर भर रौंस पाल की दिस और बची, पुल की पाँच भोम छठी चाँदनी, और पाँच भोम छठी चाँदनी दूसरे पुल की, और दोनों तरफ की पाल पर बड़ेबन के वृक्षों की पाँच भोम छठी चाँदनी, इन विध सों दो मोहोल जवेर के और दो बन के, एक से सोभाएमान हैं। और सप्त घाट में दो दो हांस की सन्ध में, एक एक चबूतरा अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर को, पाल से लेके रौंस की किनार तक भयो, ताके ऊपर एक देहरी, सौ मन्दिर की आई, पचीस पचीस मन्दिर दरवाजे से दाएँ बाएँ, और बीच में दो मन्दिर को दरवाजो, और दो दो मन्दिर को लम्बों चौड़ो, एक एक मन्दिर, ऐसे एक एक दिस में पचास पचास मन्दिर, चारों तरफ के दो सै मन्दिर, और दो दो मन्दिर के चारहूँ दिसन विषे, चार दरवाजे न्यारे, और पौन सौ मन्दिर की

देहुरी के आस पास परिक्रमा, और चबूतरा से तीनहूँ तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ उतरी, और दो देहुरी के मध्य में जो चौक है, अढ़ाई सै मन्दिर को, तिनसें तीन तीन सीढ़ियां, आगे चौक में को उतरी, और रौंस की किनार से, आगे जल के चबूतरा को, सीढ़ियाँ उतरी, जल को चबूतरा सवा सौ मन्दिर को, बीच की पाल अढ़ाई सै मन्दिर की, और बाहिरी रौंस अढ़ाई सै मन्दिर की, और पुखराज की रौंस सुद्धाँ, साढ़े सात सै मन्दिर की, यही जुक्ति सप्त घाट से लेके तो, हौज कौसर ताल की किनार लों चली गई है। और सप्त घाट विषे अग्यारा अग्यारा बड़े बन के वृक्षों की पाँच हारें, और पाँच पाँच वृक्षों की अग्यारा हारें, हर घाटों में चली गई हैं। और अग्या-रमी हार ने दोनों तरफ जवाब दिया है, इत भी चौंक बगीचा किया, और दूसरे घाट की हद्द में भी चौक बगीचा किया, और हर एक घाट में पचपन वृक्ष और चालीस बगीचा हुए। और एक एक चौक बगीचा में चौबीस चौबीस, छोटे वृक्षों की चौबीस हारें आईं, और छेऊ बगीचन के गिर्दवाय के बड़े बन के वृक्ष, लम्बाई में एक सतर (हार) के इकसठ हुए ६१। और इकसठ दूसरी सतर के, और तीन तीन दाएँ बाएँ के, सब एक सौ अट्ठाईस वृक्ष चारों तरफ की, किनार के हुए १२८। तिनकी पाँच भोम छठी चाँदनी, दो भोमें तले छोटे वृक्षों की, और तीन भोमें उनके ऊपर बड़े बन के वृक्षों की। और बड़े बन के वृक्ष इहाँ जौन घाट में आए, तौन घाट में ताही घाट

के रूप भए। सो बड़े बन के वृक्ष केल घाट में केल रूप होके, ऊँचाई और लम्बाई में अति बुलन्दी और दराजी पकड़ी है। सो ऊँचाई में तो एक मेहेराब पुल के छाजा की, और पेहेली मेहेराब केल के वृक्षों की, दोरीबन्ध बराबर आई। केल की पेहेली मेहेराब से, पुल के छाजा पर जाइए, और केल के वृक्षों की, और पुल मोहोलाइत की, पाँचो भोम मुकाबिल, और केल के वृक्षों की एक हार के फल जल चबूतरा की किनार पै लटक रहे हैं, हजारहाँ नूर जुक्ति सोभा लेके, दोरीबन्ध बराबर सोभाएमान हैं। याही विध सों सप्त घाट के वृक्षों की डालियाँ, फल फूल पातों सहित, जल के चबूतरा की किनार पै, दोरीबन्ध लटक रही हैं। कोई डाल पात फल फूल एक बाल बराबर, आगे पीछे ऊँची नीची घट बढ़ नहीं है, यही जुक्ति सब घाट वृक्षों की हुई। और पाट घाट जो अमृत बन के बीच आयो है, सो रौंस की किनार से लेके, एक चबूतरा चलो जल के ऊपर, डेढ़ सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो बराबर, तले इन चबूतरा के सोरा थंभ जल में बिराजमान हैं। बारा गिर्दवाय और चार दरम्यान में, फेर पट के बारा थंभ ऊपर आए, दो मानिक के और दो हीरा के और दो पाच के और दो पुखराज के, ए अक्षर की तरफ से चारों दिसन विषे चार दरवाजे हुए। और चारों खूँटों चार थंभ नीलवी के, इन बारों थंभों के ऊपर, चाँदनी डेढ़ सौ मन्दिर की लम्बी चौड़ी बराबर, पाल के बड़े वृक्षों के तले, जो छोटे वृक्षों की भोम है, सो भोम और पाट की चाँदनी

बराबर। और बारा थंभ मानिन्द फीलपाइयों के, दरवाजे मेहेराब सीढ़ियोंदार हैं, तिन में होके ऊपर चाँदनी के जाइए। चाँदनी की किनार पै कठेड़ा बिराजमान है, और बिछोना बिछो है, मध्य में सिंघासन पर श्री जुगल स्वरूप बिराजमान हैं। गिर्द-वाय रूहें भराए के बैठत हैं, और तले चाँदनी चौक की बीच की, तेरासीमी ८३। मेहेराब में होके रस्ता चलो है, दो मन्दिर को चौड़ो, सो पाट घाट की धाम दिस की जो पाच की मेहेराब है, तिन मेहेराब के सामी आयो है। और सातहूँ घाट की सन्ध में होके, दो दो मन्दिर के चौड़े रस्ता चले, सो पाल की जो देहुरी हैं, तिनके दरवाजे के सामी आए। इन विध सों श्री धाम से सप्त घाट की सन्ध सन्ध से, दो दो मन्दिर की चौड़ी रौंस चली, सो रौंस पाल श्री जमुना जी की पर होके, देहुरी के दरवाजे के सामी आई है। और आगे जाम्बू घाट नारंगी को घाट मझियाय के, बट के घाट पर आइए।

बट को घाट नजर कर देखिए

सो इहाँ अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ी जो बीच की पाल है, तिन पाल से लग के बन की रौंस की दिस, जो अढ़ाई सै मन्दिर को चौड़ो चौक रहो है, दो हार वृक्षों के भीतर, तिन चौक लों एक ही चबूतरा हो गयो है। पाँच सौ मन्दिर को लम्बो, और पाँच सौ को चौड़ो, एक चबूतरा हुआ, तिन चबूतरा के मध्य में, एक बट को पेड़ भयो, तिन बट के पेड़ के गिर्दवाय,

बट के पाइयों की चार हारें आई, सब नौ नौ बट पाइयों की नौ हारें भई, ताके अस्सी बट पाइए तो गिर्दवाए हुए, और एक मूल बट बीच में भयो, इन पर पाँच भोम छठी चाँदनी, एक भोम पाल ही पर भई, और चार भोमें ऊपर आई, तिन सब भोमों में हिड़ोले, और सर्व घाटों में वृक्षों की मेहेराबें, पचास पचास मंदिर की, और इहाँ बट घाट में मेहेराबें, साढ़े बासठ बासठ मन्दिर की आई हैं। एक दिस में आठ मेंहेराबें, चारों दिस की बत्तीस, और पाँचहू भोमन की एक सौ साठ मेहेराबें रोसन हैं। ऊपर छठी चाँदनी, इत भी एक मेहेराब बट की, पुल की एक मेहेराब के सामें आई है। और रौंस की जो दो हारें वृक्षों की हैं, सो तिन दो हार में से पाल तरफ की जो हार है, सो बट के दाएँ बाएँ अर्ध हाँस के छेह सें आए के मिल रही है। इहाँ वेहे वृक्ष नहीं आए हैं, उन वृक्षों की ठौर आठ मेहेराबें बट की आई हैं। और छेऊ घाटन में छे छे चौक चले आए हैं, चार चौक पचास पचास मन्दिरन के, बड़े बन के वृक्षो में आए हैं, और दो चौक पचीस पचीस मन्दिर के दाएँ बाएँ किनार पर आए हैं। और इत बट के घाट विषे चार ही चौक आए हैं, दो नहीं आए हैं, और पाँच हारें बड़े बन के वृक्षों की, लाल चबूतरा के आगे के बन से चली, सो केल घाट के बन में होके, श्री जमुना जी की पाल पर चढ़ के, छेहू घाट में होके, सातमें बट घाट को मझियाए के, और इतहीं हो उतर के, कुँजबन की किनारें होके, बट पीपल की चौकी के आगे होके, फूल बाग अन्न बन की सन्ध

में हो, आई जो दूजी बड़े बन के बृक्षों की पाँच हारें हैं, तिन हारों में मिल के दोऊ एक रूप होके, हौज कौसर को फिरी हैं। इन बट घाट के आगे बट को पुल आयो है, तले जल की जिमी सें ग्यारा ग्यारा थंभन की ग्यारा हारें उठीं, सो रौंस लों पटी, फेर तिन पर माफक बन के, पाँच भोम छठी चाँदनी, जैसो केल को पुल तैसो बट को पुल। अब कुँजबन और एक मोहोल एक चबूतरा हौज कौसर ताँई इन के आगे एक मोहोल एक चबूतरा आए हैं, पुल से लेके तो मरोड़ तक, पाँच मोहोल और चार चबूतरा आए हैं। पाल के तीसरे हिस्सा में, और हरएक मोहोल, एक सीढ़ी भर ऊँचो चबूतरा के ऊपर, तामें तेरासी तेरासी मन्दिर चारों तरफ, एक एक मन्दिर को दरवाजो चारों तरफ, और आगे चारों तरफ तेरासी तेरासी मन्दिर को चौक, और चौक से दोनों तरफ सीढ़ियाँ, एक तरफ श्री जमुना जी के, और दूजी तरफ कुँजबन के, और चारों तरफ कठेड़ा, तिन कठेड़ा में दरवाजो सामी दरवाजे के, एक श्री जमुना जी की तरफ, और दूसरो कुँजबन की तरफ, और दोए दाएँ बाएँ पाल पर, ऐसे ही चबूतरा कमर भर ऊँचे, चारों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ, किनार पै कठेड़ा, और सुन्दर बिछोने बिछे हैं, और रौंस के बन वृक्षों ने मोहोल और चबूतरा के ऊपर मण्डल बाँधो है। चबूतरा के चारों तरफ चौक, तिनके किनारें कठेड़ा, और कठेड़ा में दरवाजे, दोनों तरफ उतरने की सीढ़ियाँ। तीन सीढ़ियाँ उतर के

रौंस पर आइए, और रौंस से तीन सीढ़ियाँ उतर के, कुँजबन की रेती पर जाइए, रेती चल के कुँज निकुँजन के चबूतरा पर जैए ।

कुँज निकुँज नजर कर देखिए

तो जितेक चौड़ाई में, एक मोहोल एक चबूतरा हैं, तितेकही चौड़ाई में तले कुँज निकुँज आए हैं। पाँच कुँज और चार निकुँजनकी अनेक हारें आई हैं चौड़ाई में, और लम्बाई और गिर्द बेसुमार है, और लम्बाई इनकी चौगानकी किनारलों पोहोंची है । और ताल को गेर के अक्षर की पारलों चले गए हैं, और गोल और चौखूंटे मोहोल बेसुमार चले गए हैं। चौरासी चौरासी मन्दिर दरवाजों सहित, कुँज चारों तरफ सोभाएमान है, और बीच में चौक ताके मध्य चबूतरा । तिन चबूतरा के मध्य में एक चेहेबच्चा, ताको कठेड़ा दरवाजे चाँदे सीढ़ियाँ । इन चबूतरा के चारों तरफ बन, ताकी छत्री चारों तरफ से बाँधी है, यही विध निकुँज की है । ऊपर इसकी जोगवाई सर्व फिरती है, मन्दिर चौक चबूतरा बन सब गोलाकृत हैं । अरु बाहिर भीतर बन बिराजत है, चेहेबच्चनतें नेहरें चलीं, सो सर्व मोहोलनमें और बनन में बिचरीं । परन्त कहूँ गुप्त कहूँ उजागर, गुप्त की जागा गुप्त, उजागर की जागा उजागर, और हरएक कुँज से निकुँजको, और निकुँज से कुँज को, आठ-आठ रस्ता चले हैं । सो मन्दिरन में होके, और रस्तों में नेहेर चली जाती हैं, तिनके दोनों तरफ रस्ता, और आड़ी टेढ़ी कै विध की गली आई हैं ।

कैविध चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे सर्वत्र सब न्यामतें परि-
पूरन हैं, और सर्व मन्दिर दिवाल, और सर्व जोगवाई
फूलन ही मय दिखाई देत हैं । और कै हिड़ोले यामें
और भी अनन्त कोट ख्याल हैं और खेल सुख लज्जतें
हैं, और यह कुंज बन जमुनाधाम के बीच में हैं । और
मरोड़ से आगे हौज कौसर की किनारलों; वही जुक्ति
आई है, जो जुक्ति खुली जमुनातें ईसान की मरोड़
तक आई है । दो हारें थंभन की, एक इस किनारें
एक उस किनारें, बीच में पटे, तितकी चाँदनी पै गुम-
टियाँ, सन्ध सन्ध से सीढ़ियाँ तरफ जमुनाजी के उतरत
गई । या विध से चलते चलते सोरा देहुरी के घाट में
पोहोंचे, और पोहोंचके फेर चितए, तो एक सतर-हार
दोहोरी हार थंभन की, दोऊ चबूतरा की किनार पै
दिखाई देत हैं । और दोऊ तरफ मेहेराबें दिखाई देत
हैं, और ऊपर चाँदनी दिखाई देत है, तिन चाँदनी पै
दोनों तरफ नब्बे नब्बे गुमटियों की हार-कतार
दिखाई देत हैं । और किनार पै दोनों तरफ कठेड़ा
दिखाई देत है, और काँगरी दिवाल के किनारे चली
गई है । और दोनों तरफ पालके तले, रौंस दिखाई
देत है, ताको कठेड़ा दोनों तरफ रोसन है । और
अढ़ाई सै मन्दिर की रौंस जो दोनों तरफ से चली
आई है, सो दोऊ तरफ की छठमी जो मेहेराब है,
तिन दोऊ मेहेराबन के बराबर आई है । सो छठमी
मेहेराब अकसी है, अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ी, तिनके
मध्य में सवा सै मन्दिर के चौड़ें दरवाजे दो, ऐसे
दरवाजे दोनों तरफ, एक घाट कें बगल में को, और

दूजो पाल के मन्दिर में को रह्यो। सर्ब जमुनाजी चार मेहेराब के सामी आई हैं, और दाएँ-बाएँ जो दो मेहेराब आए हैं, तिनके सामी रौंस आई है, दोरी-बन्ध बराबर, और मेहेराबन के दाएँ बाएँ दोए कोने पाल रौंसके दिखाई देत हैं, जैसे चार भीतर तैसे ही चार बाहिर वनकी तरफ सोभाएमान हैं।

अब आगे हौज कौसर ताल का बर्नन
बयान सहित हिसाब के लिखो है सो देखिए

तो हौज कौसर ताल चौंसठ हजार मन्दिर की गिर्द बिराजमान है, और इकैस हजार तीन सै सवा तेतीस मन्दिर को, लम्बो चौड़ो बराबर। प्रथम हौज कौसर की बीच की पाल, जिमीसें भोंम भर ऊँची, सो चढ़ उतरके चबूतरों समेत, हजार जो मन्दिर हैं, तिनकी चौड़ाई रखती है, और जिमीसे छे सीढ़ी ऊँची और पाँच सै मन्दिर की चौड़ी, प्रथम बन की रौंस थी, तिन बनकी रौंस विषे, श्रीजमुनाजी की दोनों पालें आए मिली, प्रथम जो पाँचसै मन्दिर की रौंस थी, तिन विषे ढाईसै मन्दिरकी चौड़ी, जमुनाजी की बीच की पाल मिल गई, तब यह ढड़कती पाल, पाँच सै से साढ़े सात सै की हो गई, और इन ढड़कती पालके आगे, तले तीन सीढ़ी नीचे, जो रौंस जमुनाजी को फिरी थी, सोई रौंस इहाँ फिरी है। जिमी से कमर भर ऊंची, साढ़े सात सै मन्दिरकी चौड़ी, पाँच सै मन्दिर की पुखराज की, और अढ़ाई सै की जमुनाजी की, दोऊ मिलके साढ़े सात सै की हुई, और बीच की भोम भर ऊंची पाल से जल की तरफ

की रौंस, पाँच सै मन्दिर की चौड़ी, इन विधसों हौज कौसर ताल के पाल की चौड़ाई, बनकी रौंस की किनार से लेके तो, जल की रौंस की किनार तक, तीन हजार मन्दिर की सोभाएमान है। नव देहुरी के घाट से, तेरा देहुरी के घाटलों, और झुण्ड के घाट से बनकी रौंसतें लेके जल की रौंस की किनार तक, तीनहीं हजार मन्दिर की चौड़ाई बिराजमान है। और चौथे सोले देहुरी के घाटकी गिनती जुदी है, इन घाटसे बाहिरी रौंस की किनार से लेके तो, जलके रौंसकी किनार तक, डेढ़ हजार मन्दिर की चौड़ाई सोभित है। और पन्द्रासै मन्दिर जो इतघटे, ताको अर्थ यह है, के श्री जमुनाजी जो उत पूर्व से चली आई हैं, और पच्छिम दिस विषे जो हौज कौसर ताल है, ताको हाथ पसारके, और सब अंगों अंग मिलाए के मिली हैं, ज्यों कर आसिक सब अंगों अंग मिलाए के, मासूकसे मिलती है, इनविधसों श्रीजमुनाजी हौज कौसर को मिली हैं। और दोनों पालें श्रीजमुनाजी की झुण्ड के घाटकों जाए मिली हैं, जैसे जिनको अंक भर ली जात है, अपनी छाती उनकी छातीसों मिल जात है और अपने दोनों हाथ मासूक की पीठ पर मिलजात हैं, याही विधसों दोनों पालें श्रीजमुनाजी की झुण्डके घाट विषे मिली, हौज कौसर के पीठ पाछल, इतछाती सों छाती मिली। ता कारन पाइके पन्द्रासै मन्दिर, इत सोरा देहुरीके घाटमें घट गए। श्रीजमुनाजी की दोनों पालें सोले देहुरी के घाटलों, मरोड़से सूधी चली आई, फेर

सोरा देहुरीतें, दक्षिनकी पाल दक्षिन में होके, पच्छिम को प्राप्त भई, और उत्तरकी पाल उत्तर दिस होके, पश्छिमको प्राप्त होके, दोऊ एक में एक हुई, तातें इन सोरा देहुरी के घाटके आगे, जमुनाजी की पाल आड़ी नहीं आई है। इत छे मेहेराब के आगे, एक जमुनाजी की रौंस ही आई है। अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ी, और कुछ नहीं आया है, तातें यह पन्द्रासै मन्दिर की इत कमी हुई। और हौज कौसर एक सै अट्ठाईस हाँसकी गिर्द है, एक एक हाँस पाँच सै मन्दिरको, और पाल मे दो हारें मन्दिरनकी, तिन मन्दिर दो हारके बीच दो हारें थंभन की, तीन गली थंभन के बीच में। और मन्दिर की जमा दो सै छप्पन, एक एक मन्दिर अढ़ाई सै मन्दिरको, और मन्दिर की दो दिवालें, और दो पाखे, सो दिवालें मन्दिर की अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर की लम्बी, और पाखे सवा सै सवा सै मन्दिर के चौड़े, तातें मन्दिर अढ़ाई सै मन्दिर को लम्बो, और सवा सै मन्दिरको चौड़ो भयो। अब प्रथम बनकी रौंस, जो साढ़े सात सै मन्दिर की चौड़ी कही, जिमी से कमर भर ऊँची, तिन रौस के किनारे कठेड़ा तिन कठेड़ा में ढड़कती पाल के किनारे, जो दो देहुरीके बीच में दरवाजो है, तिन दरवाजे के सामी दरवाजो आयो है। और आगे तीन तीन सीढ़ियाँ, तिन सीढ़ियों से चढ़के रौंस पर जैए। और इन रौंस की किनार पै एक हार बृक्षों की, गिर्दवाए फिरी है, पाँच सै पाँच सै मन्दिर की छेटी से, और इस हार से दूसरी हार वृक्षों की पाँच सै

मन्दिर की छेटी से परी है, और आपुस में वृक्षों में अन्तर, अढ़ाई सै मन्दिर को, और इस दूसरी हार से, ढड़कती पालकी किनार, अढ़ाई सै मन्दिर पै बिराजमान है। इन साढ़े सात सै मन्दिर के चौक में, ऊपर तो अनन्त रंगों के वृक्षों ने, छत्री मण्डल बाँधो है, और तले कै रंगों के नकस कटाव सोभित हैं। अब आगे दो हार वृक्षों के अढ़ाई सै मन्दिर को चौक मझिआए के, ढड़कती पाल के किनारे पोहोंचे। ढड़कती पाल इन रौंस से कमर भर ऊँची, और साढ़े सात सै मन्दिर की चौड़ी, किनार पै कठेड़ा, और इतहीं किनार पै, अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर के तीन चौक, तिन दाएँ बाएँ के चौकों में, एक एक देहुरी, और दो देहुरी के बीच में एक चौक, और दो देहुरी के आगे, अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर के लम्बे चौड़े दो चबूतरा, तिन दो चबूतरा के बीच में तले तीन तीन सीढ़ियाँ, दो देहुरी में दस मेहेराबें, चार चार दोऊ देहुरिन के, और दोए बीच के चौक के, इनके ऊपर गुमट कलस सोभित हैं, यह हौज कौसर को दरवाजो है। इन दरवाजे के आगे अढ़ाई सै मन्दिर की पड़साल सोभित है, और पड़साल के आगे अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ी ऊपर पाल को सीढ़ी सोभित है। ढड़कती पाल के तीन हिस्सा, एक हिस्सा इस रौंस की तरफ है, दूसरो हिस्सा भोम भर ऊँची पाल की तरफ, तीसरो हिस्सा जो बीच में आयो है, ताके दोनों किनारें दो हारें दरखतों की, तिन दरखतों की हार कतार माफक हार ऊँची पालके। और दो हारें वृक्षों के आगे पाल

की तरफ को जो हिस्सा है, उस हिस्सा में भोम भर ऊँची पाल की किनार से, अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ाई लेके, चौफेर सीढ़ियाँ उतरी हैं। तिन सीढ़ियों के तले छोर पै, एक हार वृक्षों की सोभाएमान है, यह सीढ़ियों की सोभा चारों घाटों के बीच बीच बिराजत है। अब इन दरवाजे के आगे, पड़साल के आगे सीढ़ी चढ़के, भोम भर ऊँची पाल पर जैए।

अब झुण्ड को घाट नजर कर देखिए

सो पाल चढ़ उतरके चबूतरों समेत तो, हजार मन्दिर की चौड़ाई रखती है, और चाँदे छोड़के साढ़े सात सै की परवान है। तिन साढ़े सात सै की पाल के, अढ़ाई अढ़ाई सै के तीन हिस्सा भए, एक-एक हिस्सा में घाट, दूसरे हिस्सा में घाटन के आगे पड़-साल, और तीसरे हिस्सा में पड़साल के आगे सीढ़ियाँ उतरी भोम भरे की, और चौथे हिस्सा में बढ़ बढ़ के चाँदे लगे हैं। और दो चाँदेके बीच में, चाँदेही माफक एक एक चौक, चाँदन तें दोऊ तरफ सीढ़ियाँ उतरी। और अवल हिस्सा में जो घाट आयो है, तिन घाट की हद्दमें, दो चबूतरा, अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर के लम्बे चौड़े कमर भर ऊँचे, दोनों को चारों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ, और अढ़ाई सै को बीच में चौक, कमर भर नीचो, चबूतरा के एक दिस के चार हिस्सा भए, बीच के दो हिस्सा में दरवाजो, और दरवाजे के दाएँ बाएँ के हिस्सा में दोए बनकी दिवालें आई, ऐसी जै जुक्ति दोनों चबूतरोंके चौफेर आई। एक चबूतरा पर आठ दिवालें बनकी, और

आठ दिवालें दूसरे चबूतरे की, दोनों चबूतरा की सब सोरा दिवालें हुई। और आठ खूंट भए। एक खूँट के दोनों दिस दो दिवालें, बीचको चौक पाल जिमी के बराबर, इन चौक के पीछे सीढ़ियाँ, और आगे पड़साल, तिन तें सीढ़ियाँ भोम भरे की चली गई हैं। इन झुण्ड के घाट की पाँच भोम छठी चाँदनी है, यह घाट एक हिस्सा में, और दूसरे हिस्सा में अढ़ाई सै मन्दिर की पड़साल, दो हार वृक्षों के बीच में, तिन पड़सालतें आगे सीढ़ियाँ उतरीं, बींच के चौक की किनार लों, और पड़साल तें आगे, सीढ़ियों कें दाएँ बाएँ तीसरे हिस्सा में, एक सौ अट्ठाईस देहुरी आई, तिन देहुरी पँ कलस सोभित है, और ध्वजा पताका फहरात हैं। देहुरी अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ी, अब इन देहुरिन के आगे चौथे हिस्सा में, बढ़ बढ़ के पाल किनारसे, एक सौ अट्ठाईस चाँदे परे हैं, सो चाँदे अढ़ाई सै मन्दिर के लम्बे चौड़े बराबर, देहुरीकी जिमी और चाँदे की जिमी बराबर। देहुरी में चार दरवाजे, तीन दरवाजे पाल पे, और चौथो दरवाजो ताल की तरफ, और दो देहुरी जो घाट की सीढ़ियों के दाएँ बाएँ आई हैं, तिन देहुरिन पर दस मेहेराब आए हैं, जैसे ढड़कती पाल के देहुर में आए हैं। और सर्व देहुरिनके आगे जो चाँदे आए हैं, तिनके दोनों तरफों भोम भोम भरेकी सीढ़ियाँ उतरी। और जहाँ दो सीढ़ियों को मुकाबिलो भयो, तहाँ सवा सै मन्दिर की एक देहुरी छोटी आई, तिनपर चाँदनी और बैठक। और घाट की देहूरी के आगे, जो दोए

चबूतरा आए, और बीच में एक चौक आयो, सो ए दोनों चबूतरा चौकको बीच में लेके पटे। और ऊपर देहुरिन के आगे, साढ़े सात सै मन्दिर को लम्बो, अढ़ाई सै को चौड़ो, एक ही चबूतरा हो गयो। और तले आठ मेहेराब सोभाएमान हैं, तीन मेहेराब तो ताल दिस परे हैं, दो दोऊ चबूतरों के, एक बीच के चौक को, और तीन इनके सामी दिवाल में परे हैं, दो पाल की दिवाल में, और एक सीढ़ियन के सामी, ऊपर घाट के जेवेको। और दो मेहेराब दाएँ बाएँ आए हैं, सो अकस के हैं, दिवाल में मेहेराब को भाव रहि गयो है। खुली मेहेराब नहीं आयी है, सो किस वास्ते के, इन अकसी मेहेराबन के पेली तरफ, चबूतरों की सीढ़ियाँ उतरी हैं, इस वास्ते खुली मेहेराबें नहीं हैं। चबूतरों के दोनों बगलों अकसी ही हैं, इन विध सों तीनहूँ चौकन में, आठ मेहेराबें सोभाएमान हैं। रौंस पर खड़े होके जो नजर कीजे, तो चाँदनी-दार तीन देहुरी सी दिखाई देत है। ऐसी अै जुक्ति नव देहुरी, और तेरा देहुरी के घाट में आई है, झुण्ड समेत तीनहूँ घाटन की एक जुक्ति है। और दोनों चबूतरों से जो सीढ़ियाँ उतर आई हैं, और दो सीढ़ियों के बीच में जो चौक परो है, सो चौक रौंस परिक्रमा तें तीन सीढ़ी ऊँचो है, और इसी चौक में एक सौ चौबीस छोटी देहुरी परी हैं। चार घाटन में चार देहुरी नहीं हैं, इहाँ देहुरिन के ठौर घाट आए हैं, तातें इन चौक से तीन सीढ़ी उतर के रौंस पर जाइए, और रौंस से तीन सीढ़ी उतर के, जल के

चबूतरा पर जाइए, और जल के चबूतरा से सीढ़ियाँ उतरी हैं, सो हौज कौसर की जिमी लों चली गई हैं, सो सब सीढ़ी निर्मल जल में प्रतछ दिखाई देत हैं। अब इततें फेर ऊपर को चलिए, जल के चबूतरा से तीन सीढ़ी चढ़ रौंस पर आइए, और रौंस से तीन सीढ़ी चढ़, दो चबूतरों के बीच के चौक में आइए, और बीच के चौक से, भोम भर की सीढ़ी चढ़ पड़-साल पर जैए, और पड़साल से, दो वृक्षों की सन्ध में होके, नव देहुरी के घाट में आइए।

घाट नव देहुरी का नजर कर देखिए

और हौज कौसर की पाल के ऊपर पाँच हारें बड़े बन के वृक्षों की आई हैं, पाँच-पाँच सै मन्दिर के बीच से, पाँचहू हारें हाँस-हाँस के मध्य भाग में आई हैं। और एक हार से दूसरी हार तक, अढ़ाई सै मन्दिर को फरक है, इतेक ही अन्तर पाँचहू हारन में परो है। जो बीच की पाल और ढड़कती पाल पर आई हैं, और ढड़कती पाल के तले जो रौंस हैं, तिन रौंस पर जो दो हारें वृक्षों की आई हैं, उनकी सनन्ध न्यारी है। वेहे पाँच-पाँच सै मन्दिर के फरक से परे हैं, इनकी हार कतार अढ़ाई सै मन्दिर की, और एक हार से दूसरी हार, पाँच सै मन्दिर के फरक से है। और वेहे पाल की पाँच हारें जो आई हैं, सो हार से हार तक अढ़ाई सै मन्दिर को फरक है, और आपुस में हार कतार, पाँच सै के फरक सों है; यह विध इन पाँच और दो सात हार वृक्षों की हुई। और एक

हार एक सौ अट्ठाईस वृक्षों की, पाँच हार के वृक्ष छे सै चालीस हुए। और पाँच सै बारा रौंस के न्यारे, तिन छे सै चालीस वृक्षों में से, बारा वृक्ष घट गए। पाँच झुण्ड के घाट के, और पाँच सोरा देहुरी के घाट के, और एक-एक नव देहुरी और तेरा देहुरी के घाट को, हर एक हार से एक-एक घटो, इन विध सों बारा वृक्ष घटे। फिर नव देहुरी और तेरा देहुरी के घाट में छे-छे वृक्ष बढ़े, ता करके फेर छे सै चालीस के, छे सै चालीस हो गए। नव देहुरी और तेरा देहुरी के घाट में, हिसाब में दो-दो वृक्ष आवत हैं, और घाट और देहुरी के कारन, छे-छे वृक्ष और आए हैं। सो दो और दो चार तो हार कतार में बराबर आए हैं, और दो-दो वृक्ष हार कतार से न्यारे हैं, प्रगट ज्यादे दिखाई देत हैं। और हौज कौसर के, एक सौ अट्ठाईस जो हाँस हैं, तिन में सें इकतीस-इकतीस हाँस, एक-एक दिस में, और चार चारों खूंटन के, ताके एक दिस में बत्तीस हाँस तो हिसाब के परे हैं, और तेतीस हाँस देखवे में दिखाई देत हैं। तिन तेतीस के बीच में, सोरा दाएँ रहे, और सोरा हाँस बाएँ रहे, बीच को जो तेतीसमों हाँस है, तिन हाँसों में चारों दिसन में चार घाट आए हैं। हर एक दिस में घाट की देहुरिन तें, सोरा हाँस इस तरफ, और सोरा हाँस उस तरफ, और बीच के हाँस में घाट सोभाएमान हैं। और याही विध सों वृक्ष आए हैं, सोरा वृक्ष इस तरफ रहे, और सोरा वृक्ष उस तरफ रहे, और सत्रमा वृक्ष एक बीच में आयो है,

सो यह सत्रमा वृक्ष मध्य हाँस के आयो है। और वृक्ष के दाएँ बाएँ, अढ़ाई-अढ़ाई सै मन्दिर पै हाँस की सन्धें हैं, तिन दोऊ सन्धन में, एक-एक वृक्ष और आयो है, और इन दोऊ सन्धन के वृक्षों से दाएँ बाएँ, अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर पै, मूल हिसाब के दोए वृक्ष और आए हैं। इन दो वृक्षों के सामी सूत्र में ताल की तरफ दो वृक्ष आए हैं, एक दूसरी हार में, और दूसरो तीसरी हार में। सो तीसरी हार के जो दाएँ बाएँ के दो वृक्ष हैं, सो पड़साल के आगे जो दो देहुरी हैं, तिन दो देहुरिन के दाएँ बाएँ, सवा सवा सै मन्दिर पै, ए दोनों वृक्ष आए हैं। और सत्रमा जो वृक्ष किनार पै आयो है, और उसके दाएँ बाएँ अढ़ाई सै पै, दो वृक्ष और आए हैं। इन तीन वृक्ष किनार पै के सामी, अढ़ाई सै मन्दिर चल के, तीन वृक्ष दूसरी हार में आए हैं, और इन तीन तीन वृक्षों के दाएँ बाएँ, बीच में दो वृक्ष आए हैं, सो ए सब आठ वृक्ष भए। चार वृक्ष चार खूँटों के, और चार वृक्ष चारों दिसन के, तिन दिसन के वृक्षों में से, पूर्व और पच्छिम के जो दो वृक्ष हैं, सो ए दो वृक्ष मूल हिसाब की जो दोए हारें हैं, तिन हारों की हार कतार सें न्यारे हैं, और ज्यादे हैं। दक्षिन उत्तर के जो तीन-तीन वृक्ष हैं, तिन विषे अढ़ाई-अढ़ाई सै मन्दिर को फरक है, और पूर्व पच्छिम के जो दो वृक्ष हैं, सो सवा सै सवा सै मन्दिर के फरक सों हैं, और चारों तरफ अष्ट मेहेराबें आई हैं। सो दक्षिन और उत्तर की जो दोए-दोए मेहेराबें हैं, सो अढ़ाई-अढ़ाई

सै की हैं, और पूर्व और पच्छिम की दो-दो जो मेहेराबें हैं, सो सवा सै सवा सै मन्दिर की हैं, इन विध सों यह नव देहुरी को घाट सोभाएमान है। तले कठेड़ा बिराजमान है, और ऊपर नव देहुरी सोभित हैं, और तले आठ थंभ पेड़ों के राजित हैं, तिन में से दो वृक्ष तो मूल हिसाब के हैं, दो हारों में सबमें और रहे जो छे वृक्ष हैं, सो घाट के और देहुरी के कारन हैं। और इन नव देहुरी के घाट के आगे, अढ़ाई सै मन्दिर की चौडी पड़साल सोभाएमान है, और पड़साल से आगे, अढ़ाई सै में सीढ़ियाँ उतरी, सो पाल की किनार लों पोहोंची। बीच के चौक की दो मेहेराबें हैं, एक उत्तर की, और एक दक्षिन की, सो ए सीढ़ियाँ जो चली, सो उत्तर की जो मेहेराब की किनार है, उस किनार को जाय लगी है। और ऊपर इन सीढ़ियों के, दाएँ बाएँ तीसरे हिस्सा में, अढ़ाई-अढ़ाई सै मन्दिर की लम्बी चौड़ी, दोए देहुरी आई हैं। ते दोनों देहुरी आपुस में मिली हैं, दोनों में दस मेहेराब आए हैं, चार-चार देहुरिन के, और दोए मेहेराब दोए देहुरिन के बीच के, ऊपर गुमट के कलस काँगरी। और इन देहुरिन के आगे, चौथे हिस्सा में दोए चबूतरा आए, ते अढ़ाई सै के लम्बे चौड़े, और रौंस से भोम भरे के ऊँचे, और अन्दर पोले, और दो चबूतरों के बीच में अढ़ाई सै को चौक, सो इन चौक को पेट में लेके, दोनों चबूतरा एक भए। तब इन चबूतरों की चाँदनी, साढ़े सात सै मन्दिर की लम्बी हो गई, चौड़ी अढ़ाई सै की, तले

आठ मेहेराबें, तीन ताल की तरफ रौंस पर, और तीन मेहेराबें दिवाल में, और दो मेहेराबें दोऊ बगल में हैं, सो अकस के हैं । इन देहुरी चौक से, तीन सीढ़ी उतर के रौंस पर जाइए, और रौंस से तीन सीढ़ी उतर के, जल के चबूतरा पर जाइए, जहाँ कमर भर ऊँचा जल है, और जल के चबूतरा की किनार से सीढ़ियाँ उतरी हैं, सो जल की जिमीलों चली गई हैं । यह सर्व सोभा देख के पीछे फिरे, जल के चबूतरा से तीन सीढ़ी चढ़ के रौंस पर आए, और रौंस से तीन सीढ़ी चढ़ के चबूतरों के बीच के चौक में आए, और बीच के चौक से सौ सीढ़ी चढ़ के, पड़साल पर आए, और पड़साल से वृक्षों की सन्ध में होके, सोला देहुरी के घाट में आए, उत्तर के घाट से पूर्व के घाट पर आए ।

अब सोला देहुरी को घाट नजर कर देखिए

तो जल के चबूतरा से भोम भर नीचे, पाँच सै मन्दिर की चौड़ाई में, श्री जमुना जी के जल की जिमी सोभाएमान है । तिन जिमी को दोनों तरफ पाल की दिवाल रोसन है, एक-एक थंभ तिन दिवाल को दोनों तरफ लगे हैं, और तीन थंभ बीच में आए । या विध सों इस रौंस की किनार से लेके तो, हौज कौसर की भीतरी रौंस की किनार तक, पाँच-पाँच थंभन की नौ हारें आईं, ए सम्पूर्ण थंभ जल में डूबे हैं । तिन में से चार हारें इत रहीं, और चार हारें उस तरफ रहीं, बीच की पाँच थंभ की जो हार है, तिन में से दो थंभ इस पाल तरफ रहे, और दो थंभ

उस पाल तरफ रहे, बीच को जो थंभ है, सो इहाँ नहीं है, इन थंभ के ठौर इहाँ एक कुण्ड परो है। और ए चवालीसौं थंभ, भोम भर ऊँचे पटे हैं। सो रौंस की जिमी इन थंभन की चाँदनी भई है। अब इन रौंस की जिमी के ऊपर सात हार थंभों के ऊपर, एक चबूतरा हुआ, जिमी से छे सीढ़ी ऊँचा, और रौंस से तीन सीढ़ी ऊँचा, और चौड़ाई चबूतरा की साढ़े सात सै मन्दिर की, और लम्बाई में सर्व ताल को गेर के आयो है। और इन चबूतरा के ऊपर, दो हारें मन्दिरन की फिरी हैं, तिन दो हार मन्दिरन के बीच में, दो हारें थंभों की आई हैं, मन्दिर अढ़ाई सै मन्दिर को लम्बो, अरु सवा सै मन्दिर को चौड़ो, ऐसे मन्दिर दो सै छप्पन गिर्द फिरे हैं, दोनों हार के मन्दिर पाँच सै बारा भए। तिन में से इत श्री जमुना जी और दोनों रौंसों के सामी, तीन-तीन मन्दिर दोनों हारों के नहीं हैं, इहाँ मानिन्द अट्ठाईस थंभ के चौक के, मन्दिर थंभन सहित कट रहे हैं। साढ़े सात सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो एक चौक परो है, और चौक के दाएँ बाएँ दो हारें मन्दिरन की, और थंभन की सोभित हैं, पूर्व की किनार से लेके तो, पच्छिम की किनार तक साढ़े सात सै मन्दिर की जागा, और दच्छिन के मन्दिरन से लेके तो, उत्तर के मन्दिरों तक, साढ़े सात सै मन्दिर भर जागा, तिन में पूर्व की किनार से लेके, पच्छिम की किनार तक, सात हारें थंभन की आई हैं। पाँच-पाँच थंभन की सात

हारें, और सात-सात थंभन की पाँच हारें, तिन में से एक हार पूर्व के किनार की, और एक हार पछिम के किनार की, ए दोनों हारों को झरोखे के थंभ कहत हैं। और इन दोनों हारों के बीच में जो पाँच हारें आई हैं, सो थंभ घाट मोहोल के हैं, तिन पचीस थंभन में से, सोरा थंभ गिर्दवाए आए, और सोरा थंभ के भीतर, आठ थंभ आए हैं। इन आठ थंभ के बीच में, एक थंभ चाहिए, सो इहाँ नहीं है, इहाँ उन पचीसमें थंभ के ठौर, एक कुण्ड परो है। आठ थंभ के भीतर, अढ़ाई सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो बराबर, इन आठ थंभ के आसपास सोरा थंभ, और सोरा थंभ के आसपास, सवा सै मन्दिर की पड़साल, इन आठ थंभन को और सोरा थंभन को कठेड़ा, और चौकों में बैठकें, और थंभन से थंभ तक, सवा सै मन्दिर को फरक है। चौक भी जो कठेड़ा के माहें परे हैं, सब सवा सै सवा सै मन्दिर के लम्बे चौड़े बराबर। दो हार मन्दिरों की और दो हार थंभों की, सवा सै सवा सै मन्दिर की चौड़ाई लेके, सवा छे सै मन्दिर तक भए। पच्छिम की किनार के झरोखों से, सवा सै मन्दिर भर अेली तरफ, और सवा सै मन्दिर भर पै झरोखे पेली तरफ हैं। इन झरोखों से लग के इनहीं में मिल के, एक दिवाल गिर्दवाए फिर आई है। भीतरी हार मन्दिरों की दिवाल से, सवा सै मन्दिर के अन्तर सों, और चाँदे के जो एक सौ अट्ठाईस चबूतरा हैं, तिन चबूतरों की चार दिवालें हैं, एक ताल की तरफ, दो दोऊ सीढ़ियों की तरफ, और एक

जो भीतरी तरफ है, सो यही दिवाल है। इस दिवाल को लग के चबूतरा आए हैं। और ताल तरफ के जो झरोखन के थंभ हैं, तिन थंभन से लेके ताल की तरफ, साढ़े सात सै मन्दिर को लम्बो, और अढ़ाई सै मन्दिर को चौड़ो, एक चबूतरा परो है। झरोखन के थंभ की जिमी, और इन चौक चबूतरा की जिमी, तिल भर ऊँची नीची नहीं है, एक समान सोभित हैं। और झरोखन के पाँच थंभ पर जो चार मेहेराबे आईं हैं; तिन चारहूँ मेहेराब को पेट में लेके, चारहूँ के ऊपर एक ही मेहेराब आई है। तले चारहूँ मेहेराबें जुदी-जुदी सोभाएमान हैं, यह घाट को एक बड़ो मेहेराब भयो। और इन मेहेराब के दाएँ बाएँ, एक एक मेहेराब दिवाल पै आयो, पड़साल के सूद को, दो चाँदों की पीछली दिवाल की हद्द में, इन विध सों ए छे मेहेराब, ताल की तरफ आए हैं। और ऐसे ही छे मेहेराब श्री जमुना जी की तरफ आए हैं, और दाएँ बाएँ पाँच-पाँच मेहेराब तो, मन्दिर और थंभन के भए, और एक-एक मेहेराब झरोखों के खूँट के थंभ और मन्दिर के खूँट के थंभ पर आई है। इन मेहेराबन में होके, दो हार मन्दिरन को प्रदक्षिना दे आइए। अब इन ताल दिस की छे मेहेराब के आगे, जो चौक चबूतरा कहि आए ते; साढ़े सात सै को लम्बो, और अढ़ाई सै को चौड़ो, सो इन चबूतरे की किनार पर ताल की तरफ चार थंभ आए, अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर के अन्तर सों, अढ़ाई सौ की एक मेहेराब, और इतेहीं चौड़ी मेहेराबें आईं, एक मेहे-

राव अढ़ाईं सै की, इन चार थंभ पर तीन मेहेराबें आईं। टापू मोहोल और झुण्ड के चबूतरों के सामी, मेहेराबों से मेहेराबें दोरीबन्ध बराबर आईं, और दोए मेहेराबें दोए बगलों की, अढ़ाईं अढ़ाईं सै का चौड़ी जो आईं हैं, तिन मेहेराबन में दिवालें आईं। तिन दिवाल में बाहिरी तरफ सीढ़ियाँ, और भीतरी तरफ अकसी मेहेराब आए हैं। अब इन देहेलान की चाँदनी पर खुले झरोखे आए हैं, और दोनों तरफों से भोम भरे की सीढ़ियाँ उतरी हैं, किनार पै कठेड़ा और बैठकें बनी हैं। इन तीन मेहेराब के आगे, तले तीन सीढ़ियाँ उतर के, रौंस के चबूतरा पर जाइए, और रौंस के चबूतरा से तीन सीढ़ी उतर के, जल के चबूतरा पर जाइए और जल के चबूतरा से सीढ़ी जल की जिमी लों चली गईं हैं। एह तमासा देख के, और जल रौंस के चबूतरा पर चढ़ के, फेर ढड़कती पाल पर आए, और नजर करी तो, दस थंभ दोनों तरफ के झरोखों के, और पचीस थंभ बीच के कुण्ड को थंभ छोड़ के, इन चौंतीस थंभ के ऊपर चाँदनी परी है। और चाँदनी के आगे इन देहेलान की चाँदनी परी है, और दोनों तरफ से सीढ़ियाँ उतरी हैं। सो तले से सीढ़ियाँ चढ़ के, ऊपर चाँदनी के आए। और चाँदनी नजर कर देखी, तो चाँदनी कुण्ड चौंतीस थंभों की बराबर, एक रस सोभाएमान है। चाँदे चबूतरा की चाँदनी छोड़ के नजर कीजे, तो चौंतीस थंभ के ऊपर जो चाँदनी है, सो साढ़े सात सै मन्दिर की लम्बी चौड़ी बराबर सोभाएमान

है। और आगे चार थंभ के ऊपर जो चबूतरा आयो है, जिनतें दोनों तरफ सीढ़ियाँ भोम भरे की उतरी है, सो चबूतरा न्यारो है, तिन साढ़े सात सै मन्दिर में से, पाँचसै मन्दिरमें, पाँच पाँच थंभन की पाँच हारें आई, और अढ़ाई सै मन्दिर भर जागा, चारों तरफ परिक्रमा को बची। जैसे पचीस थंभ के आस-पास तले पड़साल रही है, ऐसे सवा सै सवा सै मन्दिर भर जागा, सोरा देहुरी के आसपास रही। दच्छिन और उत्तर की, और पूर्व और पच्छिम की अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर भर जागा भई। और बीच में चार चार देहुरिन की चार हारें, ताकी चारों तरफ से गिने से सोरा होती हैं, देहुरिन को छाजा और कठेड़ा, पच्छिम दिस सवा सै मन्दिर छोड़ के, चाँदे को चबूतरा सोभाएमान है। ताके किनारे कठेड़ा सोभित है, और दोनों तरफ से सीढ़ियाँ उतरी हैं, और दच्छिन उत्तर बिषे पड़साल की किनार छोड़ के, सवा सै मंदिर पै तीन हार के तीन वृक्ष सोभित हैं। साढ़े सात सै मन्दिर की चौड़ी दोनों तरफ पाल रोसन है, और पाल के किनारे ताल की तरफ देहुरिन की हार सोभित है, आगे अढ़ाई सै के चाँदे बने हैं तिनतें दोऊ तरफ सीढ़ियाँ उतरी हैं। और पूर्व की तरफ देहुरिनतें लेके, किनारलों सवा सै मन्दिर भर जागा रोसन है। और किनार के तले पाँच थंभ झरोखन के परे हैं, और झरोखन के थंभों के तले, पाँच थंभ घड़नालन के आए हैं। और इत पूर्व की किनार पै खड़े होके, सामी नजर कीजे, तो

सर्व जोगवाई जमुनाजी की, मरोड़ तक की नजर में आवत है। श्री जमुनाजी दस नहेरेन की मरजाद लिए हुए, कोटन तरंगों सहित चली आउती हैं, दोनों तरफ दो रौंसें चली आउती हैं, और दोनों तरफ पाल पै गुमटन की हार कतार चली आउत हैं। और दो हार थंभन की जो आई हैं, सो थंभ पटके दो चबूतरा से भासत हैं, तिनमें नब्बे नब्बे देहुरी दोनों पाल पर भर किनार सोभित हैं, और दोनों पाल रूपी चबूतरा चल के, इन घाट की चार देहुरिन के दाएँ बाएँ आए लगे हैं। इततें दौड़ के पाल की चाँदनी पै चले जाइए, और पाल की चाँदनी से इत देहुरिन में चले आइए। और तले बीच की भोम में जो छे मेहेराबें, तरफ जमुनाजी के रोसन हैं, उन मेहेराबन के आगे तले तीन सीढ़ी रोसन हैं, सो सीढ़ी उतर के आगे अढ़ाई सै मन्दिर की रौंस पर जाइए। या विध से पूर्व की सोभा देखके फेर दिस पच्छिम आए, इहाँ पड़साल के ऊपर, एक सौ अट्ठाईस देहुरी आई हैं। और चार देहुरी घाटे की, और दोए देहुरी हाँस के सन्धकी, सो इन घाट में सवा सै सवा सै मन्दिर की, छे देहुरियाँ सोभाएमान हैं। और इनहीं छे देहुरिन के सूद (हार) में, एक सौ अट्ठाईस देहुरी, दोरीबन्ध बराबर आई हैं। और तीनहूँ घाटन में सर्व जोगवाई, अढ़ाई सै अढ़ाई सै मन्दिर की परी हैं, देहुरी चौक चबूतरा सर्व एकरस आए हैं। और इन सोले देहुरी के घाट की सर्व जोगवाई, सवा सै सवा सै मन्दिर की आई हैं, देहुरी

चौक चबूतरे थंभ द्वार पड़साल, सब एकरस सोभाएमान है। एक चार थंभको चाँदनी को चबूतरा छोड़के, जा तें दोंनों तरफ सीढ़ियाँ उतरी हैं, और दच्छिन उत्तर के दोनों घाटी की दो भोम तीसरी चाँदनी है, और पच्छिमके घाटकी, पाँच भोम छट्ठी चाँदनी, और इन पूर्वके घाटकी, जलकी भोम समेत तीन भोमें भई, और कदाचित गुमटिन की भोम न लीजे, तो दो भोम, तीसरी चाँदनी होत हैं। पाल पै तीन हारें वृक्षनकी, तिनके तले होके तेरा देहुरी के चौथे घाट में आइए ।

और चौथे घाट को देखिए

तो एह घाट मानिन्द नव देहुरी के घाट के सर्व जोगवाई बराबर आई है। नव देहुरी के घाट से इत चार देहुरी ज्यादे हैं, और सर्व जोगवाई दोरीबन्ध बराबर है। जो उतका वरनन हुआ है, सोई सब इतका वरनन जानवी, तले आठ वृक्ष आए हैं, तिन पर आठ देहुरी आई हैं, तिन आठ देहुरिन के बीच में चार देहुरी आई हैं, और चार देहुरिन के बीच में एक देहुरी आई है। इन विध सों ए तेरा देहुरी घाट के ऊपर आई हैं। और आगे अढ़ाई सै मन्दिर में पड़साल सोभित है, और पड़साल के आगे अढ़ाई सै में सीढ़ियाँ सोभित हैं, और सीढ़ियों के दाएँ बाएँ तीसरे हिस्सा में, दोए देहुरी सोभाएमान हैं। तिन दो दहुरी के ऊपर दस मेहेराबें बिराजमान हैं, चार चार देहुरिनके, और दो मेहेराब दोऊ देहुरिन के बड़े बीच के, ऊपर गुमट कलस काँगरी, और इन देहुरिनके

आगे चौथे हिस्सा में दोए चबूतरा आए। जिमी से भोम भर के ऊँचे, और चाँदनी इन चबूतरों की देहुरी की जिमी के बराबर, एक तरफ कठेड़ा, और दोए तरफ सीढ़ियाँ उतरी हैं। चबूतरा भीतर पोला, और बीच को चौक पेट में लेके, दोनों चबूतरों की एक छात हो गई। ऊपर साढ़े सात सै मन्दिर की एक ही चबूतरा हो गयो, और अढ़ाई सै को चौड़ो, और तले आठ मेहेराबें इनके भीतर आई। तीन तीन मेहेराबें दोनों तरफ की, और दो मेहेराबें दोनों बगल की अकसी है। तिन आठ मेहेराब में से, दो मेहेराब दरवाजे के, एक दच्छिन की एक उत्तर की, सो इत पड़साल तें जो सीढियाँ चली, सो बीच के चौक की दच्छिन दिसकी जो मेहेराब है, तिन मेहेराब के किनारें जाए लगी है, उन मेहेराब में हो बीच के चौक में पोहोंचे। तहाँ होके दाएँ बाएँ नजर करी, तो चबूतरों में दो अकस दिखाई देत हैं। पूर्वके चबूतरा में पूर्व दिसकी मेहेराब अकसी है, और पच्छिम के चबूतरा में पच्छिम दिस की मेहेराब अकसी है। और तीन तीन मेहेराब दिवाल में सोभित हैं, और और तीन तीन मेहेराब बाहिर किनार पै सोभित हैं सीढ़ियों और रौंस के ऊपर, अब इन बीच के चौक से तीन सीढ़ी उतरके, रौंस पर आए; और रौंस से तीन सीढ़ी उतरके, जल के चबूतरा पर आए, इहाँसे सीढ़ी जलकी जिमी तक पहुँची हैं। एह तमासा देख के फेर रौंस पर आए, और रौंस से तीन सीढ़ी चढ़के बीच के चौक में आए, बीच के चौक से सीढ़ी भोम

भरे की चढ़के, पड़साल पर आए। पड़साल से तेरा देहुरी के घाट में आए, इन घाट के वृक्षों से दाएँ बाएँ अढ़ाई सै मन्दिर पै मूल हिसाब के तीन तीन वृक्ष दोनों दिसा सोभित हैं, पाँच वृक्षों की पाँच हारें सोभाए-मान हैं। दो हारें तले ढड़कती पाल के, बीच के हिस्सा के दोनों किनारे सोभित हैं। और तीसरी हार भोम भर ऊँची बीच की पाल के किनारे सोभित हैं, और चौथी हार किनार से अढ़ाई सै मन्दिर पै आई है, और पाँचमी हार किनार से पाँच सै मन्दिर पै आई है। पड़साल की किनार पै, इन विध सों पाचहूँ हारें बिराजमान हैं। और इन पाँचहूँ हारके बीच में चार चौक आए हैं, एक चौक ढड़कती पाल के मध्य में, और दूसरे चौक में सीढ़ियाँ आई हैं, जो ढड़कती पाल के तीसरे हिस्सा से किनारलों चढ़ती चली गई हैं, और तीसरे चौक में घाट आए हैं, और चौथे चौक में घाटों के आगे, गृदवाए पड़साल आई है, और पाँचमी हार जो वृक्षों की है, सो दो देहुरी की सन्ध में आउत गई हैं। हर एक देहुरी के चार खूँट, दो ताल दिसके और दो पाल दिसके, तिनमें से पाल दिसके दो देहुरी के जो दो खूँटें हैं, तिन दो खूँटों के मध्य भाग में, ए वृक्ष आउत गए हैं। हर एक वृक्ष के पीछली तरफ पाल रोसन है, और वृक्ष के सामी दोए वृक्ष हाँस के मध्य भाग में रोसन हैं, और दाएँ बाएँ सवा सै सवा से मन्दिर पै, दोऊ देहुरिन के दोए खूँट रोसन हैं। और आगे दो सीढ़ियों के मध्य की देहुरी की चाँदनी है, अढ़ाई सै मन्दिर की लम्बी और

सवा सै मन्दिर की चौड़ी, मानिन्द चांदे के हैं; तिस पर माफिक देहुरी के गुमट कलस रोसन हैं। इसी माफिक सर्व देहुरी आई हैं, सो यह वृक्ष इतके मध्य भाग के सामी आयो है। इन विधसों ए पांच हार वृक्ष ढड़कती पाल से लेके, तो बीच की पाल आधी लों आई हैं। और आगे दोए हिस्सा मे देहुरी और चाँदे आए हैं। और दो हांस की सन्ध में जो सर्व देहुरी आई हैं, इन देहुरिन के चाँदों से, साड़े बासठ मन्दिर की हद में, दोनों तरफ से सीढ़ियाँ उतरी हैं। और मध्य में सवा सै मन्दिर का चौक आयो है। और अढ़ाई से की लम्बी और सवा से की चौड़ी, उन चौक में एक देहुरी आई है, तिन देहुरी के दो थंभ पाल दिवाल में लगे हैं; और दो थंभ इन चौक की किनार पै आए हैं। इन देहुरी के चार दरवाजे, दो अढ़ाई अढ़ाई सै के, और दो सवा सवा सै के, सीढ़ियों की तरफ अढ़ाई सै के, और ताल पाल की तरफ सवा सवा सै की मेहेराब। और इसी माफक पाल में मेंहेराब भीतर जाने को, और चाँदों के पेट में अढ़ाई सै की मेहेराब, और दो चाँदों के बीच में जो देहुरी है, उसकी सवा सैं मन्दिर की मेहेराब, इन-विध सवा सैं अढ़ाई सैं की मेहेराब, ताल पाल में गृदवाए परी हैं। दो छोटी के बीच में एक बड़ी, और दो बड़ी के बीच में एक छोटी, इन विधसों छोटी बड़ी मेहेराब रौंस के ऊपर, एक सफ (हार) बराबर चारों तरफ आई हैं। कोई मेंहेराब तिल भर

घटबढ़ आगे पीछे नहीं हैं, या विधसों देखते देखते झुण्ड के घाट फेर आए।

झुण्ड को घाट

सो झुण्ड को घाट अत्यन्त सोभाएमान है, दोनों तरफ सवा सवा सै मन्दिर के अन्तर सों, तीन तीन वृक्षों की दिवाल रोसन है, इस दिवाल से उस दिवाल तक, हजार मन्दिर को फरक है। झुण्ड के घाट के आगे पाछे एक रस जोगवाई सोभित है, देहुरी पड़साल सीढ़ियाँ, जैसी इस तरफ, तैसी उस तरफ, बीच की पाल भोम भर ऊँची, सब पालों के बीच में सोभित है, इन पाल के पाछे जो ढड़कती पाल है, और आगे जो दो सीढ़ियों के बीच में चौक है, इन दोऊ चबूतरों की जिमी एक बराबर है। और बीच की पाल से पीछली तरफ जो रौंस को चबूतरा है, और आगे ताल दिस जो जल की रौंस है, इन दोऊ चबूतरों की जिमी एक है। दोरीबन्ध बराबर है; और इन रौंस के चबूतरा के तले जो जिमी है, और इत ताल दिस जो जल को चबूतरा है, इनकी जिमी ए दोनों दोरीबन्ध बराबर है। एक तिल भर ऊँची नीची नहीं है, यह कुल्ल सोभा नजर करके, फेर सीढ़ियाँ उतरके रौंस पर आए, और रौंस से घाट के बाईं तरफ जो पौर (मेहेराब) है, तिन पौर में होके अन्दर पाल में जैए।

अब पाल अन्दर की सोभा देखिए

पौर के मध्य में खड़े होके, चारों दिस की सोभा

देखिए, तो पीछली दिस अढ़ाई सै मन्दिर की मेहेराब में होके, कुल्ल सोभा ताल टापू और सोरा देहुरी के घाट की दिखाई देत है, और दाएँ बाएँ अकसी मेहेराब सोभित हैं, और आगे चबूतरा की पच्छिम की दिवाल में, सवा सै मन्दिर की एक मेहेराब रोसन है, तिन मेहेराब में होके पड़साल में जैए। यह पड़साल सवा सै मन्दिर की चौड़ी, चाँदों के पछीत और मन्दिरों के आगे, गिर्दवाए फिरी है, तिन पड़साल के आगे, दोहोरी हार मन्दिरन की फिरी है, और दो हार मन्दिरों के बीच दो हार थंभों की फिरी है। तिन थंभों में तीन गली सोभाएमान हैं, और प्रथम हार मन्दिरों की दो सै छप्पन की, और इसी माफक थंभ, और मन्दिर अढ़ाई सै मन्दिर को लम्बो, और सवा सै मन्दिर को चौड़ो। प्रथम हार मन्दिरन में देखत के दरवाजे चार चार, और हिसाब के तीन तीन, और दूसरी हार मन्दिरन की में, देखत के दरवाजे तीन तीन, और हिसाब में दो दो, दूसरी हार मन्दिरन के बीच में, जो पछित की दिवाल है, उन दिवाल में दरवाजे नहीं हैं, उहाँ बाहिर चढ़ाव उतार की सीढ़ियाँ सुन्दर सोभाएमान हैं, तातें इत बाहिरी तरफ को दरवाजे नहीं हैं। इत बीच की पालपर जैवेकी, चारों तरफ सीढ़ियाँ सोभाएमान हैं। और साढ़े बासठ मन्दिर भर दिवाल इस तरफ रही; और साढ़े बासठ मन्दिर भर दिवाल उस तरफ रही, और सवा सै मन्दिर को बीच में दरवाजो रहो, यह जुक्ति सकल मन्दिरों में आई है। और एक एक

मन्दिर के सूध में एक एक चाँदो आयो, और एक एक मन्दिर के सूध में दोनों सीढ़ियाँ और बीच को चौक आयो। सो साढ़े बासठ मन्दिर भर में इतकी सीढ़ियाँ आई, और साढ़े बासठ मन्दिर भर में उतके हाँस की सीढ़ियाँ आई; और सवा सै मन्दिर की बीच में मेहेराब आई, यह जुक्ति सर्व ताल विषे गिर्दवाए फिरती आई है। और इन दो हार मन्दिरों और थंभों के ऊपर; घाट की सकल जोगवाई आई है। ढड़कती पाल दिस की जो मन्दिरन की हार है, और आगे तीन गली सोभित हैं, सो मन्दिर और आगे की एक गली के ऊपर, पाल को घाट सोभाए-मान है। और आगे जो दोए गली और हैं, तिन दोइ गली के ऊपर घाट के आगे जो पड़साल है; सो पड़साल इन दोए गली पर आई है। और इन दोए गली के आगे, सो एक हार मन्दिरन की, और आगे जो पड़साल है, इन दोऊअन के ऊपर, ऊपर की सीढ़ियाँ आई हैं। जो सीढ़ियाँ ऊपर आगे पड़साल के आई हैं, सो इहाँ तले मन्दिर और पड़साल के ऊपर आई हैं, और ऊपर जहाँ घाट की सीढ़ियाँ उतरी हैं, तले वहाँ पड़साल हो साफ पूरी गैल नहीं है। मानिन्द सब ठौर के सीढ़ियों का जोग पाएके, तातें इहाँ सीढ़ियों के तले एक मेहेराब रही। तिन में हो गली और मन्दिर में हो गली रही है, और ऊपर जो तीन हार वृक्षों की में, दो हारें चौकों की परी हैं, सो प्रथम चौक के तले एक हार मन्दिरों की, और एक गली आई है। और दूसरे चौक के तले दो

गली आगे की आई है, और दूसरे चौक के आगे पालपर जो देहुरिन की हार आई है, इन देहुरिन के तले भीतर पाल में, दूसरी हार मन्दिरन की, और पड़सालें आई हैं। इन विधसों तले ऊपर मोहोलातें आई हैं, और इहाँ बहुत ऊँचा और लम्बा बन आया है, और बहुत ऊँचा उठके, देहुरी चाँदे रौंस को नाख के जल के चबूतरा पर जाइके, छत्री छाया मण्डल बाँधो है। और सब वृक्षों की डालियों में हिड़ोले सोभाएमान हैं। और जो देहुरी की सन्ध में पाल की किनार पै काँगरी सोभाएमान है। और दो देहुरी के आगे जो चाँदों से सीढ़ियाँ उतरी हैं, तिन सीढ़ियों के परकोटा में, सीढ़ी सीढ़ी के मुकाबिल छोटी छोटी मेहेराबें तले सें चढ़ती, और ऊपर से उतरती सोभाए-मान हैं, और मेहेराबन के ऊपर उतरती काँगरिन की हार सोभाएमान है। और पाल के उस किनारें वृक्षन की जो हार चली गई है, उस हार के आगे पाल की किनारसें लेके, तो ढड़कती पाल में अढ़ाई सै मन्दिर लों सीढ़ियाँ उतर गई है, और सीढ़ियों के किनारें, एक हार रौंस के वृक्षों की सोभाएमान है। और देहुरी को पच्छिम को दरबाजो, दो वृक्ष के सन्ध में आयो है, और दो वृक्ष की सन्ध में पाँच सै मन्दिर की चौड़ी सीढ़ियाँ उतरी दिखाई देती हैं। और देहुरी के पच्छिम के दरवाजे से चलके, दो वृक्षों के बीच में होके, किनार से सीढ़ी उतरके, ढड़कती पाल पर उतर आइए, और उततें पाल पर चढ़ आइए। और वृक्षों में जेता ऊँचाई निचाई को भाव तले रहो, तैसो

भाव ऊपर छत्री में रहो। और रौंसन की दो हारों सहित, सात हारें ताल के गिर्दवाए सोभाएमान हैं। और हौज कौसर ताल मानिन्द एक समुद्रके सोभाए-मान है, छे छे हजार मन्दिर भर जल टापू मोहोल से चारों तरफ लेहेराँ लेत है। और तीनों रौंसों सहित छे हजार मन्दिर में टापू मोहोल बिराजमान है।

अब इहांसे टापू मोहोल चौंसठ पांखड़ी को नजर कर देखिए

तो टापू मोहोल कैसो है, के अठारा हजार मन्दिर की गिर्द, और छे हजार मन्दिर को लम्बो चौड़ो बराबर। प्रथम जलकी जिमी सें साढ़े सत्रा हजार मन्दिर की गिर्द, और छे हजार मन्दिर को लम्बो चौड़ो एक गोलाकृत चबूतरा उठा, जलसे छे सीढ़ी ऊँचा। ता चबूतरा के आगे चौफेर सवा सै मन्दिरके अन्तरसों, दोए रौंसें दोए दिवालन पै आई। पेहेली रौंस चबूतरे से तीन सीढ़ी नीची, और दूसरी रौंस उन पेहेली रौंस से कमर भर नीची, इन विधसों दोनों रौंसें तले जल की जिमी से उठके, चबूतरा से तीन तीन सीढ़ी नीचे पटे, ताको एक रौंस को चबूतरा और एक जल को चबूतरा भयो। और जल के चबू-तरा से आगे, चौफेर सीढ़ी उतरी सो जल की जिमी को पोहोंची। और जल से छे सीढ़ी ऊँचा जो टापू को चबूतरा है, तिन चबूतरा पै अढ़ाई सै मन्दिर भर किनार से जागा छोड़के, अड़सठ अड़सठ मन्दिर की दोए हारें आई। तिनमें से चार मन्दिर चारों दरवाजनके, चौसठ मन्दिर और, तिन दोए हार

मन्दिरन के बीच में, एक हार अड़सठ थंभ की आई। और एक हार दूजी अड़सठ थंभ की, दूजी हार मन्दिरों के भीतरी तरफ आई, और तीसरी हार थंभों की, भीतर के चबूतरा की किनार पै। और चबूतरा इकतालीस सै मन्दिर को लम्बो चौड़ौ, और बारा हजार और पाँच सै की गिर्द, मेहेराबें एकसी, और तिन चौक बारा मेहेराबें चारों दरवाजे की, कुछ अधिक, चबूतरा के तीन हिस्सा, तिनमें से मध्य के एक हिस्सा में, चबूतरा के मध्य विषे, एक चेहेबच्चा हुआ, और दूसरे हिस्सा में चेहेबच्चे के गिर्द फूलबाग, और तीसरे हिस्सा में फूलबाग के गिर्द चबूतरा आयो। और प्रथम जो मन्दिरों की हार है तिनसे बाहिरी तरफ अढ़ाई सै मन्दिर लों चबूतरा पड़ा है। और मन्दिर जो हैं सो अढ़ाई सै मन्दिर के लम्बे, और सवा सै मन्दिर के चौड़े आए हैं। और इसी माफिक थंभ, तिन अढ़ाई सै मन्दिर में से, बासठ मन्दिर इस मन्दिर में के, और बासठ मन्दिर उस दूसरे मन्दिर में के लेके, सवा सै मन्दिर की लम्बी चौड़ी एक एक गुरज हुई। और सवा सै मन्दिर के झरोखा के आगे बन आयो, इन विध से बन गुरजें चौफेर आई। और चारहूँ दिसन विषे जो चार दरवाजे आए हैं, सो एक एक दरवाजे की अढ़ाई अढ़ाई सै मन्दिर की मेहेराब आई है। और दरवाजे से दाएँ बाएँ जो मन्दिर हैं, ताके आगे माफक बड़े दरवाजे के, एक एक हिस्सा में दरवाजे के दाएँ बाएँ के चौखूंटे गुरज आए। और सर्व

मन्दिरों में बीच के झरोखे और बन आयो, और तीसरे हिस्सा में चौखूंटो गुरज आयो, या विध सों सर्व मन्दिरों के तीन तीन हिस्सा भए। एक हिस्सा बीच में झरोखा और बन आयो। और दो हिस्सा में दोनों तरफ दो बड़े चौखूंटे गुरज आए, और हरेक मन्दिर विषे, देखत के मेहेराब छे छे, और हिसाब के पाँच पाँच मेहेराब आए, तीन बाहिरी दिस और दो दोऊ पाखन में, और एक भीतरी तरफ भीतरी दिवाल में। और गुरजन में पाँच पाँच मेहेराब, दो दोऊ मन्दिर में को, और तीन मेहेराब गुरजन की की तीनों दिवालों में। और भीतरी हार मन्दिरों की में, देखत के चार चार, और हिसाब के तीन तीन दो दोऊ दिवालों के, और एक पाखे को लयो, और भीतर एक चबूतरा, जिमी से कमर भर ऊँचा, चारों तरफ किनार पें कठेड़ा, और चारों दिस तीन तीन सीढ़ियाँ, भीतर तेरा हजार दो सौ कोस में चबूतरा चौफेर रोसन है, और कै रंगों के बिछौने बिछे हैं। और दूसरे हिस्सा में चेहेबच्चा के आसपास फूलबाग रोसन है, और बराबर की लम्बाई चौड़ाई में, सुन्दर हौज कुण्ड हिलुरत है, इन विध सर्व मन्दिर चबूतरा के पूरित भए, तीन हिस्सा में। एक हिस्सा में चौफेर चबूतरा रहो, और दूसरे हिस्सा में फूलबाग, और तीसरे हिस्सा में कुण्ड भयो। यह फूलबाग और कुण्ड इन तलेही की भोम में आयो है, तीन भोम में नहीं आयो है, तीन भोम में केवल चबूतरा ही आयो है। और बाहिरी तरफ मन्दिरनतें लेके,

तो अढ़ाई सै मन्दिर तक एक ही चबूतरा आयो है, तिन एक चबूतरा के दो हिस्सा भए, सवा सवा सै के, एक हिस्सा में गुरज बन, और दूसरे में परिक्रमा को चबूतरा साफ पड़ो है। सो इन साठ गुरजन की, जल के दिस की जो दिवाल है, सो इन चबूतरा की किनार पर आई है, और इहांई तक झरोखन के आगे को बन आयो है। और इनके आगे सवा सै को चौड़ो इनहीं माफक रौंस को छाजा है, इन रौंस के छाजा के तले, उतेकही जलको चबूतरा है, और जल के चबूतरा से आगे चौफेर, जल की जिमी तक सीढ़ियाँ उतरी हैं। और बन गुरजों के चबूतरा से, रौंस को सीढ़ियाँ तीन तीन चौफेर उतरी हैं, और याही विध रौंस से जल के चबूतरा को उतरी हैं, जिन चबूतरा से कमर भर ऊँचा जल है। और यह बन गुरजों का जो चबूतरा है, सो पाल को जो ढड़कतो चबूतरा है, दो सीढ़ियों के बीच का, तिन चबूतरा के बराबर आया है। और रौंस इतकी पाल की रौंस के मुकाबिलों आई है, और जल को चबूतरा इतको, पाल के जल के चबूतरा के मुकाबिल आयो है, या विधसों तीनों चबूतरा टापू के, पाल के तीनों चबूतरा के मुकाबिल आए। और चार दरवाजे टापू के, चारों घाटों के मुकाबिल आए। और कुछ सकड़ाहट लेके, मन्दिर चौंसठ और दरवाजों सहित चौंसठ गुरज, एक सौ अट्ठाईस हांस जो पाल के हैं, तिनके मुकाबिले आए हैं। और मन्दिरों और गुरजों के माहें सीढ़ियां उपली भोम जेवेकों रही, सो

सीढ़ियां चढ़के तीन भोम चौथी चांदनी पर जाइए। तहाँ चाँदनी पर तले के चबूतरा पै, एक चबूतरा आयो है। चबूतरा कमर भर ऊँचो, चारों दिसन में तीन तीन सीढ़ियाँ रोसन हैं, चबूतरा के किनारे कठेड़ा रोसन है, और बीच में नूर के बिछौने बिछे हैं। ताके मध्य में नूर को सिंघासन झिलमिलात है, इहाँ सिंघासन सादा सोभा लेत है, ताके माहें जुगल सरूप बिराजत हैं, और गिर्दवाय अंगों अंग मिलाए के रूहें ब्राजमान होत हैं। उजियारे पाख की चतुर्दसी को इहाँ आवत हैं, और चबूतरे के तले दूरलों साफ चाँदनी पड़ी है, और कबूँ कबूँ रूहों की बैठक कुरसियन पर सोभी होत है, दो दो चार चार की, और चाँदनी की किनार पर, एक दिवाल कमर भर ऊँची उठी है, सो दिवाल मन्दिर और गुरजन की जो बाहिरी दिवाल है तिन दिवालै दिवाल होके चौगृद फिर आई है। तिन दिवाल पर लाल मानिक की काँगरी सोभाएमान हैं। और उसी दिवाल को लगके भीतरी तरफ एक कुरसी को चबूतरा गिर्द फिर आयो है, चाँदनी की जिमी से कमर भर ऊँचो, तिनको तीन तीन सीढ़ी सर्वत्र से गिर्द फिर आई। ता चबूतरा के किनारे सवा हाथ ऊँची तो मानिक की काँगरी सोभाएमान है, और चबूतरा पर गिर्द-वाय कुरसियाँ धरी हैं, पौने दो मन्दिर के छेह से, दो सै कुरसी हर गुरज पै धरी हैं। गुरज की तीन दिवालें, एक एक दिवाल सवा सवा सै मन्दिर की, बीच की सवा सै की, ताकी तीनों दिवाल की पौने

चार सै मन्दिर भर जागा हुई। तिन मन्दिर मन्दिर पै तें कुछ ज्यादे एक एक कुरसी धरी है, सो कुरसी काँगरिन से ऊँची है, और दोनों तरफ की लज्जतें लेती हैं। दाँहिनी दिस सबके श्रीराज हैं, और बांई दिस ताल की खूबी है, और आगे पाछे रूहें बिराजी हैं। और बीच को चबूतरा, और कुरसी का चबूतरा बराबर, और सिंघासन और कुरसी की ऊँचाई पुन बराबर। और दो गुरज के बीच में, भोम भोम प्रति को झरोखा आए रहो है, बनकी भोम इत सोभी आए लगी है। और इहाँ हो सर्व ठौर दृष्टि में आवत है, फेर उतर के तले की भोम में आए, तहाँ हो जो दरवाजे को देखिए, तो दरवाजे की मेहेराब गुरजों सहित, साढ़े सात सै मन्दिर की सोभित है। अढ़ाई अढ़ाई सै के तो दरवाजे के दाएँ बाएँ के दोनों चौखूंट गुरज हुए, और अढ़ाई सै की बीच के दरवाजे की मेहेराब रोसन है। और दरवाजे के आगे अढ़ाई सै मन्दिर को चौक रोसन है, और सर्व दाएँ बाएँ की और आगे की जागा लए तें, साढ़े सात सै मन्दिर की लम्बाई दरवाजे के आगे की ठेहेरत है। और हर एक मन्दिर की लम्बाई अढ़ाई सै की, ताके साढ़े बासठ इस मन्दिर के, और साढ़े बासठ उस मन्दिर के लेके, सवा सै मन्दिर की हरेक गुरज हुई। और सवा सै मन्दिर को बन, झरोखा के आगे रहो, या विध सों सवा सै सवा सै के बन गुरज गिर्दवाए फिर आए हैं। तिनके आगे सवा सै को चबूतरा आयो, और इन चबूतरे के आगे, तले तीन सीढ़ी नीचे, सवा सै

को रौंस को छाजा फिरो है, जातें हात लगता जल है। और इन चबूतरे से तीन सीढ़ी नीचे, सवा सै की चौड़ाई लेके, जल को चबूतरा गिर्द फिर आयो है, जापर कमरतें ऊँचा छाती लों जल भरो है। और इनतें आगे चौफेर से सीढ़ियाँ उतरी हैं, सो जल की जिमीको जाए पोहोंची, इन विधसों चबूतरा और रौंसों समेत एह टापुकी, अठारा हजार मन्दिर की गिर्द बैठत है। सवा हजार की मन्दिरन की गिर्द बैठत है, और दो सै तेरा हजार की चबूतरे की गिर्द है, जिन चबूतरा पर कुण्ड और फूलबाग है। और बाहिर गुरजन में तीनों दिसों तीन तीन छाजा है, तिनमें से तीन छाजा जल के ऊपर आए हैं, और छे बनपर दोऊ दिसा। इन विधसों टापू को दरवाजो, और पाल के घाट को दरवाजो बीच को, ए दोऊ दोरीबन्ध बराबर सोभित हैं। और इन टापू के चारों तरफ छे छे हजार में जल भरो है, और रौंसों समेत छे हजार की लम्बाई चौड़ाई में, एह टापू मोहोल बिराजमान है, और हौज कौसर सहित टापू के एक सौ अट्ठाईस रंग रखता है।

एक सौ अट्ठाईस रंग

सो जितेक जोगवाई जल की है, सो सम्पूर्न उसी रंग के माफक दिखाई देत है। हाँस हाँस का जुदा जुदा रंग है, सोई सर्व फूल और जानवर जिन हाँस में हैं, ताही हाँस के रंग माफक सोभित हैं। और इहाँ हजारहा नावें हजारहा रंगनकी, और हजारहा

हुन्नर हिकमतों की सोभित हैं। कै कोट रंगन के फूल कमल सोभित हैं। एह सम्पूर्न आनन्द लीला देखते देखते फेर झुण्ड के घाट आए।

झुण्ड के घाट आए

इहाँ देहुरिन में दोए दोए रंग भासत हैं, और यह हौज कौसर ताल और टापू मोहोल, सब एक हीरे में सोभित हैं। उसी एक हीरे की पाल है, और उसी एक हीरे की ताल जल की जोगवाई है, और उसी हीरे का टापू मोहोल है, और उसी एक हीरे में अनन्त रंगों की झलकार उठत हैं। उसी एक हीरा में एक सौ अट्ठाईस रंग टापू मोहोल में भासत हैं। और उसी एक हीरा में एक सौ अट्ठाईस रंग पाल में दिखाई देत हैं, और उसी एक हीरा में एक सौ अट्ठाईस रंग खड़े भासत हैं, और उसी एक चिद्रूपी हीरे में तीन सै चौबीस रंग आड़े भासत हैं। और सम्पूर्न पाल जो हौज कौसर की है, तिनके बारा हिस्सा सोभित ह, सो वेहे बारा हिस्सा बारा रंग के सोभित हैं, और बारा नंग के बारा रंग अखण्ड सोभाएमान हैं। तिन बारा तंग रंग में सें, एक जो हिस्सा है, तिन एक हिस्सा में सत्ताईस हिस्सा हैं, सो सत्ताईस रंग के झलकत हैं। तिन सत्ताईस हिस्सों में से, एक जो हिस्सा है, सो सवा नौ मन्दिर को सोभाएमान है, सो सवा नौ मन्दिर को जो एक हिस्सा है, सो हिस्सा नवरंग को सोभाएमान है। और वेहे जो नवरंग ह, सो नवरस के सोभाएमान

हैं, और नव जो रस हैं, सो एक प्रेम रस में बिराजमान हैं। मतलूब सखुन का वह है, के पाल की बन की रौंस तें लेके, जल की रौंस तक के, बारा नंग रंग के बारा हिस्सा अखण्ड हैं। तिन एक एक हिस्सा में सत्ताईस रंगों का, मानों तो एक ही गलीचा बिछाया है, और उस एक गलीचा में, नव नव रंगों के जानो सत्ताईस गलीचा बिछाए हैं। यह विधसों एक एक मन्दिर जुदे जुदे रंगों के सोभाएमान हैं, नव नव रंगों का एक एक गलीचा, ऐसे ऐसे एक महा गलीचा में, सत्ताईस गलीचा नूर रंग के सोभाएमान हैं। और अैसे अैसे बारा महा गलीचा जुदे जुदे रंगों के, नूर के सोभाएमान हैं, सर्वत्र नूर के गलीचा से बिछे हैं, या विध से बारा हिस्सा के बारा रंग ही जुदे जुदे हैं। प्रथम जो हिस्सा है, ताको रंग ही न्यारो है, और उसकी सकल जोगबाई भी न्यारी है। और जहाँ तें दूसरो हिस्सा लगो, तहाँ तें उनको रंग और सर्व जोगवाई भी न्यारी हे। याही विध से बारा हिस्सा हुए, तिन बारौं हिस्सा की जिमी और नंग रंग और चित्रामन, और अनन्त सामग्री सर्व जुदी जुदी सोभाएमान है, तातें इन नंग और रंगों करके, जुदे जुदे हिस्सा से हो रहे हैं। और श्रीलालदास जी की बड़ी बिरत में, जो हिस्सा करे हैं, सो हिस्सा एही होत हैं। और एक जो हिस्सा है, सो सवा नव मन्दिर को होत हैं, नव मन्दिर और छब्बीस हाथ को, ताके सवा नौ मन्दिर लेख लए। इन हिसाब करके सत्ताईस हिस्सा के, अढ़ाई सै मन्दिर होत हैं, और चौअन

हिस्सा के पाँच सौ मन्दिर होत हैं, और इक्यासी हिस्सा के साढ़े सात सै मन्दिर होत हैं। निश्चै करके और नव मन्दिर को जो हिस्सा बाँधो है, और इनहीं हिस्सन करके हौज कौसर मापो है, ताको एही इन रंगन ही को कारन परवान होत है। एक एक हिस्सा नौ नौ मन्दिर का, और नौ नौ मन्दिर नौरंग के सोभित हैं, मन्दिर मन्दिर को जुदो जुदो रंग सोभाए-मान है। और सर्व जुदे जुदे रंग की हद्द मरजादें जुदी जुदी सोभाएमान हैं, एक नंग रंग की हद्द मरजाद छोड़के, जो दूसरे रंग नंग की हद्द मरजाद में जैए, तो वह जिमी ही और नंग रंग की भासत है। और सुख लज्जत सोभा रोसनी भी न्यारी है, और अनन्त कोट आस्चर्जमय चमत्कार भी न्यारे न्यारे दिखाई देत हैं, इन विध सों हौज कौसर के हिस्सन को भेद जानवी।

अब आगे चौबीस हाँस को मोहोल नजर कर देखिए

तो तेरा देहुरी के घाट की जो मेहेराब है, तिन मेहेराब के सामें, चौबीस हाँस के मोहोल को उत्तर को जो मेहेराब है, सो सामसामी दोरीबन्ध बराबर आयो है, तिन मेंहेराब में होके हौज कौसर से चलके चौबीस हाँस के मोहोल में आए। एह चौबीस हाँस को मोहोल, कुंजबन के किनारे जवेरों की नेहेरों से लगता सोभाएमान है। सो यह चौबीस हाँस को मोहोल, पाँच सै मन्दिर के हिसाब से, चौदा हजार मन्दिर की गिर्द रखता है। और अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ाई लेके, मन्दिरन के आगे आसपास रौंस

फिरी है, सो चौदा हजार से न्यारी है। जिन रौंस पै गुरज चौक दरवाजे आए हैं, अब चौबीस हाँस के मोहोल को भोम भर ऊँचो जो चबूतरा है, तिन चबूतरा के अढ़ाई सै मन्दिर की रौंस छोड़के, चौबीस चौबीस मन्दिरन की दोए हारें आँई। और एक हार थंभन की दो हार मन्दिरों के बीच में आई, और एक थंभन की दूसरी हार मन्दिरन के आगे आई। और इन थंभन की हार से, मन्दिर भर आगे एक गोलाकृत चबूतरा आयो, तिन चबूतरा की किनार पर एक हार थंभन की आई, ए तीनों हारें चौबीस चौबीस थंभन की आई। और बीच में जो चबूतरा है, सो कमर भर ऊँचा, चारों तरफों तीन तीन सीढ़ियाँ, चारहूँ दरवाजे छोड़ के किनार पै कठेड़ा और मध्य में एक चेहेबच्चा रोसन है। तिन चेहेबच्चे के मध्य में, एक थंभ जलसे भरा हुआ, पाँच भोमलों चलो गयो, सो छठी छात पर रोसन हुआ। तलेकी भोम में और छठी छात में, चेहेबच्चा आयो, और चार भोम में नहीं आयो है। अब बाहिरी तरफ जो हार मन्दिरों की आई है, सो मन्दिर पाँच सै मन्दिर की लम्बाई के सोभित हैं। और जो चार मन्दिर चारहूँ दरवाजन के हैं, सो दो दो मन्दिर के मन्दिर हैं, तिनकी हजार मन्दिर की लम्बाई है। तिन हजार मन्दिर में से, सवा सवा सै मन्दिर दोनों तरफ की गुरजनने दाबे, अब बीच में दो गुरजन के दरम्यान, साढ़े सात सै मन्दिर भर जागा बची, तिन में अढ़ाई सै को तो, बीच में दरवाजा आयो, और दरवाजे के दाएँ बाएँ

अढ़ाईं अढ़ाई सै के दोनों तरफ चौखूंटे गुरज आए हैं। और दो गुरज के दरम्यान में अढ़ाई सै के चौक परे हैं, सो ऐसे चौक और गुरज चौफेर फिर आए हैं। और चौबीस गुरजें चौफेर सोभाएमान हैं। और बीस मन्दिर दिखाई देत हैं, और दो दो मन्दिर के चारहूँ दिसन विषे, चार दरवाजे रोसन हैं, तिन दरवाजन के आगे दरवाजों माफिक, चार बगीचा रोसन हैं। साढ़े सात सै के लम्बे, तिन बगीचों में अढ़ाई सै को बाग इस तरफ, और अढ़ाई सै को बाग उस तरफ, और मध्य में दरवाजे के सामें अढ़ाई सै को चौड़ो रस्ता रहो। और बगीचों की दिवालों के ऊपर रौंसें रही, तिन में होके रस्ता जवेरन की नेहेरन को चलो गयो है। और चौबीस गुरजन के आगे तले, चौबीस कुण्ड आए हैं, सो चाँदनी के गुरजन में जो कुण्ड हैं, तिन से चादरन जल गिरत है, सो जल इन कुण्डन में गिरत है। तिन कुण्डन से भोम भर आगे चल के ताल परे हैं, तिन तालों से नेहेर भोम भर आगे चल के, फेर ताल परे हैं। ऐसे ही चौबीस चौबीस तालन की चौबीस हारें परीं, ताके सब ताल पाँच सै छेहत्तर भए, और इतेक ही बगीचा आए। हर एक बगीचा के चारहूँ दिसन चार नेहेरें आई, और खूँटन में चार ताल आए। सो चार बगीचा की सन्ध में एक ताल परो, और चार ताल की सन्ध में एक बगीचा परो। और जब सर्व ताल पर चुके; तब ईसान कोने के दो तालों में से दो नेहेरें निकसी, सो सर्व तालन को फिरवली, और सर्व नेहेरें उस

एक आड़ी नेहेर में आए मिली। और उस नेहेर सें एक नेहेर, तरफ दच्छिन से चल के, जवेरों की नेहेरन में जाए मिली। और चौबीस हाँस के मोहोल की जो पाँच भोम छठी चाँदनी, तिन चाँदनी के मध्य भाग में एक चेहेबच्चा, तिन चेहेबच्चा में पचीस फुहारे उठत हैं, सो चौबीस फुहारे तो चेहेबच्चा के किनारे गुरजन के सामें, और एक फुहारो मध्य भाग में आयो है। सो चौबीस फुहारें किनार के जो उछलत हैं, सो तो चौबीस गुरजन में परत हैं, और एक फुहारो निपट मध्य को उछलत है, सो उस चेहेबच्चा ही में परत है। सो जल पुन तले सन्ध में होके, गुरजन के कुण्डन में आए मिलत है। और गुरजन के कुण्डन से चादरन जल तले चौतरन से लगे जो चौबीस कुण्ड हैं, तिन में परत है। और तहाँ से नेहेरे चल के, पाँच सै छेहत्तर ताल परत हैं, और तालों से नेहेरें चल के, जवेरों की नेहेरन में जाए मिलत हैं, जैसे कछू आगे बयान हो आयो है।

अब आगे जवेरों की नेहेर नजर कर देखिए

तो जवेरों की नेहेरें कैसी है, के उत्तर के चार पोहोल के मोहोल से लेके, तो मानिक पहाड़ के महानद लों सोभाएमान है, और नौ मोहोल बिराजमान हैं। इतके चार पोहोल के मोहोल से लेके, तो पेली तरफ के चार पोहोल के मोहोल तक, तो प्रथम चार पोहोल को मोहोल जो है, सो पचास हजार कोस के विस्तार में बिराजमान है। चार पोहोल के मोहोल

के आसपास, प्रथम एक चबूतरा कमर भर ऊँचो फिरो है, चार सौ कोस को चौड़ो, चौखूँटो चारों तरफ बराबर, ताके चारों खूँटों चार चेहेबच्चे, और बीच बीच नेहेर चबूतरा पै चौफेर फिर आई है। और ए चौक पचास हजार कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, और दो लाख कोस की गिर्द, अब इन चौक के तीसरे हिस्सा में, सात सै सोरा हजार कोस को लम्बो चौड़ो एक चबूतरा, भोम भर को ऊँचो सोभित है, तिन चबूतरा पर एक हाँस भर जागा किनार छोड़ के, एक चार पोहोल को मोहोल आयो, गोलाकृत चार पहल को। तिन के खूँटन में चार गुरज आए, और बीच में चार हाँस आए, सो ए चार हाँस कैसे हैं, के इनके माहें नौ नौ सत कोस के सोरा मोहोल आए हैं, एक एक मोहोल के मन्दिर चारों दिस के बत्तीस बत्तीस, तिन में सें एक मन्दिर को दरवाजो। सौ सौ कोस को एक मन्दिर, और तेतीस कोस को एक दरवाजो, और इतेक ही के दाएँ बाएँ के चौखूँटे दो गुरज, ऐसे दरवाजे सर्व मोहोलन में, एक दिस विषे, ताके चारों दिस के चौसठ मोहोल हुए। तिन के भीतर साठ थंभ, और फेर एक हार मन्दिरन की, और एक हार थंभन की, आगे एक चबूतरा फिरतो, ताकी किनार पै एक हार थंभन की, और मध्य में चेहेबच्चा, तिन में फुहारे छूटत हैं, और कै फूलबाग हैं। और इहाँ जल को सितून भयो, सो चाँदनी लों चलो गयो, और चाँदनी के ऊपर चेहेबच्चा भयो, तिन के चारों खूँटों चार

फुहारें, और तिन से फुहारे उछल के, गुरजन के कुण्डन में आए, और उन कुण्डन सें चादरन होके जल तले के कुण्डन में आउत है। जो कुण्ड तले कमर भर नीचे चबूतरा से लग के आए हैं, और इनमें से नेहेर चली, सो चारों खूँट पै जो चार चेहे-बच्चा हैं, तिन चेहेबच्चन में मिली। और इन चार नेहेर के बीच, चार अत्यन्त बड़े बगीचा हैं, और मोहोल जो हैं, ताके चारों तरफ सोरा सोरा मोहोल, तिन की एक तरफ में, आठ मोहोल इस तरफ, आठ मोहोल उस तरफ, इन दोऊ की सन्ध में चार सै कोस में, एक दरवाजा हुआ, सहित दोनों चबूतरों के। कुछ कम अर्ध मोहोल के माफक, चारों तरफ चार दरवाजे आए, और दरवाजों आगे चौक और सीढ़ियाँ उतरी। और सीढ़ियों के सामी तले बगीचें में रस्ता, जो बाग ही बाग आया चाहे, और जो ऊपर हो सैर किया चाहे, तो गुरजन से चलो जो नेहेर को चबूतरा है, तिन चबूतरा पर हो कुल्ल बगीचन के गिर्द फिर आवें। और नेहेर के चबूतरा में नेहेर, उसी चबूतरा माफक, और चार पोहोल के मोहोल से लेके, तो पेली तरफ के चार पोहोल के मोहोल तक, जो नौ मोहोल हैं, सो सब एक रस बराबर हैं, गिनती हिसाब में कोई घट बढ़ नहीं है, सब सोरा सोरा हजार कोस में बिराजमान हैं। नौ नौ सै के सोरा मोहोल एक दिस के, दो दो सौ कोस की दो गुरजें दोनों खूँट की, और चार सौ में दरवाजो सहित चबूतरों के, और चार सै दूनी आठ सै में रौंस दोनों दिस की। या

विध सें इस किनार सें लेके उस किनार लों, सोरा हजार कोस जागा हुई, और मोहोल पुन सब में बराबर हैं। जैसी एक चार पहल के मोहोल की जुक्ति है, ऐसी अै जुक्ति नवों मोहोल की जानिए, एक गुरजें न्यारी हैं। चार पोहोल के मोहोल में चार गुरजें, आठ पोहोल के मोहोल में आठ गुरजें, सोरा पोहोल के मोहोल में सोरा गुरजें आईं, बाहिर और भीतर सोरा सोरा मोहोल, एक एक दिस में सोभित हैं। चार दरवाजे साठ मोहोल, और भीतर साठ साठ थंभन की तीन हारें, यही जुक्ति सर्व मोहोलन की आई है, अै पर गुरजें सर्व मोहोलन की जुदी जुदी हैं। तिन दो गुरजन की सन्ध में हाँस आए हैं, चौंसठ पोहोल के मोहोल के, बाहिर चौंसठ गुरजें आईं, और चौंसठ गुरजों से चौंसठ नेहेर चली। और आगे चौदिवाली पै आए जो चौंसठ चेहेबच्चा हैं, तिन चेहेबच्चों में मिली, और जहाँ जितेक नेहेर आई हैं, तितेक ही तहाँ बगीचे आए हैं और उतेक ही चेहेबच्चे आए। और रौंसे जो चार पोहोल के मोहोल के गिर्दवाए हैं, सोई रौंसें पेले पार निकस गई हैं। जैसे फूलबाग की रौंसें, ग्यारह चबूतरा उत्तर से दच्छिनलों एक ही चले गए हैं, और पाँच पाँच चेहेबच्चे जो हैं, सोई मानिन्द मोहोल के हैं। इन विधसों नवों मोहोल के चौफेर, रौस के चबूतरों की चौदिवाली आई है, तिनके चारों खूँटों चार बड़े चेहेबच्चा आए हैं, और बेसुमार जोगवाई है। मोहोलन में नेहेरें ढपी, और बगीचन में खुली,

और सर्व मोहोलोंसें चौफेर चादरें गिरती हैं, मोहोलों मन्दिरों में जित देखो तित, बाहिर भीतर जल ही परिपूर्न है। लाखन नेहेरें कहूँ गुप्त कहूँ उजागर चली जाती हैं, और सर्व मोहोलों और सर्व बगीचों को, प्रदक्षिना देती हैं। और ए जवेरों के मोहोल साढ़े चार लाख कोस की चौड़ाई रखती हैं, और साढ़े सरसठ लाख की गिर्द मारे है। कुँजबन के किनारे किनारे होके, पच्छिम की चौगान के किनारे होके, दोऊ घाटियों के पछीत होके, पुखराज को गेरके, अक्षर के मोहोल थें, साढ़े चार लाख कोस आगे होके, कुँजबन के ऊपर होके, जहाँ के तहाँ आए के, मोहोलन में मोहोल मिले। और इनहीं में मिलके बड़ोबन, मधुबन महाबन गिर्द फिर आए हैं, और तरफ उत्तर के बढ़ते बढ़ते, कोटन कोसलों चले गए हैं, और फेर लौटके सर्व दिसन को गेर मारा है। और जवेरन की नेहेरन में मिले हैं, जवेरों की नेहेरों में तीनों बन सामिल हैं, चार पोहाल के मोहोल के बगीचों में, और आठ पहल के मोहोल के बगीचों में बड़ेबन को अधिकार है। और सोरा पहल के मोहोल के बगीचों में, और बत्तीस पहल के मोहोल के बगीचों में, मधुबन को अधिकार है। और चौंसठ पहल के मोहोल के दोनों तरफों के बगीचों में, महाबन सोभित है। और बन सर्वत्र मोहोलों माफिक, और इन नव मोहोल के माहें जो मोहोल कहे, सो मानिक पहाड़ के मोहोलों माफक जुक्ति जानवी। और यह जो बन हैं, सो तीन रूप करके

सोभित हैं, परंत हैं एही तीन बन, बड़ोबन, और मधुबन; और महाबन, जवेरों की नेहेरन के भीतर भीतर भी बड़े रूपसों हैं। परन्त मानिक पहाड़, और बन की नेहेरलों, और चार हार हवेलीयों तक अत्यन्त बड़ा हैं। और उत्तर की तरफ बढ़ते बढ़ते, दो कोट चालीस लाखलों चलो गयो है। फेर श्री रंग भवन की प्रदक्षिना दूर होके दई है, बन की नेहेरन के भीतर होके, इनतें आगे चौफेर बन की नेहेरन को, अत्यन्त बड़ा बन है। और जवेरों की नेहेरों में, जो चौंसठ पहलको मोहोल है, ताके दोनों तरफ महाबन कहि आए, इन मोहोल से आगे मानिक पहाड़ की दिस, चार पोहोल को मोहोल और है, बत्तीस को, सोरा को, आठ को, चार को। सो बत्तीस और सोरा पोहोल के मोहोल के बगीचों में मधुबन आयो है, और आठ पोहोल के मोहोल के बगीचों में, और चार पहल के मोहोल के बगीचों में, फेर बड़ाबन सोहायो है। और चार पोहोल के मोहोल के एक पोहोल में, सोरा मोहोल आए, और आठ पहल के मोहोल के एक पहल में आठ मोहोल आए, और सोरा पहल के मोहोल के एक पहल में चार मोहोल आए, और बत्तीस पहल के मोहोल के एक पहल में दो मोहोल आए, और चौंसठ पहल के मोहोल के एक पहल में, एक मोहोल आयो, इन विधसों सर्व मोहोल आए। और चार सै कोस की चारों तरफ रौंस, तिन रौंस से भोमभर नीची दूसरी रौंस, तीसरे हिस्सा की बाकी में आई चौफेर, तिन

रौंस से चारहूँ दिसन विषे सौ सौ कोस की सीढ़ियाँ उतरी बगीचन में, और तले ऊपर रस्ता सोभाएमान है। बगीचन में हो, और जल की रौंसन पै हो, और भोमें इनकी सब मोहोलन की माफक पहलों के सोभाएमान हैं। और सर्व मोहोलों के ऊपर तलें, भीतर बाहिर सब दिसों, जल ही दृस्यमान है। और बगीचों बगीचों में कै हजारन लाखन वृक्ष फुलबरियाँ चेहेबच्चे फुहारे उड़त हैं, नेहेरें चलती हैं। और बड़ोबन मधुबन महाबन, श्री जमुनाजी की पूर्व की दिवाल, और लाल चबूतरा के आगे से चलके, और दोऊ घाटियन सुद्धाँ पुखराज को गेर के, उत्तर के विस्तार सहित प्रदक्षिना को फिरो। ता विषे अक्षर की तरफ के जो बड़ोबन मधुबन महाबन हैं, ते इनमें आए मिले, सब मिल के जवेरों की नेहेरें मानिक पहाड़ को मझियाए के, बन की नेहेरों से लग के, पच्छिम की चौगान के ऊपर होके, फेर उत्तर के बन विषे सामिल भए, और मुकाबिल भए। और एह जवेरों की नेहेर, रंग भवन तें नव लक्ष कोस पर बैठत है, और आप साढ़े चार लक्ष कोस की चौड़ाई रखती है। एक एक मोहोल चौ दिवाली सहित, पचास हजार कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, ऐसे ऐसे नौ मोहोल, अब जवेरों की नेहेर से एक बड़ी नेहेर निकस के, मानिक पहाड़ को गेर के, जो एक महानद है, तिन महानद में आए मिली, अब इहाँ सें आगे मानिक पहाड़।

जो एक मानिक को मोहोल है, सो मानिक पहाड़ नजर कर देखिए, तो मानिक पहाड़ कैसो है, के अपरमपार और बेसुमार है, और एक एक हवेली को अपार विस्तार है। परन्त दिल मोमिन के ल्याउन के कारन, आप पूरन ब्रह्म प्राणनाथ ने, हिसाब किया है, और हिसाब में ल्याए हैं, साथ एक जुक्ति के। के बेसुमार का बेसुमार रखा, और कोटान्सा उसका, हिसाब में सो भी ल्याए। सो जो कोटान्सा के प्राणनाथ ने कहा है, उसका कोटान्सा उनहीं का हुकम, इस मोमिन रूह बन्दे के द्वारा हो कहते हैं, के मानिक पहाड़ जो है, सो हौज कौसर तें नव लक्ष कोस बैठत है महानद लों, उन तालों के परे मानिक मोहोल बिराजमान है। तो प्रथम मानिक पहाड़ का एक चबूतरा हुआ, एक मानिक का चबूतरा गोलाकृत, तिल भर घट बढ़ ऊँचा नीचा नहीं, साफ मानिन्द हीरा और दरपन के। और जिमी से भोम भर ऊँचा, किनारा पै कठेड़ा दरवाजों की हद्द छोड़ के, और चबूतरा अड़तालीस लाख कोस की गिर्द, किनार से चार सै कोस की जागा छोड़ के, एक दिवाल माफक मन्दिर बारा हजार के फिरी है, सोई बारा हजार हाँस की एक दिवाल हुई, इस दिवाल को मन्दिर नाम कह्यो। एक एक हाँस चार सै कोस को, तिन में से चार दरवाजे चार मन्दिर में बड़े, एक एक मन्दिर चार चार सै कोस को, उसी मन्दिर

को हाँस कह्यो, उस मन्दिर चार सै कोस के में, पचास पचास कोस दोनों दिस रहे, और सौ सौ कोस में बीच में दरवाजो रहो, और दाएँ बाएँ दोनों चौखूंटे दो गुरज रहे, यह जुक्ति चारों दिस चार दरवाजों की रही। अब इन मन्दिरों के आगे चार सै कोस की रौंस चारों तरफ फिरी है, और मन्दिरों की सन्ध में गुरजें सोभित हैं। सौ सौ कोस की एक एक गुरज, पचास कोस इस मन्दिर के लेके, और पचास कोस उस मन्दिर के लेके, इन सौ कोस को एक गुरज, ऐसे बारा हजार गुरज भए। और तेतीस कोस को दरवाजो, और तेतीस कोस ही के, दरवाजे के दोनों तरफ चबूतरा; तिन पर चार चार थंभ, इनको चौखूंटे गुरज कहत हैं। और इन चौखूंटे गुरजों से दाएँ बाएँ, सौ सौ कोस की छेटी से जो गोल गुरज हैं, सो गुरज बारा हजार हैं। और दरवाजे के दाएँ बाएँ जो चौखूंटे गुरज हैं, सो चौबीस हजार हैं, और इन बारा हजार गुरजों के सामें, भीतरी तरफ दो हवेली की सन्धें आई हैं, तिन में त्रपोलें थंभन की आईं हैं। और दरवाजो हाँस को हवेली के दरवाजे सामें आयो है, और चार दिसन विषे जो चार दरवाजे हैं, सो निपट बड़े हैं और चबूतरा गुरज उनहीं के माफिक, तो इहाँ दरवाजा सौ कोस का हुआ। और सौ सौ कोस के दाएँ बाएँ के चौखूंटे गुरज, और सौ ही कोस के दाएँ बाएँ के सन्ध में के गोल गुरज आए। इन चार दरवाजे के गुरज चौखूंटे सौ सौ कोस के, और सौ ही कोस में गोल गुरज हुए। और

चबूतरा में बारा हजार हाँसें, तिन दो हाँस की सन्ध में बारा हजार कुण्ड आए, भोम भर के ऊँचे गोल गुरजों के मुकाबिल। और चार दरवाजों से सीढ़ी उतरी, सो तले बगीचों में होके, रस्ता चलो गयो दूर लों। अब दरवाजे में होके भीतर गए, तहाँ दो हारें थंभन की आई हैं, दिवाल के भीतरी तरफ, दिवाल सों लग के आगे, और हवेलियन के भीतरी बाजू हवेलियों से लग के, तीन गली आई हैं। इन के आगे बारा हजार हवेलियन की, बारा हजार हारें गोलाकृत आई तिन की सब हवेली, चौदा करोड़ चालीस लाख भई। और बारा चौको अड़तालीस हजार हवेली, जो चारों दरवाजे सामी आई हैं, तिन हवेलिन में, बड़े दरवाजों के सामे बड़े दरवाजे आए, सो मानिक मोहोल के दरवाजेलों, बारा हजार दरवाजे दोरीबन्ध दिखाई देत हैं। हवेलियन में होके, और चार दरवाजे मानिक पहाड़ के, और चार दरवाजे मानिक मोहोल के दोरीबन्ध बराबर सोभित हैं। और मानिक मोहोल बारा हजार हाँस को है, चौदा कोट चालीस लाख हवेली के मध्य भाग में, इनके बारा हजार हाँस के सामें, बारा हजार हवेली आई हैं। और इनके चबूतरा के गुरज कुण्डन के सामी, बारा हजार हवेलियों की जो सन्ध त्रिपोलियाँ हैं, सो सन्ध त्रिपोलियाँ आए। मानिक मोहोल के एक कोन दिस में, मानिक पहाड़ की तीन कोट, और साठ लाख हवेली हुई, चारों खूँट की चौदा कोट चालीस लाख भई। और सर्व हवेलियों के गिर्दवाए,

दोहोरी हार थंभन की, और जहाँ दो दरवाजे आए, और हवेलियन के चार कोने जुरे, तहाँ चौबीस मेहेराब आए। और सर्व हवेलियों को एक एक चौरस चबूतरा, और एक एक हार में जो बारा हजार हवेली हैं, तिन में से छे हजार गोल, और छे हजार चौखूंटी सोभित हैं। याही विध सर्व हारों की जानवी, और जहाँ चार हवेली के चार कोने आए हैं, तहाँ नौ चौक आउत हैं, सो मध्य के चौक में इहाँ कुण्ड परत गए हैं। और इस कुण्ड से नेहेर चल के, गुप्तागुप्त दूसरे कुण्ड में जात हैं, इन विध से नेहेर सर्व हवेलियों के आस पास फिरत हैं, और कुण्ड के चारों खूंटों चार थंभ, तिन थंभन में चार हिड़ोला चार मेहेराबन में, ए नेहेरें और कुण्ड जिमी में, और जिमी माफक, और चबूतरा पै जो हवेली हैं, तिन एक हवेली की जुक्ति और गिनती कहियतु है, सोई विध सर्व हवेलियों की जानवी। तो मानिक पहाड़ की तले की भोम में चौदा कोट चालीस लाख हवेली हैं, तिन हवेलियों में से एक जो हवेली है, सो बारा हजार मोहोल की सोभित है। तीन तीन हजार मोहोल चारों तरफ दिवाल में, ताके एक हवेली के मोहोल बारा हजार, एक मोहोल में बारा हजार मन्दिर, तीन तीन हजार चारों तरफ, और एक एक मन्दिर में बारा हजार कुठरियाँ। बारा हजार मोहोल के बीच में, एक चबूतरा कमर भर ऊँचा, किनार पै कठेड़ा चार दरवाजे छोड़ के। और हवेली के तीन हिस्सा, एक हिस्सा में मोहोल आए चारों तरफ के,

और दूसरे हिस्सा में चबूतरा, और कमर भर ऊँचो मोहोल को चबूतरा, इन दोनों चबूतरा के बीच में, कमर भर नीचो चौफेर बन आयो, तिन में बारा हजार हाँस में, बारा हजार बगीचा आए। और बगीचन में कै चेहेबच्चा, कै नेहेरें कै विध के फूल बाग, और फुहारे उछलत हैं। और एक हार थंभन की मोहोलन के आगे, और एक हार थंभन की उनहीं के मुकाबिल, चबूतरा के किनार पर, और चबूतरा पर पुन बगीचे चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे छूटत हैं, और भी जो अनन्त कोट जोगवाई है, सो परिपूर्न हैं, कहिवेतर नाहीं आउत हैं। और इहाँ चबूतरा पै, अथवा चबूतरा के तले बन की जिमी में होके जो देखिए, तो चार सै कोस पर हवेली की छात दिखाई देत है, और गिर्दवाए बारा हजार मोहोल सोभित हैं। तिन में से तीन सीढ़ी चढ़ के, एक मोहोल में आइए, तो मोहोल में बारा हजार मन्दिर, चारों तरफ दिखाई देत हैं। और जैसी जुक्ति आगे हवेली की कहि आए, सोई सर्व जुक्ति इहाँ सोभाएमान है, चेहेबच्चे बगीचे नेहेरें फुहारे चबूतरा के ऊपर, और चबूतरा के तले एक रस सोभित हैं। और इहाँ होके जो तरफ छात के नजर कीजे, तो तीन सै कोस को अन्तर दिखाई देत है, चौफेर बारा हजार मन्दिर दिखाई देत हैं। अब इन मोहोल के चौक से, एक मन्दिर के अन्दर आइए, तो इहाँ चारों तरफ, तीन तीन हजार कुठरियाँ दिखाई देत हैं। और तीसरे हिस्सा के मध्य में एक चबूतरा है, कमर भर ऊँचा,

चारों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ, और इहाँ पुन मन्दिर माफक, सकल जोगवाई परिपूर्न है, और इन मन्दिरों के चौक में हो जो नजर कीजे तरफ छात के, तो दो सै कोस ऊँची दिखाई देत है, और मन्दिरों के गिर्दवाए जो बारा हजार कुठरियाँ हैं, तिन एक कुठरिया में जैए, तो कै कोटन आश्चर्य के तमासे हुनर ख्याल हैं। और अनन्त कोट जोगवाई सर्व सुख की दाता भरपूरन है, और इन एक कोठरी में होके, तरफ छात के जो नजर कीजे, तो सौ कोस को अन्तर दिखाई देत है। और एक हवेली में तीन चबूतरा दिखाई देत हैं, एक चबूतरा बारा हजार कुठरियों के बीच में आयो, और दूसरो चबूतरा बारा हजार मन्दिर के बीच में आयो, और तीसरो चबूतरा हवेली को, बारा हजार मोहोलन के बीच में आयो। और कुठरियन की छात की हद्द, मन्दिर तक सोभित है, और मन्दिरन की छात की हद्द, मोहोलन तक सोभित है, और मोहोलन की छात की हद्द, हवेली की मेहेराब तक सोभाएमान है, और हवेली की छात की हद्द, मानिक पहाड़ की प्रथम भोम तक सोभाएमान है। और मोहोल एक से दूसरे मोहोल लों बीच में त्रिपोलियाँ, और दो मन्दिर के दरम्यान में त्रिपोलियाँ, और दो कुठरियों की सन्ध में त्रिपोलियाँ, त्रिपोलियाँ तीनहूँ अपने अपने माफक। मोहोल की मोहोल माफक, मन्दिरों की मन्दिरों माफक, कुठरियों की कुठरियों माफक, और त्रिपोलियों में दरवाजे परत गए। पन्द्रा सै मोहोल इस तरफ रहे, और पन्द्रा

सै मोहोल उस तरफ रहे, बीच में हवेली को दरवाजो आयो। तीन मोहोल माफक, पन्द्रा सै मन्दिर इस तरफ रहे, और पन्द्रा सै मन्दिर उस तरफ रहे, बीच में दो मोहोल के दोनों तरफ दो गुरज आए, और मध्य में एक मोहोल को दरवाजो आयो, याही विधसों सर्व दरवाजे आए। हवेली में तीन मोहोल को, और मोहोल में तीन मन्दिर को, और मन्दिर में तीन कुठरियों का, पन्द्रा सै कुठरियाँ इस तरफ रही, और पन्द्रा सै कुठरियाँ उस तरफ रही, बीच में मन्दिर को दरवाजो आयो, ऐसे दरवाजे चारों तरफ हवेलियों में। और हवेलियों के बाहिरी तरफ, एक हार थंभन की, और मोहोलन में मन्दिर में, और कुठरियों में, एक हार थंभन की बाहिरी तरफ, और एक हार थंभन की भीतरी तरफ, सो भीतरी हार की सोभा, भीतरी तरफ आए जो बन हैं, तिनके ऊपर रही। इन विधसें कुठरियाँ मन्दिर मोहोल हवेली की सोभा देखते देखते, हवेली से बाहिर आए, और आतम बुद्ध हवेली की, बाहिरी दिवाल की सोभा देखने लगी। और दरवाजे पूर्व के से तरफ दच्छिन के लगी जो हवेली है, तिन हवेली के पच्छिम के दरवाजे आगे खड़े होए के, तरफ पूर्व के नजर कीजे, तो सर्व जोगवाई हवेली की, तीन सै कोस तक की दृष्टि में आवत है। तो एक हवेली के एक दिसमें, तीन हजार मोहोल सोभाएमान हैं, और चौफेर के बारा हजार होत हैं, और एक हवेली के एक दिस के, तीन हजार मोहोलों के मन्दिर नब्बे

लाख ९०००००० । चौफेर के मन्दिर तीन कोट साठ लाख ३६०००००० । एक हवेली के एक दिस के तीन हजार मोहोलों के जो नब्बे लाख मन्दिर हैं, तिन मन्दिरों की एक दिसकी कुठरियाँ, सत्ताईस अरब सोभाएमान हैं २७०००००००००। और चौफेर की कुठरियाँ एक खरब, और आठ अरब भई १०८०००००००००। एक एक मन्दिर में एक एक दिस विषे, तीन तीन हजार कुठरियाँ, तब नब्बे लाख मंदिर की, सत्ताईस अरब कुठरियाँ हुई, एक दिसकी । और एक हवेली की एक दिस विषे, अत्यन्त बड़ी एक मेहेराब रोसन है, तिन एक मेहेराब की ऊँचाई चार सै कोस की, और चौड़ाई तीन सै कोस की, तिनके दाएँ बाएँ तीन फूल नंगन के, और काँगरी छाजा, तिन ऊपर छात सोभाएमान है, और उस एक मेहेराब अकसीके माहें, तीन हजार मेहेराबें बड़ी मोहोलन की ब्राजमान हैं, सर्व सोभा जोगवाई सहित । और एक जो मोहोल की मेहेराब है, तिन मेहेराब के माहें, तीन हजार मेहेराबें मन्दिरन की दिखाई देत हैं, सर्व सोभा सिनगार सहित । और एक जो मन्दिर की मेहेराब है, उस एक मेहेराब के माहें, तीन हजार मेहेराबें कुठरियन की दिखाई देती हैं, सर्व सोभा सिनगार सहित । और मन्दिरन की जो मेहेराब हैं, ताके कट देस विषे कुठरियाँ सोभाएमान हैं, अकसी थंभ के बराबर, और मोहोल की जो मेहेराब है, ताके कट देस विषे मन्दिर ब्राज़-मान हैं, मोहोल के अकसी थंभ के बराबर, और

हवेली की जो एक अकसी मेहेराब है, उस मेहेराब के कट देस विषे, हवेली के अकस के थंभ बराबर संपूरन मोहोल सोभाएमान हैं। एही विध हवेली के चारों तरफ, और सौ कोस में कोठरियन को विस्तार है, और सौ कोस में मन्दिर की मेहेराब को विस्तार है, और सौ कोस में मोहोल की मेहेराब को विस्तार है, और सौ कोस में हवेली की अकसी मेहेराब को विस्तार है। अरु मेहेराबन में मोहोलाइत और भोमें परी हैं, कोठरियों में तीन हजार भोमें परी हैं, और तीन हजार मन्दिरन की मेहेराबन में परी हैं भोमें, और तीन हजार भोमें मोहोलन की मेहेराबन में परी हैं, और तीन हजार भोमें हवेली की अकसी मेहेराब में परी हैं, अपने अपने माफक छोटी भोमें आई हैं।या विधसों एक हवेली की एक भोम में छोटी छोटी बारा हजार भोमें परी, ता बारा हजार भोमन की छोटी छोटी भोमें, चौदा कोट चालीस लाख भोमें होती हैं। और सर्व हवेलियों के आस पास बड़े थंभ फील-पाइयों की, दोई हारें फिरी हैं। एक इस हवेली की, एक उस हवेली की, सो एक हवेली की दिवाल से, दूजी हवेली की दिवाल तक, तीन मेहेराबें हुई, एक एक मेहेराब तैतीस कोस की चौड़ी आई है, इन विधसों तीनहूँ मेहेराबें, तेतीस तेतीस कोस के अन्तर सों सोभित हैं, सो प्रथम बडी मेहेराबें ए सोभाएमान हैं, बड़े बड़े अन्तरसों। ता पाछे ग्यारा कोस के अन्तरसों, उन बड़ी मेहेराबन के भीतर, तीन हजार मोहोल के थंभन की मेहेराबें सोभाएमान हैं, ता

पाछे ग्यारा कोस के अन्तर सों, मन्दिरन के थंभन की मेहेराबें सोभायमान हैं, ता पाछे ग्यार कोस के अन्तर सों भीतरी तरफ कुठरियन की मेहेराबें सोभाएमान हैं । महा अद्भुत अपूर्व सोभा होय रही है, आत्मा में देखत ही बनत है, कहिवेतर नाहीं आउत है । और मानिक पहाड़ के बड़े हाँस, बारा हजार सोभित हैं, परन्त बारा हजार के अंतरगत बारा हजार हाँस और हैं, इस मानिक पहाड़ की एही जुक्ति है । एक वस्त के अन्तरगत, दूसरी वस्त सोभित है, हाँसन में हाँस, और हवेलियन में हवेली, और मन्दिरन में मन्दिर, और कुठरियन में कुठरियाँ, और कोसन में कोस सोभाएमान हैं, तातें बारा हजार हाँस के अन्तरगत, छोटे छोटे कै बारा हजार हाँस सोभाएमान हैं । और गोल गुरजन में पुन छे छे मेहेराब सोभाएमान हैं, तीन तीन भीतरी तरफ, और तीन तीन मेहेराब बाहिरी तरफ, और आगे इनके बारा हजार कुण्ड सोभाएमान हैं, और दाएँ बाएँ रौंस है । और पाछे इन गुरजन के त्रिपोलियाँ, मानिक मोहोललों चले गए हैं, हर एक हवेली के आसपास, जो बड़े थंभन की हार आई है, सो हर एक हवेली के मुकाबिल दस दस थंभ आए हैं । और दो दो हवेली के संध में पुन चार चार थंभ आए हैं, तिनमें तीन तीन गली आई हैं, तेतीस तेतीस कोस की एक गली, और ए थंभ बहुत मोटे हैं, माफक एक मोहोल की मुटाई उनकी ठेहेरत है, और वह मुटाई उनकी लेखे से बाझ है ।

थंभन की जुक्ति मानिन्द फीलपाइयों के सोभित है, मध्य फीलपाइयों के, अनेक विधकी मोहोलाइत है, और बाग बगीचे चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे छूटत हैं। और ए गोल गुरजन के सामी भीतरी तरफ जो त्रिपोलियाँ आए हैं, सो त्रिपोलियाँ बारा हजार आए हैं, सो सब साम सामी आए हैं। और दो हवेली की सन्ध में आई जो तीन गली हैं, सो सब साम सामी आई हैं, और किनार के गोल गुरजन से चली जो त्रिपोलियन की गली है, और किनार की बारा हजार हवेलियों से चली, जो बारा हजार गली, सो गली चलके, बारा हजार त्रिपोलियाँ और बारा हजार दरवाजे आए, जो मानिक मोहोल में हैं, सो किनार के सम्पूर्ण हवेलियों के दरवाजे और त्रिपो-लियाँ, मानिक मोहोल के दरवाजे और त्रिपोलियों से, दोरीबन्ध बराबर आए हैं, और चौबीसों हजार गलियों की, सूत्रधारा एक ही ठौर जलस्थंभ को लगी है। या विधसों बारा हजार त्रिपोलियन की गली, साम सामी दोरीबन्ध सोभाएमान हैं। मानिक मोहोल के माहें होके, दृष्टि पेले पार फूट जात है, बारा हजार दिसन में रस्तन में होके, चार सै कोस की रौंस किनारलों दिखाई देत है, एक बाल बराबर घट बढ़ नहीं है। अब बारा हजार हाँसन में जो बारा हजार हवेली आई हैं, और एक एक हवेली के सनमुख, बारा हजार हवेली आई हैं, तिन बारा हजार हार में सें, जो प्रथम हार दिवाल से लगके आई है, ताकी चारों दिवालें तीन तीन सै कोस की

परवान है। और फेर तिनसों लग लग के, बारा हजार हारें आई हैं, सो संपूरन सकड़ात गई हैं, सो सबतें पाछली जो हार है, सो सकड़ात सकड़ात सौ कोस की रह गई है। और तेतीस कोस के दाएँ-बाएँ के त्रिपोलियाँ रह गए हैं, ताके बीच में एक फिरतो चौक आयो।

अब बीच को टापू मोहोल मानिक

सोरा लाख कोस की गिर्द में, बारा लाख कोस में बारा हजार हवेली आई, और चार लाख कोस में त्रिपोलियाँ आए, इन विध चौक की सोरा लक्ष कोस की गिर्द हुई। अब इन मध्य चौक के बीच में, मानिक मोहोल सोभाएमान है, तो मानिक मोहोल कैसा है, के चौगिर्द एक हाँस भर जागा छोड़ के, प्रथम एक चबूतरा कमर भर ऊँचा हुआ, हवेलियों से एक हाँस के छेह से, गोलाकृत चबूतरा आया। और इन चबूतरा के ऊपर, किनार की मरजाद छोड़ के, एक भोम भर का चबूतरा आया। तिन चबूतरा के तीन हिस्सा भए, सो एक हिस्सा में किनार की मरजाद छोड़ के, एक भोम भर का ऊँचा गिर्दवाए फिरता चबूतरा हुआ, तिन फिरता चबूतरा के आगे, भोम भर नीची बन की जिमी हुई। और बन की जिमी के आगे, भोम भर को ऊँचो गोलाकृत बीच में एक चबूतरा और आया। किनार के चबूतरे के मुकाबिल, दोनों चबूतरों के हाँस हाँस से सीढ़ियाँ उतरी, अब रौंस के चबूतरापै जो भोम भर को ऊँचो

चबूतरा है, तिन चबूतरा में बारा हजार हाँस आए हैं, और दो हाँस की सन्ध में इहाँ बारा हजार कुण्ड लगे हैं। और तिनके ऊपर जो भोम भर को ऊँचो, किनार को चबूतरा है, उन चबूतरा के ऊपर बारा हजार हाँस को मोहोल आयो, तिन के हाँसन में बारा हजार मोहोल आए। और दो हाँस की सन्ध में एक एक गुरज आयो, सो याके हाँस और गुरज, ए दोनों एक सौ तेतीस कोस की चौड़ाई में आए हैं। सो इनके गिर्द आई जो बारा हजार हवेली हैं, तिन हवेलिन सें मानिक मोहोल की जोगवाई, दोरीबन्ध बराबर आई है। बारा हजारमी हार हवेलियों की त्रिपोलियों सहित, तिनकी गिर्द सोरा लाख कोस की आई, और पाँच लाख तेतीस हजार कोस की लम्बाई चौड़ाई मानिक मोहोल की आई, और सोरा लक्ष कोस की गिर्द आई। और रौंसतें मानिक मोहोल लों, पाँच लाख तेतीस हजार कोस की चौड़ाई हुई, हवेलियों को हाँस इनकी हवेलियों के मुकाबिल आए हैं, और गुरजें इनकी दो हवेली की सन्ध में, आई जो त्रिपोलियाँ हैं, उन त्रिपोलियन के सनमुख आई हैं। और सकल जोगवाई बराबर और सनमुख आई है, और इहाँ आसपास बारा हजार बगीचा आए हैं, नेहेरें चेहेबच्चे फुहारे छूटत हैं। और ऐसे ही बारा हजार बगीचा चेहेबच्चा नेहेरें फुहारे मोहोलों के भीतरी तरफ, किनार के और बीच के चबूतरा के मध्य में भोम भर नीचे आए हैं। पेड़ के चबूतरा के गिर्दवाए, और किनार

के चबूतरा की और बीच के चबूतरा की सर्व जोगवाई बराबर, और इन चबूतरा की किनार पै बारा हजार थंभ, तिन थंभों में हिड़ोले। और चबूतरा के मध्य भाग में, एक पेड़ बहुत बुजरक, जल का भरा हुआ सोभाएमान है, सो पेड़ बारा हजार थंभन सहित, बीस कम बारा हजार भोमलों सूधे ही चले गए हैं, इनके बीच में भोमें नहीं आई हैं, और उतहीं हिड़ोला लगे हैं अत्यन्त ऊँचे। और किनार के मोहोल के झरोखे, भीतरी तरफ के जो आए हैं, सो ए भी बीस कम बारा हजार भोमलों, जुदे जुदे चले गए हैं। जहाँ बीस कम बारा हजार भोमें भई, तहाँलों ए दोऊ मोहोल की जोगवाई न्यारी न्यारी चली गई, इततें उत और उततें इत आइवे जावे को मार्ग नहीं है। और चबूतरे के ऊपर बगीचे और चेहेबच्चे फुहारे छूटत हैं, और पेड़ में से कै विध के फुहारे छूटत हैं। और जहाँ बारा हजार भोम में बीस भोमें बाकी रही पुजने को, तहाँ बीच के पेड़ में से एक छाजा कढ़ो, सो छजा बारा हजार हाँस के मोहोल से आए मिलो। और इहाँ से जो बीस भोमें और चली, सो बीस भोमलों दोऊ मोहोल एक हो चले, इन पेड़ से किनार के मोहोल में आइए, और किनार के मोहोल से पेड़ चबूतरा में आइए। और जहाँ बारा हजार भोमें पूरी भई, तहाँ पेड़ में से रौंस को चबूतरा गेर के भयो, चाँदनी की जिमी से भोम भर ऊँचो।

तलेकी भोम में जो पेड़ को चबूतरा है, एह चबूतरा चाँदनी को उन चबूतरा के ऊपर आयो है, और पिटौर में बारा हजार जाली द्वार आए हैं। इन चबूतरे के आसपास भोमभर नीचो एक ताल आयो, पेड़ चबूतरा के गिर्दवाए, तले की भोम में जो बन आयो है, यह ताल उस बन पर आयो है। और ताल के गिर्दवाए भोमभर ऊँची पाल आई है, सो पाल तले की भीम में जो बारा हजार हाँस को मोहोल है, उस मोहोल के ऊपर आई है। और जैसे बारा हजार जाली द्वार टापू के चबूतरा में आए हैं, ऐसे ही बारा हजार जाली द्वार पाल के पेट में आए हैं, दोऊ जाली द्वार सामसामी आए। और टापू मोहोल के चबूतरे में जो जालीद्वार आए हैं, तिन जाली द्वारन में होके जल ताल में परत है। और टापू के चबूतरा के ऊपर बारा हजार हाँस को मोहोल आयो, तिनके किनार पै बारा हजार थंभ आए, और भीतर अनेक जोगवाई परिपूर्ण हैं। कै बगीचे चेहेबच्चे नेहेरे फुहारे छूटत है, और उपरा ऊपर बीस भोमें परी हैं, और इकैसमी चाँदनी परी है, तिन चाँदनी पर चबूतरा चेहेबच्चा नेहेरें फुहारे छूटत है। और हर भोम में बारा हजार झरोखे गिर्दवाए परे है, सो झरोखे किनार पै अधिक सोभा लेत हैं, और चाँदनी की किनार पै कै विधकी बैठकें हैं, और झरोखे रहे। और नीचे आगे रौंस सोभाएमान है, और चारहूँ दिसन विषे चार दरवाजें

रोसन हैं, और रौंससें आगे सीढ़ियाँ उतरी हैं, तहाँ जल को चबूतरा कमर भर ऊँचा जल, और जल के किनार पै जो पाल है, तिन पाल के ऊपर चारा हारें थंभन की, तिन में तीन देहेलानें आई, दोऊ तरफ की जो दो देहेलानें हैं, तिनकी एक भोम दूसरी चाँदनी है। और एक बीच की जो देहेलान है, ताकी दो भोम तीसरी चाँदनी। और पाल के तले किनार में बारा हजार जाली द्वार हैं, तिन जाली द्वारन में होके, तले रौंस के आगे भोम भर नीचे जो कुण्ड हैं, तिन कुण्डन में गिरत है। जैसी तले मानिक मोहोल के गिर्दवाए, कमर भर ऊँची रौंस है, तिन रौंस के ऊपर भोम भर ऊँचा चबूतरा है, तिन चबूतरा के ऊपर बारा हजार हाँस को मोहोल आयो है, और रौंस के आगे बारा हजार कुण्ड आए हैं, त्रिपोलियन के सनमुख। और भोमभर चलके, चार हवेली की सन्ध में कुण्ड आए हैं, तैसी अै जुक्ति इहाँ सोभाएमान है। कमर भर ऊँचे चबूतरा के ऊपर, भोम भोम भरे के ऊँचे दोए चबूतरा आए हैं, एक किनार पै पालको, और दूजो बीच को टापूको। और इन दोऊ चबूतरे के बीच में, भोम भर नीचा ताल रहा, रौंस के चबूतरा की जिमी, और ताल की जिमी बराबर, और ताल में जल, पाल के चबूतरा के और टापू के चबूतरा के किनारलों भरो है। और ऊपर पाल के, चार हार थंभन में तीन देहेलानें सोभित हैं, और बाहिरी तरफ पालतें, भोम भर नीची रौंस सोभित है। तिन रौंस से आगे जिमी

में, बारा हजार कुण्ड ब्राजमान हैं, सो पाल के तले होके, जाली द्वारन में होके, ताल में से आवत जो जल है, सो इत बाहिर के मोंकन में होके, भोम भर नीचे रौंस के आगे, आए जो बारा हजार कुण्ड हैं, सो जल रौंस के ऊपर होके, भोम भर नीचे कुण्ड में गिरत है। अब इन कुण्डन से नेहरें चली, बारा हजार कुण्डन से बारा हजार नेहरें, सो नेहरें भोम भर तो सीधी चली, और आगे सूधी आई जो दूजी बारा हजार कुण्डन की बारा हजार हारें हैं, उन कुण्डन में नेहेरें उतरी। और ए कुण्ड दो हवेली की सन्ध में तले की भोम में बारा हजार आए हैं, उन कुण्डन के ऊपर इहाँ ए कुण्ड आए हैं, और इहाँ से एक नेहेर से दो नेहेर भई हैं। एक नेहेर तो सामी चाँदनी पर गई है, और बारा हजार कुण्डन की बारा हजार हारें आई है, और बीच बीच बगीचा आए हैं, और कुण्डन पर चार चार थंभ आए हैं, और तिनमें हिंड़ोले आए हैं। और नेहेर के दाएँ बाएँ फूलन की हारें आई हैं, और हिंड़ोला आए हैं, और नेहेर चलत चलत, गुरजन के कुण्डन में प्रवेस करत हैं। और तहाँ सें गुप्तागुप्त तालनके, बुलन्द थंभन में प्राप्त होके, उन थंभन में से चादरन होके, जल तालन में प्राप्त होत है। और दूजी नेहेर दूजी हार कुण्डन की जो है, तिन कुण्डन में होके तले को उतरी है, और थंभन में होके नेहेर उतरत है, सो हर एक कुण्ड में चारहूँ कोननतें चार चादरें गिरत हैं, और चारहूँ दिसन विषे चार हिंड़ोले सोभित हैं और हर

एक कुण्ड में चार थंभ के ऊपर छात आई, सोई पुल परे हैं। और थंभ से चादरन करके, जल कुण्ड में भरात है, और कुण्ड से नेहेर भोम भर सूधी चलत है, और दूजे कुण्ड में प्राप्त होके, फेर थंभ चादरों करके नीचे उतरत है। और उतर के फेर भोम भर सूधी चलके कुण्ड में प्राप्त होके, फेर भोम भर नीची उतरत है, याही विधसें भोमन भोमन उतरत उतरत, नेहेर तले गुरजन के कुण्ड में आई। और गुरजन के छाजा पर होके, खाले गुरजन के जो बारा हजार कुण्ड हैं, तिन कुण्डन में नेहेर आई। और उहाँ सें नेहेर चली, तिनतें बारा हजार ताल परे हैं, तिनको आगे बयान हूहे। अब मानिक पहाड़ की सर्व हवेली, तले की भोम भरे की, चौदा कोट चालीस लाख भई १४४००००००। तिन सर्व हवेलियों के मोहोल सत्रा खरब और अट्ठाईस अरब हुए १७२८०००००००००। अब ए सत्रा खरब और अट्ठाईस अरब मोहोल जो हैं, तिन एक एक मोहोल में बारा बारा हजार मन्दिर, तो सर्व मोहोलों के मन्दिर तले की भोम भर के, बीस पार और तेहत्तर नील और साठ खरब मन्दिर हुए २०७३६०००००००००००००। अब एक एक मन्दिर में बारा बारा हजार कुठरियाँ, तो बीस पार तेहत्तर नील और साठ खरब मन्दिरों की कुठरियाँ, चौबीस खोयन और अठासी पदम बत्तीस पार कुठरियाँ हुई, सर्व तले के भोम की २४८८३२००००००००००००००००००। अब मानिक

पहाड़ के बारौं हजार भोमें की बड़ी बड़ी हवेली, सवा खरब और अट्ठाईस अरब जमा भई १७२८००००००००। और एक एक हवेली में बारा बारा हजार मोहोल, ताके सर्व बारौं हजार भोमन की हवेलियों के मोहोल, बीस पार और तेहत्तर नील, और साठ खरब मोहोल हुए सब जमा २०७३६००००००००००००। और एक एक महल में बारा बारा हजार मन्दिर, ताके सर्व बारौं हजार भोमों के मन्दिरों की जमा, चौबीस खोयन और अठासी पदम, और बत्तीस पार मन्दिर हुए २४८८३२००००००००००००००००। अब एक एक मन्दिर में बारा बारा हजार कोठरियाँ, तो सर्व मन्दिर चौबीस खोयन, और अठासी पदम, और बत्तीस पार मन्दिरन की कुठरियाँ, सर्व बारौं हजार भोमन की, उन्तीस अंक और पचासी जोयन, और अण्ठानबे खोयन, और चालीस पदम कुठरियाँ हुई, सर्व भोमन की सर्व जमा २९८५९८४००००००००-००००००००००। या विधसों मानिक पहाड़ की भीतर की हवेली, मोहोल मन्दिरों की गिनती हुई, सहित कुठरियों के। और हवेली के हवेली माफक, और मन्दिरों के मन्दिर माफक, और कुठरियों के कुठरियों माफक थंभ जानवी, जिन विषे जितेक चाहिए, तहाँ तितेक ही सोभाएमान हैं।

अब रौंस बाहिर की जोगवाई नजर कर देखिए

तो रौंस से लगके जो बारा हजार कुण्ड हैं

गुरजन के आगे, तिन कुण्डन से लगके एक चबूतरा चलो, भोम भर नीचे, और जिमी से कमर भर ऊँचो, और सौ कोस को चौड़ो, सो चबूतरा सामी छ्यानब्बे लाख कोसलों सूधो चलो गयो, और महानद में जाए मिलो। और एह चबूतरा जब कुण्ड से चलो, तब तीसरे हिस्सा में चार सै कोसलों, एक नेहेर चली गई, और चार सै कोस के बाद, सौ कोस को लम्बो चौड़ो एक ताल परो, चबूतरों की चौपड़ में। प्रथम चौपड़ में एक कमर भर ऊँचा चबूतरा हुआ, चौफेर कोर पें, तेतीस कोस को चौड़ो, तिनके ऊपर चौफेर मोहोलाइत आई, तिनकी पाँच भोम छठी चाँदनी, और आगे रौंस रही, रौंस से तीन सीढ़ी उतर के, चबूतरा की जिमी पर आइए, उन जिमीतें तीन सीढ़ी उतर के, ताल में जो जलको चबूतरा है, तिन चबूतरा पर जाइए, और जल क्रीड़ा कीजे। और ताल एक सौ कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, और रौंस के बीच के हिस्सा में नेहेर, और दो तरफ के दो हिस्सा में सुन्दर चबूतरा आए। और दोनों तरफ किनार पै कठेड़ा, और बीच दोनों चबूतरों के, अनन्त विध के हुन्नर बने हैं। और अनन्त विधकी फुलवारियाँ फूली हैं, और दोनों तरफ कमर भर नीचे, दो नूरके बाग रोसन हैं। अब रौंस ही रौंस भोम भर चलके, ताल के किनारे पहुँचे, तहाँ से तीन सीढ़ी चढ़के, मोहोलाइत में होके भीतर निकसके, तीन सीढ़ी उतरके, चबूतरा की जिमी पर आए। तहाँ से तीन सीढ़ी उतरके, जल के

चबूतरा पर जाएके, जल क्रीड़ा कीजे । ताल भोम भर के गेहेरो और चौफेर जो मोहोलाइत आई है, तिनमें से चारों खूँटों चार मोहोल अति बुलन्द आए हैं। ते भोमन भोमन मानिक पहाड़ की चाँदनीलों चले गए हैं, और इनमें गिर्दवाए मोहोलाइत, और छाजा और झरोखा चले गए हैं, और इनमें से चादरें टूटती हैं। और इनके भीतर कै मोहोल, कै मन्दिर कै बगीचे कै चेहेबच्चे कै नेहेरें कै फुहारे उछलत हैं। और इन बुलन्द सितूनों में, चार अति बुलन्द मेहेराबें आई हैं, तिन मेहेराबन में चार अति बड़े हिड़ोले आए। और दो दो मेहेराबें पाछली, और बगलों नेहेरन पै आए, तिनमें पुन हिड़ोले, इन बिधसों चार हिड़ोला की ताली तो ताल पर परत है, और चार ही हिड़ोलों की ताली, चौफेर नेहेरों पर परत है, और नेहेरों के हिड़ोलों की ताली, बगीचों पर परत है। बगीचों की पाँच भोम छठी चाँदनी, ताल की मोहोलाइत के बराबर, बगीचों की लम्बाई चौड़ाई, पौन हाँस भर की, और बगीचों में अनन्त विध के वृक्ष हैं, और कै चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे छूटत हैं। चार ताल के बीच में एक बगीचा, और चार बगीचों के बीच में एक ताल सोभित है, और चार नेहेर के बीच में एक बगीचा, और दो बगीचा के बीच में एक नेहेर। ताल नेहेरन की मेहेराबें बराबर, और पाँच भोम के ऊपर हिड़ोला की ताली परत है। ताल की मोहोलाइत की चाँदनी, और बगीचों की चाँदनी ऊपर, महा बुलन्द हिड़ोले फिरत हैं। और

सम्पूर्ण हक हादी रूहें, एक ही हिड़ोलन में बैठ के झूलत हैं। इन विध सों एक ही चबूतरा में बारा हजार ताल, और दो ताल के बीच में एक नेहेर ऐसी बारा हजार नेहेरें आई। ऐसे ऐसे बारा हजार चबूतरा गृदवाए आए, और महानद के चबूतरा को जाए लगे हैं। ए बारा हजार चबूतरा तो सामी आए हैं, और बारा हजार चबूतरा आड़े आए हैं, परिक्रमा की भाँत के, तिन में आड़ी नेहेरें आई हैं, सो ए नेहेरें तालों से दूनी ठेहेरती हैं। और नेहेरों के चबूतरों से बगीचों को चारहूं तरफ से, तीन तीन सीढ़ियाँ उतरी हैं। और नेहेरों के जो चबूतरा हैं, तिन के ऊपर तो नेहेरे चली जात है, और तले दोऊ दिस बाग सोभाएमान हैं। तिन बागों के माहें लाखन वृक्षों की हारें सोभाएमान हैं, जैसे बंगलों के चबूतरों के आगे बन सोभित है। और एक रस्ता तो नेहेरों के चबूतरों के ऊपर हो सोभित है, और दूजो रस्ता तले बगीचों में होके सोभाएमान है। बगीचों में होके वृक्षों में होके, जिमीहीं जिमी में होके, महानद को चले जाइए। और तालन की मोहोलाइत में, बारा हजार हाँस, और बगीचों की चार दिवालन में, बारा हजार हाँस, तीन तीन हजार हाँस एक एक दिस विषे, और ताल की मोहोलाइत विषे, चार कोने विषे, चार थंभ बुलन्द आए, सो चाँदनी लों चले गए। और एक दिस विषे तीन मेहेराबें महा बुलन्द आई, तिन एक एक मेहेराब विषे, हजार हजार मोहोल आए, और मोहोल मोहोल विषे अनेक मन्दिर हैं, एही विध

चारों तरफ आई । और जैसे ए बुलन्द थंभ मेहेराबें, बारा बारा बाहेर आए, ऐसे ही भीतर सहित मोहोलातों के, ताल की दिस आए । तिन बारा थंभों में से चार थंभ जो चार खूंट के हैं, ते बढ़ते बढ़ते आसमान लों चले गए हैं, और पेहेली हार के थंभ मानिक पहाड़ की चाँदनी सें भोम भर नीचे जाए मुकाबिल भए । और जे बीच के दो दो थंभ हैं, सो ताल की मोहोलात ही लों चले, पाँच भोम छठी चाँदनी लों । और पेहेली हार जो तालों की है, तिन के जो चार थंभ हैं, तिन में चार महा बुलन्द मेहेराबें आई, तिन महा बुलन्द मेहेराबों में, महा बुलन्द चार हिड़ोले आए । एक महा बुलन्द जंजीर में, एक महा बुलन्द हिड़ोला आयो, ऐसे चार बुलन्द जंजीर में, चार महा बुलन्द हिड़ोले आए । और दो मेहेराबें जो नेहेर की हैं, तिन की मेहेराबें दो गुरजन की अकसी थंभन पर आई, तिन में दो दो हिड़ोले आए । इन विध सों पेहेली हार तालन के थंभों की मेहेराब मानिक पहाड़ की चाँदनी तें, भोम भर नीचे मुकाबिल आई । और दूसरी हार पेहेली हार से, भोम भर नीचे आई, और तीसरी हार उस दूसरी हार सें, भोम भर नीची आई । इन विधसों सर्व ताल उतरत उतरत एक भोमलों उतरे, और तालन के थंभों पर चाँदनी आई, और नेहेरन पर चाँदनी आई । और चाँदनी के चारों खूंटों चार गुमटियाँ, और किनार पैं कठेड़ा, और बीच में चबूतरा कठेड़ा, सिंघासन कुरसियाँ सोभाएमान हैं । और सितूनन में जुदी जुदी भोमें

परी हैं, पेहेली हार में एक कम बारा हजार भोमें आई, और दूसरी हार में दो कम बारा हजार भोमें आई, और तीसरी हार में तीन कम बारा हजार भोमें आई, या विधसों एक भोमलों उतरे। और सितूनन की भोमन से भोमें मिलत गई, उतरती उतरती और सर्व सितूनन की भोमों से, बगीचे प्रतक्ष देखिए, और सितूनन की भोमन में होके, सितूनन की चाँदनी पर जैए, और मानिन्द आकासी मोहोलकी चाँदनी के, चौफेर का तमासा देखिए। और सितूनों से और जो उतरते सितून हैं, तिन पर आइए, और चाहि तो सितूनों सितूनों जिमी पर उतर जाइए। और एक ताल के सितूनों की चाँदनी पर से, चारों खूँटों चार बगीचों की सोभा देखिए, और नेहेर की चाँदनी पर होके, बारा हजार ताल पर होके, मानिक पहाड़ को प्रदक्षिना दे आइए। ऊपर चाँदनी सोभित है, और तले बुलन्द हिड़ोले सोभित हैं, ताल के सितूनों की चाँदनी पर, चारों तरफ किनार पै कठेड़ा, और नेहेर की चाँदनी पर, दोऊ तरफ किनार पै कठेड़ा, और तले जो बुलन्द हिड़ोले हैं, तिन एक एक हिड़ोले में, बारा हजार सखी और जुगल स्वरूप बिराजमान होत हैं। और जैसे एक हिड़ोले में बिराजमान होत हैं। ऐसे सर्व हिड़ोलों में सोभित हैं, और सर्व हिड़ोले एक ही बेर के झूलत हैं, तब सर्व मानिक पहाड़ में, शब्दातीत सोभा होत है। इन विधसों नेहेर चलती चलती, महानद में आए मिली, धाम की तरफ के दो तालों में से दो नेहेर कढ़ी, सो

सर्व तालों को फिरवली, और बारों हजार नेहेरें, इस एक नेहेर में आए मिली, तब एह नेहेर मानिन्द सागर के एक महानद हुआ। अब यह महानद कैसा है, के चौबीस हजार हाँस की गिर्द रखता है; और एक हाँस की चौड़ी अेली पार (पाल) है, और एक हाँस की चौड़ी पेली पार (पाल) है, और एक ही हाँस की चौड़ाई में, दो पाल के बीच में जल बहत है। और दोनों पालों के ऊपर महाबुलन्द थंभों की दो हारें, सोभाएमान हैं, मानिन्द श्री जमुनाजी के, दो थंभ इस पाल पै, और दो थंभ उस पाल पै, चार सै कोस के ऊँचे सोभित हैं, और इन थंभन की एक भोम दूसरी चाँदनी। और तालन के जो बुलन्द थंभ हैं, छोर की हार के, तिनकी मेहेराबें पाल के थंभन सों मिली, ऐसी के, तालन की चाँदनी से, पाल के थंभों की चाँदनी पर जैए। और पाल के थंभन में पुन हिड़ोले हैं, और दोनों पाल पै और बीच जल के, चार चार हिड़ोला की ताली परत है। और एली पार के आगे, तले बारा हजार बगीचा सोभाएमान हैं, और बारा हजार नेहेरें जो चली आउती हैं, सो पाल के तले होके महानद में समाती जाती हैं। और महानद सर्व तालन को और नेहेरन को, और बगीचन को गेर के फिर आयो है, और महानद की गिर्द सात कोट बीस लाख की है, और लम्बाई चौड़ाई दो कोट चालीस लाख की है। और तालन के जो हाँस हैं, सो ज्यों-ज्यों ताल मानिक पहाड़ के चबूतरा से बढ़ चले, त्यों-त्यों हाँस कुसादे

हो चला, सो महानदलों हाँसने अत्यंत कुसादगी पाई, सो कुसादगी का हिसाब हम नाहीं लिखा है। अब मानिक पहाड़ के बाहिर के ताल चौदा कोट चालीख भए १४४००००००। और नेहेरें अठाईस कोट असी लाख भई २८८००००००। और चार नेहेर के बीच में जो एक बगीचा है, सो बगीचा चौदा कोट चालीस लाख भए १४४००००००। और एक एक ताल पर चार चार हिड़ोले, और दो दो हिड़ोले पीछली, और बगली नेहेरों पर आए, इन विधसों एक ताल की हार के हिड़ोले छयानबे हजार भए ९६०००। ऐसी ऐसी तालन की हारें बारा हजार, तिन बारा हजार तालन की हारन के हिड़ोले, एक अरब और पन्द्रा कोट और बीस लाख भए ११५२००००००। इन विधसों मानिक पहाड़ का हिसाब कोटांसा बुद्ध माफक कहा।

अब आगे बन की नेहेर और बनके मोहोल नजर कर देखिए

तो महानद से एक बड़ी नेहेर चली, सो एक हांस चलके बन की नेहेरन में मिली, और बन की नेहेरें बेसुमार, और बेहिसाब सोभाएमान हैं, और सर्व जोगवाई मानिन्द जवेरों की नेहेरों के सोभाए-मान है। अनन्त कोट वृक्षों की अनन्त कोट हारें हैं, तरफ सागरों के चली गई हैं, और हर एक वृक्ष के गिर्दवाए चार चबूतरा, भोम भोम भर के चौड़े, और कमर भर के ऊँचे, तिनके चारों खूँटों चार चेहेबच्चा, और चार दिसन विषे चार नेहेर फिरती

हैं । और बीच चार चबूतरों के, एक चबूतरा सोभित है, उन चबूतरे के मध्य में, एक वृक्ष बिराजमान है । और गिर्दवाए उन चबूतरे के, और चार चबूतरे के माहें, छोटे छोटे अपार वृक्ष सोभाएमान हैं । और कै बगीचे चेहेबच्चे नेहेरे फुहारे छूटत हैं, और कै अनन्त कोट ख्यालात आनन्द के, हुन्नर तमासे बिराजमान हैं । और मध्य में जो वृक्ष है, ताकी अपार सब्दातीत लीला है, एक वृक्ष बढ़तो बढ़तो आसमान लों चलो गयो है । और चार सै कोस की एक भोम अैसी अैसी साठ हजार भोमें, एक वृक्ष में सोभाएमान हैं । और एक एक भोम में मानिन्द एक एक हवेली मानिक पहाड़ की के समान विस्तार बिराजमान है। और एक एक भोम में हजारन लाखन बगीचा हैं, और हजारन लाखन चेहेबच्चा हैं, और हजारन लाखन नेहरें हैं, और हजारन लाखन फुहारे हैं, और हजारन लाखन मोहोल मन्दिर कुठरियाँ, चौक चबूतरा, और झंझरी झरोखे सोभाएमान हैं । और एक एक भोम में कोटान कोट पंखी रहत हैं, यह तो एक भोम का विस्तार हुआ, एक वृक्ष में अैसी अैसी साठ हजार भोमें, अैसे अैसे वृक्ष इत अनन्त कोट सोभाएमान हैं, और एह बन के मोहोल सर्वधाम, और परमधाम को गिर्द फिर आए हैं । और हरेक वृक्ष की जितेक भोमें हैं, तिन भोम भोम के छाजा, दूसरे वृक्ष की भोम भोम को मिले हैं । अैसे के पेहेली भोम से पेहेली भोम में, और दूसरी भोम से दूसरी भोम में, और तीसरी भोम से तीसरी भोम में

जाइए। इन विधसों सर्व भोमन से, सर्व भोमन में जाइए। और सर्व धाम और परम धाम के आसपास, मानो तो साठ हजार खण्डों की हरी धातकी नगिन जड़ित एक मोहोलाइत फिरी है। तामें उपरा ऊपर आसमान लों लाखन लाख दरवाजे मेहेराब झंझरी झरोखे छज्जा कठेड़ा सोभाएमान हैं। और सर्व के तले पेड़ जुदे जुदे, और ऊपर छत्री एक हो गई, और गिर्दवाए चाँदनी दिखाई देत है। और तले बीच बीच पेड़ों के, कोटानकोट नेहेरें चली जाती हैं, तिनके बीच कोटानकोट चेहेबच्चे सोभाएमान हैं। और चेहेबच्चों के आसपास, और नेहेरों के दाएँ बाएँ, अनन्त रंगों के फूल फूले हैं, और फुलबरियों के दाएँ बाएँ, बड़े बड़े रस्ता परे हैं। और पेड़ जो हैं मानिन्द फील-पाइयों के सोभाएमान हैं, पेड़ के तले मूल में गिर्द-वाए, मेहेराबें सोभाएमान हैं, तिन मेहेराबों के भीतर, ऊपर को सीढ़ी सोभाएमान है, तिन सीढ़ियन पर हो ऊपर की भोमन में जाइए। और पेड़ जिमी से बहुत दूर तक साफ सूधो चलो गयो है, मानिन्द दरपन हीरा के, और अनन्त कोट नकस कटाव, चित्रामन कर जुक्ति है। और महानद के पाल चबूतरा से, एक ही हाँस को अन्तर है, महानद के पाल के भीतरी तरफ, बारा हजार बगीचा और बारा हजार नेहेरें सोभाएमान है। अैसे यै नेहेर बगीचा महानद के बाहिरी तरफ सोभाएमान हैं, बन के मोहोलों के एक हाँस के छेहसों, और दच्छिन दिस विषे महानद से, एक बढ़ी नेहेर निकसी, सो बनकी नेहेर में आए

मिली, तिनको जल सर्व बनकी नेहेरन में होके, सर्व बन मोहोलन को परिक्रमा करके, तरफ सागर के चली। दच्छिन दिस विषे, सो चार हार हवेलियन के माहें होके, नेहेर नीर सागर में मिली। और नीर सागर को धुर दच्छिन को जो हाँस है, तिन में भोम भर ऊँचे चबूतरा पै, राँगकी मोहोलाइत है, और तले उन चबूतरे के, जिमी से कमर भर ऊँची रौंस है, उन रौंस में होके, जल नीर सागर में मिलो। दच्छिन दिस में नीर सागर के, एक पहल के दोइ कोने भए, एक कोनो पूर्व दिस को, और दूजो कोनो पच्छिम दिसको, सो नीर सागर से, पच्छिम के कोने में होके, नेहेर निकसके, अनेक रूप होके, सर्वधाम परमधाम को प्रदच्छिना देके, फेर उततें लौट के, हौज कौसर मानिक पहाड़, बनके मोहोल, चार हार हवेलीन को मझियाय के, पूर्व के कोने की घड़नालन में होके, फेर जल नीर सागर को, नीर सागर में समात है, पच्छिम के कोने में से निकस के, पूर्व के कोने में हो मिलत है। और बन के जो मोहोल हैं, तिनकी चौड़ाई दस कोट जोजन की सोभायमान है। सो महानद तें लेके तो चार हार हवेलियन लों; दस कोट जोजन की चौड़ाई परवान है। यह सर्व तमासा देख के फिरे। सो चार हवेली मझियाए के, और बनके मोहोलन को मझियाइ के, मानिक पहाड़ के बाँई दिस होके, पच्छिम की चौगान के ऊपर आए।

तो पच्छिम की चौगान कैसी है, के नौ लक्ष कोस की लम्बी है, और साढ़े चार लक्ष कोस की चौड़ाई है। पूर्व से तरफ पच्छिम के चौड़ी है, और उत्तर से तरफ दच्छिन के लम्बी है। परमधाम के बायव्य कोने के चेहेबच्चा से लेके, तो हौज कौसर की किनार लों के, साढ़े चार लक्ष, और हौज कौसर ते कुँजबन की किनार लों, साढ़े चार लक्ष कोस, इन नौ लक्ष कोस की लम्बाई है। और दूब दुलीचों की किनार से लेके, तो जवेरों की मोहोलाइत की किनार लों, यह साढ़े चार लक्ष कोस की चौड़ाई है। और इन चौगान के किनारे चारों दिसन विषे, चार सोभा दिखाई देत हैं, पूर्व की तरफ डेढ़ लाख कोसलों, फूल बाग के सूद भर के, तो दूब दुलीचे सोभाएमान हें। और दूब दुलीचों की किनार सें लेके, तो कुँजबन की आखर की किनार तक, इन साढ़े सात लक्ष में, कुँजबन के वृक्षन की हार कतार सोभाएमान है। तिन साढ़े सैंतीस सै वृक्षों में, साढ़े सैंतीस सै मेहेराबें दिखाई देत हैं। और इन कुँजबन की फूल बाग सें लेके, तो जवेरों के मोहोलाइत की किनार लों, इन नौ लक्ष कोस की हद है। और चौड़ाई है। और चौगान की अैली कोद की किनार से लेके, तो अक्षर के मोहोल के पछीत, साढ़े चार लक्ष कोसलों, इन अठारा लक्ष की, कुँजबन की लम्बाई है। यह तो चौगान की पूर्व दिस की सोभा हुई। अब चौगान के दच्छिन दिस देखिए, तो जवेरों

के मोहोल और नेहेरें दिखाई देती हैं, चार लक्ष कोस की चौड़ाई में। और पच्छिम दिस विषे, नौ लक्ष कोस की लम्बाई में, पुन जवेरों के मोहोल सोभाएमान है, दोऊ दिस विषे चार पहल के मोहोल, किनार पै सोभा लेत है, सहित बन नेहेरों के। और उत्तर दिस विषे, बहुत ऊँचो अति सुन्दर, बड़ोबन दिखाई देत है, सहित मेहेराबों और हिड़ोलों के सोभाएमान है। चार लक्ष कोस की चौड़ाई में, यह चौगान की सोभा देख के, बड़े बन के माहें होके, और मधुबन को मझियाए के, और महाबन को मझियाए के, पच्छिम की घाटी के आगे, सर्व घाटी की सोभा देखी। घाटी के चबूतरा के तले होके, पच्छिम की नेहेर चली जात है, ताको पुन सर्व जल धाम ही की तरफ आउत है। भोम भर ऊँचे चबूतरा पर, घाटी की मोहोलाइत सोभित है, और तले उन चबूतरे के, तरहटी बिराजमान है। तिन चबूतरे से दो भोम नीचे, जल चलो जाता है, चबूतरे के उदर में दोनों तरफ दरवाजे, और सीढ़ियाँ सोभाएमान हैं, तहाँ हो उतर के जल क्रीड़ा कीजे। और घाटी के ऊपर छोर पै, सौ सौ कोस के तीन दरवाजे रोसन हैं, दो दोऊ गुरजन के, और एक बीच को सीढ़ियन को, और पचास पचास कोस में, दोनों तरफ छाजा थंभ कठेड़ा, और चार लक्ष कोस ऊँचे से, दोनों तरफ परकोटा की दिवाल पैं, उतरती उतरती गुमटियन की हार दिखाई देत है। और पेहेली भोम को पूरो छाजा आयो; इस किनार से उस किनार तक, फेर जैसी जैसी

भोमें चढ़ चलो, तैसो तैसो छाजा एक एक भोम घट चलो। इन विधसों सर्वोपर की जो भोम है, ताको एक ही भोम को छाजा आयो। यह सोभा तो दाएँ बाएँ दिवाल में दिखाई देत है, और सामें सीढ़ियों पर हो जो देखिए, तो तीन मेहेराबें दिखाई देत हैं। दो मेहेराबें दोऊ गुरजनकी गुमटन के ऊपर हो दिखात हैं, और बीच की दरवाजे की मेहेराब, सीढ़ियों के ऊपर सामी दिखाई देत है। और दरवाजे की चाँदनी के किनारे, दच्छिन के दरवाजे की तरफ, चौखूंटें गुरजों के ऊपर, पाँच सै गुमटों की हार दिखाई देत है। और दो गुमट के बीच में, एक बड़ी मेहेराब दरवाजे की सोभित है, और अढ़ाई सै गोल गुरज सहित चाँदनी कठेड़ा के दिखाई देत हैं, तिन ऊपर दिवाल और काँगरी दिखाई देत हैं। या विधसों सब सोभा पुखराज की, देखते देखते महाबन विषे प्राप्त भए। दच्छिन की नेहेर महाबन की नेहेर में मिली, और पाँच सै मन्दिर को चौड़ो, और चार लक्ष कोस और हजार भोम ऊँचो, और चार वृक्ष अति बड़े अन्तर सों सोभित हैं। सवा सै मन्दिर के छेह सों, चारहूँ वृक्ष सोभाएमान है, और नेहेरें चेहेबच्चे रौंसें हिंडोले, मानिन्द बट पीपल की चौकी के सोभित है। और हिंडोले इत के कै भाँत के बड़े बड़े, और भी अनन्त कोट विध की जोगवाई परिपूर्न है। और इन महाबन के आगे, याही विध सों मधुबन सोभाएमान है, एक ऊँचाई तो आधी सोभित है, और सर्व जोग-बाई बराबर। महाबन एक मोहोल एक चबूतरा के

मुकाबिल, और मधुबन केल के पुल के मुकाबिल, इन दोनों बनों को छोड़ के, अब बड़े बन के आगे आए, तो बड़ोबन लाल चबूतरा के आगे बारा सै मन्दिर को लम्बो चौड़ो आयो। तामें से पाँच सै दस मन्दिर भर तो, ताड़बन के मुकाबिल आयो, बड़ेबन के सत्रा वृक्ष ताड़बन के सामें आए। और इन सत्रा के आगे, जो सत्रा वृक्ष हैं, सो केल के घाट के सामे आए। आगे इन चौतीस वृक्ष के, सात वृक्ष और बचे, तिनके मुकाबिल मधुबन आयो, एक हार मधुबन की, केल के घाटते एक सौ बीस मन्दिर के अन्तर सों बढ़के आई, और सात वृक्ष से बड़े बनके चौथे वृक्ष के सामी आई। बड़े बनकी चार मेहेराबें पेट में लेके और तीन वृक्ष मधुबन के, बड़े बन के सिराने आए, तिन परे चार वृक्ष महाबन के आए। जिनको हजूर वानी में लम्बा बन कहत हैं। और केलबन श्री जमुना जी की किनार तें जो चलो आयो, सो दस मन्दिर और पाँच वृक्ष, तो ताड़बन की किनार के सामी रहे। बाकी दो सै पैंतालीस वृक्ष बड़ेबन के सामी आए, बड़ेबन में से पाँच वृक्ष चले, श्री जमुना की पाल ऊपर को, सो केल के घाट के साथ साठ वृक्ष पेट में लेके, और इकसठ इकसठ मेहेराबें बीच में आईं। साठ वृक्ष के दाएँ बाएँ दो मन्दिर के अन्तर सों, दो वृक्ष बड़ेबन के आए। इन विध सों पाँच वृक्ष बड़ेबन के, सर्व केल के घाट के वृक्षों को माहें लेके, मधुबन की छत्रियों सें लगता हुआ, श्री जमुना जी की पाल को गए हैं। और पाल पर चढ़ के सातमें

घाट में हो उतर के, बट पीपल की चौकी के आगे होके, फूलबाग और अन्नबन में हो आई जो दूजी पाँच हार हैं, तिन में मिल के, एक होके, ताल को फिरवली हैं। अब बड़ेबन तें चल के, केल को घाट मझियाए के, और ताड़बन के सत्रा बगीचा बिलोक के, लिबोई के घाट को मझियाय के अनार के बन में आए। और दो घाट की सन्ध में जो रौंस दो मन्दिर की चौड़ी आई है, सो श्री जमुना जी की रौंस लों चली गई है। इन विध सों सात घाट के माहें, पाट घाट के रस्ता समेत सात रस्ता गए हैं। दो रस्ता अमृत बन के दोनों किनार के, और एक रस्ता अमृत बन के बीच को, चाँदनी चौक के पूर्व दिस, इकतालीस मेहेराबें दाएँ रही, और इकतालीस मेहेराब बाएँ रही, बीच में जो तेरासीमी मेहेराब है, उन मेहेराब में होके, रस्ता सूधो पाट घाट की बीच की मेहेराब को चलो गयो है। पाँच रस्ता धाम की दिवाल भर के आए, एक अनार और लिबोई की सन्ध को, दूजो अनार और अमृत बन की सन्ध को, और बाई तरफ, एक रस्ता नारंगी और जाम्बू की सन्ध को, और दूजो रस्ता जाम्बू और अमृत बन की सन्ध को, और पाँचमा रस्ता अमृत बन के बीच को, इन विध सों ए पाँच रस्ता धाम दिवाल से लेके, तो श्री जमुना जी की पाल लों चले गए हैं।

अब चाँदनी चौक नजर कर देखिए

चाँदनी चौक एक सौ छयासठ मन्दिर को लम्बो

चौड़ो बराबर, तिन के दच्छिन से उत्तर को; और उत्तर से दच्छिन को, पाँच हिस्सा और पूर्व तें पच्छिम को, और पच्छिम तें पूर्व को, तीन हिस्सा सोभित हैं, उत्तर से दच्छिन को जो पाँच हिस्सा हैं, तिन में से दो हिस्सा में मध्य में, तेतीस तेतीस मन्दिर के, लम्बे चौड़े चौखूंटे दो चबूतरा आए। और उत्तर के चबूतरा के उत्तर दिस को, एक चौक तेतीस मन्दिर को बचो, और दच्छिन के चबूतरा के दच्छिन दिस को, एक चौक तेतीस मन्दिर को बचो, और एक चौक चौंतीस मन्दिर को, दोऊ चबूतरों के मध्य में आयो। इन विध से उत्तर तें दच्छिन को, एक सै छयासठ मन्दिर के पाँच हिस्सा भए, और पच्छिम से पूर्व को धाम रौंस तें लेके, उत्तर के चबूतरा की पच्छिम की किनार तक, साढ़े छयासठ मन्दिर भर जागा रही, और उत्तर के चबूतरा की पूर्व की किनार से लेके, तो चाँदनी चौक के पूर्व के चौरासी वृक्ष तक, साढ़े छयासठ मन्दिर भर जागा रही। और पच्छिम तें पूर्व को, उत्तर को चबूतरा तेतीस मन्दिर को लम्बो, इन विध सों श्री धाम की रौंस से लेके, तो चाँदनी चौक की तेरासी मेहेराबें पूर्व की लों, एक सौ छयासठ मन्दिर भर जागा हुई। या विध सें चाँदनी चौक, एक सौ छयासठ मन्दिर को लम्बो चौड़ो बराबर ठेहेरो। और एह चाँदनी चौक अमृत बन के तीसरे हिस्सा में सोभित है, इनके दोनों तरफ एक सौ सरसठ मन्दिर भर जागा रही। तिन विषे तेरासी तेरासी वृक्ष की

मेहेराबें दोनों तरफ आईं, और चाँदनी चौक के तीनों तरफ, चौरासी चौरासी वृक्ष, और तेरासी तेरासी मेहेराबें आईं, कोने के दो वृक्षों ने दोनों तरफ जवाब दिया। और मेहेराबन के आगे, वृक्षन को लगता, तीनों तरफ दो मन्दिर का चौड़ा, कमर भर ऊँचा एक चबूतरा आयो। तिन चबूतरे के माहें अत्यन्त बारीक मोती हीरा जवेरों की, चारों खूंटों भर के रेत सोभाएमान है। और चबूतरे के किनारें तीनों तरफ, चौरासी चौरासी वृक्ष सोभित हैं, और तेरासी तेरासी मेहेराबें सोभित हैं। और चाँदनी चौक के पूर्व दिस, आईं जो तेरासी मेहेराबें हैं। तिन में से इकतालीस मेहेराब दाएँ रही, और इकतालीस मेहेराब बाएँ रही, और बीच की तेरासीमी जो मेहेराब है दो मन्दिर की चौड़ी, उन मेहेराब के आगे चबूतरे से लग के, दो मन्दिर को चौड़ो एक चबूतरा चलो रौंस को, जिमी से तीन सीढ़ी ऊँचो, सो चबूतरा चार लक्ष कोस लों चलो गयो, और श्री जमुना जी की रौंस को जाय लगो, तहाँ तें बन दिस की श्री जमुना जी की रौंस पर जाइए। या विध के रस्ता धाम के घाटन के हद्द में परे हैं, और चाँदनी चौक के मध्य में, जो चौखूंटे दो चबूतरा हैं, तेतीस मन्दिर के लम्बे चौड़े, तिन चबूतरों के ऊपर लाल हरे दो वृक्ष हैं, उत्तर दिस लाल वृक्ष है, और दच्छिन दिस हरो वृक्ष है, चबूतरा दोनों कमर भर ऊँचे, चारों तरफ तीन तीन सीढ़ियाँ, चार दरवाजे छोड़ के चारों तरफ किनार पै कठेड़ा मध्य चबूतरा पर वृक्ष, और गिर्दवाए किनार

पै कुरसियाँ, और कदेले और चौकियाँ सिंघासन सोभाएमान हैं। और ऊपर चबूतरे के तेतीस मन्दिर को लम्बो चौड़ो चौखूंटो, वृक्ष की छत्री को मण्डिल मानिन्द चन्द्रवा के तनो है, चबूतरे की किनार से एक बाल बराबर घट बढ़ नहीं है। और इन छत्री मण्डल के ऊपर, एक बड़ो वृक्ष ही को गुमट आयो है, मानिन्द देहुरी के। और इनके चारों दिसन में दरवाजे रहे, आगे छाजा कठेड़ा रहो, और भीतर चौक रहो, और ऊपर गुमट के कलस काँगरी, और भी सर्व जोगवाई फल फूल पातन की, मानिन्द नंगन की मोहोलात के सोभाएमान है। और इन वृक्षन विषें दोए दोए भोमें सोभित हैं, तीसरी चाँदनी की जागा, तिन पर गुमट सोभाएमान हैं, निजधाम की प्रथम भोम के मुकाबिल आए हैं, और अत्यन्त सोभा को धरे हैं। जैसे एक थंभ के ऊपर तेतीस मन्दिर को लम्बो चौड़ो, एक फूल को चबूतरा बनाय के, तिन के ऊपर एक फूल की देहुरी बनाइए, इन विध सों सोभा लेत है। और चाँदनी चौक के तीनों तरफ, वृक्षन में दो दो मेहेराबें दिखाई देत हैं, एक मेहेराब जिमी के ऊपर पेड़ और पातों की, और दूजी मेहेराब एक भोम तें ऊँची मध्य में फूल फल पातों की, तिन ऊपर सुन्दर चाँदनी सोभाएमान है। रंग भवन की मेहेराबन में खड़े होके, जिमी रेतड़ी और पेड़ देखिए, और झरोखन में होके, बन के बीच की भोम देखिए, और बीच की भोम में जाइए। और रंग भवन की पेहेली भोम के छाजा से, बन की चाँदनी पर आइए। और

चाँदनी चौक की पच्छिम दिसा, रंग भवन की तरफ जो नजर कीजे, तो मन्दिरन की हार कतार से, एक मन्दिर भर बढ़ के, दस मन्दिर की देहेलान सोभाए-मान है। सो देहेलान तले की भोम से लेके, तो दस भोम लों एक ही रस चली गई है, दो मन्दिर की मेहेराब दरवाजे की, और मन्दिर मन्दिर की चार चार मेहेराबें, दरवाजे के दाएँ बाएँ सोभित हैं, ए नौ मेहेराबें भोम भोम की जुदी जुदी दिखाई देत हैं। और इनके दोनों तरफ दो गुरजें दिखाई देती हैं, दर-वाजो दो भोम ऊँचो; और दरवाजे की दो भोम लों ऊँची एक ही मेहेराब चली गई है। और दाएँ बाएँ की जो चार चार मेहेराबें हैं, तिनकी दो भोमें हो गई हैं। ताकी दरवाजे की एक भोम लों, देहेलानों की दो भोमें आई हैं, और दरवाजे की मेहेराब समेत, दो भोम लों सत्रा मेहेराबें होती हैं, आठ आठ दोनों तरफ देहेलानों की, और एक बीच की दरवाजे की, और उपरा ऊपर दस भोम लों नवासी मेहेराबें दिखाई देत हैं। और दसमी भोम की चाँदनी के ऊपर, पूर्व दिस को अग्नि ईसान कोने पै दो लाल मानिक की गुमटियाँ दिखाई देती हैं। और चाँदनी चौक की हद्द के भीतर, देहेलान के दाएँ बाएँ, अठ-त्तर अठत्तर मन्दिर सोभाएमान हैं, और अठत्तर अठत्तर झरोखे सोभाएमान हैं, और अठत्तर दूना एक सौ छप्पन, दोनों तरफ दरवाजे सोभाएमान हैं। दरवाजे की देहेलान तें लेके, तो चाँदनी चौक की हद्द तक, तीन गुरज और तेईस मन्दिर होत हैं। एक

हाँस पचीस मन्दिर को, और दूजो हाँस तीस मन्दिर को, और तीजे हाँस के तेईस मन्दिर आए, इन चौक की हद्द में, ऐसे ही तीन गुरज और तेईस मन्दिर दूजी तरफ, और चाँदनी चौक की हद्द से, आगे अमृत बन की हद्द तक, अमृत बन चौरासी वृक्ष, रौंस से लग के उठे हैं, दोनों तरफ चाँदनी चौक के सोभित हैं, और दो भोम तीसरी चाँदनी सोभाएमान है, और अपार सोभा को धरे है। जिमी से अत्यन्त सुन्दर पेड़ नैनन को अत्यन्त मीठो उठो, सो जिमी से डेढ़ मन्दिर लों सूधो साफ चलो गयो है, और मानिन्द दर्पन के सफाई, और रोसनाई झिलमिलात है, और अपार नकस कटाव चित्रामन करके जुक्ति है। इन वृक्षन ने सवा मन्दिर के ऊपर जाए के, डालियाँ छोड़ी हैं, और डेढ़ मन्दिर तें लेके तो छाजा लों, फल फूल पात करके, मानिन्द नंग धात मोहोल के, मोहोल बना है। और जिन मन्दिर के मुकाबिल आयो है, उन मन्दिर की सकल जोगवाई के सामें, इन वृक्ष में सर्व जोगवाई आई है। जैसे नंग धात के मन्दिर के सामें फूल फल पातन के मन्दिर बनाइए, इन बिध सों ए वृक्ष बने हैं, और बन की भोम झरोखन के मुकाबिल दोरीबन्ध आई है। और झरोखन की मेहेराब सें बन की मेहेराब लगी है, ऐसी के, झरोखन की मेहेराब से, बन की मेहेराब में दौड़ते चले जाइए, और बन की मेहेराब से झरो-खन की मेहेराब में दौड़ते चले आइए। और धाम के पेहेले छाजा से, बन की चाँदनी पर दौड़ते चले

जाइए, और धाम की रौंस के ऊपर, वृक्ष ने अपनो अति मीठो छत्री मण्डल बाँधो है, और तले मन्दिर के सर्व जोगवाई द्रस्टे आवत है। मन्दिर श्री धाम के कैसे हैं, के जाहिर में सौ हाथ को लम्बो चौड़ो कहाउत है, और बातून में जो अरस के हिसाब करके देखिए, तो रंग भवन के एक मन्दिर को हिसाब नहीं है, सकल सामग्री उसकी, सुमार और हिसाब से बाहिर है। परन्त ध्यान और समझने के निमित्त, जाहिरी हिसाब बाँध्या है, सो कछुक उसका कोटाँसा, एक मन्दिर की जुक्ति कहियतु है, सोई जुक्ति सर्व मन्दिरों की जानवी। तो प्रथम एक मन्दिर की हद्द, इस अकसी थंभ तें लेके, तो उस अकसी थंभ तक हुई। और इन अकसी थंभन के ऊपर, एक बहुत बुलन्द अकसी मेहेराब आई है, और बुलन्द कुसादे एक अकसी मेहेराब के माहें, तीन अकसी मेहेराबें आई हैं। तिन तीन मेहेराब में से बीच की जो मेहेराब है, उस मेहेराब में तीन अकसी मेहेराब छोटे छोटे आए हैं। और दाएँ बाएँ के जो दो मेहेराब है, उन एक एक मेहेराब में, तीन तीन मेहेराबें छोटी छोटी आई, तिन तीन मेहेराबों में से, बीच की जो मेहेराब है, उन मेहेराब में सुन्दर दरवाजो रोसन है, बाहिर भीतर आउने जाने का। और दाएँ बाएँ बचे जो छोटे छोटे दो मेहेराब हैं, उन दो छोटे मेहेराबन में; नूर की जालियाँ सोभित हैं, यह विध तो मन्दिरन के बाहिर दिस की हुई। और इस अकसी थंभ तें लेके, उस अकसी थंभ के भीतर, बीच का हिसाब

हुआ। और इस थंभ तें उस थंभ तक, सौ हाथ का फरक हुआ, और दो अकसी थंभ के बीच में, आई जो तीन मेहेराबें हैं, सो तेतीस तेतीस हाथ की चौड़ी आई। और तेतीस हाथ की चौड़ी आई जो तीन मेहेराबें हैं, तिन एक एक मेहेराब में, तीन तीन मेहे-राबें आई हैं, सो मेहेराबें ग्यारा ग्यारा हाथ की चौड़ी आई हैं, यह तो बराबर का हिसाब हुआ। अब तले तें ऊपर का हिसाब कहत हों, तो अकसी बड़े जो थंभ हैं, सो तले चार पहल तें लेके, तो ऊपर के चार पहल लों, अठासी हाथ का ऊँचा हुआ। उन चार पहल तें मेहेराब चली, सो दूसरे अकसी थंभ के चार पहल पै आई, और मेहेराब के ऊपर, मध्य आयो जो नंग को फूल है, सो थंभ के ऊपर के चार पहल तें लेके; तो मेहेराब के मध्य भाग के फूल तक, अठासी हाथ जागा हुई। और इनके एक मेहेराब में, जो तीन मेहेराब आई हैं, तिन के थंभ जिमी सें, बाईस हाथ पर आयो, तले के चार पहल तें, ऊपर के चार पहल लों, और चार पहल तें लेके, ऊपर मेहेराब के मध्य भाग के फूल तक, बाईस हाथ जागा हुई। और इन तीन मेहेराब में, एक एक में तीन तीन मेहेराबें आई हैं, तिन एक मेहेराब को जो थंभ है, सो जिमी सें चार पहल लों, ग्यारा हाथ को ऊँचो भयो, और चार पहल तें लेके, तो मेहेराब के मध्य भाग के फूल तक, ग्यारा हाथ जागा हुई। ताकी ए नौ मेहेराबें छोटी छोटी, जिमी से लेके, तो मेहेराब के बीच के फूल तक, बाईस हाथ ऊँची हुई। और

तीन मेहेराबें जो हैं, सो जिमी से लेके तो मेहेराब के मध्य फूल तक, चवालीस हाथ की ऊँची हुई, और एक बड़ी मेहेराब जो है, सो जिमी से लेके, तो मेहे-राब के मध्य फूल तक, एक सौ छेहत्तर हाथ की ऊँची हुई। तिन के ऊपर अष्ट हाथ में पेसानी आई, तिन पेसानी के ऊपर अष्ट हाथ में काँगरी आई, और काँगरिन के ऊपर अष्ट हाथ में टुँड़िया और तख्ता और छाजा आयो। तिन छाजा के ऊपर, एक सीढ़ी माफक ऊँचा एक छोटा सा चबूतरा, सो छाजा के ऊपर एक चबूतरा भयो, इन ऊपर दूजी भोम चली। इन विध सों इस अकसी थंभ से लेके, तो उस अकसी थंभ तक, सौ हाथ जागा हुई चौड़ाई में, और ऊँचाई में जिमी सें लेके, तो छाजा के ऊपर के चबू-तरा लों, दो सै हाथ जागा हुई। एक एक मन्दिर की चौड़ाई, और ऊँचाई हुई, सर्व मन्दिर याही विध के हुए, सौ हाथ के चौड़े, और दो सै हाथ के ऊँचे, तब सर्वत्र पूरन सलूक होत है। और जो चौड़ाई और ऊँचाई बराबर होत है, तो पूरन सलूक नाहीं आउत है, नासूत के मोहोलाइत के नमूना से अनमिल होत है, और बदसलूक सोभी दिखाई देत है। और श्री निजधाम में बदसलूक, कोई तिल भर चीज नहीं हैं, और बराबर की जुक्ति करके उपरा ऊपर धाम के बड़े नव दरवाजों में, और और भी कै ठौर न बदसलूकी होत है, तातें निश्चै करके श्री धाम के मन्दिर, एक मन्दिर के चौड़े, और दो मन्दिर के ऊँचे सोभाएमान हैं। और एही एक मन्दिर कहाउत

है, सहित चौड़ाई और ऊँचाई के, और जहाँ जहाँ बन आयो है, तहाँ तहाँ इनहीं मन्दिर के माफक आयो है। और गुरज जो आए हैं, सो छयासठ हाथ के लम्बे चौड़े आए हैं, और तेतीस हाथ को चौड़ो छाजा, गुरज के तीनों तरफ आयो। और चाँदनी चौक के, अठत्तर अठत्तर मन्दिर दोनों तरफ के; तिन के झरोखे दस भोम के, पन्द्रा सै साठ भए, और दोनों तरफ के इकतीस सै बीस दरवाजे हुए। और ऊपर चाँदनी के, चाँदनी चौक की हद्द भर के, तीन सौ बारा गुमटियाँ दिखाई देत हैं; और छे गुरजन पै छे गुमट दिखाई देत हैं, छोटी गुमटियों के आगे। और तले हरेक मन्दिर के, बड़े अकसी थंभों की; अकसी मेहेराब के मध्य में, एक एक झरोखा दिखाई देत है। तिन झरोखा को दरवाजे के दाएँ बाएँ जो दिवाल है, उन दिवाल में मेहेराब रही, तिन मेहेराब में ऊपर को सीढ़ी रही, उहाँ होके सीढ़ी चढ़ के झरोखा में जाइए। और हर एक झरोखा में दोनों तरफ के दोनों दरवाजों से सीढ़ी चढ़के आइये, झरोखा की चार मेहेराबें, एक मेहेराब दिवाल में, मन्दिर से झरोखा में आएवे की, और दूजी मेहेराब आगले दो थंभों के ऊपर बन दिस की, और बन भोम में जवेकी। और दो मेहेराबें दाएँ बाएँ बगल की, ए चार मेहेराबें झरोखा की हुई। और झरोखा के तले जो तीन में से, बीच की मेहेराब है, सो मेहेराब अकसी है, और उस अकसी मेहेराब में कई विध की जुक्ति है। और कई विध के

अनेक ख्यालात हैं। और एक मेहेराब में जो तीन तीन मेहेराबें कही, और फेर एक एक में तीन तीन कही, सो यह जुक्ति धाम मन्दिरों की, बाहिरी दिवाल ही में आई है, और तीन दिवालों में नहीं आई है। दो पाखे और भीतरी दिवाल, इन तीन दिवालन में, एक बड़ी मेहेराब के भीतर, तीन ही मेहेराबें आई हैं। इन एक एक में तीन तीन जो बाहिरी तरफ आई हैं, सो इहाँ इन तीन दिवाल में नहीं आई है, यह जुक्ति सर्व धाम के मन्दिरों की जानवी। और तीन दिवाल में, जो तीन तीन मेहेराबें आई हैं, तिन में से बीच की जो मेहेराब है, सो तीनों दिवालों में खुली रही। और दाएँ बाएँ की जो मेहे-राब है, तामें अकस आयो। इन विध सों चाँदनी चौक में खड़े होके, दसहूँ दिस की सोभा देखी, और जरे जरे सोभा इहाँ देख के, तरफ अग्नि कोने के सागर को चले।

अब नूर सागर को चले

सो चाँदनी चौक की पूर्व दिस की जो तेरासीमी मेहेराब है, तिन में से इकतालीस मेहेराबें बृक्षन की इस तरफ रही, और इकतालीस मेहेंराबें उस तरफ रही, और बीच में जो तेरासीमी मेहेराब है, उन मेहेराब के आगे, एक दो मन्दिर को चौड़ो चबूतरा आयो है, कमर भर ऊँचो, सो चबूतरा श्री जमुनाजी की रौंस को जाए लगो है। जौन रौंस पाट घाट की मेहेराब के सामी आई है, तिन रौंस से एकमएक

हुआ है, सो इन चबूतरा पर हो चलके दाएँ बाएँ जो अमृत बन है, ताकी सोभा देखते देखते, रौंस चबूतरा जो जमुनाजी का है, जिसकी आगे मजकूर हो गया है, उन रौंस चबूतरा पै दाखिल भए। उस रौंस चबूतरा से तीन सीढ़ी चढ़के, बीच की पाल पर आए, और बीच की पाल परसे, पाट घाट को बाएँ छोड़ के, तरफ बट घाट के चले। सो जाम्बू नारंगी को मझियाए के, बट घाट की मेहेराबन में होके, बट के पुल पै पोहोंचे। और बटके पुल पर होके, अक्षर की पाल पर पोहोंचे, अक्षर की पाल से पालैपाल होके, दोनों तरफ से कुँज निकुँजन की सोभा देखते देखते, श्री जमुनाजी की अग्नि कोने की मरोर पर पहुँचे। इन मरोर पाल से उतरके, कुँज निकुँज की हद्द को मझियाए के, जबेरों की नेहेर मझियाए के, आगे दो कोट चालीस लाख कोस में, जो बड़ेबन और मधुबन और महाबन की गिरदें आई हैं, तिन गिरदन की मेहेराबन में होके, आगे जो बनके मोहोल है, तिन मोंहोलन में पोहोंचे। और उन मोहोलन में जो मोहोल बृक्ष के, अग्नि कोने के समुद्र के दरवाजे के सनमुख आए हैं, उन मेहेराबन में होके, चार हार हवेलियों के किनारे पोहोंचे। तिन हवेलियों में से, जो हवेली बारा हजार मोहोल की है, अग्नि कोने के पहल के सामे आई है, तिन बारा हजार हवेलियों मे से, छे हजार हवेली इस तरफ रही, और छे हजार उस तरफ रही, इन दो छे हजार मोहोलों के बीच, एक दरवाजा आया है, उन दरवाजे के मध्य

में होके, सनमुख नूर सागर को बड़ो दरवाजो दिखाई देत है। सो प्रथम कुछ थोड़ा सा, चार हार हवेलियों का बयान करके, इन बड़े दरवाजे हो, पाछे नूर सागर को चलहैं।

अब प्रथम चार हार हवेली नजर कर देखिए

तो चार हार हवेली में से, एक हवेली जो देखिए, तो मूल कोसन, पौन कोट कोस को लम्बो चौड़ो एक चबूतरा हुआ, जिमी से भोम भर ऊँचा। और चबूतरा को चारहूँ तरफ रौंस, और रौंस से आगूँ मोहोलाइत, एक हवेली के अन्दर माहें बारा बारा हजार हवेलियन की बारा हजार हारें, चारों तरफ बारा बारा हजार हवेली रही, इन चौदा कोट चालीस लाख हवेली की एक हवेली हुई। ऐसी सब हवेलियों की एक एक हार लीजे, तो एक हार की तीन लाख चौरासी हजार हवेली हुई ३८४००० । और चार हार की पन्द्रा लाख छत्तीस हजार हवेली हुई छोटी छोटी १५३६०००। और बड़ी बड़ी एक सौ अट्ठाईस १२८। और इन सर्व हवेलियों की, पाँच भोम छठी चाँदनी, परन्त एक एक भोमन में बारा बारा हजार भोमें आई हैं। तातें सब छोटी बड़ी भोमें, एक हवेली की भोमें साठ हजार होत हैं ६००००। एक हवेली में छोटी छोटी हवेली बहत्तर कोट होत हैं ७२००००००। और इन छोटी हवेलियों में जो विस्तार है, सो अपरमपार है; कहिवे में और लिखवे में नहीं आवत है। एक एक हवेली

में कै मोहोल हैं, और कै मन्दिर हैं, और कै कुठरियाँ हैं, और कै थंभ हैं, और कै हिड़ोले हैं, और कै बाग बगीचे हैं, और कै चेहेबच्चों नेहेरों फुहारे छूटत हैं। कै चक्राव के फुहारे छूटत हैं, और चक्राव के हिड़ोले सोभित हैं, और कै दरवाजे थंभ सीढ़ियाँ झलकत हैं, और कै सेज्या चौक चबूतरे सोभित हैं; और अनन्त कोट विध के मोहोल मन्दिर परे हैं, तिन मोहोल मन्दिरों में सर्व जोगवाई परिपूर्ण है। और अनन्त कोट विध के ख्याल तमासे हुन्नर बने हैं, ए तो सर्व एक हवेली के भीतर की जोगवाई भई। अब बाहिर हवेली के अनन्त कोट आनन्द के चमत्कार कृत हैं, हवेली जो भोम भर ऊँची है, तिनको गिर्दवाए मानिन्द धाम के रौंस फिरी है, और मानिन्द धाम के दरवाजो आयो है। और मानिन्द धाम के दोनों तरफ दो चबूतरों के ऊपर, चार चार थंभ आए हैं, और मानिन्द धाम के आगे चाँदनी चौक के दोऊ चबूतरे आए हैं, तिन पर वैसे ही दो हरे लाल वृक्ष आए हैं, उत्तर दिस लाल बृक्ष, और दच्छिन दिस हरो बृक्ष, और चौक चाँदे सीढ़ियाँ परकोटे काँगरी सर्व जोगवाई, मानिन्द धाम ही के इहाँ वर्तमान है। अैपर श्रीधाम की जोगवाई धाम ही माफक है, और इहाँ जो श्रीधाम की जोगवाई है, सो इहाँई माफक है। इहाँ पौन कोट कोस की लम्बी चौड़ी जो हवेली कही, सो ए कोस गंजान गंज जानवी, इन एक एक कोस में हजारहाँ कोस वर्तमान हैं। तातें एक एक हवेली पौन पौन कोट कोस की, लम्बी चौड़ी सोभाएमान है,

और एक हवेली की गिर्द तीन कोट कोस की बैठत है । और हरेक हवेली के चारों तरफ, आठ बगीचा सोभित हैं, चार बगीचा चार खूटों विषे, और चार बगीचा चार दिसन विषे बिराजमान हैं, ए आठ हवेली के आठ हिस्सा माफक हैं । तिन आठ में सें चार जो बगीचा चार दिसन में हैं, सो इस खूंट से उस खूंट तक बिराजे हैं । तिन एक बगीचा के तीन हिस्सा भए, और इहाँ लाखन हजारन कोस को एक हिस्सा, ऐसे तीन हिस्सा भए । तिन तीन हिस्सा में से, एक हिस्सा में हवेली के आगे, चाँदनी चौक आयो, और दो हिस्सा चाँदनी चौक के दाएँ बाएँ रहे । याही विध से चारों दिसन विषे, चार दरवाजे रोसन हैं, और चार दरवाजन के आगे, चार चाँदनी चौक रोसन हैं, सहित सकल जोगवाई के, और यह एक हवेली अष्ट बगीचों सहित, मानिन्द नौ कोठा के जंत्र के सोभाएमान है । और हवेली और अष्टहूँ बागों को गेर के, एक नेहेर चौफेर फिरी है, सो नेहेर पुन इनहीं बागों के माफक चौड़ी है । तिन के तीन हिस्सा भए, दो हिस्सा में दोनों तरफ दो पालें रही, और बीच के तीसरे हिस्सा में नेहेर बहत है । और चबूतरा से नेहेर लों, पौन कोट कोस को फरक है, और जो आठ बगीचा चबूतरे के आसपास आए हैं, तिन में चेहेबच्चे नेहेरें फुहारे छूटत हैं, और बड़ी नेहेर से चौफेर के बगीचों में जल पोहोंचत है । और इत जो बगीचे हैं, सो इनहीं हवेलियों माफक हैं, और हवेलियाँ पेहेली हार सें, चौथी हार राँग दिस की लों,

बढ़ती बढ़ती चली गई हैं, और सूत्र बार सें पार लों एक निकस गयो है। और हवेली की रौंस सें बड़ी नेहेर लों, रौंसन पर हो, और बगीचन में हो रस्ता रहे हैं, और बड़ी नेहेर की सर्व सोभा, मानिन्द श्री जमुना जी के रोसन है, और अपार सोभा को धरे है। और यह हवेली सहित बगीचों के और नेहेर के, कुछ ऊपर सवा दोए कोट कोस की बैठत है। तिन में से पौन पौन कोट के तीन बगीचा हैं, और मूल कोसन, चार चार सै कोस के चौड़े, चार नेहेरन के चबूतरा हैं। और बन के मोहोल दिस की, जो बड़ी नेहेर है, उन नेहेर से लेके, तो राँग दिस की बड़ी नेहेर लों, मूल कोसों सहित बन नेहेर के दस कोट कोस जागा होत है १००००००००। और छोटे कोसों अर्बन खर्बन कोस जागा होत है। और इन चार हार हवेलियों के, पाछे तरफ मानिक के कोट कोस में बड़े बन बिराजमान हैं, तातें इन चार हार हवेलियों की, एक कोट में नेहेर और बन है, और नौ कोट में हवेली, सब दस कोट की चौड़ाई होत है। और परिक्रमा इनकी दो हैं, एक तो बन मोहोल दिस की, और दूसरी राँग दिस की है, सो जो बन मोहोल दिस की नेहेर पर हो परिक्रमा दीजे, तो पन्द्रा कोट कोस की तवाफ बैठत है, और जो राँग दिस की नेहेर पर हो परिक्रमा दीजे, तो पौन अरब कोस की परिक्रमा बैठत है। और बार किनार को अड़तालीस लाख कोस को हाँस बैठत है, और राँग दिस की मोहोलाइत को हाँस, दो कोट और चालीस लाख

कोस को हाँस बैठत है । और हवेलियों के गिर्दवाए अष्ट बगीचा आए हैं; सो हर हवेली को जो अष्ट बगीचा है, तिन हर अष्ट बगीचा को गेर के, चारों तरफ नेहेर आई है, उन नेहेर के चारों खूंटों, चार चेहेबच्चा बहुत बड़े कुसादे हैं, उन चेहेबच्चों के चारों खूंटों चार हवेलियों के चार बगीचा हैं । और इन चेहेबच्चा को जल, चारहूँ बगीचन में विचरत है, याही विध सों हरेक हवेली के चारों खूंटों चार बगीचा हैं, और चार हवेली की सन्ध में चार बगीचा हैं, और चार बगीचा की सन्ध में एक बड़ा चेहेबच्चा है, उस चेहेबच्चे से नेहेर चारों तरफ चले हैं । और नेहेर के दोनों तरफ बगीचा परिपूर्ण हैं, और हवेली के चारों दिसन में, चार जो बगीचा हैं, उन बगीचा के तीसरे हिस्सा में चाँदनी चौक है, उन चौक में जो धाम विषे मन्दिरन के हिसाब से जोगबाई हती, सो सब जोगबाई इहाँ मूल कोसन के हिसाब करके है । और एक हवेली के चारों तरफ, चार चाँदनी चौक है, एक हार के चाँदनी चौक, बड़े एक सौ अट्ठाईस हैं १२८ । और चार हार के चाँदनी चौक, बड़े बड़े पाँच सौ बारा हुए, अर्ध हजार बारा । और इन चार हार हवेली की अैली किनार की हवेलियों के हाँस, माफक अगले मजकूर के हुए । और वार किनार के जो बन हैं, सो वार किनार की हवेलियों की जो मोहोलाइत हैं, तिन सों दोरीबन्ध बराबर हैं । और राँग दिस की जो हवेली हैं; और हवेलियन के आगे जो बन हैं, ए दोनों राँग की प्रथम दिवाल में जो मोहोलाइत है, और

मोहोलाइत के आगे जो बन है, इनसे दोरीबन्ध बराबर है। इत की मोहोलाइतन से, और वृक्षन से,और उत राँग की मोहोलाइत से, एक जरे भर का तफावत नहीं है। सर्व जोगवाई इत की, और उत की दोरीबन्ध बराबर आई है। भोम भर ऊँचे चबूतरा के सामी, भोम भर ऊँचे चबूतरा, और कमर भर ऊँची रौंस के सामी, कमर भर ऊँची रौंस आई है। इन विध से इत और उत की, सर्व जोगवाई बराबर है, अब चार हार हवेलियन में पुन बत्तीस हाँस हैं। तिन बत्तीस हाँस में सें, अग्नि कोने को जो हाँस है, इन हाँस के सामी, राँग की प्रथम दिवाल में जो हाँस है, सो दोरीबन्ध बराबर आयो है। सो इततें राँग की मोहोलाइत को चले, तहाँ छे हजार हवेली दाएँ रही, और छे हजार हवेली बाएँ रही, और मध्य में जो रौंस है, उस रौंस के ऊपर होके, तरफ निपट बड़े दरवाजे के चले।

राँग मोहोल नूर सागर

जो दरवाजो राँग की प्रथम दिवाल के अैली किनार में है, सो चार हार हवेलियों को नाख के, और चार हार हवेलियों के आगे जो बगीचा हैं, तिन को नाख के, तिन के आगे नेहेर और जो बन है, तिन को नाख के, आगे कमर भर ऊँची रौंस है, तिन के पास पोहोंचे। रौंस को अति कुसादे तीन तीन सीढ़ी सोभित हैं, और सीढ़ियों के ऊपर रौंस पर, एक चौक रोसन है, बारा सै कोस को लम्बो चौड़ो बराबर, तिन के पाछे एक नेहेर को चबूतरा है, सो

चार लक्ष के लम्बे और बारा सै के चौड़े, तिन बागों के ऊपर राँग को भोम भर ऊँचो चबूतरा है। उन चौक के चबूतरा से, चार सै कोस इस तरफ रहे, और चार सौ कोस उस तरफ रहे, और मध्य में जो चार सौ कोस जागा है, उन जागा से चार सौ कोस की कुसादगी से सीढ़ी चली, सो भोम भर ऊँचे चबूतरा की किनार पैं पोहोंची। उस किनार पर होके पूर्व दिस हेरे, आगे बारा सै कोस की चौड़ी रौंस फिरी है, और रौंस से आगे चार सै को कुसादे, एक दरवाजा रोसन है, और उस दरवाजे से दाएँ बाएँ दोए चबूतरा आए, तिन पर थंभ गुरजें उपराऊपर आसमान लों चले गए हैं। और इन दरवाजे थंभों से दाएँ बाएँ हवेलियाँ लगी हैं, और तले भोम भर नीचे, हवेलियों की किनार के सूत्र से, चौक के दाएँ बाएँ बन परिपूर्ण है। और मध्य बन के मानिन्द धाम के, दो बृक्ष और दो चबूतरा रोसन हैं, और यह भोम भर ऊँची और चार सौ कोस की चौड़ी रौंस, बत्तीस पहल को गिर्द फिर आई है। और तले कमर भर ऊँची रौंस तें परे, बन और चाँदनी चौक गिर्द फिर आए हैं। और बत्तीस हाँस की बराबर कतार सोभित है, तिन हाँस हाँस में बारा हजार हवेली की एक कतार रोसन है, एक बत्तीस गुरजें बढ़ के लगी हैं, और सर्व जोगवाई दोरीबन्ध बराबर है। और ऊपर जे हवेली हैं, तिन विषे जो मन्दिर हैं, तिन मन्दिरन के सूत्र से, तले जो रौंस जिमी पर बन हैं, सो मन्दिरन के थंभों के सामी, दोरीबन्ध बराबर

आए हैं। और थंभन के सामी थंभ, और मेहेराबन के सामी मेहेराबें, और भोमन के सामी भोमें, और झंझरी झरोखे के सामी झंझरी झरोखे, और छाजन के सामे बन के छाजा आए हैं। और सर्व भोम राँग की के सामी सर्व भोमें बन की, दोरीबन्ध बराबर आई हैं। और एक प्रथम हार जो हवेलियों की आई है, सो एक हार की हवेली एक हाँस की बारा हजार, और बत्तीस हाँस की हवेली तीन लाख चौरासी हजार भई ३८४०००। और दो दो हवेली की सन्ध में, तीन तीन त्रिपोलियाँ वार और पार लों दिखाई देत हैं, और दो दो त्रिपोलियन की सन्ध में, एक एक हवेली आई है, सो हवेली बारा सै कोस की लम्बी चौड़ी आई है। और दाएँ बाएँ जो एक एक त्रिपोलियाँ में, तीन तीन मेहेराबें आई हैं, सो मेहे-राब एक एक चार चार सै कोस की चौड़ी, और हवेली बारा सै कोस, और पन्द्रा सै मन्दिर की लम्बी चौड़ी बराबर, और सीढ़ियाँ चढ़ दोऊ चबूतरों के बीच में होके, जो भीतर जाइए, तो छे छे हजार मन्दिरन की, सहित थंभों के दोहोरी हार फिरी है, और उन दोनों हारों के भीतर, अगनित जोगवाई परिपूर्ण है। कोटन मोहोल और मन्दिर और थंभ मेहेराब झंझरी और झरोखा, और बाग बगीचे चेहे-बच्चे फुहारे नेहेरें हिड़ोले परिपूर्ण हैं। हरेक हवेली के चार चार दरवाजे बड़े, और छोटे दरवाजे अनगन बेसुमार हैं, और इत हवेली मोहोल मन्दिरों के लाखन के बेसुमार विस्तार है, सो बीच कलम के,

और जुबान सब्द के नहीं आता है। एक एक हाँस में कै हाँस हैं, और एक एक कोस में कै कोस हैं, और एक एक भोम में कै भोमें हैं, और एक एक हवेली में कै हवेली हैं, और एक एक हवेली में कै मोहोल कै मन्दिर हैं, और एक एक मोहोल मन्दिर में कै अनेक मोहोल मन्दिर हैं, तातें सब्दातीत अपरमपार है, एह तो प्रथम राँग की बाहिर की किनार की जुक्ति हुई। अब निपट बड़े दरवाजे के माहें होके, दोनों तरफ बारा बारा हजार हवेलियों कें दरवाजों की, और त्रिपोलियों की सोभा देखते देखते, प्रथम राँग के समुद्र दिस की के दरवाजे में निकसे। बड़े दरवाजे के आगे से, भोम भर की सीढ़ियाँ उतरी हैं, दोनों तरफ परकोटे काँगरी, और इन दरवाजे के दाएँ बाएँ, छे छे हजार चाँदनी चौक, और चौक में चबूतरे दो दो, और ऊपर दोऊ के हरे लाल दो वृक्ष रोसन हैं। और रौंस जो समुद्र दिस की है, सो बारा सै कोस की चौड़ी है, और चार लक्ष कोस की बनकी हद है, और चार सै कोस की जल किनार की रौंस साफ रोसन है। और किनारे कठेड़ा, हाथ लगतो जल, आगे तीन सीढ़ी उतर के जल क्रीड़ा को चबूतरा, तहाँ कमर तें ऊँचा जल, तहाँ जल क्रीड़ा होत है। अब भोम भर ऊँची रौंस पर हो, चौफेर की परदच्छिना दीजे, और सरूप सोभा चित्त में लीजे, तो प्रथम बायब दिस की जो रौंस है, सो बारा हजार हवेलियों के आगे आई है, सो तीन भोम भर की चौड़ी है, तिन रौंस के किनारे, बारा हजार हवे-

लियों की एक सफ चली गई है। अरु हवेलियों की सन्ध में त्रिपोलियाँ रोसन हैं और हवेलियों के बीच में, दरवाजो और देहेलानें रोसन हैं, और अन्दर जोगवाई है, सो माफक अगले मजकूर के अपरमपार है, और हरेक हवेली के चार दरवाजे चारहूँ दिसन में आए हैं। और दरवाजे सर्व हवेलियों के, साम सामी दोरीबन्ध आए हैं, और त्रिपोलियन की तीन गली, वार से पार और पार से वार निकस गई हैं। और हवेलियन के आगे, भोम भर नीचे चाँदनी चौक और बन रोसन है, सो बन दूर लों चलो गयो है, और एक दिस विषे बारा हजार चाँदनी चौक जुदे जुदे दिखाई देत हैं। और बारा हजारमी हवेली से लग के, दोनों तरफ दो महा गुरज आए हैं, सो त्रिपोलियन को माहें लेके आए हैं, और एही जुक्ति तीनहूँ तरफ आई है। और समुद्र के चारों तरफ चार दिवालें आई हैं, एक एक दिवाल बारा बारा हजार हवेली की, लम्बी चौड़ी बराबर, और हरेक दिवाल के दोनों तरफ बारा बारा हजार दरवाजे, और चाँदनी चौक आए हैं। तिन में से दच्छिन और उत्तर की दिवाल के, बारा हजार दरवाजे तो समुद्र की तरफ आए हैं, और बारा हजार दरवाजे जिमी की दिस आए हैं। और पच्छिम की जो दिवाल है, ताकी दो तरफें हैं, एक तरफ समुद्र की, और दूजी तरफ चार हार हवेलियों की आई है। सो चार हार हवेलियों की तरफ, बारा हजार दरवाजे, और बारा हजार चाँदनी चौक आए हैं। और पूर्व की दिवाल

में, बारा हजार दरवाजे और बारा हजार चाँदनी चौक, समुद्र की तरफ आए हैं, और ऐसे ही बारा हजार दरवाजे और चाँदनी चौक, बाहिरी दिस आए हैं। याही विध सों एक समुद्र के चारों तरफ, अड़तालीस हजार दरवाजे और अड़तालीस हजार चाँदनी चौक बिराजमान हैं। और पच्छिम की जो दिवाल है, ताकी चार हार हवेलियों की दिस की जो किनार है, उस किनार को जो पहल है, उस पहल की सवा तीन कोट कोस की चौड़ाई है। और समुद्र की दिस को जो पहल है, उस पहल की चौड़ाई, पौने चार कोट कोस की आवत है। और समुद्र के पेले पार की जो दिवाल है, उस दिवाल की समुद्र दिस की, किनार की चौड़ाई सवा चार कोट कोस की बैठत है। और उसी दिवाल की बाहिरी किनार की चौड़ाई, पौने पाँच कोट कोस की बैठत है। ४७५००००० । इन विध सों प्रथम दिवाल के पहल से लेके, तो दूसरी दिवाल की बाहिरी किनार के पहलों तक जागा, कोस हवेली पहल बढ़ते बढ़ते चले गए हैं। सर्व जोगवाई कुसादे होत गई है, प्रथम दिवाल में हवेली चौबीस सै कोस की हुई २४००। सो हवेली बढ़ते बढ़ते दूजी किनार में अट्ठाईस सै कोस की हुई २८००। और समुद्र के मध्य भाग की दिवाल में हवेली की चौड़ाई, बत्तीस सै कोस की हुई ३२००। और दूजी दिवाल की भीतरी किनार में, छत्तीस सै कोस की एक हवेली हुई ३६००। फेर बढ़ते बढ़ते बाहिरी किनार में, एक हवेली चालीस सै कोस की जाए भई ४०००। और कुछ कोस ज्यादे

होत जात हैं हवेलियन में । इन विध सों सर्व जोग- वाई कुसादे होत गई, और चार हार हवेलियों से लेके, तो दोनों दिवालों की मोहोलात की हवेली, मोहोल और मन्दिर, और थंभ मेहेराब त्रिपोलियाँ, दोरीबन्ध बराबर आए हैं । और मध्य समुद्र में टापू आए हैं, समुद्र के तीसरे हिस्सा में, जितेक कुसादे दोनों दिवाल में हवेली आई हैं, उसके तीसरे हिस्सा में, एक टापू की हवेली आई है । और सब जोगवाई दोनों दिवालों की, इहाँ टापू में तीसरे हिस्सा में आई है । और टापुओं की जो मोहोलाइत है, तिन को सूत्र चारहूँ दिवालन में होके, दोरीबन्ध बराबर निकस गयो है, तीसरे हिस्सा में होके, नजर तीनहूँ दिवालन को बेधत है । इत प्रथम दिवाल दिस खड़े होके, और अत्यन्त छोटी मेहेराबन में होके, जो नजर कीजे तो नजर उसी छोटी मेहेराब में होके, तीनहूँ दिवालन को बेध के पेले पार निकसत है । तीनहूँ दिवाल के पेले पार लों कछु जरे मात्र आड़ा नहीं आया है, और ना कछू आड़ा परे, अैपर जो दिवाल के तीसरे हिस्सा बीच के में खड़े होके, नजर कीजे तो अैले पार से लेके, तो पेले पार लों नजर एकै सूत्र में होके निकस जात है । और आगे हवेलियों की जुक्ति कहिआए हैं, मूल कोसन बारा सै कोस की लम्बी चौड़ी बराबर । और हवेली के दोनों तरफ चार चार सै कोस की एक मेहेराब, ऐसी तीन तीन मेहेराबें आई हैं, सो इनहीं को हवेली के दोनों तरफ, दो त्रिपोलियाँ कहे, और एक त्रिपोलियाँ सहित, एक

हवेली हुई। ऐसी एक सफ में बारा हजार हवेली हुई, तिन बारा हजार में सें, चार हजार हवेली जो मध्य की हैं, उन हवेलियों के सामें, मध्य समुद्र में बारा हजार टापू मोहोलों की बारा हजार हारें आई, ताके एक समुद्र में सब टापू, चौदा कोट चालीस लाख भए। और हर दिस विषे बारा हजार टापूओं के, बारा हजार दरवाजे रहे। और हर दरवाजे आगे माफक हवेली के चाँदनी चौक, और सर्व टापू समुद्र में जुदे जुदे आए हैं। सब के तले समुद्र में जुदे जुदे चौखूंटे चबूतरा, और जुदे जुदे टापू चबूतरन पर आए हैं, और ऊपर सर्व की भोमें जुदी जुदी भई हैं और सर्व की जुदी चाँदनी। और जितेक ऊँचे दोऊ दिवालन के मोहोल हैं, इतेक ही ऊँचे टापू के मोहोल हैं, और जैसी कछू जोगवाई दोनों दिवालन में आई है, वैसिऐ सर्व जोगवाई इत टापुओं में आई है, दो पाल की मोहोलाइत की जोगवाई से दोरीबन्ध बराबर। भोम से भोम छाजा से छाजा, और दरवाजों से दरवाजे, चाँदनी से चाँदनी अपने माफक मुकाबिल आई है। और पाल दिवाल में टापू के सामी जो चार हजार हवेली आई हैं, उन हवेलियों में समुद्र की दिस, महा बड़े तीन तीन हाँस आए हैं, और चारों तरफ बारा हाँस आए हैं, मानिन्द श्रीधाम के एक एक हाँस चार चार सै कोस को और पाँच सै मन्दिर को भयो। इत सर्व जोगवाई इहाँई माफक है, और श्रीधाम की सर्व जोगवाई, श्रीधाम ही माफक है। और टापू में जो हवेली आई हैं, सो

हवेली चार सै कोस की लम्बी चौड़ी बराबर। हवेली को चारों तरफ चबूतरा, और चारों तरफ सीढ़ियाँ समुद्र में को उतरी हैं। भोम भर ऊँचे चबूतरा से सीढ़ियाँ उतरी हैं, तिन सीढ़ियन को परकोटा काँगरी दोनों तरफ आई। और इनहीं माफक चारों तरफ बन, और चारों तरफ चार चाँदनी चौक, और बन के किनारे रौंस, रौंस के किनारे कठेड़ा, दरवाजे के सामी कठेड़ा नहीं, उहाँ उतरने के और जल क्रीड़ा करने के घाट रहे। आगे जल को चबूतरा जहाँ कमर तें ऊँचा जल है, तहाँ खड़े होके जल क्रीड़ा कीजे। चारों तरफ, यह एक टापू के बाहर की जुक्ति हुई, ऐसीअै जुक्ति सर्ब टापुओं की जानवी। और भीतर की जोगवाई सब अकह सब्दातीत है, और अनगन है, और थोड़े ही बयान में, कथा हजारन के विस्तार को पोहोंचत है। ताथें वह बयान सूक्ष्म लिखा जाता है। जिस बयान में दिल सहित, चतुष्ट अन्तःकरन के, बेसक साहेदी देत हैं, और इसारत करके लाल दास जी सोभी कहते हैं। और पूरनानन्द श्री प्राननाथ की बानी में, यह बयान सोभी गर्भित है, अति मिहीं से मिहीं धुन उठत है, जापै कृपा होत है, ताको खोल देत हैं, और वाको वाके दरसन हो जात हैं। तातें भीतर का बयान नहीं लिखा जाता है, भीतर मानिन्द मानिक पहाड़ के विस्तार जानबी। इनके एक हाँस में मानिक पहाड़ के, बारा हजार हाँस समात हैं। और पाल दिवाल में जो चार हजार हवेली टापुओं के सामी आई है, तिन एक एक हवेली

में तीन तीन हाँस, और तीन हाँस तीन मेहेराब त्रिपोलियन के, एक हवेली के सब छे हाँस भए, और चार हजार हवेली के चौबीस हजार हाँस भए। इन चौबीस हजार हाँस में से, बारा हजार हाँस बारा हजार टापुओं के मुकाबिल आए। और बारा हजार हाँस जो बीच बीच में आए हैं, सो दो टापू के दर-म्यान में जो जागा है, तहाँ समुद्र को जल भरो है। तहाँ बारा हजार हाँस पाल दिवाल की हवेलियों के, टापू के सामी आए, और बारा हजार हाँस, दो टापुओं की सन्ध में जो जल है, उन जल के सामें आए। और जो बारा हजार हाँस टापुओं के सामें आए हैं, उनकी मोहोलात और टापुओं की हवेली की मोहोलाइत, ए दोनों मोहोलाइत की सर्व जोग-वाई, दोरीबन्ध बराबर आई हैं। और सबकी सूत्र-धारा एक होइ रही है, और एक एक हाँस विषे, बारा बारा हजार हाँस आए हैं, और एक एक हवेली विषे, बारा बारा हजार हवेली आई हैं, और यही जुक्ति ऊँचाई विषे आई है। तले तें चाँदनी लों बारा हजार भोमें आई हैं, और एक एक भोम विषे बारा हजार भोमें आई हैं। और प्रथम जो बारा हजार भोमें हैं, सो मूल भोमें हैं, इन भोमन को महा विस्तार है, और अत्यन्त बुलन्दी रखती हैं। और जे भोमन में भोमें आई हैं, ते उनतें उतरती हैं और माफक हैं। एक भोम जो मूल है, सो द्वादस हजार कोस की बैठत है, और इन मूल भोम एक विषे आई जो बारा हजार भोमे हैं, सो भोमें सब एक एक

कोस की और उस एक कोस में अनेकन कोस सूक्ष्म तर और हैं, और मूल कोसन के माहें व्यापक जो कोस हैं, उनको अन्तरी कोस कहते हैं, सो इन अन्तरी कोसों की सनन्ध न्यारी है। इन कोसों और मोहोलाइतों की जुक्ति न्यारी है, मानिन्द सच्चिदानन्द अंगों के जुक्ति रखते हैं। एक सत में तीन अंग हैं, फेर एक एक अंग में तीन तीन अंग व्यापक हैं, याही विध तुम सर्व मोहोलाइत की जानियो। मोहोलों में मोहोल उतरते उतरते आए हैं, तातें तले तें लेके तो चाँदनी लों, चौदा कोट और चालीस लक्ष कोस की ऊँचाई है, राँग टापू की १४४०००००० । और ऊपर चाँदनी के अनन्त कोट आनन्द के चमत्कार हैं, और अनन्त कोट आनन्द के ख्यालात हैं, और हुन्नर तमासे दिखात हैं। और चाँदनी राँग प्रथम की, पौने तीन कोट कोस की चौड़ाई रखती है, इस किनार से तो समुद्र की दिस की किनार तक, और समुद्र के पार की जो राँग है, सो पौने पाँच कोट कोस की चौड़ाई रखती है। समुद्र दिस की किनार से लेके, तो बाहिर की किनार तक, सहित अनन्त कोट सोभा सिनगार के बिराजमान है। और दो दिवालें जो दाएँ बाएँ जिमी दिस की हैं, सो पौने चार कोट कोस की चौड़ाई रखती हैं, एक दिवाल तें दूजी दिवाल कुसादे होत गई है। और चाँदनी की समुद्र दिस की किनार पर, बारा हजार कमानें रोसन हैं, कमान पर कमान तले तें चाँदनी लों, बारा हजार रोसन हैं। तिन कमानों पर चाँदनी पै कलस काँगरी रोसन हैं, और

कमानों के दाएँ बाएँ, दो चौखूंटे गुरज रोसन हैं, तिन गुरजन पर दो गुमट रोसन हैं, तिन गुमटों पर कलस और ध्वजा बेरखें फहराती हैं। और दो कमान और दो गुमटों के बीच बीच, काँगरिन की कतार सफ रोसन हैं, और एही जुक्ति चार हार हवेलियों की दिस की किनार पर आई है। अैपर बाहिरी दिस गोल गुरजें सिवाए हैं, तिन गोल गुरजों पर खुली चाँदनी आई है, और किनार पै छाजा कठेड़ा सोभाएमान है। ताके एक समुद्र के आसपास, अड़तालीस हजार कमानों पर, अड़तालीस हजार कलस काँगरी रोसन हैं, और छयानब्बे हजार गुमट रोसन है, सहित कलस बेरखों के, और काँगरी अनन्त अपार चौफेर सोभाएमान है। अरु मध्य चाँदनी के अनन्त ख्यालात रोसन हैं, और दो दिवाल और टापू की चाँदनी की ऊँचाई बराबर आई है। और तले बारा सै कोस की रौंस रोसन है, और किनार पै कठेड़ा, और आगे चार लक्ष कोस में बन रोसन है, और आगे बन के रौंस रोसन है, चारों तरफ समुद्र के, तिनके आगे तीन सीढ़ी उतर के जल क्रीड़ा को चबूतरा। जैसी जुक्ति समुद्र के चौफेर की, ऐसियै जुक्ति टापुओं के चौफेर की, और जैसी जुक्ति इस एक नूर सागर की कही, ऐसियै जुक्ति आठहूँ समुद्रन की जानबी। और हरेक समुद्र के कोने से नेहेर चलत हैं, सो रौंस के तलें ही तले होके और चौदा कोट चालीस लाख हवेली की दिवाल के तले होके, आगे रौंस के तले होके, गोल गुरजों के सूत्र से, आगे चार हार हवे-

लियों के बन के चेहेबच्चा रोसन हैं, समुद्र से नेहेर उन चेहेबच्चों में आवत है। और उन चेहेबच्चों से नेहेर चल के, सर्व बनन विषे बिचरत है। और अष्ट सागरन विषे, अष्ट रंग जुदे जुदे सोभित हैं, और अष्ट जिमी विषे दोए दोए रंग भासत हैं। दो तरफ से दोए समुद्रन के रंग, एक ही जिमी विषे परे हैं, दोनों तरफ से दो समुद्र ने अपने अपने रंग का परतवा (प्रतिबिम्ब) डाला है। और दो समुद्र के बीच में एक जिमी, और दो जिमी के बीच में एक सागर, ऐसे गिर्द फिर आए हैं। और हर समुद्र और हर जिमी के दोनों तरफ, एक एक दिवाल चौदा कोट चालीस लाख हवेली की आई है, ऐसी हवेलियों की सोरा दिवालें आई हैं। और नूर सागर की सबे जोगवाई, सफेद रंग की सोभाएमान है, आसमान और जिमी और जल अग्नि पवन, और मोहोल मन्दिर, और बाग बगीचे बनस्पती, और पसू पंखी जो कछू, इस नूर सागर विषे जरे जरे सामग्री है, सो सब सफेद ही रंग की सोभाएमान है। और इन नूर सागर विषे नूर ही का अत्तर भरा है, अब इन नूर सागर की सर्व सोभा देख के, आगे जिमी को मझियाय के नीर सागर को चले। तो नूर सागर में पच्छिम दिस की, जो दिवाल है, उन दिवाल में छे छे हजार दरवाजे और चाँदनी चौक दाएँ और बाएँ रहे, और इन दोऊ के मध्य भाग में, आयो जो निपट बड़ो दरवाजो है, उन दरवाजे में होके बारा हजार हवेलियों को उलंघ के, जिमी दिस के दरवाजे में जाए प्राप्त भए।

तहाँ से सौ सीढ़ी उतर के, चाँदनी चौक के माहें होके, जिमी के तीनहूँ हिस्सा दो तरफ बन, और मध्य के मोहोल मझियाए के, फेर आगली दिवाल में, जो सीढ़ियाँ चाँदनी चौक दरवाजा है, वेहे सीढ़ियाँ चढ़ के, फेर बारा हजार हवेली मझियाए के नीर सागर को पूर्व को जो दरवाजो है, उन दरवाजे में हो सौ सीढ़ी उतर के, चाँदनी चौक में आए के, सर्व बन मझियाए के, समुद्र के जल की रौंस पर आए। तहाँ से उत्तर की रौंस पर होके, पच्छिम की रौंस पर जाके, उहाँ तें सर्व बन मझियाए के, चाँदनी चौक में होके, जिमी से भोम भर की सीढ़ी चढ़ के, पच्छिम की दिवाल के दरवाजे में प्राप्त भए। इन दरवाजे में खड़े होके, चारों दिस की सोभा देख के, फेर खीर सागर को चल है।

अब नीर सागर नजर कर देखिए

तो इहाँ नीर सागर में, जैसी कछू सोभा और जुक्ति नूर सागर पर वरनन कर आए, वही सोभा और जुक्ति इहाँ, नीर सागर पर बिराजमान है। इहाँ चौफेर अड़तालीस हजार चाँदनी चौक, और अड़तालीस हजार हवेलियाँ, एक भोम में अड़तालीस हजार दरवाजे, मेहेराब कमानें, और छयानब्बे हजार चौखूँटे गुरज दिखाई देत हैं। और अड़तालीस हजार त्रिपोलियाँ, और हवेली और हवेली की हद को बन, आगे समुद्र के किनारे रौंस कठेड़ा, तीन सीढ़ी नीचे जल क्रीड़ा को चबूतरा, तहाँ छातीलों

जल, रौंस से तीन सीढ़ी उतर के, जल क्रीड़ा होत है। और समुद्र चौखूँटो, और मूल कोसन समुद्र की, सोरा कोट कोस की परिक्रमा सोभाएमान है। और रौंस के किनारे चौफेर कठेड़ा सोभाएमान है, अै पर अड़तालीस हजार दरवाजों के सनमुख, इहाँ रौंस के किनारें कठेड़ा नहीं है। इहाँ अड़तालीस हजार उतरने के घाट परे हैं और अड़तालीस हजार त्रिपोलियन के सामें के घाट न्यारे। और मध्य सागर के तीसरे हिस्सा में, आए जो चौदा कोट चालीस लाख टापू हैं, सो बारा बारा हजार टापू के दरवाजे चौफेर रहे। और एक एक टापू चौफेर पाल दिवाल के, चारों दरवाजों के सामी आयो। और माफिक तीसरे हिस्सा के, चौफेर इन टापूअनके आगे बन, और चाँदनी चौक सोभाएमान हैं। दरवाजे कमानें गुरजें, और छाजा कठेड़ा थंभ देहेलानें, चाँदनीलों चली गई हैं, और सर्व टापुओं की जुदी जुदी चाँदनी सोभाएमान है। और चाँदनी की किनार पै चौफेर, अड़तालीस हजार दरवाजों की कमानों के ऊपर, अड़तालीस हजार कलस कंगूरे, और छयानब्बे हजार गुमट, छयानब्बे हजार चौखूँटे गुरजों पर सोभाएमान हैं, तिनके कलसों पर ध्वजा बैरखें फहराती हैं, और कमानों के कलसों पर कंगूरों पर बैरखें, तिनमें ध्वजा पताका फहरात हैं, और घूँघरी घमकत हैं। और एक कमान के दाएँ बाएँ दो बड़े गुमट, और दो गुमट के बीच में एक कमान, यह विध चाँदनी की किनार पै चौफेर फिर आई है। और इस हवेली के

गुरज गुमट से लेके, तो उस दूजी दिस के गुरज गुमट तक, बीच में छोटी छोटी कोटन काँगरी, तिन काँगरिन पर कलस बैरखें, और ध्वजा पताका फहराती हैं। और मध्य चाँदनी पै अनन्त लीला क्रीड़ा है, बाग बगीचे चेहेबच्चे नेहेरें फूलन की हारें, और फूलन की फूलबरियाँ, और कै विधके फुहारे उड़त हैं, और अनन्त कोट चाँदनी चबूतरे सोभाए-मान हैं। जैसी यह विध टापू की चाँदनी की किनार की, और मध्य स्थान की कही, ऐसियै कुल्ल जुक्ति पाल दिवाल की हवेलियों की चाँदनी की आई है। एक दोनों दिस की बाहिरी तरफ, बत्तीस दूनी चौंसठ गुरज गोल की जुक्ति न्यारी है, और सब जोगवाई भीतर बाहिर की बराबर। टापुओं की चाँदनी की सर्व जोगवाई जुदी जुदी है, और पाल दिवाल की चाँदनी सब इकपट है। इन गोल गुरजों पर ऊपर चाँदनी आई है, और कठेड़ा छाजा आयो, और कोटन बैठकें सोभाएमान हैं। और नीर सागर के चार कोने, तिनमें से ईसान और बायव्य कोने में घड़नाले, उन घड़नालन में होके, जल बाहिर को चलो। सो रौंस के तले होके, और पाल दिवाल के चबूतरा के तले होके, और दूसरी बाहिरी रौंस के तले होके, आगे चार हार हवेलियों की गिर्द नेहेर में, जो बुलन्द चेहेबच्चा आए हैं, सो चेहेबच्चा इन गुरजन के सामें आए हैं, तातें समुद्र से नेहेर चल के, इन चेहेबच्चों में आई। और इन चेहेबच्चों से नेहेर चल के, सर्व हवेलियों और बन मोहोलों को,

प्रदच्छिना देके जल सर्व धाम और परम धाम में फैलत है, और बिचरत है और सर्व धाम और परम धाम को जल प्रदच्छिना देके, दूजे दिस की नेहेर में होके, फेर जल नीर सागर को नीर सागर ही में समात है। बायब्य कोने की घड़नालन में हो निकस के, धाम और परमधाम को तवाफ देके, ईसान कोने की घड़नालन में होके, जल फेर नीर सागर को नीर सागर ही में समानो। इन विध सों सर्व जोग-बाई नीर सागर की देखी, और जेती जोगवाई नीर सागर की वरनन करी, सो सर्व जोगवाई जरा जरा लाल नूर की दिखाई देत है, चौबीसों तत्व और इनके अंगन की सामग्री, सब लाल नूर की सोभाएमान है। यह नीर सागर का सर्व तमासा देख के, अब इहाँथें तरफ खीर सागर के चले। तो निपट बड़े दरवाजे में होके, बारा हजार हवेलियों को मझियाए के, दूसरे दरवाजे में हो भोम भर की सीढ़ियाँ उतर के, चाँदनी चौक में होके, उहाँ से दोनों तरफ बन, और मध्य की बारा हजार हवेली मझियाए के, फेर चाँदनी चौक में हो भोम भर की सीढ़ियाँ चढ़ के, फेर निपट बड़े दरवाजे में होके, बारा हजार हवेली मझियाए के, निपट बड़े दरवाजे में होके, भोम भर की सीढ़ियाँ उतर के खीर सागर के पिछली दिवाल के आगे के चाँदनी चौक में उतरे। उन चाँदनी चौक से चल के, सर्व बन को नाख के, खीर सागर के किनारे पोहोंचे। उन किनारे से दाहिनी दिस होके, रौंस ही रौंस होके, समुद्र के दूजे किनारे पोहोंचे, फेर दूजे किनारे

से सर्व बन मझियाए के, चाँदनी चौक में दाखिल भए। उन चाँदनी चौक से, भोम भर की सीढ़ी चढ़ के, खीर सागर की पच्छिम की दिवाल को, जो निपट बड़ो दरवाजो है, उन दरवाजे के आगे; दरवाजे को पीठ देके खड़े भए, और कछुक सोभा देख के; फेर दधि सागर को चल हैं।

अब खीर सागर नजर कर देखिए

और इहाँ पुन वही जुक्ति आई है, जो जुक्ति के नीर सागर पर बरनन कर आए। इहाँ सर्व मोहोलाइत और बन, और सर्व पसु पंखी जीव जन्त जल थल के, पीले नूर के मीठे केसरिया रंग भासत हैं। और सर्व चौबीस तत्व को आदि देके, जरे जरे वस्तु जो कछू के है, सो सर्व केसरिया रंग नूर के भासत हैं। एह सर्व सोभा इत देख के; खीर सागर और दधि सागर के सन्ध की जो जिमी है, उन जिमी की तीन दिवालें, बारा बारा हजार हवेलियों की, और भीतरी किनारे गिर्दबाए बन, और मध्य विषे जो अपार बन है इन सर्व को उलंघ के, दधि सागर की दच्छिन की दिवाल के आगे, चाँदनी चौक के विषे प्राप्त भए। और दधि सागर की पूर्व दिस की दाहिनी किनार की रौंस ही रौंस होके, उत्तर के किनारे पोहोंचे। और उहाँ तें अति बन नाख के, दधि सागर की उत्तर की दिवाल को, निपट बड़ो जो समुद्र दिस को दरवाजो है, उन दरवाजे के आगे खड़े होके, दधि सागर को देखने लगे।

अब दधि सागर नजर कर देखिए

तो इहाँ सर्व मोहोलाइत दधि सागर की, माफक अगले मजकूर के सोभाएमान है। और इहाँ सबुज नूर की सब जोगबाई दीसत है, चौफेर अड़तालीस हजार हवेलियों के, थंभ दरवाजे कमानें त्रिपोलियाँ; झंझरी झरोखा, और छाजा कठेड़ा गुरज गुमटी, कलस कंगूरे काँगरी; सबुज रंग नूर की सोभाएमान हैं। और कलस कंगूरे काँगरिन के ऊपर, सबुज रंग की बैरखें, ध्वजा पताका फहराती हैं। यही जुक्ति चौदा कोट चालीस लक्ष टापुओं की आई है, सर्व जोगवाई टापू मोहोलों की, सबुज रंग की झिलमिलात है। पंच महाभूत नूर के, सब अंगन सहित, हरित नूर के दीसत हैं। पसु पंखी जीव जन्त जल थल के, सब सबुज रंग नूर के दिखाई देत हैं। यह सर्व सोभा दधि सागर की, दिल में अवलोक के, अब घृत सागर को चले।

अब घृत सागर नजर कर देखिए

तो दधि सागर और घृत सागर की सन्ध में, आई जो नूर की जिमी है, उस जिमी की बारा बारा हजार हवेलियों की, तीन दिवालें उलंघ के, और किनार गिर्दवाए को, और मध्य स्थल को अपार बन उलंघ के, बायब्य कोने के घृत सागर विषे प्राप्त भए। और घृत सागर के दच्छिन के दरवाजे से रौंस ही रौंस चल के, उत्तर दिस को बन मझियाए के, चाँदनी चौक में होके, भोम भरे की सीढ़ियाँ चढ़के

दरवाजे के आगे खड़े होके, एक टुक नजारा किया, और नजर रूहकी छे तरफ फिरी। सो छेऊ तरफ आसमानी रंग जोगवाई जगमगात है। आसमानी रंग आसमान, और आसमानी रंग जिमी, और आसमानी रंग पसु पंखी, जीव जन्त जल थल के, सर्व आसमानी रंग के दिखात हैं। और पाँच तत्व को आदि देके, चारों दिवालों की मोहोलाइतें, और टापू की मोहोलाइतें, सहित सकल सामग्री के, आसमानी रंग दृस्यमान हैं, और आसमानी रंग नूर सोभाएमान है। इहाँ की सर्व सोभा आसमानी रंग की देख के, अब उत्तर विषे सोभाएमान जो मधु को सागर है, उन सागर को चले। और घृत सागर और मधु सागर की सन्ध में आई जो जिमी है, उन जिमी की तीन दिवालें, और किनार गिर्दवाए को, और मध्य को अपार बन उलंघ के मधु सागर विषे प्राप्त भए।

अब मधु सागर नजर कर देखिए

और मधु सागर की पश्छिम दिवाल के दरवाजे से चलके, सर्व समुद्र की जोगवाई को मझियाए के, पूर्व की दिवाल के निपट बड़े दरवाजे के आगे आए प्राप्त भए। और इहाँ खड़े होके टुक सहेत सागर को नजारा किया, तो इहाँ सहेत सागर विषे, अति मीठे स्याम रंग नूर की, दसहूँ दिसन विषे, अनन्त कोट तरंगें उठती हैं। चारहूँ दिसन विषे स्याम रंग नूर की मोहोलाइतें, खण्ड पर खण्ड आसमानलों चली गई हैं। और चाँदनी की किनार पै, कलस काँगरी बैरखें

ध्वजा पताका फहराती हैं। और यही जुक्ति टापुन के मध्य विषे, और चाँदनी पर सोभाएमान है। और बन पसु पंखी जीव जन्त जल थल के, आकास जिमी को आदि दे, सर्व जोगवाई मानिन्द जुल्फ मासूक के मिठाई रखती है। और दसहूँ दिसन विषे, स्याम रंग नूर को सिन्धु हिलुरत है। रूह सो लज्जत लेके, आगे ईसान कोने में जो रस को दरियाव है, उस दरियाव को चली। और सहत सागर और रस सागर की सन्ध में आई जो जिमी है, उस जिमी की तीन दिवालें मोहोलाइतों की, और किनार गिर्दवाए और मध्य का बन मझियाए के, रस सागर विषे प्राप्त भए।

अब रस सागर नजर कर देखिए

और रस सागर की पीछली पच्छिम की दिवाल से चल के, सम्पूर्न समुद्र को दाँहिनी दिसकी रौंस पर हो मझियाए के, दच्छिन की दिवाल में जो निपट बड़ा दरवाजा है, भोम भर की सीढ़ी चाँदनी चौक से चढ़के, उस दरवाजे में आए खड़े भए, और रस सागर का नजारा किया। तो रस सागर में एक रस को समुद्र भरो है, और इन रस के समुद्र के आसपास रौंस, और बन दस दस रंग के सोभित हैं। और चौगिर्द बारा बारा हजार खण्डन की जो मोहोलाइतें आई हैं, सो सब दस दस रंगन की झलकत है। और चाँदनी छाजा कठेड़ा, और गुरजें गुमट कलस काँगरी, बैरखें ध्वजा पताका दस रंग की फहरात हैं। और

टापू की सर्व जोगबाई, दस दस रंग की झिलमिलात है, अनन्त अपार बन और बनस्पति; और पसु पंखी जीव जन्त जल थल के, और पंच महाभूत जो कछू के बीच जिमीन, और आसमान के देखियतु है, सब दस दस रंग करके रँगे हैं, और दसहूँ दिसन विषे दस रंग के नूर की तरंगें उठ रही हैं। इन दस रंग के नूर का तमासा देखके, अब पूर्व दिस विषे विराजित जो सर्वरस सागर है, उन सर्व रस सागर को चले। और दो समुद्र की सन्ध में आई जो जिमी है, उन जिमी को सहित मोहोलाइत और बन के उलंघ के, नूर के सर्वरस सागर में प्राप्त भए।

अब सर्व रस सागर नजर कर देखिए

फेर उत्तर की दिवाल के आगे जो बड़ा दरवाजा है, उन दरवाजे से चलके, समुद्र के किनारे आए के, तरफ टापू की चाँदनी के नजर करी, और सर्वरस सागर की चाँदनी पर आए प्राप्त भए, और इहाँ सर्व रस सागर के टापू की चाँदनी पर खड़े होके, दस दिस की सोभा और सिनगार बिलोकन लगे। तो चारों तरफ समुद्र के ऊपर पाल के, बारा बारा हजार हवेलियाँ दृस्यमान हैं। और बारा हजार हवेलियों की सन्ध में, बारा हजार त्रिपोलियाँ दृस्यमान हैं; चौफेर अड़तालीस हजार दिखाई देत हैं। और त्रिपोलियन के आगे चबूतरा; तिन चबूतरों के आगे चार चार थंभ और अष्ट मेहेराबें, और चौफेर अड़-तालीस हजार दरवाजे दिखाई देत हैं। और चौफेर

छयानब्बे हजार गुरज दिखाई देत हैं, और अड़तालीस हजार चाँदनी चौक दिखाई देत हैं, तिनके छयानब्बे हजार चबूतरा दिखाई देत हैं। और चाँदनी पर बारा हजार दरवाजों की कमानों पर, बारा हजार कलस कंगूरे, और इन कमानों के दाएँ बाएँ, आए जो दोए गुरज हैं, तिन गुरजों पर गुमट, और गुमटन पर कलस, कलसन पर ध्वजा पताका बैरखें फहराती हैं। और पताकों में घुँघरी घमकती हैं, और दो हवेली की सन्ध में जो जागा है, उस जागा में किनार पैं एक सफ, कोटन छोटी छोटी काँगरी सोभाएमान हैं। जैसी सोभा समुद्र दिसकी किनारकी, ऐसियै सोभा बाहिरी दिसकी, बाहिरी दिस विषे एक गोल गुरजों की जुक्ति न्यारी है, और सब जोगवाई बराबर है। और हवेलियों की रौंस तें लेके, तो समुद्र की किनार तक, चार लक्ष कोस विषे बन परिपूर्ण है, और बन के किनारे चार सौ कोस की चौड़ी रौंस, चौफेर फिर आई है। उन रौंस के किनारे किनारे कठेड़ा है। और अड़तालीस हजार बड़े घाट हैं, और अड़तालीस हजार त्रिपोलियन के सूत्र के घाट हैं। उन घाटन में हो जल के चबूतरा पर जाइए, जहाँ कमर तें ऊँचा जल है, सो यह सम्पूर्न जोगबाई समुद्र के किनारें दिखाई देत है। और तीसरे हिस्सा में आए जो टापू हैं, तिन टापुअन के गिर्दवाय कोटन कोस को जल भरो है, एक एक दिस विषे एक कोट तेतीस लाख कोस को जल भरो है, ऐसा अष्टहूँ दिस विषे समुद्र भरो है। और हिलोरा लेत है। और चाँदनी

टापुओं की भी अपार सोभा लेत है, और जैसी जुक्ति पाल मोहोलाइत की कहि आए, वही जुक्ति इहाँ टापूओं में सोभा लेत है। बारा चौको अड़तालीस हजार चाँदनी चौक, और अड़तालीस हजार दरवाजे, और कमानें, और माफक अपने गुरज छ्यानब्बे हजार दिखाई देत हैं। और टापुओं की माफक अगले मजकूर के, सर्ब जोगवाई तले तें लेके, तो चाँदनी लों चौफेर दिखाई देत है। चाँदनी पै कमानन पै कलस काँगरी, और गुरजन पै गुमट और कलस और ध्वजा बैरखें चौफेर दिखाई देत हैं। और बड़ी दो कमानों के बीच में, छोटी बेसुमार काँगरी दिखाई देत हैं, और चौफेर चौखूंटे छाजा देहेलानें, अनगिनती दिखाई देत हैं। और पाल दिवाल की चाँदनी के तीसरे हिस्सा में, बन मोहोल मन्दिर हैं, और मानिक पहाड़ की चांदनी की जुक्ति लिए, इत चारहूँ मोहोलाइतों की चाँदनी पर जुक्ति आई है। और भी अनन्त अपार सुख सोभा, और आनन्द की जुक्तें, लीला क्रीड़ा सोभाएमान है। और चाँदनी के मध्य स्थल विषे, एक बड़ा ऊँचा मोहोल, और गिर्द-वाए बन मोहोल मन्दिर अपार सोभाएमान है। जो जुक्ति सुख सोभा कि चाहिए, इहाँ सोई अष्टहूँ सागर में वर्तमान है। इन विध से नूर सागर से लेके, तो सर्बरस सागर लों आठहूँ सागर भए। और असी दिवालें, और टापुअन की मोहोलात, और जिमीकी मोहोलात, ए असी दिवाल तें सिवाए हैं। और ए जो आठहूँ समुद्र हैं, सो अष्ट रस कर भरे हैं, और

इनहीं अष्ट रस में, अनन्त रस बातून हैं। अेपर जाहिर में नूर सागर विषे, अनन्त खुस्बोईयों का अत्तर भरा है। और दछिन में जो नीर सागर है, तहाँ सुन्दर सुद्ध जल, सो जल दूध से उज्जल और मिश्री से मीठा है। और नैरित्य कोने विषे पय सागर है, और पच्छिम विषे दधि सागर है, और बायब्य विषे घृत सागर है, और उत्तर विषे मधु सागर है, और ईसान कोने में, दस विध की ऊख को दसरस को, अरु दस स्वाद के रसके एक रसको सागर भरा है। और पूर्व दिस विषे सर्व जे रस हैं, जेते रस निजधाम में, अनन्त अपार जुदे जुदे हैं, तिन सर्वरसों का यह एक सर्व रस सागर है। इन विधसों ए अष्ट सागर हुए, और सर्व सागरन में जाहिर में जो देखिए, तो दूध से उज्जल, और अमृत तें मीठा जल भरा है, तिन जल में अनन्त विध की जल क्रीड़ा होत है। और अनन्त अपार नावें, और जहाज चलत हैं, तातें जल को रूप तो सर्व समुद्रन विषे, मानिन्द जल श्री जमुनाजी के ही है। अेपर जौन समुद्र जिन रसके नाम करके है, उन समुद्र के जल में स्वाद उसी रस का परिपूर्ण है। दूध में दूध का और दधि में दधिका, और सहत में सहत का जल में स्वाद परिपूर्ण है, लेकिन जल जथार्थ ही है। और इन समुद्र को जो बातून देखिए।

अष्ट सागरन को जाहिर बातून मिलाप

१. तो ए अष्टहूं समुद्र, श्रीराज जी श्री ठकुरानी

जी, और समस्त श्री सुन्दर साथ जी, जो वाहिदत्त हैं। इन वाहिदत्त के अंगन में, जो सब्दातीत सच्चिदानन्द की नूरमई सामग्री है, वह चिद् रूप सामग्री के, अष्टहूँ समुद्र भए हैं। जैसे सूर्य अथवा चन्द्रमा की, रोसनी की पड़छाहीं परत है, अैसे श्रीराज जी के अंग में, मूल चिदानन्द गुन के गंजान गंज अपरमपार भरे जो समुद्र हैं, उन समुद्रन की अष्टहूँ दिसन में पड़छाँईं परी है। उन परछाँई के अष्टहूँ दिसन विषे, अष्ट सागर हुए हैं। सो भी अस्थूल माफक, कोई कोटांसा नहीं कहे जात हैं, स्थूल तें सूक्ष्म को अपार विस्तार होत है, तातें वाको कोटांसा बयान करियतु है। के श्री राज जी को जो नूर को सरूप है, सो उन नूर के सरूप को नाम नूर सागर कहत हैं। और उन नूर के सरूप में, जो अपरमपार नूर की खुस्बोइयों का, और नूर जोत का, और नूर चकलाइयों का भरा जो सागर है, उसका प्रतिबिम्ब अग्नि कोने में पड़ा है, तिसका अग्नि कोने में नूर का सागर हुआ है।

२. और दच्छिन दिस विषे भरो जो नीर को समुद्र है, सो समुद्र क्या है, के श्रीराज जी के नूर के सरूप में, अपार नूर का जो पानी झिलमिलात है, जिन विधसों मुक्तादिक नंगन में पानी होता है, इन बिधसों श्रीराजजी के, वाहिदत के मुख में जो नूर का पानी है, उन पानी का दच्छिन दिस विषे, नीर सागर हुआ है।

३. और श्रीराज जी के नूर के सरूप में, जो अपरमपार उजलाई है, उन उजलाई का निजधाम विषे दसहूँ दिसन में, मानो खीर को समुद्र हिलुर रहो है। उन खीर के सिन्धु को प्रतिबिम्ब नैरित्य कोने में पड़ो है, ताको इत नैरित्य कोने में खीर को सिन्धु हुआ है।

४. और श्रीराज जी के नूर के सरूप में जो सीतल दृष्टि है, प्रेम रस की भीजी अपार इस्क और अपार लाड़ प्यार से भरी हुई, उन दृष्टि में जो अपार आनन्द की, सीतलता को अपार सिन्धु भरो है। उन सिन्धु को प्रतिबिम्ब इहाँ पच्छिम दिस विषे परो है, ताको इहाँ दधि सागर भयो है।

५. और श्रीराज जी के वाहिदत्त सरूप में, जो अपरमपार जहूर है, जाको वार पार सुमार नहीं है, उन जहूर से बायब्य कोने विषे, घृत को सागर हुआ है।

६. और श्रीराज जी के नूर के सरूप विषे, पाँव तली तें लेके तो कलंगी तक, जितने अंग हैं, तिन सर्व अंगन में अमृत तें कोट गुनी मिठाई भरी है। और हरेक अंग में अमृत तें कोट गुने मीठे, अपरमपार मिठाई के समुद्र भरे हैं, उन समुद्र को प्रतिबिम्ब छाया, उत्तर दिस विषे आयो जो सेहेत सागर है, उनमें आए पड़ी है, ताको उत्तर दिस विषे सेहेत का सागर हुआ है।

७. और वाहिदत्त मासूक के हृदय में जो रस

है, के रात दिन चौंसठ घड़ी में इन रूहों को केवल निर्मल एक आनन्द देऊँ, और अनन्त कोट नए नए लाड़ लड़ाऊँ। इन रस को अपरमपार जो हृदय में समुद्र है, तिनकी पड़छाँहीं, ईसान कोने में जो रस को समुद्र है, उन समुद्र में पड़ी है, सो रस सहित प्रेम के, नव रस को उदर में लेके, दस विध को भयो है।

८. और श्रीराज जी के दिल और नैनन में, अपरमपार और बेसुमार जो सर्व रस को, और मेहेर लाड़ प्यार को समुद्र है, उन समुद्र की छाया, इन पूर्व दिस के समुद्र में पड़ी है, ता करके यह सर्व रस को सागर भयो है। और यह सर्व रस को समुद्र वह है, के अष्ट प्रहर चौंसठ घड़ी श्रीराज जी के दिल में, अनन्त रसन के अनन्त समुद्र भरे हैं। तिन हर एक समुद्र की फुहीफुही में रूहों को सुख देवें, और लाड़ पालवे सिवाए, अनुमात्र कुछ दूसरी वस्त नहीं है। और श्रीराज जी के दिल में अनन्तन विधें भरी हैं, तिन सर्व अनन्तन विध को, आसिकनकों सुख देवे को कारन एक है। कि अनन्त विधन सों मैं रूहनकों, अनन्त विध के सुख देऊँ, इन समुद्र की प्रतिबिम्ब छाया सर्व रस सागर में पड़ी है, ताको पूर्व दिस विषे सर्व रस सागर भयो है। इन विध सों श्रीराज जी के सरूप में, बातून सूक्ष्म अपार बेसुमार, भरे जो अखण्ड गुनन के समुद्र हैं। उन समुद्र की कोटान्सा छाया बाहिर पड़ी है, श्रीराज जी के दिल चाहि, जिन दिस में जैसी जौन चाहिए, तिन के अष्ट दिस विषे; अष्ट समुद्र भए हैं। और तीसरी विध और है।

के पेहेला नूर का सागर है, और दूजा रूहन की सोभा को सागर है, और तीजा रूहों की एक दिली का सागर है, और चौथा वाहिदत्त के सिनगार को सागर है, और पाँचमा वाहेदत्त के इसक को सागर है, और छट्ठमा इलम को सागर है, और सातमा निसबत का सागर है, और आठमा मेहेर का सागर है। इन विध सों श्रीराज जी के, अष्ट अंगन में अष्ट समुद्र सोभाएमान हैं। तिन अष्ट समुद्रों में से, चार समुद्र श्रीराज जी की तरफ आउत हैं, और चार समुद्र श्रीठकुरानी जी की तरफ लगत हैं। तहाँ नूर को सागर, और सिनगार को सागर; और इलम का सागर, और सर्व रस को सागर, ए चार सागर श्रीराज जी की तरफ लेखेजात हैं। और सोभा को सागर, और एक दिली को सागर, और इस्क को सागर और निसबत को सागर, ए चारहूँ सागर श्री ठकुरानी जी के अंग थें हैं, सो श्री ठकुरानी जी की तरफ लेखे जात हैं। और ए जो अष्टहूँ समुद्र हैं, तिनकी आपुस में, अर्स परस सूत्र-धारा मिली है, बातून गुनन सें। जैसे दच्छिन दिस विषे, रूहन की सोभा को जो सागर बिराजमान है, इन सागर की सूत्रधारा खीर के सागर को लगी है, और खीर सागर सूत्रधारा नीर सागर को लगी है। जैसे रूहन के एक तनी को जो सोभा को सागर है, उन सागर को सूत्र, एक दिली के सागर को लगो है, एक तन बिना कोई एक दिल नहीं होत है, और एक दिल बिना कोई एक तन नहीं होत है। ए दोऊ अरस

परस एक हैं, तातें ए रूहन की, अपरमपार सोभा को मूल कारन, एक दिली को सागर जानबी। अपरमपार सोभा की पेहेचान, एक दिली करके रोसन होत है। और खीर सागर को सूत्र अरसपरस दधि सागर को लगो है, याने वह जो एक दिली है, उसकी पेहेचान भोगन में, और सिनगारन में है। एक सखी दूजी को आपतें, कोट गुना सुख सर्व सुखन में, और सर्व सिनगार और भोगन में चाहत है। तातें एक दिली की लक्ष, सिनगारन में रोसन होत है, और सिनगार को सागर जो दधि सागर है, उन दधि सागर को सूत्र, अग्नि कोने में जो नूर को सागर है, उन नूर सागर सों लगो है और वाहिदत को सरूप जो नूर को सागर है, उन तन सागर में अखण्ड गुन हैं। और उन सत नूर में, अखण्ड स्वभाव हैं, और पूर्ण अपार नूर में हुकम है, के जो कछू चित्त चितवन करत है, सोई वह नूर कोट रूप धर के, चित्त के चितवन से आगे दिखाई देत है। यह वस्तर और भूषन प्रगट करवे को लक्षन और हुकम, श्रीराज जी ने इन सत स्वभाव रूपी, वाहिदत के तनों में रखा है। के जोई रूह के चित्तने, वस्तर या भूषन को चित्तवन करो, सोई चित्तवन से आगे, कोट विध के वस्तर या भूषन, अंग ही में दिखान लगे। तातें पाउ छिन में कोट विध के वस्तर या भूषन, प्रगट करने का हुकम और मुद्दा, इन सतनूर रूपी तनों पर साबित है। तातें इन तनों से वस्तर या भूषन, पाउ पानीबल को, जुदे नहीं होत हैं। जैसे सूर्य का जहूर कबूं सूर्य से

जुदा नहीं होता है, अष्ट पहर चौंसठ घड़ी इच्छा के आधार रहत है। या विध सों दधि सागर को सूत्र नूर सागर को लगो है, और नूर सागर को सूत्र दधि सागर को लगो है। ए दोऊ अरस परस हैं, और मनसूब हैं। तातें प्रान जीवन सागरन के बरनन में, दधि सागर से नूर सागर विषे गए, और नूर सागर से घृत सागर विषे आए। सो ऐसा ही बातून सूत्र इत मिला है। जब रूह के हृदय विषे नूर आया, तब नूर रूपी सूर्य इस्क रूपी जहूर से लिपटे हैं, और जैसी वस्तर भूषन की सूत्रधारा नूर से मिली है, अैसियै नूर की सूत्रधारा साथ इस्क के मिली है। जो श्रीराज जी नूर रूप करके रूह के दिल में आए, सोई इस्क रूपी अनभव इलम संग ही आए। किस वास्ते के नूर रूप करके आए जो आप हैं, उन नूर के अनन्त रूप और अनन्त पातसाई की लक्ष, बिन इस्क रूपी इलम के नाहीं होती है। उस नूर के पूर्ण रूप जानने को इस्क रूपी इल्म बिना, दुतीय उपाय नास्ति है, और पूर्ण रूप जाने बिना इस्क नहीं आता है। और इस्क के आए बिना अपनो निज सरूप, और निस्बत को नहीं पोहोंचता है। और अपने निज सरूप, और निस्बत को पोहोंचे बिना, मासूक को अंक भर नहीं भेंट सकता है। और अपने पूर्ण स्वयं रूप को नहीं पोहोंच सकता है, तिस वास्ते यह इन विध सूत्रधारा लगी है। इन जुक्ति से प्रीतम नूर सागर से प्रेम लक्षना के सागर में आए। और घृत सागर से सेहेत सागर को गए हैं, तिसका भी वही

माएना है, के इलम बिना इस्क नहीं आता है, और वगैर इलम के जो इस्क है सो अपूर्ण है, और सहित इलम के जो इस्क है, सो पूर्ण है; और इलम और इस्क, ए दोनों आपुस में ओत प्रोत हैं, और एकम एक हैं। और आपुस में अैसी दोस्ती हुई है, के वेहे उनमें गरक अैसे भए हैं, के अपनो रूप छोड़ के, उन को रूप हो गए हैं, और वेहे अपनो रूप छोड़ के, उनको रूप हो गए हैं। और इलम को जीव इस्क है, और इस्क को जीउ इलम है, इन विध सों ए दोनों बराबर हैं, और आपुस में एकता की सूत्रधारा लगी है। इन विध सों प्रीतम घृत सागर से, सहत सागर को गए, और आगे सहत सागर से रस सागर में आए हैं। सो भी माफक सूत्र मजकूर के जानबी, के नूर ने तो इस्क दियो, और इस्क ने इलम दियो, और इलम ने अपने पर आतम सरूप की पूरन लक्ष दई, अपने निज सरूप को जाती सुमिरन पूरन आयो। जो निज सरूप की याद आई, सोई रूह जागृत का इस्क लेके, सर्व रस सागर में प्राप्त भई, उठ के पूरनानन्द दुलहा को भेटे। और पूरन निर-मल हक दिल माफक होके, मेहेर सागर को पोहोंची। और आगे प्रान जीवन ने, एक सागर को रंग दूसरे सागर में कहो है, जैसे ए दोए चौपाई कहीं हैं।

चौपाई

अग्नि ईसान लाल नूर, पीत रंग नीर दखिन।
नैरित्य खीर नीला रंग, दधि सेत पच्छिम रोसन।१।

घृत बायव्य बल स्याम रंग, रंग आसमानी मधु उत्तर।
दस रंग अमृत ईसान, रस पूर्व रंग सर भर ॥२॥

ए दोए चौपाई हुई, इनमें फुरमाइस हुई, के अग्नि और ईसान के सागर विषे, दखिन के सागर को लाल रंग है। और दच्छिन के सागर विषे, नैरित्य के सागर को पीलो रंग है। और नैरित्य कोने के दूध सागर विषे, दधि सागर को नीलो रंग सोभाएमान है। और दधि सागर विषे, अग्नि कोने के नूर सागर को सेत रंग सोभाएमान है और बायव्य कोने के समुद्र में, उत्तर के सागर को स्याम रंग सोभायमान है। और उत्तर के सागर विषे, बायव्य कोने के सागर को आसमानी रंग सोभाएमान है। और दस रंग जो अमृत ईसान को है, सो पूर्व सागर के रंग के, सरभर है। इन विध सों प्रीतम ने, सागरन के रंगन को आपुस में तबदीली दई है, तिसका भी अति गुझ माएना है, इसमें कारन रूप दिखाउत हैं। के दखिन दिस विषे जो रूह का सागर है, उस सागर को, रंग नूर सागर, और रस सागर में फुरमाया है, सो बरहक है। किस वास्ते के नूर और निसबत, इन दोनों का कारन चिदानन्द रूपी रूह प्रवान है। और आप पूरन ब्रह्म, अष्ट प्रहर चौंसठ घड़ी बिना कारन रूह के, कुछ अनुमात्र कारज नहीं करत हैं। बल्कि नूर को स्वरूप जो धारन करे हैं, और करत हैं, सो सब रूह का कारन जानियो। और निसबत का कारन पुन रूह है, निसबत जो है सो रूहसों लगी है, तातें इन दोऊ सागरों का मूल कारन रूह है, और कारज नूर को और रस को ए दोनों समुद्र हैं। तो

कारज के रोम रोम में, कारन को रंग होत है, तिस वास्ते अग्नि और ईसान कोने में जो समुद्र हैं, तिन विषे दखिन के समुद्र को जो लाल रंग है, सो लाल रंग इनका, उन दोनों में बताया है। सो जो कारन के मजकूर हुआ, इसी कारन पाए के, दखिन सागर का रंग, अग्नि और ईसान कोने के सागरन में कहो है। और दखिन के सागर में, खीर सागर को रंग कहो है, तिस का मायना एह है, के एक दिली को जो रंग है, सो सिवाय रूह के और ठौर नहीं है। एक दिली जिसका नाम है, सो केवल रूहन में ही बिराजमान है, इस वास्ते प्रानपति ने, पीला रंग खीर सागर का, नीर सागर में फुरमाया। और दधि सागर का रंग, खीर सागर में फुरमाया, तिसका माएना एह है, के सिनगार को जो रस सुख है, सो एक दिली में परिपूर्ण है। और सिनगार में जो रस रंग है, सो एक दिली में रोसन है, और पूर्ण सुख जो सिनगार में है, ताको रूप एक दिली में प्रगट होत है, और एक दिली की लक्ष सिनगार में होत है। या तें प्रानपति ने दधि सागर को रंग, खीर सागर में बतायो है, और नूर सागर को रंग दधि सागर में फुरमायो। तिस का ए ही माएना है, के नूर को रंग बस्तरों में और भूषनो में परिपूर्ण है, बस्तर और भूषनों का मूल कारन नूर ही है, और नूर जो है सो अकह सब्दातीत है। याकी गुन सिफत और अकह सब्दातीत हुस्न की मिठाई, सुपन के खट प्रमान तें बाहिर है। ऐसो जो नूर, तिन नूर को रंग

वस्तर और भूषनों में भरपूर है, और वस्तर भूषन नूर के हैं, और नूरमय हैं। इन विधसें श्री प्राननाथ ने, दधि सागर विषे नूर सागर का सेत रंग फुरमाया, और घृत के सागर विषे, मधु सागर का स्याम रंग फुरमाया, तिसका यह मायना है, के इस्क और इलम ए दोऊ (लहम कलहमी हैं), और अरस परस और ओत प्रोत हैं। इल्म बिना इस्क नहीं है, और इस्क बिना इलम नहीं है, और इलम के वजूद में इस्क को चैतन्य है, और इस्क के वजूद में इलम को चैतन्य है। और इनका मानिन्द जुड़ाफे के, दो मिल के एक सूरत होत है, और इलम के समुद्र में, इस्क का रंग है, और इस्क के समुद्र में इलम का रंग है। तिस वास्ते सेहेत सागर का रंग घृत सागर में फुरमाया है, और घृत सागर का रंग सेहेत सागर में बताया, ताको यही कारन है, जो इलम इस्क को मजकूर हो आयो है। इलम को रंग इस्क में है, और इस्क को रंग इलम में है। इलम इस्क देता है, और इस्क इलम देता है, और इलम अपने निज सरूप को पोहोंचा देता है। सो इलम ने रूह को निसबत सागर को पोहोंचाई, और निसबत सागर ने रूह को सर्व रस सागर को पोहोंचाई। जोई निसबत की पूरन याद आई, सोई रूह सर्व रस सागर जो हक को सरूप है, ताको पोहोंच के मेहेर के सागर में प्राप्त भई, और इन सागरन के समझन की दूसरी विध और है।

के ए सागर हैं सो क्या है, के इसारत है, तरफ रूह अवस्था चढ़ती के। पर आतम के सरूप में जो जागृत अवस्था है, जहाँ परआतम निज सरूप में प्राप्त है, एह तो निसबत को सागर है। और पर-आतम की जागृत अवस्था विषे, जो रोम रोम हक को इस्क है, सोई सर्व रस सागर हक को स्वरूप है। ता सर्व रस सागर में अपरमपार, और बेसुमार मेहेर का जल भरा है। और अरस दिल में जो रूह की स्वप्न अवस्था है, सोई दिल में हुआ नीर सागर। सो इस दच्छिन के नीर सागर पै रूह खड़ी है, और इहाँ होके मासूक से हजूर आवने की अरज करती है, और सर्वं समुद्रन को मझियाए के, सर्वं रस सागर को चला चाहती है। तब मासूक मेहेबान ने, मेहेर करके रूह अपनी को कौल रूपी जो बेसूमार सोभा है, सो बख्सी। तब रूह उस कौल को पाए करके, एक दिली के सागर को चली, तहाँ प्राप्त भई। याने कौल को असल मगज समझके, हजार टुकड़े दिल के से रूह ने एक दिल किया, एक मासूक सिवाय और सर्वं को भूल गई, तब एक दिल हुआ। जब रूह फैल रूपी एक दिली सागर को पोहोंची, तब एक दिली रूपी फैल ने, रूह को बिरहा रूपी सिनगार के दधि सागर को पोहोंचाई। याने जब रूह को कौल से फैल आया, तब फैल में तो एक दिली हुई, और फैल से जब हाल को पोहोंची, और खीर सागर से रूह दधि सागर को पोहोंची, तब इहाँ दधि सागर विषे पोहोंच

के, रूह ने बिरहाके सिनगार करे। फेर रूह दधि सागर से चलके, नूर सागर विषे पोहोंची। याने जब रूह ने बिरहा के वस्तर भूषन पहेरे, तब मासूक ने अपनो जाहिर जो स्वरूप है, सो दिखाया। जाहिर जो नूर को सरूप है, सो दिल में दिखायो, जब रूह नूर के सरूप को पहोंची, तब नूर ने मेहेर करके, रूह को घृत सागर को पोहोंचाई, याने रूह नूर के जाहिर सरूप से, हक को बातून गंजानगंज सरूप जो इस्क को रूप है, उस बातून सरूप को पोहोंची। उस बातून सरूप इस्क ने रूह को, सेहेत सागर को पोहोंचाई, याने इस्क ने रूह को मुतलक इलम दियो। जब रूह को इलम पोहोंच्यो, तब रूह इस्क रूपी इलम में मग्न भई, और महा आनन्द के सिन्ध में डूबी, और रूह प्रेम लक्षना को पोहोंची। फेर इलम रूपी इस्क के सागर ने, रूह को रस सागर को पोहोंचाई, जाको निसबत को सागर कहत हैं, याने इलम ने अपने निज सरूप, पर आतम रूप को पोहोंचाई। जोई रूह को पूरन प्रेम लक्षना आई, सोई अपने परआतम सरूप की, पूरन यादगीरी आई। जोई जाति स्मरन भयो, सोई अपने तन की, और चोली साड़ी चरनियाँ की खबर आई। और अपने निज सरूप परआतम सें हुसियार हुई, और पर-आतम के दस रस की लेहेर आतम में उठने लगी। और रूह में पूरन दावा दुलहिन को भर आयो, और रूह को पूरन निसबत की हुज्जत परिपूरन भई। इन विधसों रूह इलम सागर से, निसबत के सागर को

पोहोंची, फेर निसबत के सागर से चलके, रूह सर्व रस सागर को प्राप्त भई। याने अपने पर आतम सरूप को उलंघ के, आगे चिदानन्द सरूप जो दुलहा दुलहिन हैं, रूह उन जुगल सरूप के, हुस्न छबि सिन्ध में गरक हो गई। और अपने सरूप की सुधसान बिसार के, अष्ठ पहर चौसठ घड़ी रूह हक के सरूप में मग्न भई। इन विध से रूह नीर सागर से चलके, सर्व समुद्रन को मझियाए के, सर्व रस रूपी जो मूल मिलावे को मूल सरूप है, ताको मिली। स्वप्न अवस्था रूपी नीर सागर से चलके, रूह महा जागृत अवस्था और महा जागृत दसा रूपी जो सर्व रस सागर है उस सागर में प्राप्त भई। ए सब जो कहा सो अरस दिल में हुआ, और ऊपर हर रूह के गुजरता है, हर रूह मानिन्द सप्त भूमिका के, ऊपर को चढ़त है। और तुरिया और तुर्यातीत में होके, रूह अपने मासूक को मिलत है, इन विधसों इन अष्ठहूँ सागर को भेद, माफक अपनी छुद्र अकल के कहा, और इनमें तो और कै गुझाद गुझ भेद है, सो जाको खुदा देवें ताए मिलें।

अब हवेलियन की गिनती अर्ज तूल

और हवेलियों की लम्बाई चौड़ाई का बयान आगे होए आयो है, चार हार हवेलियों की किनार रॉंग दिस की, उस किनार में जो हवेली है, सों हवेली बीस सै कोस की है २०००। और हाँस दो कोट चालीस लक्ष कोस की भयो २४००००००। और

परिक्रमा छेहत्तर कोट और असी लाख कोस की बैठी ७६८०००००० । और प्रथम दिवाल की चार हार दिसकी जो किनार है, उन किनार में चौबीस सैं कोस की लम्बी चौड़ी हवेली २४०० । और दो कोट अठासी लाख कोस को हाँस भयो २८८००००० । और तवाफ बानब्बे कोट सोरा लाख की ९२१६००००० । बैठी, और प्रथम दिवाल की समुद्र दिस की जो किनार है, उस किनार में अट्ठाईस सै की हवेली २८०० । और तीन कोट छत्तीस लाख को हाँस ३३६००००० । भयो, और एक अरब और सात कोट और बावन लक्ष की परिक्रमा रही १०७५२००००० । और समुद्र के मध्य स्थल की मोहोलाइत, और सोरा दिवाल की दोनों किनार की मोंहोलाइत में जो हवेली है, सो हवेली बत्तीस सै कोस की ३२०० । हुई, और हाँस तीन कोट चौरासी लाख कोस को ३८४००००० । और परिक्रमा एक अरब और बाईस कोट, और अठासी लाख कोस की हुई १२२८८००००० । और दूसरी जो राँग की दिवाल है, उसकी समुद्र दिस की जो किनार है, उस किनार में जो हवेली है, सो हवेली छत्तीस सै कोस की लम्बी चौड़ी बराबर ३६०० । और हाँस चार कोट बत्तीस लाख कोस को भयो ४३२००००० । ता:की तवाफ, एक अरब और अड़तीस कोट और चौबीस लाख कोस की बैठी १३८२४००००० । और दूसरी राँग की बाहिरी दिस की जो किनार है, उस किनार में जो हवेली है, सो हवेली चालीस सौ कोस की,

लम्बी चौड़ी बराबर ४००० । और चार कोट और अस्सी लाख कोस को एक हाँस भयो ४८०००००० । और जो किनार ही किनार होके परिक्रमा दीजे, तो एक अरब त्रिपन कोट और साठ लाख कोस की, परिक्रमा बैठत है १५३६०००००० । या विध सें मोहोलाइत इस किनार से, तो उस किनार तक कुसादे होत गई है । और राँग की प्रथम दिवाल से लेके, तो दूसरी राँग की बाहिरी किनार तक, कुछ ऊपर साढ़े बारा कोट कोस जागा होत है १२५००००००० । और इन दोनों राँगों की ऊँचाई, पुन साढ़े बारा कोट कोस की है, चौड़ाई और ऊँचाई ए दोनों बराबर हैं । और आगे भीतरी तरफ राँग के, जो चार हार हवेली हैं, सो चार हार हवेली इस किनार से लेके, तो मानिक पहाड़ के महानद लों, दस कोट की कुसादगी रखती है १०००००००० । नौ कोट में हवेली और महाबन गिर्दवाए आए, और एक कोट में महा बुलन्द बन और नेहेर आई, जिनको बन के मोहोल कहत हैं। सो इनहीं हवेलियों की अैली तरफ, गिर्दवाए आए हैं और उसी एक कोट कोस में, सर्व हवेलियों को गेर के, बन और महा कुसादे नेहेर आई है । उन नेहेर की मानिक पहाड़ से लगती जो रौंस पाल है, उन रौंस पाल से लेके, तो रंग भवन के परवाली रंग मन्दिर लों, अढ़ाई कोट कोस जागा बैठत है, २५०००००० । ताके रंग भवन तें लेके, तो दूजी राँग की बाहिरी किनार तक, पचीस कोट कोस जागा हुई । २५००००००० । रंग भवन तें पूर्व दिस की राँग की किनार

पचीस कोट कोस पै बैठी, और रंग भवन तें पच्छिम दिस की राँग की किनार भी, पचीस कोट कोस के अन्तर सों बैठी २५०००००००। और दूजी राँग जो पूर्व दिस की है, उस राँग से लेके, तो पच्छिम दिस की जो राँग है, उहाँ तक पचास कोट कोस जागा होत है। ५००००००००। और दधि सागर के दरवाजे से लेके, तो पूर्व के सर्व रस सागर के दरवाजे लों, पचास कोट कोस जागा होत है ५००००००००। और इहाँ इसने कोस और जोजन का बेवरा नहीं किया है, ए जो जहाँ जहाँ, एह कोस की गिनती लिख आया है, तहाँ तहाँ तुम जोजन ही की गिनती जानना, और इन पचास कोट कोस को, पचास कोट जोजन ही जानवी। अब एक पहल की हवेली, सब चौदा कोट चालीस लाख १४४०००००० भई। और अस्सी पहल की हवेली, ग्यारा अरब और बावन कोट भई ११५२००००००००। अब इन एक हवेली की बारा हजार भोमें, ताकी सब हवेलियों की भोमें, ग्यारा अरब और बावन कोट हुई ११५२०००००००। अब बारा हजार भोमन की हवेली, तेरा नील और ब्यासी खरब और चालीस अरब हवेली हुई १३८२४००००००००००। सो एह हवेली छोटी छोटी हुई। और बड़ी बड़ी जो हवेली है, सो एक भोम की तले तले की, सब अस्सी खाँचों की, ग्यारा अरब और बावन कोट हवेली हुई ११५२०००००००। ऐसिअै तेरा नील और बावन खरब और चालीस अरब हवेली, बारा हजार भोमन

में हैं। ताकी सब बारों हजार भोमन की, छोटी छोटी हवेली, सोरा पदम और अण्ठावन पार और अठासी नील हवेली हुई १६५८८८००००००००००-००००। टापुओं और जिमी की हवेली छोड़ के, और अष्ट समुद्र के टापुओं की बारों हजार भोमों की छोटी बड़ी सब हवेली, एक पदम और पैंसठ पार और अठासी नील और अस्सी खरब हुई १६५८८८-००००००००००००। इन तीनहूँ अंकन की जमा, और सर्व हवेलियों की जमा, राँग टापू और जिमी की, उनैस पदम और नब्बे पार अरु पैंसठ नील, और साठ खरब हवेली हुई, छोटी और बड़ियों समेत। १९९०६५६००००००००००००। और राँग से लगती जो चार हार हवेली हैं, सो एक एक हवेलियों में, बारा बारा हजार हवेलियों की, बारा हजार हारें, ताके एक हवेली में, चौदा कोट चालीस लक्ष हवेली हुई १४४००००००। और एक हवेली के पांच खण्डों की हवेली बहत्तर कोट हुई ७२००००००० । और एक सौ अट्ठाईस हवेली की १२८। एक भोम की नले तले की हवेली, अठारा अरब, और तैंतालीस कोट, और बीस लाख हवेली हुई १८४३२०००००० । और चार हार हवेली की, सर्व हवेलियों में जो पाँच पाँच खण्ड आए हैं, और एक सौ अट्ठाईस हवेली आई हैं, तो सर्व हवेलियों की पाँचों खण्डों की जमा; बाँनब्बे अरब, और सोरा कोट हुई ९२१६०००-००००। इन विध सों राँग के भीतरी बाजू, जो

चार हार हवेलियाँ आई हैं, उन हवेलियों की हवेलियाँ सब इतेक हुई। और चार हार हवेलियों की जमा, चौड़ाई सहित बन मोहोलों के, दस कोट कोस की चौड़ाई हुई १००००००००। और बन मोहोलों की धाम दिस की किनार से लेके, तो रंग भवन के परवाली रंग मन्दिर लों, अढ़ाई कोट कोस जागा बैठी। और रंग भवन तें दच्छिन दिस विषे, जो जवेरों के मोहोल की, भीतरी किनार है, उस किनार लों, नौ लक्ष कोस को फरक है। और उत्तर दिस विषे, जो जवेरों के मोहोल हैं, तिनकी अैली किनार लों, नौ लक्ष कोस को फरक है ९००००००। और रंग भवन तें पच्छिम दिस विषे, जो जवेरों के मोहोल हैं, तिनकी ऐली किनार लों, नौ लाख कोस को फरक है। और पूर्व दिस विषे, जो जवेरों के मोहोल हैं, तिनकी अैली किनार लों, साढ़े तेरा लाख कोस को फरक है, १३५००००। और जो जवेरों के मोहोलों की, ऐली किनार किनार की प्रदक्षिना दीजे, तो साढ़े अण्ठावन लाख कोस की, प्रदच्छिना बैठत है, ५८५००००। और जो जवेरों के मोहोलों की, बाहिरी किनार की प्रदक्षिना दीजे, तो साढ़े पचासी लाख कोस की परिक्रमा बैठत है ८५५००००। और इन तें आगे दो कोट चालीस लाख कोस के ऊपर बन मोहोल हैं। सो रंग भवन तें चारों तरफ, बन मोहोल की अैली किनार तक, अढ़ाई कोट कोस जागा होत है, २५००००००। और जो परिक्रमा दीजे, तो पन्द्रा कोट कोस की परत है १५००००००००। और आगे

इनके, दस कोट कोस की चौड़ाई में, चार हार हवेली आई हैं। सो रंग भवन तें लेके, तो चार हार हवेलियों की, राँग दिस की किनार तक, छेहत्तर कोट और अस्सी लाख कोस की परिकरमा बैठत है, याने पौन अरब कोस की ७६८०००००० । और इस राँग के लेखे में इसने कुछ बारीक लेखा जरे जरे कोसों का नहीं किया है। मोटा मोटा लेखा किया है। अरबन खरबन के हिसाब में, हजारन और लाखन छूटत हैं, और समूह वाक्य बोल के चले जाने परत है। और नहीं तो एक ही निसान के लेखे में, मुद्दत निकल जावे, और विस्तार भी हजारन को नाख के, लाखन पर जात रहै, तब तो कुछ दुरुस्ती न आवे, बल्कि पढ़ने और सुनने वालों के तँ मलूलियत ल्यावे। और ऊपर पेसानी के चीन छुड़ावे, इस वास्ते लेखा सामान्य भाव में मोटा मोटा किया है। और प्रथम राँग को और समुद्र को और दूजी राँग की कुसादगी को, जिकर आगे हो आयो है, सहित प्रदछिना के, तिस वास्ते इत नहीं लिखा जाता है, बलेकिन समुद्र पार की जो राँग है, उसकी किनार, रंग भवन तें पचीस कोट जोजन बैठत है, और एक अरब पचीस कोट जोजन की प्रदक्षिना होत है। और रंग भवन तें पूर्व के समुद्र को दरवाजो, और तीनहूँ दिसन के समुद्र को दरवाजो, पचीस पचीस कोट जोजन पै बैठो। और पूर्व के दरवाजे से, पच्छिम के समुद्र को दरवाजो, और उत्तर के समुद्र के दरवाजे से, दच्छिन के समुद्र के दरवाजे लों; पचास कोट जोजन जिमी

होत है जमा ५००००००००। और रंग भवन तें सत्रा कोट के ऊपर, जो समुद्र की ऐली किनार है १७००००००० । जो उस पर हो प्रदक्षिना दीजे, तो प्रदछिना कछुक ऊपर, सौ कोट की परत है १०००-००००० । और रंग भवन तें एकईस कोट के ऊपर, जो दूजी दिवाल है, उस दिवाल की अैली किनार हो, जो प्रदच्छिना दीजे, तो कछुक कोट ऊपर सवा अरब होत है। और रंग भवन तें पचीस कोट के ऊपर, जो दूसरी दिवाल की बाहिरी किनार है, उस किनार ही किनार होके, जो प्रदच्छिना दीजे, तो कुछ कोट ऊपर डेढ़ अरब की प्रदक्षिना परत है । इन विधसों रंग भवनतें लेकें, तो रांग की दोनों दिवालों की गिनती हिसाब आड़ा और खड़ा, चारों दिस का हुआ, और पचास कोट की मरजाद ठेहेरी । और इस ही अखण्ड घर का प्रतिबिम्ब छाया यह ब्रह्माण्ड है, पूरन ब्रह्म अक्षरातीत ने, अपनी प्रियन को दूजी दिखाने की निमित्त, एक निमूना पैदा किया है। सच्चिदानन्द की मूर्ति जो श्री परम धाम है, तिसका असत जड़ दुख रूपी प्रतिबिम्ब उलटा परा है । असत नाकछू माया में माफक माया के, परन्तु जरे जरे का प्रतिबिम्ब उलटा परा है । सतका असत, और चिदका जड़, और आनन्द का दुख, इनविधसों कोटांसाका कोटांसा, जरे जरे वस्तु का उलटा प्रतिबिम्ब पड़ा है। सोभी माफक मायाके, जैसे ब्रह्माण्ड के आगे, खस खस का दाना, अैसे परमधाम के आगे एह ब्रह्माण्ड है । और जैसे अनन्त कोट कोसों का लम्बा चौड़ा जो

मानिक पहाड़ है, उसका निमूना जैसे चार छे हाथ जागा में लिखिए, यह ब्रह्माण्ड परमधाम का, इन-विध का निमूना है। और इस नकल की चीजों से असल में जो चीजें हैं, सो अनन्त कोट गुन लेके, नकल की चीजों से, अनन्त कोट गुनी ज्यादे जानवी। जैसे परमधाम अरस की गिनती से, मूल कोसन पचास कोट जोजन का हुआ, लम्बा चौड़ा बराबर। परन्तु ए कोस कैसे हैं, के मूल प्रकृति और ईश्वर, और विस्नु वैकुण्ठ, के कोस, और मृतलोक के कोसों के, ए कोस मूल कारन हैं, और अधिष्ठाता है। परमधाम के जो एक कोस है, ता विषे मूल प्रकृति के कोटकोस बिलात हैं, और मूल प्रकृति के एक कोस में, ईश्वर के कोटकोस बिलात हैं। और ईश्वर को एक कोस में, विस्नु वैकुण्ठ के कोट कोस बिलात हैं। और विष्णु वैकुण्ठ के एक कोस विषे, मृतलोक मनुष्यों के, कोट कोस बिलात हैं। और ए चारहूँ विध के कोस, श्री परमधाम के एक कोस में बसत हैं। जैसे मृत लोक की रात्री, और स्वर्ग लोक की रात्री, और ब्रह्मा की रात्री, और नारायन की रात्री, ए चारहूँ रात्री, एक रास की रात्री के माहें बिराजी हैं। और उसके उदर में रहती हैं, इन विध सों ए चारहूँ ठौरन के, चार विध के जो कोस है, सो श्री अखण्ड परमधाम के, एक कोस में रहत हैं। तातें हे चतुर वचिक्षन हो, इसने श्री परमधाम की मरजाद और गिनती, पचास कोट कोस की करी और लिखी। सो पचास कोट कोस की गिनती इन कोसन करी है,

इन कोसन श्री परमधाम, पचास कोट कोस लिखा है, और गिना है। और सर्व गिनती निजधाम की इनहीं कोसन जानवी। मोहोल मन्दिर बाग बगीचे, सब इनहीं कोसन बिराजे हैं, परन्त गिनती सर्व ठौर अपने अपने माफक है। रंग भवन की, और चार हार हवेलियों की, और राँग की सब अपने अपने माफक है, तिन सब में से राँग की मोहोलाइत का विस्तार अपार है। एक पहल में चौदा कोट चालीस लक्ष हवेली हैं। उन एक हवेली में उतेक ही मोहोल आए हैं, और सर्व मोहोलों में से, एक मोहोल में, उतेक ही मन्दिर आए हैं। जितेक एक हवेली में मोहोल आए हैं, इन विध सें इत त्रिबिध मोहोलात आई है। और जहाँ बन सोभा लेत हैं, जहाँ जिन बिध को बन चाहिए, तहाँ ताही बिध को बन आयो है। और अनन्त बिध की सोभा, और खूबी हो रही है, और अनन्त कोट बिध के आनन्द के चमत्कार, और खेल तमासे, और अनन्त लीला क्रीड़ा के ठिकाने, और कै बिध के हुनर ख्यालात हैं। इन विध सों इन राँग की मोहोलाइत का, और अष्टहूँ समुद्रन को, जरे जरे तमासा देख के, और कै बिध को सुख लेके, सर्व रस सागर के टापू से, फेर रंग भवन को चले।

अब सागरन से रंग भवन को चले

तो सर्वरस सागर के टापू की चाँदनी से, भोमन भोमन उतरे, और बारा हजार भोम उतर के, समुद्र

की कुसादगीकी, बृद्धि में एक टापू अधिक, चारहूँ दरवाजों पाल के सामी, चार टापू आए हैं। उन टापू में होके, बारा हजार भोमें उतर के, तले दर-वाजे के आगे, रौंस पर आए खड़े भए। फेर वहाँ से भोम भर की सीढ़ी उतर के; चाँदनी चौक में होके, और माफक बन बगीचे मझियायके, जल किनारकी रौंस पर आए खड़े भए। पाल दिवाल के निपट बड़े दरवाजे के सामें, और इहाँ से सुन्दर नूर के जहाज पर चढ़के, सर्व समुद्र को मझियाए के, दोनों दिसकी जल और पाल मोहोलाइत की, अनन्त कोट सोभा देखते देखते, पच्छिम दिस की जल रौंस पर, जहाज से उतरे। और जल रौंस सें तीन सीढ़ी चढ़ के, बन की रौंस पर आए, और इहाँतें बड़ो दरवाजो, प्रगट सनमुख दिखाई देत है। और एक रौंस कमर भर ऊँची मध्य में रही, और दो रौंसें दोनों तरफ, कमर भर नीची, इन रौंस तें लेके, तो पाल दिवाल की भोम भर ऊँची रौंस तक, सीधी चली चली गई है। और भोम भर ऊँची रौंस के तले, रौंस से लगके, एक कमर भर ऊँची रौंस आई है, वह रौंस समुद्र के किनार सों चलके, इन रौंस में आए मिली है और इन रौंस के दाएँ बाएँ, कमर भर नीची दो रौंसें रही है, सो रौंसें सर्व बगीचों के आसपास आई हैं, और बीच की ऊँची रौंस बड़े दरवाजे के सामी आई है। सो अब बीच की रौंस पर होके चले, अरु दोनों तरफ के छे छे हजार बन बगीचे, चाँदनी चौक रहे। हरेक हवेली को बन, और चाँदनी चौक की हद्द, जुदी जुदी

सोभाएमान है, और बन बगीचों विषे, लाखन चेहे-बच्चे और नेहेरें बिराजमान हैं। और एक एक हवेली की हद्द में कोटन बिध के कोटन बृक्ष सोभाएमान हैं। सो ए सब तमासा देखते देखतें, चार लक्ष कोस जागा मझियाए के, भोम भर ऊँचा चबूतरा के तले पोहोंचे। और इहाँ से भोम भर की सीढ़ियाँ चढ़के, भोम भर ऊँची रौंस पर आए, और दरवाजे के आगे खड़े होए के, फेर मुरक के तरफ पूरव के नजर करी, तो यहाँ होके सर्ब जोगवाई, पेले पारलों की दिखाई देत हे। इहाँ होके दृष्टि टापुओं के, दोनों दरवाजे बेधके, अेले पेले पारकें, और पूर्ब की दूजी दिवाल के दोनों दरवाजे, अेले पेले पारकें बेधके, आगे चिद नूर की जो अपार जोत है, और उन जोत में अपार जो आनन्द है, और जोत ही की अनन्त अपार लीला क्रीड़ा सोभाएमान है। और अपार जो आनन्द के तमासे चमत्कार हुनर खयालात है, तिनको देखती है। और ज्योंकर हजूर दृष्ट आगल की वस्तु नैन देखती है, योंकर दोनों राँग पार की, जरे जरे सोभा दृष्टि रूह की, इहाँ होके देखती है। और दृष्टि पर आतम रूह की, और भी कही हुई, अकह को देखती है। सो कहिवेतर नाहीं आउत है। इन विध सों दृष्टि रूह की ने भीतर बाहेर, अखण्ड ब्रह्मांड निज-धाम का देखा। और सर्ब जोगवाई सर्बरस सागर की, नजारा करके, फेर तरफ चार हार हवेलियन के चले। और बढ़े दरवाजे मे होके, छे हजार हवेला मझियाय के, पहल के मध्य भाग में पोहोंचे, इहाँ

चार दरवाजे की चौकड़ी पड़ी है। और मानिन्द पुखराज के आकासी मोहोल के ऊपर, चाँदनी की जुक्ति आई है। जैसे कछू दरवाजे पचीस हवेली के आए हैं, और जैसी कछू जुक्ति मध्य की पचीसमी हवेली की आई है, अैसी ही जुक्ति दरवाजों की इहाँ आई है। और इन हवेली के ऊपर बारा हजारा खंड के ऊपर चाँदनी पै, एक हवेली को सितून मानिन्द आकासी मोहोल के आयो है। और चाँदनी के तीसरे हिस्सा में चौफेर चौखूंटे मोहोल, और बन आयो है। सो यह सर्व सोभा तले ऊपर की देख के, और छे हजार हवेली मझियाए के, चार हार हवेलियों दिस का जो बड़ा दरवाजा है, उन दरवाजे में आए खड़े हुए। और इन दरवाजे के आगे होके, नजर पसार के कुछ सोभा देखने लगे। तो प्रथम दाएँ बाएँ नजर करी, और देखा तो दोनों तरफ, बारा सै कोस की चौड़ी अपार बेसुमार रौंस दिखाई देत है। जिसी से भोम भर ऊँची, और दरपन से साफ, और कच्ची चाँदी से उज्जल सफेद रोसन है। और किनार पै कठेड़ा, हवेलियों के दरवाजे छोड़ के, और पीछे इन रौंस के, बारा हजार हवेलियों की कतार रोसन है। और हवेलियों का छाजा है, तिनने रौंस की किनार भर के छाया करी है। और दो हवेली की सन्ध में बेसुमार त्रिपोलियाँ दिखाई देत हैं, वार से पार लग, और पार से वार लग। और दो त्रिपोलियों की सन्ध में, आई जो हवेली है, तिनमें से एक हवेली बारा सै कोस, और पन्द्रा सै मन्दिर की लम्बी चौड़ी बराबर।

और ए चौफेर के छे हजार मन्दिर, अति बुलन्द कुसादे हैं। एक एक मन्दिर दस दस मन्दिर को लम्बो चौड़ो बराबर, और इनके भीतर मानिन्द रंग भवन के, एक हार छे हजार मन्दिरों की और है। और दो हार के बीच छे छे हजार की दोहारें थंभन की आई, और एक हार थंभन की भीतरी तरफ, तिन थंभ हार के भीतर, बारा बारा हजार मोहोलन की, बारा हजार हारें। और एक एक मोहोल में, बारा बारा हजार मन्दिरन की, बारा हजार हारें आई। और कहने को तो ए मंदिर छोटे हैं, परन्त ए मन्दिर मानिन्द मानिक पहाड़ के मन्दिरों के कुसादगी रखते हैं। बल्कि उनसे भी ज्यादे, और पेहेले जो मूल मन्दिर हैं, तिनको लेखो क्या है। अब इन हवेली के माहें अनन्त बन बगीचे हैं, और अनन्त नेहेरे चेहे-बच्चे फुहारे हैं, और अनन्त सेज हिड़ोले तखत हैं और अनंतन सुख नवल नवल दिखात हैं। जैसी एक हवेली, तैसी बत्तीसों हाँस की सर्व हवेली। अब हवेली के अन्दर की सोभा देख के, रूह बाहिर आई और बाहिर आए के, आगे आए जो चार लक्ष कोस के बन हैं, तिनको देखन लगी। तो चार लक्ष के ऊपर एक नेहेर आई है, उन नेहेर की मानिन्द श्री जमुना जी के, दोनों तरफ तीन तीन पालें हैं, और बीच में मानिन्द श्री जमुना जी के नेहेर चली जाती है। और इहाँ ए नेहेर अति छोटी नेहेरों में दाखिल है, और हवेली के आगे आयो जो बन है, तिन बनके दोनों तरफ, मानिन्द रौंस मजकूर के रौंस आई है।

दो रौंसें दाएँ बाएँ की कमर भर नीची, और एक मध्य की कमर भर ऊँची। और एक रौंस चाँदनी चौक से चली है, सो ए तीनहूँ रौंसें उस नेहेर मजकूर की पाल सों जाए लगी हैं। कमर भर नीची में कमर भर नीची, और कमर भर ऊँची में बीच की, कमर भर ऊँची जाय मिली। और ए जो तीन रौंसें कहीं, सो दो रौंसें दाएँ बाएँ की तो, त्रिपोलियन के सामें आई हैं, और एक मध्य की हवेली के दरवाजे के सामें आई है। और हरेक हवेली में पाँच पाँच सै मन्दिर, और चार चार सै कोस के तीन भाव दिखाई देत हैं, मानिन्द श्री धाम के। तो चार हार अति बुलन्द, और कुसादे बृक्षों की हवेली के दाएँ बाएँ आई, तिनमें तीन सन्धें आई, एक एक सन्ध चार चार सै कोस की, और पाँच सै मन्दिर की कुसादे। तिन दो हार के बीच में हजार चौक रौंसलों चले गए हैं, ऐसे रौंसलों दस ति तीन हजार चौक आए हैं। तिन में से दो बृक्ष की हार के बीच में, आए जो हजार चौक हैं, तिन चौकों के बृक्षों का हिसाब करत हैं। तो चार अति कुसादे बृक्षों के माहें, आयो जो एक चौक है, उन एक चौक के माहें, अढ़ाई अढ़ाई सै बृक्षों की, अढ़ाई सै हारें आई हैं। ताके एक चौक के साढ़े बासठ हजार बृक्ष भए ६२५००। और हजार चौक के छे कोट, और पचीस लाख बृक्ष भए ६२५०००००। अब एक हवेली के, अैसे बुलन्द कुसादे बृक्षों की चार हारें, और चार हार के चार हजार बृक्ष, और तीन हजार चौक हुए। तिन सर्व चौकों के बृक्ष, एक हवेली

के आगे के, चार लक्ष कोस भर लों के, अठारा कोट पचहत्तर लाख बृक्ष भए १८७५००००० । और बारों हजार हवेली के आगे के, बाईस खरब और पचास अरब बृक्ष भए २२५०००००००००० । ए तो एक हाँस के भए, अब बत्तीसों हाँस के बाहिरी दिस के सात नील और बीस खरब बृक्ष भए जमा ७२००००-००००००००० । और भीतरी दिस के बृक्ष सात नील और बीस खरब हुए ७२०००००००००००० । और राँग के बाहिरी दिस के चाँदनी चौकों के, और अष्ट-हूँ समुद्रों के चौफेर के, और अष्टहूँ जिमी के चौफेर के, चाँदनी चौकों के बृक्ष, अठ्ठाईस नील और असी खरब बृक्ष हुए, २८८००००००००००००० । इनमें से चाँदनी चौकों के बृक्ष घटत हैं । इन विध सों अत्यन्त कुसादे चार बृक्ष के चौक में साढ़े बासठ हजार चौक आए । और साढ़े बासठ हजार चौकों में से एक जो चौक है, इन एक चौक में छोटे छोटे बृक्षों के, अनेक चौक आए हैं । और इन बृक्षों में अनन्त कोट विधि के मेवे बिराजमान हैं जितेक इन ब्रह्मांड में मेवा हैं, और जिमीकन्द हैं, सो सब भी इहाँ बिराजमान हैं । और इन ब्रह्माण्ड में जो नहीं हैं, सो मेवा इहाँ बिराजमान हैं । अब एक चाँदनी चौक के बृक्ष, जो हर हवेली के आगे घटे हैं, सो एक चाँदनी चौक के बृक्ष, छे हजार सात सै चौबीस बृक्ष हुए ६७२४ । और सर्व चाँदनी चौक दोनों दिस बाहिर के, और अष्ट समुद्रों और अष्ट जिमी के, भीतर भीतर के चाँदनी चौक, पन्द्रा लाख छत्तीस

हजार हुए १५३६००० । तिन सबके बारा अरब और बारा कोट, और असी लाख और चौंसठ हजार बृक्ष घटे । १२१२८०६४००० ।

अब चार हार हवेली

अब आगे चार हार हवेलियों को रूह देखने लगी, जाके हवेली और त्रिपोलियाँ, कुछ सकड़ाहट लेके, एक एक हाँस के आए हैं। तो एक हवेली के आगे के बृक्ष, बारा हजार हाँस लों के कहत हैं। तो प्रथम एक हाँस के बृक्ष चौबीस हजार हुए २४०००। और बारा हजार हाँसलों के बृक्ष अट्ठाईस कोट, और अस्सी लाख बृक्ष भए जमा २८८००००००। और चौफेर के, बारा हजार हवेलियों के आगे के, बारा हजार हाँस लों के बृक्ष, एक अरब और पन्द्रा कोट, और बीस लाख बृक्ष हुए। ११५२००००००। एक हवेली के, जिस एक हवेली में बारा हजार हवेली हैं, तिन को अंक। अब उस एक हवेली के गिर्दवाय के, अष्ट बगीचा के बृक्ष आ गए। और ए तो एक हवेली के बृक्ष हुए, अब ऐसे एक हार हवेली के गिर्द, अष्ट बगीचा, तिन अष्टहूँ बगीचों के बृक्ष, छत्तीस अरब छयासी कोट चालीस लाख हुए ३६८६४०००००० । अब ऐसी चार हारें बत्तीस हवेलियों की, तिन चार हार हवेलियों के बगीचों के बृक्ष, एक खरब और सैंतालीस अरब, और पैंतालीस कोट, साठ लाख बृक्ष हुए १४७४५६०००००० । ऐसी बत्तीस बत्तीस हवेलियों की चार हारें, तिन चारहूँ हारों के बगीचों के, बृक्षों की गिनती हुई । और एक

बगीचा के बृक्ष, चौदा कोट चालीस लाख हुए, और एक हवेली के चौफेर अष्ट बगीचा, और एक दिस में दोए बगीचा, चार चारों दिसन में, और चार चारों कोनन में, और एक हवेली के बगीचों के बड़े बृक्ष, छोर किनार के दो, और बारा हजार हवेलियों के बगीचों के बृक्षों की, एक हार छोर के बृक्ष, चौबीस हजार हुए २४००० । और ए तो बृक्ष एक दिस के बगीचों की किनार के हुए, अब चौफेर के बगीचों की किनार के एक हार के बृक्ष, छयानब्बे हजार हुए ९६००० । और ए छयानब्बे हजार बृक्ष एक हवेली के हुए, और ऐसी बत्तीस हवेली, सो बत्तीसों हाँस के छोर की एक हार के बृक्षों की गिनती, तीस लाख और बहत्तर हजार हुए ३०७२००० । और सर्व हवेलियों चारों हारों के बगीचन की छोर किनार की एक हार के, एक कोट और बाईस लाख और अठासी हजार बृक्ष हुए जमा १२२८८००० । और ए जो बरनन भए, सो महा बुलन्द कुसादे बृक्षों का बरनन हुआ, और इन चार वृक्ष के चौक में, आई जो छोटे छोटे दो सै बृक्षों की दो सै हारें, सो ए बृक्ष अपरमपार, और बेसुमार हैं । इन विध सों बड़े दरवाजे के आगे खड़े होके, और नजर पसार के, चार हार हवेलियों तक की जोगवाई, भिन्न भिन्न कर देखी, और तरफ रंग भवन के चले । तो उन भोम भर ऊँचे चबूतरा से भोम भर की सीढ़ी उतर के, तले जो कमर भर ऊँची मध्य की रौंस है, उन रौंस पर पोहोंचे । और उन रौंस पर हो, चार लक्ष कोस को बन दाएँ बाएँ

देखते देखते, और अनन्त तमासे सुख सोभा रोसनी देखते देखते। महा नेहेर की बीच की पाल पर पोहोंचे।

महा नेहेर

उँहाँ से चल के, कमर भर नीची रौंस पर पोहोंचे, तहाँ से तीन सीढ़ी उतर के, तले जो चार लक्ष कोस को चौड़ो बन है, तिन बन को मझियाए के, आगे एक महा बुलन्द कुसादे जो नेहेर है। उन नेहर पर पोहोंचे, और इन नेहेर का महा बेसुमार बिस्तार है। ए नेहेर कैसी है, के चार हार हवेलियों के गिर्दवाय फिरी है। और पाँच नेहेर करके, सर्व हवेलियों को अपने माहें लिया है। और जेती नेहेरें हैं, तेतेई महा कुसादे चेहेबच्चा हैं, और यह नेहेर मानिन्द श्री जमुना जी के सोभित है, और चेहेबच्चे इन नेहेर के, मानिन्द हौज कौसर के बिराजित हैं। और नेहेर चेहेबच्चों के ऊपर सर्व बन, और मोहोल मन्दिर सोभाएमान हैं। और ए नेहेर और चेहेबच्चे, राँग के मुकाबिल रोसन हैं। राँग की हाँस की दिवाल, नेहेर के मुकाबिल आई है, और राँग के बुलन्द गुरज, इन नेहेर के चेहेबच्चों के मुकाबिल आए हैं। उन गुरजन के तले होके, नेहेरें समुद्र की इन चेहेबच्चन में आउत हैं। और इन चेहेबच्चों से चल के, सर्व धाम और परम धाम को परिक्रमा देत हैं। और यह सहित हवेलियों के, जो नव चौक हैं, अष्ट बगीचा, और एक बगीचा की मानिन्द, मध्य में

एक हवेली, सो दो कोट और चालीस लक्ष कोस को विस्तार रखते हैं। कुछ ऊपर पौन कोट को, एक बगीचा एक चौक, ऐसे तीन बगीचों का लम्बा चौड़ा बराबर। और बगीचों के बृक्ष तीन बिध के सोभित हैं; एके अत्यन्त ऊंचे, और एके मध्य भाग में हैं, और एके छोटे हैं। और हवेली की मोहोलाइत में पुन, तीन बिध की मोहोलाइत है, हवेली और मोहोल और मन्दिर, सो ए त्रिविध मोहोलाइत हवेली की; और त्रिबिध बृक्ष इन बन के दोरीबन्ध बराबर आए हैं, और अकह सब्दातीत सोभा हो रही है। और सर्व हवेलियों को चारों दिस बिषे, चार चाँदनी चौक बिराजमान हैं। और हाँस के तीसरे हिस्सा में, जो हवेली सोभाएमान है, इसी माफक हवेली विषे, कुल्ल जोगवाई सोभाएमान है। हर हवेली की जोग-बाई, टापू की जोगबाई के मुकाबिल होत है। अब इन रौंस तें, कमर भर ऊँची रौंस पर होके, हवेली के दरवाजे के सामे चले; सो मध्य की रौंस ही रौंस होके, दोनों तरफ मध्य के बगीचा की, सोभा देखते देखते, चाँदनी चौक में आए प्राप्त भए।

चांदनी चौक

फेर इन चाँदनी चौक से सीढ़ी चढ़ के, दरवाजे में आए के, पूर्व के दरवाजे से तरफ पछिम के दर-वाजे के चले। और सात कोट बीस लाख हवेली इस तरफ छोड़ी, और सात कोट बीस लाख हवेली उस तरफ छोड़ी, और मध्य में हो चल के, दूसरे

दरवाजे पच्छिम के जाय प्राप्त भए। और पच्छिम के दरवाजे सें आगे, भोम भर की सीढ़ी उतर के, सर्व चाँदनी चौक को मझियाए के, दूसरी नेहेर पर आए प्राप्त भए।

फेर दूसरी नेहेर से चल के पचहत्तर लाख कोस बन मझियाए के, दूसरी हवेली के पूर्व दिस के चाँदनी चौक विषे प्राप्त भए। उन चाँदनी चौक से भोम भर की सीढ़ी चढ़ के, अरु अगले मजकूर माफक हवेली दाएँ बाएँ छोड़ के, दूसरी हवेली के पच्छिम के दरवाजे में आए प्राप्त भए। और पच्छिम के दरवाजे सें, बारा हजार हाँस भर को बन, दाएँ बाएँ छोड़ के, तीसरी नेहेर पर आए प्राप्त भए।

और तीसरी नेहेर से चल के, फेर पचहत्तर लाख कोस को बन मझियाए के, तीसरी हवेली के पूर्व दिस के चाँदनी चौक में आए प्राप्त भए। और उन चाँदनी चौक से भोम भर की सीढ़ी चढ़ के, बड़े दरवाजे के दाएँ बाएँ, अगले मजकूर माफक जो हवेली हैं, तिन को छोड़ के, तीसरी हवेली के पच्छिम दिस के, दरवाजे विषे आए प्राप्त भए। उन दरवाजे से भोम भर की सीढ़ी उतर के, आगे चाँदनी चौक को मझियाए के, और दाएँ बाएँ को बन बारा बारा हजार हाँस को मझियाए के, फेर महा कुसादे नेहेर पर पोहोंचे।

और उन नेहेर से फेर पचहत्तर लाख कोस को बन मझियाए के, चौथी हवेली के पूर्व दिस के, चाँदनी

चौक में आए प्राप्त भए। और उन चाँदनी चौक से भोम भरे की सीढ़ियाँ चढ़ के, दरवाजे में आय के, आगे को चले। तहाँ सात कोट बीस लाख हवेली दाएँ, और सात कोट बीस लाख हवेली बाएँ छोड़ के, चौथी हवेली के पच्छिम के दरवाजे आए प्राप्त भए। और पच्छिम के दरवाजे से भोम भर की सीढ़ियाँ उतर के, और सर्व चाँदनी चौक मझियाए के, चाँदनी चौक की मध्य की मेहेराब में होके, रौंस ही रौंस पचहत्तर लाख, और बारा हजार हाँस को बन मझियाए के, पाँचमी नेहेर पर आए प्राप्त भए।

और पाँचमी जो नेहेर है, सो बारा सै कोस की लम्बी चौड़ी बराबर चार चार सै की दोनों पालें, और चार सौ की बीच की नेहेर, सो अनेक ठौरन पटी है। तिन पटी पर होके, धाम दिस की रौंस पर आए। और रौंस पर होके, सनमुख नजर कर देखा, तो एक कोट कोस के बन मोहोलन के आगे, और बन मोहोल की जोगवाई के माफक, जोगवाई लेके महाबन अपरमपार सोभाएमान है। और कोटन बृक्षन की कोटन हारें बिराजमान हैं, और ए ही बृक्ष बन मोहोलों के हैं। और सम्पूर्ण बृक्ष महाबन के बन मोहोलों के बृक्षों से मिले हैं, और बृक्षों से बृक्ष दोरी-बन्ध सूत्रधारा से आए हैं। और तले रौंसों से रौंसें मिली हैं। और कोटन नेहेरें और चेहेबच्चा और फुहारे उछलत हैं, और अति कुसादे चार बृक्ष के मध्य में, अनेकन बगीचा और छोटे छोटे अनन्त बिध

के बृक्ष आए हैं। और अनन्त बिध के फूलन की फूलबरियाँ आई हैं। और अनन्त बिध के जिमीकन्द, और अनन्त बिध के फल फूल सोभाएमान हैं। और इन महाबन की चार भोम पाँचमी चाँदनी है, और एक एक भोम में, बारा हजार भोमें, अैसी चार भोमें आई हैं। और यह महाबन सर्व धाम और परमधाम को गिर्द फिर आयो है।

और इनके आगे मधुबन बड़ोबन जो आयो है

सो भी सर्व धाम और परम धाम को गिर्द फिर आए हैं। और मधुबन की दोए भोम तीसरी चाँदनी, तिनके आगे बड़ोबन है, ताकी एक भोम दूसरी चाँदनी, अैपर एक एक भोम में, बारा बारा हजार भोमें आई हैं। और तले बृक्षन के बीच में, अनेक बृक्ष आए हैं। और अनन्त विध की अनन्त जोगवाई परिपूर्ण है। और एह महाबन, एक कोट और कुछ ऊपर, तेतीस लाख कोस की चौड़ाई रखता है। और मधुबन कुछ ऊपर, छयासठ लाख कोस की चौड़ाई रखता है। और बड़ोबन कुछ ऊपर, तेतीस लाख कोस की चौड़ाई रखता है। और महाबन की पूर्व की किनार से लेके, तो बड़े बन की पछिम की किनार तक दो कोट सैंतीस लाख कोस जागा होत है।

इन आगे जवेरों के मोहोल रोसन हैं

अब उनहीं रौंस पर होके, ए सम्पूर्न जवेरों के मोहोल तक का नजारा करके, फेर उन रौंस मजकूर से चल के, जो रौंस के चले आए मार्ग के सनमुख है,

और अक्षर के धाम के सनमुख है, ऐसो जो महाबन के बीच में मध्य मार्ग है, उन मध्य मार्ग से होके चले और दोनों तरफ महाबन के बृक्ष बगीचों की, सोभा देखते देखते, सर्व महाबन तीनहूँ हिस्सा मझियाए के और आगे दो हिस्सा भर मधुबन को मझियाए के, फेर आगे एक हिस्सा भर बड़े बन को मझियाए के, जवेरों के मोहोलों के नजदीक पोहोंचे, और चार पहल के मोहोल में आए। और जितेक चार पहल के मोहोल दाएँ रहे उतेक ही चौपहलू मोहोल बाँए रहे, और एक चार पोहोल के मोहोल के आसपास, चौफेर बन बगीचे बिराजमान हैं। और बन बगीचों के आसपास गेर के, एक नेहेर सोभाएमान है और चारहूँ खूँटों चार बुलंद कुसादे चेहेबच्चे, और दो चेहेबच्चों के मध्य भाग में, नेहेर पटी, और पटी पर चौक चबूतरा, और किनार पै कठेड़ा, और चौक के पूर्व और कै ठौर से सीढ़ी चढ़ी हैं। और पछिम दिस को उतरी हैं, और इनहीं सीढ़ियों के सामी छोरलों के मोहोल लों, सीढ़ियाँ आउत गईं हैं। और इनहीं सीढ़ियों के सामी पिछली तरफ, सर्वरस के दरवाजे लों, एक सूत्र चलो गयो है, और साम सामी रौंसन मे सीढ़ियाँ आई हैं। और पच्छिम दिस विषे, फूल वाग के ठौर लों, इनहीं सीढ़ियों के सामी, रौंसन में सीढ़ियाँ चली गई हैं। अब बड़े बन की रौंस से उतर के, और एक हाँस भर चल के, जवेरों के मोहोल में प्रथम चार पहल को जो मोहोल है, जिसका आगे मजकूर हो गया है, उस चार पहल के मोहोल की

प्रथम रौंस पर चढ़ उतर के, और आगे मोहोल तक को बन मझियाए के, फेर भोम भरे को ऊँचो मोहोल को चबूतरा चढ़के, इस दरवाजे से चढ़के, उस दर-वाजे हो निकसके, फेर भोम भरे की सीढ़ी उतर के और आगे को बन मझियाए के, दूजी रौंस पर पोहोंचे। उस दूजी रौंस पै चढ़ उतर के, आठ पहल के मोहोल की प्रथम रौंस पर पोहोंचे। और नेहेर की रौंस पर होके, दाएँ बाएँ के बन का नजारा करते, मोहोल के भोम भर ऊँचे चबूतरा पर चढ़े। और आठ पहल के मोहोल के मध्य में होके, फेर भोम भर की सीढ़ी उतर के, और नेहेर की रौंस पर होके, फेर पच्छिम की नेहेर रौंस पर प्राप्त भए। और इसी बजेसे दो बन और दो नेहेर, और मध्य मोहोल सोरा पहल के मोहोल को नाखे। फेर इसी तरह से दो बन और दो नेहेर और मध्य मोहोल बत्तीस पहल के मोहोल को नाख के, फेर इसी तरह सें, दो बन और दो नेहेर, और मध्य मोहोल चौसठ पहल के मोहोल को उलंघ के, फेर इसी बजेसे बत्तीस पहल का मोहोल, और इसी बजेसे सोरा पहल का मोहोल नाख्या, और इसी बजेसे आठ पहल का मोहोल नाख्या। और इसी बजेसे चार पहल का मोहोल नाख्या, और हरेक मोहोल का बिस्तार सहित बनों के पचास हजार कोस का नाख्या। ऐसे ऐसे अष्ट मोहोल नाख के, नवमा चार पोहोल का मोहोल नाख के, पच्छिम की रौंस नेहेर पर, धाम के पूर्व के दरवाजे के सामी आए खड़े भए। धाम दरवाजे आगे

मानिन्द श्री धाम के बन और चाँदनी चौक रोसन है। और जो जुक्ति के पश्छिम के दरवाजे, मंदिर हाँस देहेलान दरवाजे की आई है, सोई जुक्ति इहाँ तीनहूँ दिसन में आई है। अब चार पहल के मोहोल की, पच्छिम की जल रौंस से उतर के, और सामी चार लक्ष कोस में, कुँज बन को मझियाए के कमर भर ऊँची रौंसही रौंस होके, अक्षर ब्रह्म के पूर्व के चाँदनी चौक के किनारे आए पोहोंचे। और चाँदनी चौक के तीनों तरफ, कमर भर ऊँची रौंस फिरी है। और वह रौंस भोम भर ऊँची रौंस सें लग के, धाम के गिर्द फिर आई है। सो उन रौंस पर होके, चाँदनी चौक की पूर्व की रौंस से चल के, दछिन की रौंस पर होके, भोम भर ऊँची रौंस से लग के, कमर भर ऊँची रौंस है, उन रौंस पर जाए प्राप्त भए, अब उन रौंस ही रौंस पर होके, अग्नि कोने के चेहेबच्चा पर आए पोहोंचे। और चेहेबच्चा को दाहिनी तरफदेके, उनही ही रौंस पर होके, दच्छिन दिस की चाँदनी चौक की कमर भर ऊँची रौंस पर होके, जो तीनहूं तरफ फिरी है, सो तीनहूँ रौंसन पर होके, पूर्व और दच्छिन और पच्छिम की रौंस पर होके, फेर ऊँची रौंस के तले आए, और इहाँ ते रौंस ही रौंस होके, नैरित्य कोने के चेहेबच्चा के तले पोहोंचे। और इन चेहे-बच्चे के दाँहिने होके, तीन दिस की परिक्रमा करके अग्नि नैरित्य और बायव्य कोने की; फेर रौंस ही

रौंस होके, एक हाथ दाँहिने से, भोम भर ऊँची रौंस को उदर परस करत, चाँदनी चौक की दक्षिन की रौंस पर पोहोंचे। और दच्छिन की रौंस तें चल के, चाँदनी चौक के नैरित्य कोने पर हो, पच्छिम की रौंस के मध्य स्थल में पोहोंचे। और इहाँ टुक खड़े होके, चारहूँ दिस का नजारा किया।

जो पीछे फिर के देखिए, तो अक्षर ब्रह्म का दरवाजा, दस भोम लों जगमगात है। और पन्द्रा सै मन्दिर पर नौ भोमें झिलमिलात हैं। और दसमी चाँदनी पर गुमट, और कलस और बैरखें फहरात हैं, और दाएँ बाएँ अमृत बन रोसन है। और अमृत बन के मध्य भाग में, श्री परमधाम की दिस को, मध्य चाँदनी चौक से एक रौंस चली है। सो रौंस कमर भर ऊँची, अक्षर के चाँदनी चौक से चल के, श्री जमुना जी की कमर भर ऊँची जो बनदिस की रौंस है, यह रौंस उस रौंस में जाए मिली है। अब इन रौंस ही रौंस पर होके चले, सो अक्षर के अमृत बन की सोभा देखते देखते, श्री जमुना जी की रौंस ढिग आए पोहोंचे। और रौंस पर होके बीच की पाल के किनारे आए। और किनार से तीन सीढ़ी चढ़ के, सर्व बीच की पाल मझियाए के, फेर बीच की पाल से तीन सीढ़ी उतर के, जल दिस की रौंस पर आए। उन रौंस से चल के, रौंस के किनारे जो अक्षर ब्रह्म का पाट घाट है, उन पाट के घाट पर आए के प्राप्त भए। और इन पाट के घाट की बारा मेहेराबें, तिन

बारा मेहेराब में से, पच्छिम की जो मेहेराब है, जो मेहेराब अक्षरातीत के पाट घाट में, मानिक की मेहे-राब के सामें आई है, उन मेहेराब में खड़े होके, तरफ अपने पाट घाट के नजर की। और इहाँतें इच्छा रूपी नाउ पर चढ़ के, ततखिन अपने पाट घाट पर प्राप्त भए। और अपने पाट घाट से चल के, और रौंस को मझियाए के, तीन सीढ़ी चढ़ के, बीच की पाल पर पोहोंचे। और बीच की पाल की किनार से, निपट मध्य में होके चले। बड़ेबन के बृक्ष किनार पै आए हैं। सो एक मेहेराब छोड़ के, चार मेहेराबें दाएँ रही, और चार मेहेराब बाएँ रही, और मध्य की मेहेराब में, चार बृक्ष के माहें चौक आयो। उन चौक में चौबीस चौबीस बृक्षन की, चौबीस हारें आई हैं। तिन विषे दाएँ बाएँ की दो मेहेराब समेत, पचीस पचीस मेहेराबन की पचीस हारें आई हैं। तिन में से बारा मेहेराबें छोटे बृक्षन की इस तरफ रही, और बारा मेहेराबें उस तरफ रहीं, और मध्य की पचीसमी मेहेराब बीच में रही है, उन बीच की मेहेराब में होके, तरफ रौंस के चले। सो प्रथम पचीस मन्दिर के चौड़े चौक को नाखो, फेर चार चौक बृक्षन के मझियाए के आगे चले। और फेर पचीस मन्दिर को चौड़ो छठमो चौक को मझियाए के, बीच की पाल की किनार पे पोहोंचे। और उस किनार से तीन सीढ़ी उतर के, बन की रौंस पर पोहोंचे। और सम्पूर्न रौंस को मझियाए के, इसी

रौंस के किनारे पोहोंचे । जहाँ तें एक चबूतरा कमर भर ऊँचो, और दो मन्दिर को चौड़ो चलो है, सो इन रौंस तें चल के, श्री निजधाम के आगे चाँदनी चौक जो आयो है, और उन चाँदनी चौक के तीन तरफ, कमर भर ऊँची रौंस आई है । उत्तर दच्छिन और पूर्व दिस को, सो श्री जमुना जी की रौंस जो बन दिस की है, उन रौंस तें, दो मन्दिर की चौड़ी एक रौंस चली है, और चल के चार लक्ष कोस पै, आयो जो चाँदनी चौक है, उन चाँदनी चौक की रौंस पूर्व की के विषे यह रौंस आय मिली है । और चार लाख कोस लों एक साफ सूधी सड़क चली गई है, इन सड़क के मूल विषे, रूह आए के खड़ी हुई । और खड़ी होके, कुछ इसका जाहिर बातून हिसाब किया चाहती है । सो हिसाब करके, रूह रंग महल में जो मूल मिलावा है, उन मूल मिलावे को चलेगी ।

हिसाब जाहिर बातून

तो हे चतुर विचिक्षन जी, इस नादान तुनक जरफान ने, राँग की मोहोलाइत को, अरस के हिसाब से बयान लिखा है । और आगे धाम को जो बरनन होए आयो है, उनमें अरस के हिसाब का कुछ जिकर नहीं आया है, और हैं सर्व धाम के बन मोहोल मन्दिर बीच हिसाब अरस के । तातें यह गुनेहेगार माफक अकल अपनी के, कुछ कोटांसा इसारत करत है । चतुर विचिक्षन श्री प्राननाथ के मोमिन, कोट गुनी समझ लेएंगे । जैसे नादान बालक की बात,

बुजुर्ग दाना पूरी समझ लेता है, जो बात के वह नादान अधूरी केहेता है, इन बिधसों आप समझ लेवी। और इसने सर्वधाम के मोहोल मन्दिर, अरस के हिसाब से, इस तरह से मुकर्रर करे हैं, के बीच बिरतों के लिखा है, और जुबाँन सुन्दर साथ की सें मजकूर है, के श्री रंगभवन के माहें, जो परवाली रंग मन्दिर है, उन परवाली रंग मन्दिर से, श्री जमुनाजी के मध्य भागलों, साढ़े चार लक्ष कोस जागा होत है। फेर परवाली रंग मन्दिर से, पच्छिम दिस को दूब दुलीचा की किनारलों, साढ़े चार लक्ष कोस जागा होत है। और परवाली रंग मन्दिर से, दच्छिन दिस विषे हौज कौसर लों, साढ़े चार लक्ष कोस जागा होत है। और उत्तर दिस विषे रंग भवन के परवाली रंग मन्दिर से लेके, तो पुखराज के मध्य भागलों, साढ़े चार लक्ष कोस जागा होत है। और रंग भवन तें लेके, तो अक्षर के धामलों, नौ लक्ष कोस जागा होत है। और श्री जमुना जी के पाल की, तीन दिवालें होती हैं, एक उत्तर की दिवाल साढ़े चार लक्ष कोस की, और दूजी दच्छिन की दिवाल, साढ़े चार लक्ष कोस की लम्बी, और इन दोऊ दिवालन के बीच में, तीजी पूर्व दिवाल है, सो दिवाल नौ लक्ष कोस की लम्बी, उत्तर की दिवाल से लेके, तो दच्छिन की दिवाल लों, नौ लक्ष कोस को फरक सोभाएमान है। तो इहाँ एक अति भारी संसे होत है, के नौ लक्ष कोस का हिसाब, इहाँ कुछ भी नहीं होता है। किन बिध सों, सो जिन बिध सों संसय होत है, सो बिध

कहत हैं। के घाट सप्तहूँ और दोनों पुल, श्रीमुख बानी में और दास बानी में, पाँच पाँच सै मन्दिर के चौड़े फुरमाए हैं। और आगे केल घाट के पाँच सै मन्दिर को चौड़ो, मधुवन फुरमायो है। जो मधुबन केल पुल के मुकाबिल आयो है, और आगे मधुबन और पुल के, पाँच सै मन्दिर को चौड़ो दास बानी में महाबन फुरमायो है। जिसको श्रीमुख बानी में, लम्बा बन कर कहो है। इन महाबन के पेड़ों के आगे, अढ़ाई सै मन्दिर भर जागा पड़ी है, तिन में अति सुन्दर और अति मीठी नूर की रेतड़ी पड़ी है। तिन रेतड़ी के आगे, सुन्दर श्री जमुना जी की बन दिसकी रौंस सोभाएमान है। सो रौंस साढ़े सात सै मन्दिर की चौड़ी बिराजमान है। और इन रौंस के आगे तीन सीढ़ी ऊँची, बीच की अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ी पाल है। और बीच की पाल से तीन सीढ़ी नीचे, अढ़ाई सौ मन्दिर की चौड़ी जल दिस की रौंस है। और इन रौंस की किनार सें, श्री जमुना जी पेली किनार तक, पाँच सै मन्दिर को चौड़ो जमुनाजी को पाट ठेहेरत है। और श्री जमुनाजी के मध्य भाग लों, अढ़ाई सै मन्दिर जागा होत है। तो अब पाट घाटसों लेके, तो श्री जमुनाजी के मध्य भागलों, साढ़े चार हजार मन्दिर भर जागा होत है। अढ़ाई सै मन्दिर भर आधे पाट घाट से अमृतबन लयो, और तीन घाट अनार और लिबोई और केल, पन्द्रा सै मन्दिर भर ए लए। और मधुबन और महाबन, एक हजार मन्दिर भर ए लए, तीन घाट और मधु-

बन और महाबन, ए पचीस सै मन्दिर भर हुए। और एक हजार मन्दिर की चौड़ी, जमुना जी की रौंस और बीच की पाल हुई। और अढ़ाई सै मन्दिर की चौड़ी, रौंस के तले रेतड़ी, और अढ़ाई सै की जल दिस की रौंस, ताके ए सब चार हजार मन्दिर हुए। और अढ़ाई सै मन्दिर भर अमृत बन लयो, और अढ़ाई सै मन्दिर भर आधी दूरलों, श्री जमुना जी को जल लयो, इन विध सों आधे अमृतबन सें लेके; तो आधी जमुना जी लों, पैंतालीस सै मन्दिर भर जागा होत है। और याही विधि सों दच्छिन दिस विषे, इतेकही मन्दिर भर जागा होत है। साढ़े बाईस सै मन्दिर भर जागा बट के पुललों हुई। आधे कुँजबन लों, और पाँच सै मन्दिर भर आगे कुँजबन और लयो। और अढ़ाई सै मन्दिर भर जमुना जी के किनारे रेतड़ी हुई। और हजार मन्दिर भर श्री जमुना जी की दोनों पाले हुई। बन की रौंस और बीच की पाल, और अढ़ाई सै मन्दिर भर जल दिस की रौंस हुई, और अढ़ाई सै मन्दिर भर जागा, आधी जमुना जी लों हुई। इन विध सों आधे पाट घाट से लेके, तो आधी जमुना जी लों, पैंतालीस सै मन्दिर भर जागा हुई। और रंग भवनतें लेके, तो दूब दुलीचा ताँई, पन्द्रा ती पैंतालीस सै मन्दिर भर जागा हुई। और इतेक ही मन्दिर भर जागा, इत रंग भवन तें लेके, पूर्व दिस विषे श्री जमुना जी लों होत है। एक हजार मन्दिर रंग भवन के लए, और बाईस सै मन्दिर में बीच को बन लयो। और पन्द्रा सै मन्दिर

में बन की रौंसतें लेके, आधी जमुना जी हुई। तो अब बिचार किया चाहिए, के इस उत्तर की दिवाल से, तो दच्छिन की दिवाल तक, नौलक्ष कोस जागा जो कही है, सो किन विध हुई, इस दिवाल से तो उस दिवाल तक, एतो नौही हजार मन्दिर भर जागा होत है। और आधे अमृत बन से लेके, तो आधे जमुना जल लों, पैंतालीस सै मन्दिर भर जागा होत है। और पैंतालीस सै मन्दिर के, पैंतालीस कोस होत है। और नब्बे सौ मन्दिर के जो बहुत हुए, तो नब्बे ही कोस हुए। अैपर नौ लक्ष कोस जो जागा फुरमाई है, सो कहाँ गई, ए तो साढ़े चार लक्ष कोस जागा में तें, इहाँ पैंतालीस सै कोस जागा होत है। और जो कोई यह कहै, के ए सब जागा महाबन में हुई, तो एह बीसहूँ बिसे निश्चय करके नहीं हो सकती है। के महाबन मधुबन से दो हिस्सा से ज्यादे होवे, कछू मधुबन सें ज्यादे, सौ दो सौ हिस्सा निश्चय करके नहीं हो सकता है। और इन मधुबन और महाबन के सिराने बीच की पाल पर, एक मोहोल और एक चबूतरा केल के पुल लों चले गए हैं। और सात घाट बीच में आए हैं, और फेर.बट के पुल तें लेके, तो अग्नि कोने के मरोर तक, एक मोहोल और एक चबूतरा चले गए हैं। और जो निमूना के प्रानन के नाथ ने, निज हाथों करके लिखे हैं, और निज नजर करके लिखवाए हैं। तिन निमूनों की नकल की नकलें चली आउती हैं, तिन नकल निमूनों में, दो हिस्सा लम्बे तो सात घाट लिखे जात हैं, और सात घाट से

अधिआउ, दोऊ दिस के एक मोहोल एक चबूतरा लिखे जात है। कुछ सात घाट से एक मोहोल एक चबूतरा, दूने चौगुने दस बीस गुने नहीं लिखे जात हैं बल्कि सात घाट से अधिआउ लिखे जात हैं। और जो कोई महाबन को सौ कोस कम, साढ़े चार लक्ष कोस बतावत हैं, उनके लेखे से एक मोहोल एक चबूतरा सात घाट से हजार गुने ज्यादे चाहिए। बल्कि पैंतालीस कोस में, मध्य में सात घाट और पुल रहे, और बाकी नौ लक्ष कोस में, एक मोहोल एक चबूतरा ही ठेहेरे। तो ऐसी बेमौके और बेस-लूकी की जुक्ति, निजधाम में लाखहूँ बिसों नहीं हो सकती है। तातें फुरमाया हुआ सुन्दर साथ जी का, अचल अखण्ड है, जो बिरत में फुरमाया है। के मधुबन की चौड़ाई, सोरा हाँस और बीस मन्दिर की परवान है। और मधुबन के परे जो महाबन है, तिन महाबन की चौड़ाई, सोरा हाँस और बीस मन्दिर भर परवान है। और इनहीं दो बन के बराबर दच्छिन दिस विषे बट घाट के आगे कुंजबन आयो है। तातें पाट के घाट की बीच की मेहेराब से लेके, तो आधी जमुना जी सों पैंतालीस सै मन्दिर भर जागा अचल अटल है। और इस दिवाल से लेके, तो उस दिवाल की आधी जमुना तक, नौ हजार मन्दिर भर जागा अलच अटल है। और इसी वजे से रंग भवन से लेके, पूर्व दिस की आधी जमुना लों, पैंतालीस सै मन्दिर भर जागा अचल अटल है। और रंग भवन तें लेके पच्छिम दिस विषे, दूब दुलीचा की

किनार लों, पैंतालीस सै मन्दिर भर जागा, अचल अटल है। और जो ए इन विध जागा अचल अटल है, तो नव लक्ष कोस अथवा साढ़े चार लक्ष कोस को, संसय मोटा है, और पुष्ट । और था तो यह संसय रूपी मृग अत्यन्त मोटा, और पुष्ट और अछेद्य, अैपर श्री प्रानन के नाथ ने, इसको सो भी छेदा है। और सक सुबह रूपी कागको, आतम रूपी बृक्ष से उड़ाए मारा है। तो स्यामा जी के भरतार ने, और इन्द्रावती के प्रान आधार ने, इन विधसों समाधान किया है, और सान्त सुख दिया है। के एह जो संपूर्ण मन्दिरों का हिसाब बाँधा है, और रंग भवन के मन्दिरों का हिसाब बाँधा है। सोए सम्पूर्ण हिसाब अरस के हिसाब से बाँध्या है, और इहाँ गिनती सोभी अरसै की रखी है। सो इन विध सों होत है, और सर्व जुक्ति इन विधसों दुरस्त आती है। के इहाँ जो मन्दिर हैं, सो एक एक मन्दिर सौ सौ कोस को लम्बो चौड़ो सोभाएमान है। और एक एक कोस को, एक एक हाथ सोभाएमान है, और पाँच पाँच सै मन्दिर को जो एक हाँस और एक घाट है, सो एक एक घाट और हाँस पचास हजार कोस को चौड़ो बिराजमान है। और दो हाँस को एक लक्ष कोस होत है, इन विधसों पैंतालीस सै मन्दिर के, साढ़े चार लक्ष कोस होत हैं। और इन विधसों उत्तर की दिवाल सें लेके, तो दच्छिन की दिवाल लों, जो अठारा हाँस हैं तिनके नौ लक्ष कोस भए। और आधे अमृत बन से लेके, तो आधी जमुना लों जो नौ हाँस हुए हैं; तिनके

साढ़े चार लक्ष कोस हुए। और याही विध सों रंग भवन सें, उत्तर में पुखराज, और दक्षिन में हौज कौसर, और पच्छिम में फूल बाग, और अन्न बन और दूब दुलीचा लों, जो पैंतालीस सै मन्दिर पै ठेहे-रत है, सो इनहीं विधसों साढ़े चार लक्ष कोस पर ठेहेरत है। और एही जुक्ति से रंग भवन छे लाख कोस की गिर्द, और दो लाख कोस को लम्बो चौड़ो ठेहेरत है। तबहीं श्री प्रान जीवन ने, रंग भवन को मानिक पहाड़, और हौज कौसर और पुखराज के सूत्र में गिना है। तातें इन रंग भवन की, इन गंजानगंज मन्दिरन करके, अत्यन्त कुसादे विस्तार ठेहेरत है। अगर कोई एह कहै, के मन्दिरनकी जब सौ सौ कोस की ऊँचाई, और मेहेराबों का विस्तार हुआ, तब किसोर सरूपों ने तिनमें कैसी सोभा पाई? कुछ गैर सलूकी तो जाहिर नहीं होती है, तिस-का मायना यह है, के मन्दिर और मेहेराब और मन्दिरन की भोमें, सर्व सलूकन करके पूर्ण हैं। और जिन बिध में सब्दातीत सोभा होवे, इत जरे जरे मोहोलात में, वही विध सोभाएमान है। और मन्दिर भोम मेहेराब की, ऊँचाई निचाई बहुत सूक्ष्म दिखाई देत है। जैसी कछू किसोर सरूप में अपार सोभा लेवे, और जो सखी उसकी सोभा में और बातून गुनों में, और अनन्त अपार हुनर, और तमासे, और ख्यालातों में पड़े, तो निश्चै करके, सौ कोस का विस्तार पावै। और जाहिर में कोट सलूकी लिए हुए, अति सूक्ष्म दिखाई

देत हैं, माफक फुरमाइस श्री प्राननाथ के, सोभाए-मान हैं। और सर्व मोहोल मन्दिर और बन बगीचे, श्रीराजजी के चित्त चाहे वर्तमान हैं, और चित्त चाहे सोभाएमान हैं। और ऊँचाई निचाई और सकड़ाई कुसादगी, माफक चित्त पूरन ब्रह्म के धरे हैं। और मोहोल मन्दिर बन बगीचे, और पाँच तत्व को आदि दे के, सर्व अनु अनु मात्र जो चीज है, सो सम्पूर्न चीज श्रीराज जी के चित्त चाही मूर्ति धरे हैं, और श्रीराजजी के चित्त चाहे बर्तमान हैं। ज्योंकर बन्दा हुकमी अन्तरजामी, अन्तर की जानके बरते, इन विध सर्व चीज और सर्व रुतें, माफक चित्त श्रीराजजी के वर्तमान हैं। और सर्व चीज अनु अनु मात्र जो है, सो मानिन्द सखी के आसिक है। अरु ऊपरतें थिर रूप माफक चित्त श्रीराजजी के धरे हैं, और अन्तरगत स्वयं चैतन्य हैं, मानिन्द सखी के आसिक हैं। और अष्ट पहर चौंसठ घड़ी मानिन्द आसिक के, श्रीराज के चित्त के माफक बर्तत हैं, और चित्त के आगे चलत हैं। और यह सम्पूर्ण ख्यालात विलोक के और अति सूक्ष्म अरस हिसाब की ग्रन्थी, जो श्रीराजजी ने खोली है, ताको देख के रूह इहाँथें अब रंग भवन को चली।

रंग भवन

जो रौंस के श्री जमुनाजी की कमर भर ऊँची रौंसतें चलके, चाँदनी चौक की पूर्व रौंस को लगी है, उस रौंस के ऊपर हो चले, और खट दिसकी सोभा देख चले। तहाँ पीछे जो देखिए, तो श्री जमुनाजी की बीच की पाल पर, पाँच हारें बड़े बनके बृक्षों की सोभाएमान हैं। और दो हारें बड़े बनकी,

बट और पीपल के बृक्षों की बन की रौंस पर सोभाएमान हैं। सो ऐसी दिखाई देत हैं, जैसे पाँच नंग की मोहोलाइत, पाँच खण्ड की अनन्त रंगन के नंग जड़के बनाइए । और जो दाँहिनी तरफ नजर कीजे, तो श्री जमुनाजी की उत्तर की पाल तक, अपार पेड़नकी कतारें एक सूत्र दिखाई देत हैं। और तीन घाट के परे, मधुबन और महाबन के बृक्षों की कतारें दिखाई देती हैं। और आगे पाल पे चार थंभों की हार पर, दोनों पालों पर देहुरिन की हारें दिखाई देत हैं। और बाँई तरफ श्री जमुनाजी की पाल तक, दो दो मन्दिर के अन्तर सों, लाखन पेड़ एक सूत्र दोरीबन्ध बराबर दिखाई देत हैं। और इन पेड़न की हार कतारके परे, श्री जमुनाजी की दोनों पालों पर, देहुरिन की हारें दिखाई देत हैं। और सामें एक सड़क मानिन्द सफेद दूध के, और मानिन्द अस्फटिक वर्ण के, दो मन्दिर की चौड़ी रौंस, चाँदनी चौक लों चली गई है। इन रौंस चबूतरा के दोनों तरफ किनार पर कठेड़ा, और कै ठौरों किनार से बगीचन में, दोनों तरफ सीढ़ियाँ उतरी हैं, तहाँ कठेड़ा नहीं है। और इन रौंस के दोनों किनारे, अमृत के बृक्ष सोभाएमान हैं, और बीच-बीच में कै बिध के बृक्ष बिराजमान हैं। और सामी चाँदनी चौक और सीढ़ियाँ, और दरवाजो दिखाई देत है, और ऊपर एक छत्री हो रही है। चार पेड़ के बीच में अनन्त रंगों के नंग जड़ के, मानो हरे रंग का एक चन्द्रवा तानो है। ऐसे कोट चन्द्रवा कोटन रंगों के जुदे जुदे

दिखाई देत है। और श्री जमुनाजी तें लेके, दाएँ बाएँ के सप्त घाट लेके, श्री रंग भवन की बड़ी भोम भर ऊँची रौंसलों, चित्र विचित्र बहुरंगन को, एक चंद्रवा तनो है। और अनन्त कोट सोभा हो रही है, सो अनन्त कोट सोभा देखते देखते, चार लक्ष कोस बन मझियाए के, चाँदनी चौक की पूर्व की रौंस पर आए प्राप्त भए। और छिनमात्र उन रौंस पर खड़े होके, चाँदनी चौक के दोनों बृक्ष, और दोनों चबूतरा की अनन्त खूबी देख के, और दो चबूतरा के मध्य में सवा मन्दिर इस तरफ रहे, और सवा मन्दिर उस तरफ रहे, बल्कि सोरा मन्दिर इस तरफ रहे और सोरा मन्दिर उस तरफ रहे, और दो चबूतरों की सन्ध में, रेतड़ी में आयो जो दो मन्दिर को चौड़ो सीढ़ियों के सामी मार्ग को जो भाव है, उन मार्ग होके सर्व चाँदनी चौक को मझियाए के, सीढ़ियों के आगे आए के प्राप्त भए। और कै कोट विध की सीढ़ियों की और परकोटा की, और काँगरिन की, सोभा देख देख के, अति महा आनन्द में जरे जरे सोभा देख देख के, सीढ़ियाँ चढ़ चले। सो सीढ़ियाँ कैसी हैं, के महा अद्भुत सोभा को धरे हैं, और हरेक सीढ़ी मानिन्द गलीचे के जगमगात है। और अपार नकस कटाव चित्रामन, और नंग रंग करके जुक्ति है, और पाँच सीढ़ी चढ़के चाँदे पर आए। सीढ़ी एक हस्त की चौड़ी, और दो मन्दिर की लम्बी, और चाँदो पाँच सीढ़ी भर चौड़ो, और दो मन्दिर को लम्बो, या बिध की सौ सीढ़ी और बीस चाँदे हुए। सो सौ

सीढ़ी और बीस चाँदे चढ़के, दो मन्दिर की चौड़ी जो मेहेराब है, ताके तले होके बीच को जो चौक है, ता विषे आए के प्राप्त भए, और इहाँ खड़े होके, तरफ मूल मिलावे के नजर करी। तहाँ पूरन ब्रह्म अक्षरातीत को, और जुगल जीवन को देखे, और रूह ने सर्व अंगन से सेजदा किया। और अक्षरातीत के मुखारबिन्द की नूर की धारा चली, तिनने रूह को तलातल किया। और मुखारबिन्द के नूर के जल में, पाँउ तली तें चोटी तक रूह गरक हुई, और कोट सूरज समान झिलमिल हुई; और कोट सूरज समान रोसनी पाछे हो रही है, और दो मन्दिर को चौड़ो मार्ग, श्री जमुनाजी के पेले पारलों, इहाँथें दिखाई देत है। और दाएँ बाएँ दो मन्दिर के चौड़े, दो सफा दिखाई देत हैं, जो दोनों तरफ चार चार मन्दिर की देहेलान में दृस्यमान हैं। और ऊपर दो मन्दिर के ऊँचे, सुन्दर नूर की छात दिखाई देत है, और मुख के आगे मन्दिर भरको चौड़ो, लाल कमाड़ी दरवाजो रोसन है। और अनेक रंग नंग करके जुक्ति, दरपन रंग कमाड़ सोभाएमान हैं। तिनके ऊपर मेहेराब और झंझरी झरोखा सोभाएमान हैं, ए सम्पूर्ण सोभा देख के आगे को चले। तहाँ तें मन्दिर भर चलके, और देहरी को उलंघ के, जिसमें सिन्दूरिया रंग चौकठ लगी है, उस चौकठ को उलंघ के बीच मन्दिर में आए खड़े हुए। यह मन्दिर कैसा है, के दो मन्दिर का लम्बा, और एक मन्दिर का चौड़ा सोभाएमान

है। दाएँ बाएँ माफक सब मन्दिरों के, दोए मेहेराबें सोभित हैं, और आगे पाछे मन्दिर भरे की मेहेराब है। और मेहेराब के दाएँ बाएँ, आध आध मन्दिर की दिवाल है। उन दिवाल में अपार नंगन के फूल पात नकस कटाव हैं, और इन मन्दिर के अट्ठाईस थंभ के चौक दिस की जो मेहेराब है, उन मेहेराब के आगे दो मन्दिर के अन्तर सों थंभ आए हैं। थंभ से थंभ तक दो मन्दिर का फरक है, और दिवाल से थंभ तक मन्दिर भर का फरक है। सो अब बीच मन्दिर सों चले, सो मन्दिर भर की मेहेराब के तले होके, और मन्दिर भर आगे चल के, दो थंभ के ऊपर आई जो बड़ी मेहेराब है, दो मन्दिर की चौड़ी, उन मेहेराब के तले होके, बीच अट्ठाईस थंभ के चौक के प्राप्त भए। और उहाँतें चल के, साढ़े तीन मन्दिर भर जागा मझियाए के, दस थंभ की देहेलान के दरवाजे में आए प्राप्त भए। उन दरवाजे से चल के, दरवाजे के मन्दिर सहित, तीन मन्दिर और तीन मेहेराबें मझियाए के, प्रथम हवेली के चबूतरा के किनारे पोहोंचे। उन किनार से तीन सीढ़ी चढ़ के, चबूतरे पर आए। तहाँ से चल के मध्य में पोहोंच के, चारों दरवाजे की सोभा देख के, आगे चले। सो साढ़े आठ मन्दिर भर जागा चल के, चबूतरा के पच्छिम के दरवाजे की तीन सीढ़ियाँ उतरे। उतर के प्रथम हवेली के पच्छिम के दरवाजे लों, तीन मन्दिर भर जागा और तीन मेहेराबें नाखी, और हवेली के पच्छिम के दरवाजे में होके आगे चले। आगे चल के तीन गली मझियाए के, दूजी

हवेली के पूर्व के दरवाजे में आए प्राप्त भए। और उन दरवाजे से तीन मन्दिर भर जागा और तीन मेहेराबें नाख के, चबूतरा के किनारे पोहोंचे। और उन किनारे से तीन सीढ़ी चढ़ के, और किनार पर पोहोंच के, उन किनार से चल के; मध्य चबूतरा के पोहोंच के, चारों दरवाजे की सोभा देखी। और फेर आगे चल के, साढ़े आठ मन्दिर भर गिलम चबूतरा मझियाए के, चबूतरा के पच्छिम के दरवाजे आए प्राप्त भए। और उहाँ तें तीन सीढ़ी उतर के, दो मन्दिर भर जागा मझियाए के, एक मेहेराब के तले होके, दूजी हवेली के पछिम के दरवाजे आए प्राप्त भए। दूजी हवेली की पछिम दिस की मेहेराब से चल के, दूजी मेहेराब के तले होके, आगे तीन गली मझियाए के, तीसरी हवेली की पूर्व की मेहेराब के तले पोहोंचे। और तहाँ तें मन्दिर भर जागा मझियाए के दूजी मेहेराब के तले पोहोंचे। और दूजी मेहेराब से मन्दिर भर चल के; बीच की मेहेराब के तले होके, फेर मन्दिर भर चल के, चबूतरा के किनारे पोहोंचे। उन किनारे से तीन सीढ़ी चढ़ के, ऊपर चबूतरा की किनार पर आए। तहाँ से साढ़े आठ मन्दिर भर गिलम चबूतरा मझियाए के, और मध्य चबूतरा के आए के, चारों दरवाजों की सोभा देखी। फेर इहाँ तें साढ़े आठ मन्दिर भर गिलम को नाख के, तीसरी हवेली के चबूतरा के पछिम के दरवाजे आए प्राप्त भए। और पछिम के दरवाजे से तीन सीढ़ी उतर के, दो मन्दिर भर जागा और एक

मेहेराब मझियाए के, तीसरी हवेली के पछिम के दरवाजे आए प्राप्त भए। और पछिम के दरवाजे से मन्दिर भर चल के, दूसरी मेहेराब के तले होके, आगे तीन गली मझियाए के, चौथी हवेली की पूर्व की मेहेराब के तले आए। उन पूर्व की मेहेराब से मन्दिर भर चल के, दूजी मेहेराब के तले होके, आगे एक मेहेराब और दो मन्दिर भर जागा मझियाए के, चबूतरा के तले पोहोंचे। तहाँ ते तीन सीढ़ी चढ़ के, किनार से चल के, मध्य चबूतरा के पोहोंचे उन मध्य स्थल में पोहोंच के खड़े होके, चारों दरवाजन की सोभा देख के, साढ़े आठ मन्दिर भर जागा उहाँ से चल के, पछिम के दरवाजे पोहोंच के, उहाँ से तीन सीढ़ी उतर के, और दो मन्दिर भर जागा और एक मेहेराब को मझियाए के, चौथी हवेली के पछिम के दरवाजे आए प्राप्त भए। तहाँ से दरवाजे को मन्दिर मझियाए के, दूजी मेहेराब के तले होके, आगे तीन मेहेराब और तीन मन्दिर भर जागा मझियाए के, साठ मन्दिर के चौक के दरवाजे आए प्राप्त भए। और अत्यन्त गेहेरे दीदार मासूक दुलहा के पाए, और फेर फेर सेजदे बजाए, और रोम रोम आनन्द पाए। इहाँ सर्व अंगों सेजदा बजाके, रूह आगे को चली। तो दाएँ और बाएँ दो चबूतरों पर चार चार थंभ, और मेहेराबें देखके, दरवाजे की प्रथम मेहेराब में होके, अन्दर प्रवेस करयो। और अन्दर की सर्व जोगबाई लक्ष करके, और उहाँसे मंदिर भर चलके, दूजी मेहेराब चौक

दिस की में हो, भीतर चौक के आए। और इहाँसे दो चौक और एक मेहेराब चलके, चौंसठ थंभ चबूतरा के, पूर्व के दरवाजे के आगे पोहोंचे। जहाँ तीन सीढ़ी चाँदे सहित सोभित है, और इहाँ कठेड़ा नहीं है, सो इन सीढ़ियन के आगे पोहोंचे। और अनन्त कोट गुने अमृत और मिश्री से मीठे, दोऊ अखण्ड दुलहा और दुलहिन देखे, और मानिन्द दण्ड के रूह बीच सेजदे के आई। और सेजदा अखण्ड अद्वैत का और अहद तौहीद का, बजाए ल्याई। और सेजदे पर सेजदे सब अंगन करके, मासूक के सब अंगन को कोटान कोट किए। और कोटान कोट सेजदे नवल किसोरी दुलहिन पर बजाए। और अनेक सेजदे पेसानी घिस घिस के, समस्त सुन्दर साथ को किए। और आगे मासूक बादसाह के, अखण्ड सब्दातीत रतन अमोलक सर्वकुछ तें का, नजराना किया। और एक नंग इत उत निजमें का, निछावर किया। और रूह तले चबूतरा से, तीन सीढ़ी चढ़के, गिलम के किनारें आए खड़ी हुई। और आनन्द सिन्ध दुलहा दुलहिन को, सहित सकल सामग्री के, देखन लगी। तो मासूक आसिक दोऊ, अनन्त कोट सिनगार किए हुए, और अनन्त कोट सोभा झाँकी, छटा छबि लिए हुए, सिंघासन पर बिराजे हैं। और चारों चरनन विषे, काँबी कड़ुला घुंघरी झाँझरी बिराजमान हैं : एक अनवट बिछिया, श्री स्यामाजी के विसेष हैं, और चारों हस्त कमलन में दसांगुरी सोभाएमान हैं। और काँड़न विषे कड़े गजरा पोहोंची तावीज बिराज-

मान है। ताही माफक श्री ठकुरानी जी के नवघरी दोरी चूड़ और कंकनी विराजमान हैं। और चारों मच्छन पर फूमकदार चारों बाजूबन्ध बिराजत हैं। और दोऊ महा सुन्दर कंठन विषे, सप्त हार के पाछे फूमक, और आगे नवरतनी दुगदुगी लटकती है, और चमकती है। और दोऊ के नासिका विषे, बेसर और बुलाख झूमत है, और चारहूँ श्रवनन विषे मोती कर्ण फूल झूमक लटकत हैं। और श्री ठकुरानीजी के सिर विषे, बेंदा बंदियाँ राखड़ी, और सीसफूल बेनीफूल, और चोटी के फूमका लों चोटी फूल बिराजे हैं। एह सोभा पीठ पर साड़ी के अन्दर हो रही है, और प्रीतम की पगड़ी के ऊपर, सिर पेंच और कलंगी लटकत हैं। श्रीराज जी की नीली इजार, और सेत जामा, नीलो ने पीलो बीच के रंग को पटका, और आसमानी रंग पिछोड़ी, और सिन्दूरिया रंग पागड़ी सारंगी बाँधी है। और श्री ठकुरानी जी की सिन्दूरिया रंग जड़ाव की साड़ी, और स्याम जड़ावकी कंचुकी, और नीली लाहिको चरनियाँ देखा। श्री जुगल स्वरूप एह सिनगार किए हुए, दीपक रंग सिंघासन पर बिराजमान हैं। तिन सिंघासन के छे पाए, ऊपर छे डाँड़े सुहाए हैं, और छे डाँडों के ऊपर दो छत्री सुहाई हैं। और आठ कलस, छे कलस छे डाँड़ों पर, और दो कलस दो छत्री के ऊपर हैं। छत्रियों को चौफेर मोतियों की झालर, तले दोनों छत्रियों के, नीली पाँखड़ियों के कमल, तिन पाँखड़ियों के तले, एक मानिक लटकत है। और आगे नंगन जड़ित दो

चौकी झलकत हैं, और चौंसठ थंभ चबूतरा की किनार भर के, गोलाकृत सिन्दूरिया रंग गिलम बिछी है। तिन गिलम के किनारे, स्याम सेत हरी जरद, इन चार रंग की चार दोरी सोभाएमान हैं। लाल मखमल के तकिए, चौंसठ थंभों को लग के, एक दोर धरे हैं। थंभ के चार पहल में सें, एक दिस भर के, और मध्य गिलम में, एक सहस्र दल को कमल बिराजमान है। तिनकी हरेक पाँखड़ी का जुदा जुदा रंग है। और गिर्दवाए उन पाँखड़ी के कै दोरी बेली काँगरी हैं, और चारों दरवाजन तें, मन्दिर मन्दिर की चौड़ी, नूर रंग की चार धारें चली हैं। अत्यन्त मीठी स्याम रंग नूर की, तिन में अपार दोरी बेली काँगरी हैं। सो स्याम रंग नूर की धार चारों दरवाजन से चल के, मध्य गिलम के जो फूल है, और फूल के गिर्दवाय आई जो दोरी बेली काँगरी हैं, उन दोरी में आए मिली है। और चार दरवाजों के, और चार नूर धारों के बीच में, अत्यन्त मीठे सिन्दूरिया रंग के सिन्ध भरे हैं, तिन में आनन्द रंगन की तरंगें उठती हैं। और सहस्र दल को जो कमल है, उन कमल के छत्ता के माहें, सिंघासन बिराजमान है, और उन सिंघासन में दोऊ मीठे दुलहा दुलहिन बिराजे हैं। और सिंघासन तें साढ़े तीन मन्दिर के अन्तर सों, एक हार दो हजार सखी की बिराजी है। मन्दिर भर की चौड़ी स्याम रंग नूर की धारें छोड़ के, और उन दो हजार सखी की हार से, साढ़े तीन मन्दिर के अन्तर सों, चार हजार सखी की दूसरी

हार बिराजी हैं। उसी नूर धार मजकूर को छोड़ के, और चार हजार की दूजी हार से, साड़े तीन मन्दिर के अन्तर सों छे हजार सखी की कठेड़ा सों लग के तीसरी हार बिराजी है। वही मन्दिर भर की चौड़ी नूर की धार छोड़ के, और प्रथम हार में एक एक कोने में, पाँच पाँच सैं सखी की सफ बैठी है। और दूजी हार में हजार हजार सखी की सफ बैठी है। और तीसरी हार में एक एक कोने में, पन्द्रा पन्द्रा सौ सखी की सफ बैठी है। इन विध सों तीन हार के माहें, बारा हजार सखी बिराजमान हैं। और चारों दरवाजों के सामें चार रस्ता, सिघासन लों साफ पड़े हैं। और नख सिख सिनगार किए हुए, सिघासन के आसपास चन्द्रवदन मृगलोचन बैठी हैं। जिनकी एक नख की सोभा और मिठाई के ऊपर, अनन्त कोट लक्ष्मी की सुन्दरताई, और अनन्त कोट सती सावित्री की सुन्दरताई, और अनन्त कोट रति और इन्द्रानी की सुन्दरताई निछावर कर डारिए, ए सम्पूर्न सखी की सुन्दरताई के समुद्र की जो फुई है, उन फुई को नाहीं पोहोंचत हैं। ए सखी कैसी हैं, के मानो तो, श्री ठकुरानी जी रूपी साँचे कर ढारी हैं। बारों हजार पाँउ तली तें चोटी लों, एक स्वरूप सोभाएमान हैं। और आतम को आदि देके, अनन्त कोट जेते आनन्द के स्वभाव हैं, सो सम्पूर्न एक रस एक रूप सोभाएमान हैं। और एक छोटे नख की जोत कैसी है, के अनन्त कोट सूर्य अनन्त कोट चन्द्रमा, और अनन्त कोट बिजली जो

इकट्ठी ऊगें, तो इन आगे ऐसी छिप जावें, जैसे सूर्य के ऊगे तें, तारागन छिप जावें। और इन जोत की झलकार जो ब्रह्माण्ड पर परे, वे तो अनन्त कोट ब्रह्माण्ड ऐसे उड़े, जैसे सूर्य के देखे से अन्धकार उड़ जात है। यह हकीकत सखी की हुई, तब जुगल किसोर स्याम स्यामा जी को कहा कहिए, और क्यों कर कहिए। ऐसी जो सम्पूर्न सखी हैं तिनको, और पूरन ब्रह्म अक्षरातीत को, सहित नव दुलहिन के, नख तें सिख लों देखे। और जोत रूपी प्रिया प्रीतम बैठे जो सिंघासन हैं, सो रूह रूपी पतंग तरफ सिंघासन के चली। और मन्दिर भर की चौड़ी पूर्व के दरवाजे से चली जो स्याम नूर की धार है, सो सहस्र दल के कमल को लगी है। उन नूर की धार पर हो रूह चली, और साढ़े दस मन्दिर भर गिलम नाख के, नजदीक कमल के पोहोंची। और महा अत्यन्त तेज नूर में डूबी, और कमल लोचन प्रान नाथ को, नैना भर के भली भाँत सों बिलोके। और नख सिख भीज के, और रोम रोम रीझ के, स्यामा जी के भरतार को, फेर कर रूह ने सेजिदा बजाया। और सुरत सुहागिन उहाँ से उठ के फेर आगे चली, और महा तेज नूर जोत के जल को मझियाए के याने पैर के, सहस्र दल के कमल को मझियाए के, रूह नजीक सिंघासन के पोहोंची। और बाईं तरफ अक्षरातीत भरतार के, बैठीं जो प्राननाथ की प्रान प्यारी है, उन मीठी मासूक दुलहिन के कदम, रूह ने सिर कण्ठ छाती नैनन सों, फेर फेर मले। और एक-

दम रूह ने अपनी आतम पर आतम पर आतम के रोम रोम में बसाए। और फेर उहाँ से सिर उठाए के, नवल किसोरी के जो प्राननाथ हैं, तिन के चरन कमल सों रूहने कोटान कोट बेर, फेर फेर अपनो सिर अरु नैन और कण्ठ और छाती मली। और नख सिख भीज भीज के, और रोम रोम रीझ रीझ के, दोऊ चरन कमल को जो रुह के प्रान जीवन हैं, और जीव जीवन हैं, रूहने अपनी आतम परआतम के, रोम रोम में बसाए। और रोम रोम हुस्न के समुद्र में डूब डूब के, और कोट अमृत और कोट मिश्री से, अनन्त कोट गुनी मिठाई जो मुखारबिन्द में है, उन मुखारबिन्द रूपी आनन्द सिन्ध में गरक होके, रूह ने सिर अपना तले दोनों कदमों मासूक के रख्या, और पूरन ब्रह्म अक्षरातीत को, अखण्ड सेजदा किया। और जो सिर के बीच सेजदे के रख्या, सो फेर ना उठाया। इहाँ से अद्भुत वृत्त ने समाप्ति पाई ।।

श्री श्री श्री किताब दुलहिन, गैब अरस आसमानी नई बड़ी वृत्त की, जो श्री कमलावती जी ने प्रीतम से मिल के, और माँग के और बख्सीस पाए के, और आप स्वरूप संग सामिल होके जाहिर करी है, सो सम्पूर्ण समाप्त भई। और उतरना इन किताब का विक्रम संवत अठारा सै तिरानब्बे चौरानब्बे की साल में, १८६४ ग्रामे शहर छत्तरपुर में लिखतं गिरो रब्बानी के कदम खाक गोपाल दास मुकाम भांडेर जो बाँचे

सुने तिन को परनाम चरनों लाग के गोपाल दास की पोहोंचे भूल चूक समार लेवी जथा प्रति लिखी मिती माघ वदि, ६, सोम सम्वत १६१७ को सम्पूर्न हुई परनाम ।

श्री ५ नौतन पुरी धाम मध्य श्री १०८ श्री धर्म दासजी महाराज जी की आज्ञा कृपा से लिखा छबील दास सद्गुरु श्री पीताम्बरदास जी ने विक्रम सम्वत २०४० ज्येष्ठ कृष्ण ६ बार गुरु चतुर्थ प्रहर में समाप्त हुई जथा प्रति लिखी जो कोई बाँचे सुने सीखे सिखावे तिन समस्त सन्त महन्त सुन्दर साथ जी को श्री ब्रह्म मुनियों की चरन रज वांछत नादान छबीलदास का कोटि कोटि प्रेम परनाम स्वीकार हो परनाम ॥

इति

———